Nagari-Pracharini Granthmala Sries No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

VOL IV.
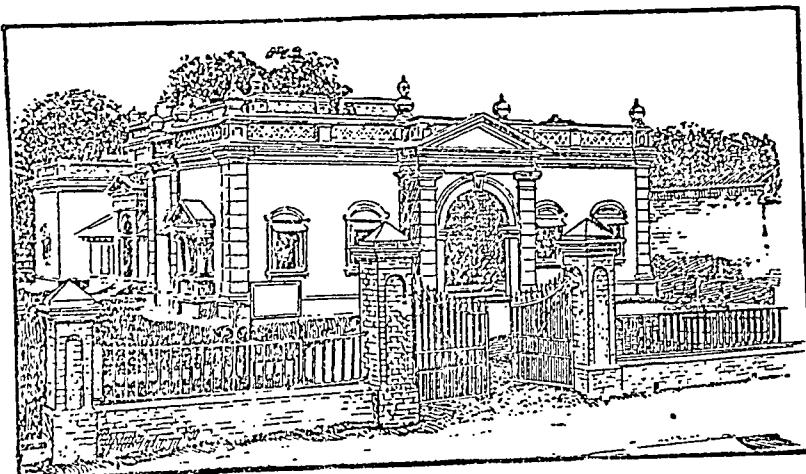
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LV to LXI.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग चौथा

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ५५ से ६१ तक.

) BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING
, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,
BENARES.

1910.

[Price Rs. 4/.

मूल्य ४)]

खंगी संगरराव। सूर सा अल्ह कुआरं ॥
आजानबाह गुज्जर [1]कनक। सोलंकी सारंग बर ॥
सामली सूर आरज कमँध। बाम जु दूष्य विसग्ग भर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

गाथा ॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं रमं ॥
ज्यों स्त्री बल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

दूहा ॥ रष्या करौव देव तुहि। सोवत न्रप अत सब्ब ॥
दासी चौकी चक्कित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब ॥ छं० ॥ ६७ ॥
न्रप सूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि ॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास ॥ छं० ॥ ६८ ॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

[2]बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा ॥ भू अत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं ॥
विद्व दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि ॥ छं० ॥ ७० ॥

साटक ॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने ॥
संसाहस्स बसाह साहि सकलं, इच्छामि जुड्डायने ॥
भिद्व चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्वारने ॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे ॥ छं० ॥ ७१ ॥

स्लोक ॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं ॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दूहा ॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त ॥
सन्निय कारन सिद्व मनि। न्रप गति दुक्कित नित्त ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- वंध्यो रंभ सुथंभ।

सु छंद चारु धुक्क देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि वालते बजावहीं ॥
गमन्नि ते अनंग रंग संग ए परच्चए।
सु बीर सा अरड्ड अंग पठ्ठि पाच नच्चए ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सवद्द सुब्भ उच्चरें सु कित्ति का वषानिए ॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद जानिए ॥ छं० ॥ ४३४ ॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा ॥ अमग हट्ट पट्टन नयर। रत्न मुत्ति मनिहार ॥
हाटक पट धन धात सह। तुछ तुछ दिष्षि सवार ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

मोतीदाम ॥ अमग्गति हट्टति पट्टन संझ। मनों द्रग देवल फूलिय संझ ॥
जु नष्पहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंचत कीच कि पीक उगार ॥
छं० ॥ ४३६ ॥

मिलै पद पद्द सु वेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप ॥
जु वेलि सेवंतिय गुंथहि जाइ। दियै द्रव दासि सु लेहि ढहाइ ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

सुबुद्धि वजावत बीन अलाप। अनेक कथा कश ग्रंथ कलाप ॥
विवेक बजाज सु बेचहि सार। छुअंत नवासर सूझहि तार ॥
छं० ॥ ४३८ ॥

ति देषहि नारि सकुंज पटोर। मनो दुज दष्षन लागहि थोर ॥
सु मोति जराइ मढ़े बहु भाइ। जु कट्टहि कोरि कहै सुनि गाइ ॥
छं० ॥ ४३९ ॥

सु लेतन सुष्प रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रहै पलटाइ ॥
लहंलह तानक तानति वाम। बनी चिय दीसहि कामभिराम ॥
छं० ॥ ४४० ॥

जराव कनक्क जरंज कसंत। मनो भयौ वासुर जामिन अंत ॥
कसिक्कसि हेम सु काढ़त तार। उगंत कि हंसह क्रम्न प्रकार ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

(५७) कैमास वध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४६५ से १५०९ तक)

परे मीर पथ्थार। धार असिवर सिर झारं॥
सामंतनि लंगरिय। घाइ उट्ठी ग्रह सारं॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्रिप। जंग जोट कोटह अकल॥
टारै न मुष्य सांईय छल। लोह लहरि बाजंत झल॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसल्मान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का वसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना।

परत राइ पज्जून। वित्तचय जाम सु वासुर॥
विषम रुद्र विथ्थर्‍यौ। भार लग्गै भर सुब्भर॥
बघ्घराव बघ्घेल। मार कामोद सेन सम॥
मिलि चंपिय चहुआन। सूर सुब्भै न अगम गम॥
षह धूरि उड्डि धुंधरि धरनि। किलक हक्क बज्जिय विषम॥
पुंडीर राइ राजह तनौ। समर वार सज्यौ असम॥ छं० ॥ १४८५॥
वीर मंच उच्चार। धार धाराहर बज्जिय॥
तिमर तेग निब्बरिय। गुडिल गयनं लफि गज्जिय॥
उड़पति कमल अलोइ। तेज भंजिय तारा अरि॥
[1]अनी भोर अर अकल। सयर लोग उप्पर परि॥
धर धार धार धुक्किय धरनि। करिय अरिय किननंत धर॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित। [2]अरिन नट्ट नच्चै सु नर॥छं० ॥१४८६॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना।

वीर मीर कामोद। आय जब पुंडिर उप्पर॥
विहथ नेज उब्भारि। बाहि निझ्झाहि चंद उर॥
सेल सैल संमुहिय। हड्डु भंजिय हिय चंपिय॥
सुधर ढार निभ्भार। बाहि असुराइन कंपिय॥
पुंडीर राइ आसर सयन। मृत जिम नंचिय समर॥
दलभंति पंग पुंडीर परि। जय जय सुर सद्दे अमर॥छं०॥१४८७॥

(१) ए. कृ. को.-अनी मोरं अरि कमल। (२) ए. कृ. को.-अरिय।

रजपूत द्रोह भज्जत लगैं । हम रुंधै निसि पंग [1]बल ॥छं०॥१५८२॥

पृथ्वीराज का कहना कि यहां से निकल कर जाना कैसा और शरीर त्याग करने में भय किस बात का ।

अरे अमँत सामँत । मोहि भज्जंत लाज जल ॥
काम अग्गि प्रज्जरै । लोभ आधीन वाइ बल ॥
निस दिन चढ़े प्रमान । दुहुं कन्ना परि सुभ्भी ॥
इह लग्गी कल पंक । कच्च जिहि जिहि वर बुभ्भी ॥
को राव रंक सेवक कवन । कवन न्रपति को चिक्करै ॥
ढिल्लीव दिसा ढिल्लिव न्रपति । पंग फौज धर उप्परै ॥छं०॥१५८३॥

दूहा ॥ सो सति सत न्रप उच्चरै । परें लभ्भ इह ग्रेह ॥
जिहि वर सुब्बर सोउ न्रप । फल भुग्गवै सु तेह ॥छं०॥ १५८४ ॥

चौपाई ॥ सुनी देह गत जीव प्रमानं । जीरन ज्यों बंसन फल मानं ॥
जीर न वस्त्र देह ज्यों छंडै । त्यौं ग्रह छंडि पर त्तिन मंडै ॥
छं०॥ १५८५ ॥

सामंतों का मन में पश्चाताप करना ।

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । राज इह बत्त न आइय ॥
जौ भ्रम सतु करि रिदै । वचन मद्धि मन जाइय ॥
कोट हरन द्रग रंजन । चूक क्कहुं न नाइय ॥
जौ साम भ्रंम अत्तहीं । साम द्रोही नन पाइय ॥
अवरन्न हृदै धरि रँजै ज्यों । कब्बि बीर बंदै बचन ॥
ज्यों अनल डसन मानुन करै । यों प्रथिराज रन तत्त मन ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

राजा का कहना कि सामंतों सोच न करो कीर्ति के लिये प्राण जाना सदा उत्तम है ।

सोच न करु सामंत । सोच भग्गै बल छचिय ॥
सामि द्रोह सो बंध । आहि बंधी तन रत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कल ।

(५८) दुर्गा केदार समय।

(१५११ से १५५१ तक)

सामन्तों का पराक्रम और फुर्तीलापन।

कवित्त ॥ जहं जहं संभरि वार। सूर सामंत वहिग वर ॥
तहं ति तेज अग्गरौ। फिर्यौ करि वार करतु कर ॥
जहं तहं भय भागंत। सार सनमुष सिर सहयौ ॥
जहां जहां चहुआन। चिहुरि चंचल चित रहयौ ॥
तहँ तहं सु सार [1]सारंग लिय। विरचि वीर चंदह तनौ ॥
पहु पुक्क तुरी रिंझवि रनह। तहं तहं करै निवच्छनौ ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

पङ्गराज की अनी का व्यूह वर्णन और चंदेलों का चौहानों पर धावा करना और अत्तताई का मोरचा मारना ॥

षोड़स गज पहु पंग। मीर सत सहस राज अगि ॥
अट्ठ अट्ठ गज राज। दिसा दच्छिन रु वाम मग ॥
षां पहार मोहिल्ल। महिद बंध रान ततारिय ॥
समर सूर चंदेल। बंध मिलि बाग उपारिय ॥
वर बंध बरुन अल्हन उभै। अत्तताइ अवरत्त वर ॥
दिसि मुक्कि वाम दच्छिन परिग। हाइ हाइ आरत्त भर ॥
छं० ॥ १६७० ॥

रसावला ॥ हलके हलक्कं, गिरं जानि बक्कं। छुटी मद्द पट्टं, वपं मेर घट्टं॥
छं० ॥ १६७१ ॥

चढ़ी जम्म भल्ली, गिरं झान हल्ली। सर क्कित्त मद्दं, घटं जानि भद्दं॥
छं० ॥ १६७२ ॥

दियै दंत भारी, सनंना सयारी। [2]कवी बक्क अष्पं, झमै मेघ पष्पं॥
छं० ॥ १६७३ ॥

धयै तेज जस्सं, जपं कंक कस्सं। [3]सरं नाव कस्सं, पनु रंत अस्सं॥
छं० ॥ १६७४ ॥

कुकं कोपि हल्ली, उपम्माति भल्ली। नदी नंद पायौ, रुपी पान धायौ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

(१) ए.- सा मंगलिय। (२) मो०-कची चक्र अष्पं। (३) ए० कृ. को.-रसं।

---

(५९) दिल्ली वर्णन समय।

(पृष्ठ १५५३ से १५६४ तक)

---

(६०) जंगम कथा प्रस्ताव।

(पृष्ठ १५६५ से १५७५ तक)

(६१) कनवज्ज समय।

(पृष्ठ १५७७ से १९५१ तक)

पृथ्वीराजरासो ।

चौथा भाग ।

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अँगन ॥
सबर सेन सुरतान । वान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन । देव सेव गंध्रब्ब वल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क तृष्ष महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद । दंद दारुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्षिन पुब्ब । कोन मंडै दल उत्तर ॥
ढिल्लिय चिचय कोट । जोट अड्डे दल पंगं ॥
सेव दंड अन मंड । षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै । इम तप्पै रट्ठौर पहु ॥
सुष इंद्र ब्यंद छत्तीस दर । मुकट बंधि बिन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल्ल। बिभंग जग मह्हि सूर जुध ॥
अद्दत वाह जम दाह। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फुट्टि दल जानिक साइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मले सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जे सुबर ॥
आवाज कंन पंग्गह सुनी। हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिष्टि सु न्रप दिष्षे सकल। दिष्षावत बनि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरी। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक्क सबल सित सूर। इक्क बल सहस प्रमानं ॥
इक्क लष्य साधंत। दंति भंजै गज पानं ॥
इक्क विरुध जस करहि। इक्क जम जोर भयंकर ॥
इक्क जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव अम्म स्वामित्त मन। तन हित्तन संडै दियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज न्रप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि से उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि त्रिय नयन्न बरिषा जुजल। मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥
अढर ढुरहि गढ़ रुरहि। मेर घर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ पर पिठ्ठ। सेस सल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल थल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राह पहुपंग वर। चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान विन। पग्ग पंति मंडी सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान सूर छुट्टै न महि। विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग विनु। इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भयंकर अरि भवन। भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मै। सो न वियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म। क्रम्म को करै सँघारन ॥
को मुवीं कर धरै। मूर महि कोन उपारन ॥
को दरिया दुत्तरै। नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै। कोन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि। दनु देवत्तह नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर। उदधि जानि ऊलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
वेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं। अनभंग छत्रिय धारयं ॥
चहुआन वलनह वंधयं। द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं। डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अठ्ठ दिसि वसि विच्छुरै। जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं। धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती। कहीं दुतिन दिष्पिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग षूनिय ना रहै। सुरलोक संकति आरुहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल। षनि कढ्ढै हूं कंद ॥
षूनी पंग नरिंद कौ। को रष्षै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ। सिंघ पष्षऱ्यो झलालह ॥
पंग अम्रत फल चषै। अम्रत लग्गौ जु तमालह ॥
आगेई बर अप्प। नाग नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई बर करन। भान साहै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु विधि काल दिष्षै नही॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही॥ छं०॥ १७॥

जयचन्द के सोमन्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंत्रीस। मंत्र पुच्छै जु मंत्र वर॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गन्यौ मंड धुर॥
धवल सुमंत्री मंत्र। तत्त आरिष्य प्रमानिय॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय॥
विधि मंत्र जंत्र आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रवल॥
छं०॥ १८॥

सबद बाद से वरैं। इष्ट मंत्री न तत्त गुर॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स ध्रम्म नर॥
स्वामि ध्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर॥
कालंक विनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर॥ छं०॥ १९॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु सत्त्व नर॥
ग्राम्म धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं॥
तारा क्रत चित्रंग। दियौ संदेस सु कज्जं॥
करि करिनि कंक चित्रंग वस। करौ जग्य आरंभ वर॥
मंत्री सुमंत्र राजन बली। ते हक्कारे मंत धर॥ छं०॥ २०॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंत्री सुमंत। पुच्छै सुमंत्र वर॥
पहु सुमंत विग्गन्यौ। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर॥

सोइ मंची स प्रमान। जग्य धुर वधं सु वंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। क्त्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव जंत दिष्षै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल वर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो भिट्टावहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्नप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुत्र हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड वुहिल्लौ ॥
चित्रंग राव रावर समर। विनक वंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सवर वीर साधन सवर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुअ सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज वर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कीन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुबर वीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंच मंचिय प्रधान। उच्चरिय राज वर ॥
चाहुआन वंधन सुमत्त। मंडनह जग्य धर ॥
नर उत्तिम चित्रंग। राज उत्तिम चित्रंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्षन गज अंगी ॥
कालंक अछिय्य कट्टन सु छिद्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि सु जग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति वर वर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। जग्य समप्पैं लोग ॥
जग्य समप्पैं लोग। उभ्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ले सारंग। तिमिर अप कहूं न जाई ॥
वियौ तिमिर भंजियै। अप्प पुलि जाइ तसं घन ॥
अप्प तिमिर भंजियै। प्रलै होइय सु अप्प फुनि ॥ छं० ॥ २५ ॥

सोमंतक का चितौर को जाना।

कवित्त ॥ पंग जग्य आरंभ। संत प्रारंभ समर दिसि ॥
सोमंतक परधान। पंग हक्कारि बंधि असि ॥
सत तुरंग गति उद्ध। पंग गजराज विशालं ॥
मुत्ति अवेध सुरंग। एक दस लालति मालं ॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ। अद्ध देस अध बंटियै ॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर। जग्य अरंभ सु ठट्टियै ॥
छं० ॥ २६ ॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना।

आहुट्ठां मझ्झांम। समर साहस चित्रंगी ॥
निविड बंध्र बंधे। अबंध सा ध्रम्म सु अंगी ॥
चिंतानी कलपत्ति। रूक रत मोह अरत्ता ॥
सिद्धानी मोगर सुभैस। सम सद्ध सु गत्ता ॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय। जग्य बेलि जिमि उद्धरै ॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि जीवन जिहि उब्बरै ॥
छं० ॥ २७ ॥

पद्धरी ॥ मुक्कलै पंग वर मंत्र बीर। जानै सु गत्ति राजन सरीर ॥
मन पंग होइ सो कहें बत्त। बिन बुलत बोल बोलें सुतत्त ॥
छं० ॥ २८ ॥

जानै सु चित्त नर नरनि बत्त। अनि रत्त रत्त ते लषहि गत्त ॥
कीटी सु भ्रंग ज्यौं मिलहि स्याम। डर ग्रहैं रहैं जामित्त जाम ॥
छं० ॥ २९ ॥

तिन मध्य एक सारंग सूर। सह मत्त बिद्ध जानत सपूर ॥
पाषंड दंड रच्चै न अंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग ॥
छं० ॥ ३० ॥

अगुराज पैज जिन करिय देव। मंगी सु कृत्यु जिन मृत्य सेव॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त। रष्षै जु राज राजन सु पत्ति॥
छं०॥ ३१॥

पतौ सुजार चित्रंग थान। चित्रंग राज मिल्लि दीन मान॥
छं०॥ ३२॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना।

दूहा॥ समर सपति पति समर की। समर सभेद सपंग॥
जग्य वेद जौ उद्धरौ। भूमि भेद ग्रह जंग॥ छं०॥ ३३॥

पूव कह्यौ चलतहिं न्रपति। सुवर वीर कमधज्ज॥
दीन भये दीनत भगै। सुवर वीर वर कज्ज॥ छं०॥ ३४॥

दीन भयें अरि अंग वर। छल छुट्टियै न छच॥
मय मत्तह सो हत्त है। वै पुज्जै गुन मत्ति॥ छं०॥ ३५॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना।

नाम सु मंत्री तिन धर्‍यौ। रे अमंत परधान॥
दीनत भयें भयौ न जग। जग्यबेर बलिदान॥ छं०॥ ३६॥

अरिल्ल॥ मिलिरु समर उच्चरि चौहानं। जग्य करन पहुपंग निधानं॥
त्रेता द्वापर कर्‍यौ जु देव। कलिजुग पंग जग्य करि सेव॥
छं०॥ ३७॥

कवित्त॥ समर रूप सुनि समर। पंग आरंभ जग्य धुर॥
सत्य पहुर बलिराइ। जग्य पहुरै सु जग्य बर॥
बियौ पहुर रघुबीर। जग्य आरंभन जग्यौ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ। ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय। सुबर वीर कमधज्ज धुअ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग। जग्गि जग्य विजपाल सुअ॥
छं०॥ ३८॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल ॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गल ॥
राज इच्छ राजस्त्र। राज रा पंड पंड बन ॥
नघुअ राजस्त्र जग्य। कूर कर कुष्ट कूप जन ॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षीडस करन ॥
सित सित्त कोस वर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन ॥
छं० ॥ ३९ ॥

अश्वमेद राजस्त्र। लंब गौषंभ मेद वर ॥
अगनि होत्र वर मेद। मध्य जग मेध अप्य वर ॥
कनिष्ठ बंध बड़बंध। चौय आचरन ग्रेह वर ॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर ॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। वाजपेय वर उद्धरै ॥
नन होइ कोइ इन जग्य वर। हँसे लोइ वहु विग्गरै ॥छं०॥४०॥

पद्धरी ॥ उच्चऱ्यौ मंत्र चित्रंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव ॥
बल करौ नल्ल मेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छत्री अनंभ। अन्यन कोस सित्तए मंझ ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान ॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंत्री न कोइ वर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह ॥
चौवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान ॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त ॥
सुद्धरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बरे जग्य तीर ॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त ॥ फुनि चित्रंग नरिंद। चतुर विद्या संचित्त मति ॥
भव भवस्य न्निम्मान। व्रह्म भूलै न्निमान गति ॥

(१.) ए.-ना कुष्ट।

इह अजन्न चिंतयौ । अन्न आहारन मांडै ॥
तन मनुच्छ सम देव । बुम्म वुल्यौ वन्न तांडै ॥
त्रैलोक अप्पि बलिराइ ने । राम जुद्ध त्रैता सु वर ॥
जदुबीर सहाइक पथ्थ बंध । तब कुवेर बरष्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्य विग्गऱ्यौ । ध्रम्म छिन्नौ न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गऱ्यौ । मंत विन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त । क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह ध्रम्म क्रम्म पल पंडि पग । जित्त जगत सब वस कियौ ॥
प्रथिराज समर विन मंडलह । अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर वर ॥
समर तेज सम जुद्ध । समर आहुत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति मम स्त्तूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता सद्धरिय ॥
चित्रंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुभ्भौत भवसि गति ॥
हम त्रिकाल दरसी सु । क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरों । जग्ग चहुं नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष वर । रही जच तचह सु वर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि वर । तौ अग्गैंई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । जग्य पंडव बष्षानिय ॥

अकसमात इक प्रगट। निकुल जंपिय इय वानियं ॥
द्वादस वरस दुकाल। पऱ्यौ कुरषेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अद्ध देह कंचन भयौ ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में। आयौ पन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ कहि मोकलि परधान कर। इह सु कथ्य चित्रंग ॥
तौ तुम अब जग अंज से। कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अश्वमेद जग छसें करि। विश्वमित्र तप जोर ॥
कहा करै न्त्रप मंद मति। अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन बर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चित्रंग। करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उद्ध दिठ उद्ध। समर तप करन उचाइय ॥
पंग लज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ न्त्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ। नथन काली जुग जानं ॥
कविचंद देव विजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चित्रंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुमंच मंत्री प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति वल्लह समरह समाज॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल वितल कढ्ढैति तूंमि॥
छं०॥ ५५॥

लग्गुरि सभेद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ॥
मंडै समूल सुरतान तीर। करनाट करन षुरसान मीर॥छं०॥५६॥

गुज्जर सु कोह दच्छिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ॥
उतरत्त बंध पुब्बह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान॥
छं०॥ ५७॥

तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार॥
पाताल पंथ नन व्योम पंथ। वन वहन हरन दुरि सोम अंथ॥
छं०॥ ५८॥

दल सज्जि करहि न्नप सच भेद। पहुपंगराइ राजह्न वेद॥
॥ छं०॥ ५९॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा॥ आयो रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार॥
मनों विदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार॥ छं०॥ ६०॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज॥
किन दुष्षह तन किस्सता। किन दुष्षह आकाज॥ छं०॥ ६१॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्ष प्रति। अस्त्री अस्त्र सरूप॥
तिन कारन तन जरजर्‍यौ। अग्गि विभंगन रूप॥ छं०॥ ६२॥

कवित्त॥ अंग षंड न्नप राज। मान षंडनति विप्र वर॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक्क घर॥
निसि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरथानं॥
इत्तने षंड कीने हुते। तदपि दुष्ष जर जर तनह॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि न्नम्मय घनह॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ सोनंतहु तिन बिप्प कहि। नव नव चरित प्रमान ॥
तू आज्ञा जो देइ गौ। सो आज्ञा परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

विअष्परी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं। विप्र और औरै उच्चानं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै। तौ वह वेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं। बहुत भ्रम्म आरत उच्चारं ॥
पंड मंड लीने कर धारिय। कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तहां आइ बर बाज बिलग्गे। सुनें पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै। तौ ग्रंह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

हंका कार दुह्न न्रप भारी। पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन डहाल क्रन्न गुन षेद्यौ। तीन बाल भारथ्थह भेद्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उभै बान करि मान प्रकारं। सुबर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा की सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों की परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम। सुमति संग्रही पंग बर ॥
बंचि राज चहुआन। बंधि चित्त्रंग सम्म घर ॥
सुलप लज्ज पति जीह। बेंन क्क्कस उच्चारहि ॥
* ....
मधि भूप रूप दारुन वचन। पंगराइ अम्मर अरस ॥
सज सेन सु बंधौ बंध बल। देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नहीं है।

सोचहि पंग नरिंद। राज जानै इह सत्तिय॥
ता छत्री कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई॥
सस्त्र मंच उद्धरै। सार धर धार समोई॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय॥
दैवत्त कला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय॥ छं०॥ ७१॥

मंत्री के वचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग॥
इक्कै विधिना अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग॥ छं०॥ ७२॥

कवित्त॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि॥
ज्यों गुन मुकि उठि चंग। सीह बर म्रग्ग अंड हलि॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन॥ छं०॥ ७३॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्रप मंडप साचै॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल ती रंग राचै॥
दइय पंग अनभंग। सक्र सहाय छिति डुल्लै॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै॥ छं०॥ ७४॥

चोटक॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं॥
विधि वंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि परै॥
छं०॥ ७५॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं॥

नव बत्ति निसान न्निघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनहद्द सवद्दनि जानि सजै॥
घन नंकहि घुंघर पष्खर के। सु बुलै जलजात किधों जल के॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कवि देषि उपम्म कलें॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास। झर मद्धि प्रगट्टि मनों कैलास॥
छं० ॥ ७८ ॥

बँधि पँषि उसा वन्नि सीस सधी। वढ़ि सस्सि कला मनों ईस बँधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह वसीठ हलं॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अट्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गिययं। सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहसहि बीरति सूरति सुष्ष। मनों सतपत्त विकासिय सुष्ष॥
सुदे सुष काइर झुम्झिझग मोद। मनों भए संझ सु दिष्षि कमोद॥
छं० ॥ ८३ ॥

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं।

उभै षट फौजति पंम सजै। दिसि अष्ठ उभै दुरि थान लजै॥
चव्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ लधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि॥
पुब्ब वैर चहुआन कौ। बजे तीर कर वज्जि॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज॥
वैर बँध्यौ चहुआन सों। पुब्ब वैर प्रति काज॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं॥
दई राज अनंगेस प्रथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर॥
बीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर॥
बीरा ही अनसंक। रहै बीरा बिन बंकी॥
हैं षुर षग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी॥
पावंड डंड रच्चै नहीं। पाषंडह रच्चै न गुन॥

---

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चच्चर जिमसि। अट्टत ट्टत्त जावै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्ठै धारा धर ॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक घर ॥
छल छुट्टै [1]मुष सद्द। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के वचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बलि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवद्ध। देव देवत्त विचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सेंन सबैं चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिची छवि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चँदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर ॥
तिमिरलिंग षेदयौ। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गी निग्गह भगिय ॥
भीमंत भयानक भीम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय ॥ छं० ॥९५॥

(१) कृ.-सुख।

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यौ पंग पहु । धरनि वीर सों वीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु न्रप । बढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं । असी एक मंतेश्र होवंत तायं ॥
सु बंवीस मत्ते न होवंत कंदं । भुजंगी प्रयातं कहै कव्विचंदं ॥छं० ॥९७॥
चल्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं । पुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं । मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंवल प्रकारं । जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं । कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै पुरतार । पंग असि बर अस सद्धी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन । दोऊ देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जम द्रोन । पथ्थ प्रथिराज गनिज्जैं ॥
ए न डुले ए डुले । ए न रंजे ए रज्जैं ॥
जैचंद सपूरन कर पवित । परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन । विधि सुमंत वज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि वेन प्रमान धरं । चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी । सु कछू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
वर बंक चिलक्क करच्च इसी । घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं । सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं । जल बढ्ढि जलं जर वीरज तं ॥
सम बंच करूर कुरंग दिसा । पुरहे जनु कायर वीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े वल सूर प्रमान रनं । सु मनो बरसैं वर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं । सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
हत भंग निसानति वीर बजै । रथ बाज करी करनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत बरं । दुरि इंद्र रह्यौ पय बंधि नरं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्गो पंग पय । तो पग सज्जिग सिंगार ॥
*स्रवन बत्त संची सुनै । स्रवन सुनै घरियार ॥
स्रवन सुनै घरियार । स्रंध कारिम तन सोहै ॥
मिलें पंग तौ पंग । अंग दुक्कन दल गोहै ॥
षट विय षोडस जन्न जै । जो रजै राज राजि सुतौ ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन । देव द्रजोध जोध सौ ॥
.... ॥
तौ पंष समह जुद्दह करन । .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छत्र छिति छांह वर । उभै दीन भय दीन ॥
पंग सूर उग्गै सजल । भयौ बीर प्रति मीन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ बन घन षग लग्गीय । हलिय चतुरंग सेन बर ॥
यों हल्लिय धर भार । नाव ज्यौं रीति वाय वर ॥
यों हल्ले द्रिगपाल । चंद हल्लै ज्यों धज धर ॥
बद्दर पवन प्रकार । ध्यान डुल्लति अगनि धर ॥
इह मंत चिंति चहुआन बर । मातुल घर उर षग्ग षिति ॥
मंगै जु पंग पहुमी सपति । सुबर बीर भारथ्थ जिति ॥ छं० ॥ १०८ ॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उकसाना ।

दूहा ॥ सु बिधि कीन सज्जिय सयन । ग्रहन चाइ चहुआन ॥
तो सुरपुर भंजै नहीं । इह आधार बिरान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

---

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है ।

पहुपंग सु भैभीत गति। वीर डंड सहि सूर॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर॥ छं० ॥११०॥
नव मति नव मति नव नृपति। नव सति नव रति मंद॥
चाहुआन सुरतान सों। फिरि किय पंग सु दंद॥ छं० ॥ १११ ॥
सत्त अरक्षि संकरह ज्यों। उठी वीर बर वेलि॥
वढ़न मतैं चहुआन रज। बर भारथ्य सु केलि॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर॥
अग्ग क्रंम क्रम धरिय। क्रंम पच्छा न उचारै॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ वंचै न सुधारै॥
वर वन बिहस्सि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजन सु अरि॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा॥ कूरलती सारस सवद। सुरसरीस परि कान॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले वीर रस पान॥ छं० ॥ ११४ ॥

पद्धरी॥ अन बुद्ध जुद्ध आबद्ध सूर। वर भिरत मत्त दीस करूर॥
बर बुद्धि जान आबुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध॥
छं० ॥ ११५ ॥

इकंत तमसि तेजं करूर। कढ्ढैति दंत गज मंत सूर॥
बज्जी सु बाह वाहंत वज्र। झिल्लैति वज्र सुगं सु रज्ज॥
छं० ॥ ११६ ॥

सामंत सूर पति तीन बाहु। चंप्योति पंग दल गिलन राहु॥
डह डहक वदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच्च भार॥
छं० ॥ ११७ ॥

कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहुपंग जंग॥

छिति मित्र छच छची न जान। नर लोइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन सूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर ॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रुक्कवन पंग बर ॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज षग्ग झर ॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सयन वर ॥
ध्रम्म जिहाज तिरंत। संत बैरष्ष बंधि भर ॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हल्लिय दिसह ॥
धनि सूर न्रप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल ॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह षल मित्र। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कौरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मद्धि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चढ्ढई। पऱ्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
सयमंत मयक्कत मोह गति। सुवर जुद्ध जम क्कत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्षन परवान ॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्षि परधान। थान कयमास मंच वर ॥
अति उतंग मंति चंग। नदिय नंदन बंदन बर ॥
अति उतंग मंचह। अभंग झिल्लै प्रहार कर ॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर ॥
दल द्दढ्ढि सु रिधि राजन बलिय। अभै भयंकर बल गरुअ ॥
सामंत सूर तिन मंच बर। सबर बीर लग्गौ हरुअ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्तताई रूई भर॥
रषि तोअर पाहार। वीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रट्ठौर। रष्षि लंगा वावारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उद्दिग बाह पगार वर॥
जज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर॥ छं०॥ १२४॥

जमुना पार करके दवपुर को दाहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्षिना देव फिरि॥
उतरि जमुन परि वीर। देवपुर सुनि षल षड्डी॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अड्डी॥
अगिवान कन्ह तोंअर वलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट विकट। सुवर बैर वर वीर षरि॥ छं०॥ १२५॥
दूहा॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं०॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड वर विकट। हक्क बज्जिय चावद्दिसि॥
पंग सेन संमूह। सूर कड्ढै संमुह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्षै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं०॥ १२७॥
दूहा॥ अढर ढरहिं अनमन्न महि। ढरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोऊ दीन सिर भार॥ छं०॥ १२८॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद। गहन उच्चरि संभरि सुर ॥
सबर सूर सामंत। लोह कढ़े बढ़े वर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क। बज्जि चावद्दिस झानं ॥
मुष मुष रूष अवलोकि। बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि। झमकि हथ्थ सिप्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन। दइ दुवाह उभ्भै दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं।
जमी जु गंज सेत जेत बज्जि सिज्जि सुभ्भरं ॥
कुलंम किंसु किंसु कांक कांति मंति संडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट वज्जयं।
मनो कि मद्द सद्द रद्द मद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लान ताम बद्दयं।
न्रपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धक्काई धक्काइ। मग्ग लीना षग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग। बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्षियै। पंग नन दिष्षि नयंनं ॥
भय भयान पिष्षियै। सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्ष मोह माया न तह। क्रोध कलह रस पिष्षियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम। लष्ष एक सर लष्षियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाइ अनी। करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रननंकहि वीर नफेरि सुरं । मनो वीर जगावत वीर उरं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

दुअ खामि दुहाइय सुष्प पढ़ै । झलकावति पग्गति हथ्थ कढ़ै ॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करै । सुनि सद्द निलंसिय प्रान डरै ॥
छं० ॥ १३५ ॥

नचि कंध कमंधन नंचि शिवा । शिव कै उर लग्गि रही न जिवा ॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी । सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गज षग्ग सु मग्गन यों रमके । सु वजें जनु झंझन के झमके ॥
पय वंधि जला जल दिव्य नचै । .... ॥ छं० ॥ १३७ ॥

परिरंभ अरंभति रंभ वरै । जिनके झर सीस दुझार झरै ॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै । तिन उप्पर देवन पुप्फ परै ॥
छं० ॥ १३८ ॥

उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी । पजरं तिन हंसन फेरि परी ॥
अथयौ रथ हंस सु हंस लियं । भर पच्चनि पंच सु सथ्थ लियं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

परि डेढ़ हजार तुरंग करी । नरयं भर और गनी न परी ॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ उभय सु पट भारथ परिग । हय गय नर भर वीय ॥
मरन अवस्था लोक के । जुग ए जीवन जीय ॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा ।

फिरिय कान्ह जनु कान्ह गिरि । भिरन भूप भर पंग ॥
जनु दव लग्गो चिन वनह । भरहर पंगिय जंग ॥ छं० ॥ १४२ ॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन ।

भुजंगी ॥ लरै सूर सामंत पंगं समानं । मनों डक्क वज्जै सु भूतं उभानं ॥
सुअं एक एकं प्रमानंत वाहै । मनों चच्चरीं डिंभरू डंड साहै ॥
छं० ॥ १४३ ॥

तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे । तिनं देषि कव्वी उपम्मा विचारे ॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी। मनों षेल होहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥

तुट्टै कधं बंधं उठें छिंछ रत्ती। कही चंद कव्वी उपम्मा सु रत्ती॥
तरं वेलिबट्ठी सु चट्ठीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥

पियै चौसठी रुद्रि गज्जं प्रहारं। घुटै घुंट लोही करै इत्यु न्यारं॥
मनों मोर वंध्यौति मोरंत अष्षै। फरस्सी कपूरं मनौं मुष्य नंषै॥
छं० ॥ १४६ ॥

तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै॥
प्रजा पंत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै पुब्ब वैरं फिरै सीस मग्गै॥
छं० ॥ १४७ ॥

उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै। जंपै झंपि केकी मनों मीन वज्जै॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी म्रनालंति षग्गी॥
छं० ॥ १४८ ॥

फुलै भान दिष्षै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया॥ सार प्रहारति सार झर। वरन विहसि दछिराज॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में। कथ्थ कहिग सिरताज॥
कथ्थ कहिग सिरताज। सार सम्हौ सहि बीरं॥
धार षग्ग उझझरी। मुष्य उझझरि नह नीरं॥
सवति सत्ति उज्जली। बीर बीरह लगि वारं॥
गजदंती विच्छुरै। सूर 'टुट्टै धर सारं॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त॥ सुहत पंग आभंग। रंग रवनी रवनंगन॥
मो हत अंगम काल। अंग अंगमै देव धन॥
सार धार देवत्त। देव दुज्जन दावानल॥
पंग सहायक सूर। वीर मारुत मारुत कल॥

(२) ए..टुंटै।

चहुआन वैर चिन्हंग दोउ । दुश्र सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में । नव निसान जुड्ड पनी ॥ छं० ॥ १५१ ॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह ।

भुजंगी ॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं । मनो सूर रूप रासि उग्यौति सारं ॥
महा तेज मुष रत्त द्रग वीर लज्जै । भयं छंडि भूपाल अलि थान हल्लै ॥
छं० ॥ १५२ ॥

मनों जोगमाया जुगं जुड्ड तारं । झुक्यौ पंग पंगं सु लभ्भै न पारं ॥
न जानं न जानं न जानंत सेनं । तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तितंची तितंची तितंची प्रकारं । मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं ॥
दिपै भूमि नाहीं अनी सेन देषै । घनं वद्दलं मद्धि प्रन्हं विसेषै ॥
छं० ॥ १५४ ॥

तजै तारुनी तार अह्कार तारं । इसे सार सों सार वज्जै करारं ॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं । रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं ॥
छं० ॥ १५५ ॥

महावीर वंके भयं ढिग्ग दूरं । तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं ॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे । मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रसेघे ॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्द तोन वंधे सुरं तीन जोधं । तिनं वालुकी बुद्धि अह्मा विवोधं ॥
छं० ॥ १५७ ॥

साटक ॥ सासोधं प्रहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं ॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं ॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं ॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं ॥ छं० ॥ १५८ ॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय नर थर अरुरि । सरुरि सज्जिय सनाह वर ॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल । सिंभ विभ्भूत धरा धर ॥

सुकर मध्य प्रतिबिंब । अग्नि मद्धे सु सांत सधि ॥

....

पहुपंग सेन सजि सुक्रित वर । वजि निसान उन मान रिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ । धीर छंडि वीरह तपन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना ।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुवर । ग्रह न रहैं गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगसै । सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज । बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंत्री वर संभऱ्यौ । राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुअ गुर घरिय । प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
हय सुलतान सु जान । राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना ।

कवित्त ॥ जमुन विहड़ गहि विकट । निकट रोकै पहुपंगं ॥
सार धार चहुआन । पान बंधें प्रति जंगं ॥
सुनत सिद्धि विधि समति । लोह कढ्यौ प्रति दैवै ॥
मवन मत्त चहुआन । राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर । गहिग ठौर बंकट करस ॥
न्टप राज कमंधन सुनि भए । अंमर कै अंमर अरस ॥छं०॥१६१॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढ्ढुरराइ बल । तिन बल कन्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै । तोंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वीर धर्म के लिये लड़ेंगे ।

दूहा ॥ हम बंधे बर तेक बर । तूं मुक्के धर राज ॥

जिय अंगमै सु अप्पनौ। आन पुत्त किं काज॥ छं०॥ १६३॥

कवित्त॥ कहै सूर सामंत। सुनहि वर पुहमि ईस वर॥
आप अंगमै सु जीव। पुत्त बंधहति भान वर॥
जोग जोइ अंगमै। नेह नारी नह रष्षै॥
वीर राग आनंद। राज तिन हत्त विसष्षै॥
खिष्पवै सोइ जीवत्त वर। सुहत्त वत्त खिष्पै न वर॥
तिन काज सूर सामंत वर। राज वरजि वरजियति गुर॥
छं०॥ १६४॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना।

दूहा॥ गुरु अत गुरु जानी न विधि। रिधि रष्पन कमधज्ज॥
तिहित वीर पहुपंग सुनि। मतौ मत्ति कमधज्ज॥ छं०॥ १६५॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे।

कवित्त॥ व्यंजं वरन कवित्त। जंपि कन्हा चहुआनं॥
वर रट्ठौर नरिंद। राव निड्डुर उनमानं॥
गरुअ गब्ब गहिलोत। मतै कैमासह सूरं॥
मतै डिट्ठ कैमास। चंद डिट्ठ कलहति सूरं॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह वलि। रेनराम रावत्त गुर॥
सामंत सूर सामंत गति। कौन वीर बंधैति धुर॥ छं०॥ १६६॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन।

दूहा॥ तऊ सुमत इन मत्त किय। भयन तजिय भय राज॥
पंगानी डर सुजल मधि। भए सतपत्र विराज॥ छं०॥ १६७॥
सुवर वीर सतपत्र छर। पंग नीर प्रति बद्ध॥
सुवर वीर प्रथिराज कौ। अंग अहत न चद्ध॥ छं०॥ १६८॥

गाथा॥ जंमुक्का पहुपंगं। तेछचीय सूर वीराई॥
माहं चवथि प्रमानं। साछिप्पीय लोययं सव्वं॥ छं०॥ १६९॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना।

जंबंघा चव्या चहुआनं। षग्गं सेनाय पंगयं दलयं ॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं ॥ छं० ॥ १७० ॥

कवित्त ॥ स्वामि भ्रम्म रत्ते। सुमंत लग्गै असमानं ॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस पानं ॥
हथ्थ थकत अस कारहि। मनति अस सों उच्चारहिं ॥
.... । .... ॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कऱ्यौ घट्ट गरुअत्त जुर ॥
इन परत स्नूर सामंत रिन। लऱ्यौ न को फिरि बहुरि भर ॥छं०॥१७१॥

दूहा ॥ बंदिय बल जिन निय न्रपति। न्रपन रुजाद उलंघि ॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाघा ॥ संभरि बत्त जु पंग अवन्नं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं ॥
है गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं ॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कषाइत नेनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गेनं ॥
है दल पैदल गैदल गढ्ढं। स्नूर सनाह सनाह सबढ्ढं ॥ छं० ॥१७४॥
यों रच्चै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं ॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं ॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन षग्गं। सो दिष्षं चियलोक न मग्गं ॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अग्र नन डढ्ढति भूपं ॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि ॥
रत्ते नेन कषाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं ॥
छं० ॥ १७७ ॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटी नट रंभ प्रकारं ॥
अग्गें होइ गिवान मुनारं। बंद्या ज्यौं बर कोटति सारं ॥
छं० ॥ १७८ ॥
ढाहै गाहै साहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं ॥
उट्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत मेनं ॥ छं० ॥ १७९ ॥

भपै दान प्रोहित्त राजं। अप्पै सेर सुमेरति साजं॥
यों कीनी धर पंगति सावं। जै जै वाय सु वायति नावं॥
छं०॥ १८०॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं। बूड़त नाव नीर गुन रंगं॥
यों धाए पहुपंग सयंनं। मंस काज दीपी उनमंनं॥
छं०॥ १८१॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली। वाय विषंम पात वहु थल्ली॥
एहि प्रकार चव्यौ चित राजं। कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं॥
छं०॥ १८२॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना।

दूहा॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनीं। दल हल्लिय पहुपंग॥
मानो उत्तर वाय ते। चावद्दिसा विभंग॥ छं०॥ १८३॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

कवित्त॥ संमुह सेन प्रचंड। पंग सज्जी चतुरंगनि॥
ज्यौं उग्गै दृप सूर। वैर करि तपै कमोदनि॥
सुवर सोभ कविचंद। हितू चक्रवाक प्रकारं॥
वरै विरह विरहनी। हेत उड़गन ससि सारं॥
सा वैर नैर नारिय निकट। विकट कंत विछुरहि वधुअ॥
पहुपंग राव राजन वली। सजी सेन सेनह सु भुअ॥ छं०॥ १८४॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना।

कुंडलिया॥ वंधि कविज्जै बीय वर। दिसि दच्छिन अरु पुब्ब॥
सुवर वीर सम्हौ भिरिग। करि भारथ्थ अपुब्ब॥
करि भारथ्थ अपुब्ब। कोन अंगम षल षोलै॥
मार मार उच्चारि। असिर अवसानति डोलै॥
सो भग्गा घट सेन। माग आकारति संध्यौ॥
चीय लच्छि तजि मोह। मरन केवल मग वंध्यौ॥ छं०॥ १८५॥

दूहा ॥ संभरि जुद्ध अरुद्ध गति । बर विरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी । सव संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ सुवर बीर आरुहिय । बीर हक्कै चावद्दिसि ॥
मत्त सार बरषंत । बीर नचहंत मंत कसि ॥
बंकी असि के सुद्ध । केय लंबी उब्भारैं ॥
घात घंभ निरघात । जानि झल्लरि झल्लारै ॥
बुट्टंत रस न संनाह पर । अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारथ्थ यों । बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम ।

परिग सुभर नारेन । रूप नर रष्षि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार । नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त । परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा । सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बारूड़ हरिय । सुकति मग्ग षोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय । ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल । बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी । भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध । कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ । ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते । जुद्ध घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल । सुबर बीर संमर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु ।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह । सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज । फिरि मंडी धर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि । डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग । कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि वर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद घरि। जमुन विहड़ तजि वंक ॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कट्टे क्रमं तंति सत्तं। रनं निर्वसीयं निवासीय तत्तं॥
छिती छत्र भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस वरस तप करै। मुगति लभ्भै न सु पारं।
छिनक पग्ग मग अंग। जंग सोई छत छंडै ॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै वहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सव नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सव। सुनहु सूर कविचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

(१) "संगी को" पाठ है।

अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिख्यते।

(छप्पनवां समय।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि। जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चिचंगी उप्पर तमकि। चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चित्रंग देस। षढ़ि चल्यौ स ग्गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान। कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥
धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अँधेर। उरझै कुरंग प्रज्जरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रहिय तक्कि। अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥
वज्जै निसान सुर मान सद्द। सुत ब्रह्म रीझि कट्टे ति हद्द ॥
विप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर। नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस। पंग आवाज वीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद। दंद भंजन सु अरिन धर ॥
वजि निसान घुम्मरिय। चित्त अंकुरिय वीर रस ॥
मोह कोह छिति छांड़। मुक्कि मंड्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल। चलैं हथ्थ उर विप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रावर समर। भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरबारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन सुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष सुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवनं जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अरत्त कारन मिदं। सुप्राय सुप्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुरुक्क उचार ॥
जहति प्रान पवनह रमे। सुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिह्वारं ॥
स्रुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिह्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनायं, रुक्कि सबारं, अनहद्दं ॥
सुरक्रम्म सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं, झिलिमिलि संतं, नन भुल्लि जंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, संक्रित वीधं, सब्बानं ॥

(१) ए.-प्रकारिय। (२) ए.-मुषे।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्जानं॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर मुष्यय वत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रसंतं, सुनि मोती ॥
पह महयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय। बल अम्मह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर। ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में। घरी एक दुप थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ। मति विय वीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर। तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि वसहि। कोठा सत्तरि दोइ ॥
तंत्त असिय रावर समर। मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे। चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर। मंत्रिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चित्रंगपति। बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर। ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारौ लज्जा सु जल। विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा। आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संझ मान। भ्रमि जाइ काल रप्पै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रहमंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संझ्या प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप क्कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। कै टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥छं०॥२७॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक्क कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिलोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-मनत ।
* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं ।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छै फिरि ग्यान । कनक केवल रघुवंसी ॥
सोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग शृंगार कव । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

घोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि वत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुव दष्षिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्पनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिपि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुप दुष्प भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरव पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि हन्न धरं ॥
तिहि पंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । वर भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नील वरन्नह उघ्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ वसै मनयं । तिय दोष वढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं [1]हररं । तहां पीतह रंग सु हन्न धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति क्रम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुररं ।

नयरत्ति निरत्तयं धुंमरियं। नभ अस्सि रहै तन घुम्मरियं॥
छं० ॥ ३८॥
पच्छिम दिसि नील बरन्न करं। तहां प्रात पुरष्प सजै समरं॥
दिस बायवयं बनि कृष्ण रँगं। दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं॥
छं० ॥ ३९॥
दिसि दष्षिन उज्जल वन्न धरं। सजि सातुक मत्ति ततं अमरं॥
ईसायन यं रँग सुक्कसयं। उपजै सु उचाट मनं नभयं॥
छं० ॥ ४०॥
ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं। घर मद्धि अनेक मनं सुरयं॥
मन हथ्थ करै प्रथमं सतुषं। हुअ निर्भरयं तन वद्धि सुषं॥
छं० ॥ ४१॥
जिम दीपक बात बसं हलयं। इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं॥
मन हथ्थ भयें सब हथ्थ भयौ। प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ॥
छं० ॥ ४२॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त॥ सुगति कठिन मारग्ग। क्रम्म छुट्टै न पंच बर॥
मन लिप्पै मन छिपै मन। सु अवतरै घरघ्घर॥
मन बंधै क्रम राज। मन सु क्रम जमय छुड़ावै॥
मन साषी सुष दुष्ष। मनइ जावै मन आवै॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि। गुर उपदेसह संचरै॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै। समर सिंघ इम उच्चरै॥छं०॥४३॥
दूहा॥ समर सिंह भारथ्थ में। जोग इहै गुन जान॥
सो निकस्यौ भर समर तें। को जिन करौ गुमान॥ छं०॥ ४४॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त॥ तब ढुंढारह राइ। मत्त मन बत्त सु कथ्थिय॥
समर सिंघ रावरह। समर साहस गति पथ्थिय॥
तुम बीरन गंजागि। भूप साहस रस पाइय॥
भारथ्था रजपूत। स्वामि आचारा धाइय॥

आचार धार भरथ्थ मति। तत्त वत्त जानौ जुगति ॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति ॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा ॥ कहै मंत्रि भर समर सुनि। सरभर करि संग्राम ॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम ॥ छं० ॥ ४६ ॥

रावल जी का उत्तर देना।

कहि मंत्री रावर समर। सुनि मंत्री वर वेंन ॥
तमकि तेग तन तोक बँधि। करि रत्ते वर नेंन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥ ससिर रित्त रित राजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रवंधि ॥
तपति सूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा ॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंत्री सजन सु इष्ट ॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्नपति। सुमति सुमंच अदिष्ट ॥ छं० ॥ ४९ ॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त ॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरुडहु रु नगन गन ॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्क रु कूट घन ॥
निसचर घन काली सु। पंच पंडव रु लष्ष अरि ॥
तारक चंद अनेक। राह चंपै सु वसन जुरि ॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै ॥
चित्रंग राव रावर कहै। अतत मंत मंत्री कहै ॥ छं० ॥ ५० ॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त ॥ स्वामि बचन सुनि सिंह। जूह रतिबाह विचारिय ॥
सबला सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय ॥
जं जानैं सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय ॥

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निघ्घटै। हय गय हय संचै रव न ॥
भंजै न अम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सद्दै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उठ्ठहि सु संच जपि ॥
धवल दिव्य सुनि कन्न। धवल कढ्ढै धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै वरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सुनिय मंच बर मंच। गुझ्झ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ कित्ति। कित्ति भंजियै तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्त्रिमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन मुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवौ दुष्प जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग वद्द निबंधि सनाह कसी। उर नद्द चिषंडिय बद्दर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बजि वीर अनेक प्रकार सुरं। हर चूर चलंकति गंग वरं।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं। सु उलट्टति लट्टति अद्द गजं॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहनाइ नफेरि अनेक सुरं। वर बज्जि छतीस निसान घुरं॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं। जम तेज सु बंधन निद्धुरयं॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी। तिन दिप्पत पंति समुद्द लजी॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं। पहुपंड निसान दिसा कु रसं॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे। पटतार मनों कठतार बजे॥
घन घुघ्घर पष्षर बज्जि करी। सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन ॥ विधि विनान चतुरंग ति, सज्जि रहहि हय।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय॥
उवौ छत्र नयजानिय, मानिय पंग न्रिय।
कढ्ढि लोह वढ्ढि कोह, समाहिरु वीर वय॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन।

रसावला॥ कटै लोह सारं, विहथ्यंति क्षारं। तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सद्दूरं पचारं। जगी जूक वारं, उड्डें छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं। कमद्धं निनारं, रुधिं छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६४ ॥

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है। किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है। अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है। पढ़ते समय हं+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा। इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है। अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है।

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग क्कारं। अपारंत सारं, वहै दिव्य भारं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

रसं वीर सारं, पती देव पारं। सुसंती डकारं, चवट्ठी सु भारं ॥
छं० ॥ ६६ ॥

रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उसापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं ॥
*गहै सुत्ति तथ्यं, उछारें विहथ्यं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा ॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग ॥
यों उरझै सुरझै सुझुअ। तिहुंपुर मंडन जंग ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त ॥ हक्कि संगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर ॥
रत्तें रेन विसाल। तेग वंधी दल दुत्तर ॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता ॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता ॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग ॥
सारथ्थ किण्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

भुजंगी ॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी ॥
फिरै पष्परं भार कूदै उतंगा। मनों वायपूतं धरै द्रोन अंगा ॥
छं० ॥ ७० ॥

जसं पंग जद्यौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी ॥
चमक्कंत लालं विसालंत सोहै। उभै चंद वीयं घटा जानि सोहै ॥
छं० ॥ ७१ ॥

रवी रथ्थ जोरें सु भोंरै भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै ॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से बिलकुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों वाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी॥
छं० ॥ ७२ ॥
डमं सीस डोलं चिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर॥
कन्ह जैत वर वीर। भान नारेन सिंघ हर॥
पल्हदेव न्रप सोम। अमर न्रप व्यंटि जानि जम॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई स्रम॥
वंकम्म वीर बलिभद्र वर। झार तरवारनि अधर झर॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार विभार झर॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा ॥ वार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
समुप सूर संमुह लरै। मुकति सु लूटन रासि॥ ७५ ॥
नद पारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध वर वीर॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ पग पोलि विहथ्थ सु वथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग सुझार झरें॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी ॥ सुमनो जल वारधि पंति घनी॥
छं० ॥ ७७ ॥
फुटि पग्ग किरच्च जुझार झरं। मनु झिंगन भद्दव रेनि परं॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। विरझाइन धाइन सूर नए॥
छं० ॥ ७८ ॥
घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रसूनय बंधु पुजै॥
विफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै। बहु सूर उचीरन से उचरें॥
छं० ॥ ७९ ॥

छिन डोलन पिंड जो जाइ कही। दिपि वीर भरं लपटाइ तहीं ॥
होय स्वर मत्तावल के बरकों। इमें मद सोषन के सुर कों ॥
छं० ॥ ८० ॥

करि भंजि कुंभस्थल मग्ग लसं। कवलथ्यलवें झर सें करसी ॥
रुधिरं निंद्र द्रवै बाठ सोभ। नलु इ'द्रवधू चढ़ि पुट्ठि लगै ॥
छं० ॥ ८१ ॥

उपमा पलयं चलयों न कही। सेंधु सरसी जु सलुह सही ॥
गज भंजि कुंभस्थल मग्ग दसैं। सु लचै जनु विज्जुल बद्दल सें ॥
छं० ॥ ८२ ॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन मध्य महावत झूल परी ॥
इन भेपय गज्जय स्यान छुरं। दल कंधय डुल्लि किलास वरं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

गज रागति पत्तति मध्य गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं ॥
गजमुत्ति लगै पग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव चकै ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सुठि चंपि द्रढं करयान गसी। निचुरें मनु नीर सु मोतिग सी ॥
छं० ८५ ॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भल्लिय ॥
आहुट्ठां सब्भ्राम। परिय द्वादस चमरल्लिय ॥
पंग समानन तक्कि। भूमि लंघत षग वग्गिय ॥
बीरा रस बलवंड। हथ्थ दच्छिन झर लग्गिय ॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निझरि परत ॥
षुरतार षरें हय लुटि धरनि। षलन षलक षग्गह झरत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

पद्धरी ॥ झर करत विद्दुल भर लोह सार। छुट्टंत नाल उड्डत पहार ॥
उट्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुधि गूद मान ॥ छं० ॥ ८७ ॥
दंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत ॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह सोथ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कामधज्ज सेन आहुट्ट ऐम। राहु अरु केत रवि सोम जेम ॥
सुज्झै न झंपि नह सब्द कान। भर रैंन दीह रच्छत्त भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चट्टे जु समर सुष समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रह्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति हुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुवर। न्प भारथ्थ करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कट्ठि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र। सस्त्र वज्जै सुमंत स्मर ॥
भय अभ्भित मय राम। वीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत साईं सु। मत्त लग्गे असमानं ॥
इतत जुद्ध आरुद्ध। वीर मत्ते रस रानं ॥
हय थक्कत श्रम करै। मन न श्रम सौं उच्चरैं ॥
गान दगध सौं कथ्थ। गुरु न मंचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट। कन्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो विपत। लन्यौ न को रवि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। मुकत्ती मुकत्ती मुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं०॥ ९६॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा॥ भयति भरवि अस सयन भर। गयनति गुर गुर गाज॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज॥ छं०॥ ९७॥
सार सार सज्जे सु दृत। सु दृत वचन सुनि काज॥
सो सिर मंडिय लील वर। जित छिति छित्ती ध्राज॥ छं०॥ ९८॥
कल सु छित्त मत्तह सु छित। रषि न्रप करन उपाय॥
भर भारथ्थति सुंच तह। रहै सु जीव न चाय॥ छं०॥ ९९॥

कवित्त॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट॥
[2]बीच घत्त सो सड्ढि। षग्ग बल रुक्कि भंजि थट॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभस्यौ नट॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट॥
प्राक्रम्म पिष्षि अस्सेव सुर। सीस कज्ज अमि धर जट॥
छं०॥ १००॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर॥
द्वादस अग रावर परत। न्रिप कढि निठु करूर॥ छं०॥ १०१॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी॥ कढि सेन समर अस मभ्भि सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तप्पि सब षग्ग देन॥
छं०॥ १०२॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार॥

---

(१) ए.-कढ्यौ। (२) ए. कृ. को.-बीस वटत।

झम झमी तेग वर तड़िग रूप । वाहेवि हथ्थ करि आन भूप ॥
छं० ॥ १०३ ॥

ढल मली ढाल गज फिरति लून । नग पंति दंति दीसै सदून ॥
तरफरहि लुथ्यि घट घाय धुक्कि । उच्छरें मीन जल जालि सुक्कि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

आघात घात घट भंग कीन । वर भड्ग सूर तन छीन छीन ॥
परि समर सुभर रषि समर रूप । ढुंढयौ षेत सह पंग भूप ॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना ।

दूहा ॥ गरूअत्तन तन हरूअ मय । घाट कुघाट सु कीन ॥
समर सूर सोरह परिग । सुगति मग्ग जस लीन ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम ।

कवित्त ॥ कान्ह जैत जैसिंघ । पंच चंपे पंचाइन ॥
सोम सूर सामला । नरन नीरह नारायन ॥
रूप राम रन सिंह । देव दुज्जन दावा नल ॥
अमर समर सब जित्ति । समर सध्यौ साईं छल ॥
वैकुंठ वट्ट जिन सज्झयौ । रषि सांईं जिन सस्त्र बल ॥
माहेस महनसी महन वर । महन रंभि जित्यौ सकल ॥ छं० ॥ १०७ ॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना ।

दूहा ॥ कन्ह भतीज उठाय लिय । हय नंष्यौ वर अग्ग ॥
पंग ढूंढ़ि भारथ्थ भर । सह मिल्यौ जुरि हग्ग ॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सज्झे समर वर । बाल [1]सुयंबर लोग ॥
जिन वर वर उतकंठ भय । पानि भरै संजोग ॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर ।

अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्तावनवां समय ।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना ।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन । तपै अति तेज षग्ग वर ॥
चंपि देस सब सीम । गंजि अरि मिलय धद्धर ॥
रयन कुमर अति तेज । रोहि हय पिट्ठ विसंसं ॥
साथ राव चामंड । करै कलि क्रित्ति असंमं ॥
सेवास वास गंजै द्रुगम । नेह नेह वड्डै अनत ॥
मातुलह नेह भानेज पर । भागनेय मातुल सुरत ॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि । इक्क आसन आस्रम्महि ॥
[1]बीरा नह विहार । भार जल्ल राह सुरम्महि ॥
भागनेय मातुलह । जानि अति प्रीति सु उब्भर ॥
चिंति चंदपुंडीर । कही प्रति राज हित्त भर ॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर । अप्प नेह वंध्यौ असम ॥
जानौ सु क्रत्य कारनंह कलि । कलै अग्ग धरनिय विसम ॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चिंत्ति नत्त पुंडीर चित । अप्प सु गुन गंभीर ॥
समय काज प्रथिराज न्रप । हिय न प्रगट्टिय हीर ॥ छं० ॥ ३ ॥
दल बद्दल भर भीर भरि । चवत सूर सुर छंद ॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि । क्रीड़त ईस नरिंद ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना ।

---

(१) ए. कृ. को.-त्रारी । (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह ।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर । आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रवि विमल अप्प उद्योत आन। प्राचीय जमल [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूढ़ राज । संझौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज वर षेल मंडि । संचील अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

प्रज्जूनराव वर [2]चंद्रसेन । विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वास तेन । लुष अग्ग कन्ह निढ्ढुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझाल नरिंद । दस निकट रंग सोलेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विहुर सु छंद । तिहि भत्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान । उघरिय धुंध धरनीय थान ॥
सिट्टै सु वाय चर चक्र होत । दष्षिनह वास अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आरस स्वामि किन्नौ सहूर । बहुरे सु सकल सव भर सपूर ॥
फट्टे व [5]धूर थट्टे सु ताप । उघऱ्यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्से घोर घन गरुअ गुंज । दिस दिसा उमड़ि बद्दल्न पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल हल्ल राज । क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल । विहुरेय सुम्भगन प्रातकाल ॥
ठट्ठौ सु आइ दीवान राज । किन्नौ सु हुकम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) मो.-कट्टिय । (२) ए. कृ. को.-सेव ।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेव । (४) मो.-विहुरै ।
(५) मो.-सूर । (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज" ।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार वहु । सजे सूर भर साज ॥
सजे वीर दुंदुभि वजे । हदफ पेखि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज । सज्जि वर यट्ट वाज गज ॥
मंत्रि वोलि कयमास । राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड वर जैत । कन्ह निढ्ढुर नर नाहं ॥
सलप लपन वघ्घेल । नरिंद विंका पग वाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि । वान विविध वाहंत वर ॥
वाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित । सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना ।

स्वान माल हथ्थान । जोर घेरे पवास रज ॥
वेढ़ि कूट कंठेर । वग्घ वायात कोरि हर ॥
इक्क वत्त कहति वहि । वंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
वहुरेव सूर मुष अथ्थमित । जूथ जितंतित तुंग वर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि । घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना ।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग । आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर वात जल जात उर्ढ । घन पूरि सजल थल प्रथम वुट्ठि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम वद्दल विसाल । विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उभ्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प । संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

कीलंत कोखि चढ़ि अप्प राज । सामंत सूर सव सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट । मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्थमन । (२) ए. कृ. को.-उपट्ट ।

बंध्यौ सु पंभ संकर गुराह। मानै न सह उनमत्त थाह॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय श्रप्प। धुन्निय सु पंभ संकर सु दप्प॥
छं० ॥ १९ ॥
उप्पट्यौ श्रप्प चल्यौ विराह। मानै न श्रलिय अंकुस दुवाह॥
ढाहंत मट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप॥ छं० ॥ २० ॥
ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार आहार हक्क॥
फारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सव्वह हँकार॥
छं० ॥ २१ ॥
पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु [1]दुयस चौपय प्रमान॥
मदगंध अंध सुज्झै न राह। सनमुष्प मिलिग चामंड ता.॥
छं० ॥ २२ ॥
हाहिक्क वेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु देह॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि संड सनमुष्प धाइ॥
छं० ॥ २३ ॥
चामंड देषि आवंत गज्ज। परछै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज॥
उप्पारि संग है संष देस। उक्कसिय कंध श्रद्दह असेस॥
छं० ॥ २४ ॥
लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार॥
ढहि पच्यौ संत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस॥
छं० ॥ २५ ॥
चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्थ रयनं कुमार॥
संभलिय वत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त अप्पह असेस॥
छं० ॥ २६ ॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज॥
चिंति वत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुज्झ रज॥

(१) ए. कृ.को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह कातिन्न कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । सुष्प अग्गे अम्भारिय ॥
वेरी सु आनि दीनि न्त्रपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । नतरु पंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

षिझ्यौ वीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । काल्हि वंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तव देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तवै ॥
इहि काज कीन अव अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अवै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड म सारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ वेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति रापन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि बर अग्र । वीर बाहै कर वज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । अत्त इहैं ध्रम्म न होइय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि दोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-काढिन ।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म। रहै दरबार अप्प वर ॥
आषेटक दिल्लिय। नरेस षेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस। राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै। हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल। स्वामि भ्रम रष्षै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति वट्टै बिसह। [1]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन।

सुर गुर वासर सेष। घटिय दसमीय देव दिन ॥
पुव्व पाट भद्दों सु गाढ़। घन वट्ट कोक मन ॥
गह्कि मोर दद्दुरनि। रोर वद्दर बगपंतिय ॥
वन दिसान गद्दरान। चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्रप। कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[2]घन संकुस तुछ सथ्थे सयन। चित्त मित्त दुअ [3]पंच वर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम। षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना।

राज चित्त कैमास। चित्त कैमास [4]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल। कमल चित्त वर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु। भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ। लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं। गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुअ। वेसव नंजन हत्त ॥
बीन जान रस बनसु घर। राजन रष्पिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को. बंधे। (२) ए. को.-छन।
(३) ए. कृ. को.-घन। (४) मो.-दाहिम्म।

दिव्य दास रष्यिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । ग्रह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुषं समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रंग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अँग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्यि । सुमन [3]मंती अरु संमर ॥
सम दिट्ठि उट्ठि दाहिम्म दुअ । जग्गि मार उम्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परट्ठिय [4]काजक्रत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ नव जोवन शृंगार करि । निकरि गवष्यह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥
करनाटी दासी सुवर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिष्ट उरझिझय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥
करनाटी कैमास मन । राजन नष्थि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटीं सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गाथा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गे मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) मो.."माहिल साली सु सूव रँग" । (२) ए. कृ. को.-सुजन ।
(३) मो.-मतिनि । (४) मो.-काजक ।

छिय दाहिम्म केविकत काजं। उद्यौ छूर अस्त मजि साजं॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ। मेन बान गुन ग्यान वियत्तौ॥ छं० ॥५०॥

छिन अंदर भीतर आवासं। नन धीरज्ज हंस रहै तासं॥
नठी मत्ति रति गत्ति उदासं। अविगत देव काल निसि नासं॥
छं० ॥ ५१ ॥

घटिय पंच पल वीस सबैं कल। वित्तिव निसा उसास समुक्कल॥
अति झंपत करनाटिय [1]जरं। काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास। प्रिष्ठ देपत मन लग्गो॥
कलमलि चित्त सुहित्त। मयन पूरन जुरि जग्गो॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म। तलप अलपं मन किन्नौ॥
बोलि अप्प सो दासि। काम कारन हित दिन्नौ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस। जौ हम आनैं चित्त हर॥
सम चली दासि कैमास दिसि। जंपिय भेव सनेह वर॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि वच। निज संचरि सय सुद्ध॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति। काल निसा कत जिद्ध॥ छं० ॥५४॥
सहचरि वर मोकल्लि कैं। तकै वट्ट कैमास॥
सम समद्धि सज्जें रह्यौ। करि करि हिये विलास॥ छं० ॥ ५५ ॥
निसि भद्दव कद्दव कहल। आषेटक प्रथिराज॥
दाहिम्मौ दहि काम रत। काल रैनि कै काज॥ छं० ॥ ५६ ॥
दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय। चिय अंबर आछादि॥
दासिय अंतर अप्प हुअ। [3]दरन स पिथ्यौ सादि॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-कुंजर।

(२) ए. कृ. को.-"लै अप्प राज मंत्री सरिस"। (३) मो.-दरसन।

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन अतिमा, रामा रजे साभती ॥
*नित्ती रंकरि काम वाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती ।
सो मंची कयमास मास विषया, दैवी विचित्रा गती ॥ छं० ॥ ५८ ॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना ।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास । दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि । काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास । जानि चित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लेस । कहा सुर वास सु भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चीया वसन । चढ्यौ अप्प सिढ़िय सुमन ॥
इष्यौ सु द्वार इंछिनि तड़ित । नर सु [2]पिक्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति वचन ।

सुक चरित्र दासिय परषि । कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै । हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय । एक्क आचिज्ज परष्षिय ॥
बीर भजन म्रगमदक । घाय कग्गं तन दिष्षिय ॥
बचन पंषि संभरै । बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि । भेद सुक कों किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अथ्थ सुझ्झै नहीं । बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास कम्म गहि दासि भरि । जेम कम्म सम्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना ।

---

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।
(१) ए. कृ. को.-कामन मन । (२) ए. कृ. को-पिट्ट ।

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम दुक॥
तंबुल्लिय सषि साप। पट्ट रागनिय निकट सिक॥
थाय घात दिय पूर। अमिय पिय किय अति अंतह॥
अति सरोस पिक पानि। सु नप लिषि सषि कर कंतह॥
असि असन वारि मग्गह परिय। अवधि दीन दो घरिय कह॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जहँ॥
छं० ॥ ६२ ॥

रोला ॥ *वर चढ्ढिय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि हय संदेस चली वोलह अवधारिय॥
दीनौ संग पवारि उभै तव चढ़ि चतुरंगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई वाली अनुरंगं॥ छं० ॥ ६३ ॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त ॥ विमल वग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुघ्घर॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि अंम्यौति संसं[1]तर॥
मंडे वासुर मगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन॥
उभय सत्त हय तथ्य। ताम विश्राम [2]श्राम तन॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुअ। अरिय सेज न्टप सयन किय॥
छुतौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिघ्घि जिय॥
छं० ॥ ६४ ॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विश्राम नींद भर॥
जाम देव वलिभद्र। वरन चहुआन संघहर॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं॥

---

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ " वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय " पाठ है।

(१) र. क्र. को.-समंतर। (२) ए. क्र. को.-श्रम।

(३) ए. क्र. को.-न्रिम्मय।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ ।
दासिय दष्षिन हथ्थ सु वंचि दिषाययौ ॥
जिन वाना वलवान रोस रस दाहयौ ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ ॥ छं० ॥ ७४ ॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्पयं ॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं ॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी ॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ वंचि वीर कग्गद चरह । तरकि तोन कर सज्ज ॥
निर तिन [1]कह दीनो न्रपति । सब सामंतन लज्ज ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि ॥
अगनि दभ्भ कैमास कौं। वीर बरन्निय पानि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस मद्धि रसकंत ॥
दनुकि देव गंध्रव्व जछि। [2]दासी निसि विलसंत ॥ छं० ॥ ७८ ॥

† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्रपत्ति न जानयौ।
दुहु विचहू इक दासिय संग समानयौ ॥
इंद नरिंद फुनिंदर अथ्थि समानयौ।
घरह घरी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ रति पति मुच्छि आलुझ्झि तन। घन घुम्यौ चिहुँ पास ॥
पानिन अंघन संचरै। महल कहल कैमास ॥ छं० ॥ ८० ॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिषाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म ॥

---

(१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।

* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २२ मात्रा और तीन जमक होते हैं। † रासा।

बर मंत्री प्रथिराज कह्वि। दइ दुवाह वर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्षि रमनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चिच दिषात सु चिंचनी। मोन विलग्गिय वाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चिच देष्यौ दुचित। सलष सलष्षिय नैन ॥
हृदै सुयस....सुंदरिय। दुअ थप यंपिय वैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन कित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरूचि दान विधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

विजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अद्धी सुझ्झै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं दृत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

वाण वेधित-हृदय कैमास का मरण

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि प ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थै बुझ्झिय,ग नर ॥
कवित्त ॥ भरिग वान चहुआन। जानि दुश्ं इक्क सर ॥
दिठ्ठ मुठ्ठि रस डुलिग। चुक्कि निकरि...
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। मुठि पामार पचार्‍यौ ॥
बानि दृत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि अषार्‍यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

---

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

यों पऱ्यौ कैमास आवास तें। जालि [1]निसानन छिचपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो। दुज्जन दुभनोपि पिष्पि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं। किंकिनो दुष्य दुष्याई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन।

श्लोक ॥ भवित्यवं भवित्यवं। ललाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं। मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति। शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप। प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत दृष्ष बद्दर विरूर। पद्दु मुष्प मंच बहु ढुक्कि क्रूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि। मैं मंत संढ जनु तंव पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

वर गजिय व्योम रजि इंद्रवान। गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल। गुन थकित जालि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पत्र। मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तत्र ॥
.... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि। षोदि पट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि। राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि। पारि परिहार सुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि। मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप। तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
वाराह बघ्घ वाराह बिच। सु बस्सि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान. छित्त पति "
(२) मो.-गरह रत्तर।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक ॥ कन्हं कायक कांति कंत वहलं, चामंडतिय दावरं ॥
हरसिंघं बिय बाल वालय व्रतं, रामंच सखयं व्रतं ॥
[1]द्वै कंता बड़ गुज्जरं च कनक्, परद्दारते विम्मुहा ॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता ॥ छं० ॥ ९८॥

कवित्त ॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी ॥
जिन मंची कैमास। वंध बंध्यौ पंगानी ॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ घट वारं ॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ ॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची अब्बहन तुअ ॥ छं० ॥ ९९॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा ॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग ॥
पंच तत्त सरसें सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग ॥ छं० ॥ १०० ॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद ॥
साम प्रगट बर कंधनह। बर [3]प्रमाद सुष इंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात ॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कहिग सु प्रात ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षनि गड्यौ तिहि गबषनह। तजि गौषति गई दासि ॥
षनि गड्यौ कैमास बर। कित दै दासी भासि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान ॥
संकर रस संकर न्रपति। बर दंपति चहुआन ॥ छं० ॥ १०४ ॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास ॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत बर। पुच्छिय इंछिनि भास ॥ छं० ॥ १०५ ॥

---

(१) मो.-है। (२) मो.-“ जिनव वंधी वहु वारं ”।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपोद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्तौ। दासी प्रनह अमंत सु रत्तौ ॥
जामनि गई सुक्क आभासी। विय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप कित्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥
गाथा ॥ न्टप हति वीर कैमासं। [2]सुर घट्टी रहि निस्सया ॥
वर गौ पुव्वह धनयं। रैनं निंद्रा गई वानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दूहा ॥ सुष रत्ती पत्तौ न्टपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी लिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ वाल सु भ्रत द्रिगया मन किन्नी। रवि सुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट अम्म हत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥
दूहा ॥ भ्रम परंत दिल्लिय नयर। चित सुद्धि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज विन। निसि नष्षे विन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प वन अद्ध निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों। सरसै बढ़िय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

---

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो-"सुर घटी रहि नीलया"। (३) ए. कृ. को. ।पसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्षि भई अल्हानी । बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
न्रिमल चीर हीर विन मंडं । तिहि काल किति कही सु प्रचंडं ॥
छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि सो बर वित्तक वित्ती । ज्यों राजन कैमास सु हत्ती ॥
बर अंनत सर अंबर छाइय । तबहि रूप चंद्दह कवि ध्याइय ॥
छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परत्त्विय कव्वी । सुपनंतर कविचंद सु दिव्वी ॥
बद्धिय थुत्ति उचार तुंब वर । बरन उचार कियौ आछा उर ॥
छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्षि सु कब्बि सनाई । उगति जुगति कहि कहि समुझाई ॥
बाहन हंस अंस सुष दाई । तब तिहि रूप ध्यान कवि पाई ॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन ।

नराज ॥ मराल बाल आसनं । अलित्त [1]साय सासनं ॥
सुहंत जास तामरं । सुराग राग धामरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस सुक्करे । उरग्ग बाल विथ्थुरे ॥
लिलाट रेष चंदनं । प्रभात इंद बंदनं ॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ । उवंत इंद्र पाथयौ ॥
उछाइ कीर षंजनं । तरुन्न रूप रंजनं ॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई । तिलक्क पान संकई ॥
सुहंत तेज भासई । रुलंत सुत्ति पासई ॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद्द जंपयौ । चुनंत कीर सीपयौ ॥
विभूअ जूअ संचयौ । कलंक राहु चंचयौ ॥ छं० ॥ १२३ ॥
त्रिभंग मार आतुरं । चिबुक्क चारु चातुरं ॥
श्रवन्न चाट पिष्षयौ । अनंग रथ्थ चक्कयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुब्भयौ । [2]उपम्म तासु लुब्भयौ ॥
दिपंत तुच्छ दिट्ठयौ । विचै अनार फुट्टयौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय । (२) ए. कृ,को.-"तंकत रत्त विंवयौ" ।

सु ग्रीव कंठ मुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच्च तुंमरं । [1]सुरच्छि लग्गि अंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नपादि ईस अच्छनं । धरंति सुच्छि लच्छनं ॥
सुरंग हथ्थ सुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव भ्रम्म वालयं । सुगंध तिप्प तालयं ॥
कनक्क विप्प पव्वया । सुराज सिंभ दिव्वया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विचित्र रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छव्वि जामिनी । कटिं सुछीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अवुद्ध वुद्धि कारिनी ॥
अभाय दोष वंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । वरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक्क तेज कंवुजं । चरन्न चारु अंवुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी । कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सवद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु अद्ध रत्त अंवुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कव्वि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्यौवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सों । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कैमास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंवुज विकसि विलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
[2]अद्धं वच्चं परघ्घं । चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंवुज विकसि वास अलियायौ । स्वामि वचन सुदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी [2]दू आयौ । आषेटक जंपिरु न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति ।　　　　(२) ए. कृ. को.-अद्द ।

हनूफाल ॥ घन घुम्मियं चिहुपास। आखेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकास कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंड्न सुद्ध। 'दल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि थंभ पूरित साल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिज अगय राजन लेन। धर स्याम अम्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति विज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
ध्रित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझुम्म झुम विपध्य। बहु बत्ति जल अति कध्य ॥
छं० ॥ १४१ ॥

दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नववति वज्जि विसाल ॥
चव ध्रत ग्रह कैमास मत। अग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्य सु बारयं। दिसि दसमि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३ ॥
तम भूमि तंमि नितं तयं। गत महल गुह गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं। जनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
इल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिब सिप्पयं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥छं०॥१४५॥
²इसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दोर ओर पियासियं ॥छं०॥१४६॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
अक्ष हंकयं पल विर्त्तयं। रुचि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रथल रस ³वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥छं०॥१४८॥
दम दमकि दामिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरीसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं छत मंदयं। गत जहां सयज नरिंदयं॥ छं० ॥ १४९ ॥
ल्हिय पानि मंडित जागरं। कर मह्नि निरपत कागरं॥
छिन वंचियं असु हंकियं। क्रम क्रमत राजन वंकियं॥
छं॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं। घनघोर रोर क्रतीतयं॥
द्रिग द्रिगन दिष्पन अंगयं। कलमह्ल कलह अलंगयं॥
छं॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं। मुष भिन्न भिन्न प्रकासियं॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास। बाल नन चिपति भुष्प गुर॥
मदन वढ्यो गुर जोर। लगी तन ताप तलप उर॥
नाह नारि छंडयौ। चिष्प लग्गिय ओतानं॥
लाज वैद गयौ छंडि। रोग रोगी न पिछानं॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु। राम नाम मुष ना कहिय॥
जंभाति प्रकंपति सियल [1]तन। वर प्रजंक पलक न रहिय॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह। महल सु राज दुआर॥
कहती राज न मानते। लिषि पट्टयौ पावार॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो। न जानं जष्य किन्नरं॥
अै अपूरवं देहं। दासी महल मनुष्ययं॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना। इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना।

दूहा ॥ सुनि रु वचन चल्ल्यौ न्नपति। जहां इंछिनिय अवास॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ। जो दिष्यौ ग्रह दासि॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात जैपद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिजिय ग्रह पंति। चलु अंग रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि झूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुञ्ज बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां वैनं कोल ग्रवीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जास। पच्चारि इंछनि तास ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥ छं० ॥ १६० ॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्प धष्पि न सिद्ध। वढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि कन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह जेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच बिलग्ग ॥ छं० ॥ १६३ ॥
[4]गड्यौ सुधन न्रप अप्प। बर उट्ठि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाहिम उर उब्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
षनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिद्धि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प बन पिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

(१) मो.-वाढिय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गड्यो सु। (५) मो.-मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना।

दूहा ॥ गयौ राज वन जहां सयन । जहं सामंतह सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों । सव वद्दै सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना।

गई मात कविचंद कहि । भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय । चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ वजिग प्रात घरियार । देव दरवार नूर षुलि ॥
अन्म सुक्रत अंकुरिय । पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन विसतरन । मिलन उद्दिम सत पच्ची ॥
[1]काम घरी संकुटिय । उड्न पंषी मन मच्ची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर । चंद किरन वर मंद हुअ ॥
विड्डुरिग वीर वीरं रहन । सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥छं०॥१६८॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद । महल मंडिय वुलाय भर ॥
तेज तुंग आकत्य । देषि अवधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरदैत । नैंन बीरा रस पिष्षिय ॥
सो ओपम कविचंद । रूप हरनार सदिष्षिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय । कं चित्तें कौभास जिय ॥
भावी विगत्ति जानै न को । कहा विधाता न्रिम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभै । नीकी ठौर बैठक प्रारंभै ॥
सूर सामंत बोले । दरीषानै दुलीचै षोलै ॥
छत्र चमर कर लीनै । मूढ़ा गादी सामंतन को दीनै ॥छं०॥१७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी । (२) मो.-चक्क ।
(३) ए. कृ. को.-सुर.कंद मन कंद हुअ । (४) ए. कृ. को.-राज ।

*अरिल्ल ॥ मद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बैठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन ।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चौंर सोहै लगे छच ढोरै। तहां चंद कव्वी उपम्मानि जोरै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ पेखैं। लग्यौ राह निड्वंतियं अप्प भेखैं ॥
मिलो मंडली अत्थ [1]विच न्नप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुब्बार तेनं ॥
[3]विरदाप चंदं वरदाय सब्बी। दिषी जोति चौहान संजोति ह्व्वी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन ।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रब्बं गरै। न्नप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली ।

चोटक ॥ सभ वन्नन भट्ट कविंद कियं। सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं। रन भूमि बिराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं ।

(१) मो.-विचित्र भारि । (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत ।

(३) मो.-वरदास । (४) ए. कृ. को.-दच्छिन, लच्छिन ।

जिन वीर महंमुद मान हन्यौ। अरि[1] अच्छ अछच पवार धन्यौ ॥
हरसिंघ हसिंह सुवाम [2]भुजं। उन मझि विराजत राज [3]दुजं ॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं। जब चालुक भीम मयंद भुअं ॥
बर बिंझ विराजत राज दलं। जब चालुक चार नछिच हलं ॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संघ धरै। न्रप जाहि बकारत रौरि परै ॥
बर वीर सु बाहरराय तनं। अचलेसर भट्टिय जासु रनं ॥
छं० ॥ १८० ॥

कर वीर सिंघासन जासु चँपै। नर निढ्ढुर एक निसंक तपै ॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कँपै। धर विग्र* जाहि जिहांन जपै ॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्पन देपन दो ललियं। मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं ॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै। [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ कै चावँड लोह जन्यौ। मदगंध गयंदन सौं सु लन्यौ ॥
गहिलोत गयंद सु राज [5]वरं। भुज ओट सु जंगल देस धरं ॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही। दल दिष्प सु [6]साह सिताब ग्रही ॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं। जुध मंडय साह सहाब रुषं ॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली। जिहि सज्जत पंगुर देस हली ॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं। जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह पलं ॥
छं० ॥ १८५ ॥

---

(१) मो.-अनूअ। (२) ए. कृ. को.-भुअं। (३) ए. कृ. को.-दुज।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है। (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं। " चावंड रिसाइ कै लोह जन्यो " (५) मो.-वरी, वरी। (६) ए. कृ. को.-ताह।

नअगौर नरेस नसिंघ सही। जिन रिद्धि समंतन मांझ लही॥
परमार सलष्षन लष्ष गनै। इक पट्टिय कांगुर देस तनै॥छं०॥१८६॥
दस [1]पुत्रति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै॥
जिन बंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं॥छं०॥१८७॥
नवनिकरि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै। कलहौ कलहौ निसि द्योस जपै॥
छं०॥ १८८॥
कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन जंग जंजीरनि तीन रहै॥
सर संधि, समंतत तेज लहै। सबदं सर हेत अनंत बहै॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो हन्न कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै॥
सम मंडप मंडित चित्त कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं॥
छं०॥ १९०॥

गाथा॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं॥
तिहुं पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं॥ छं० ॥१९१॥

पद्धरी॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़॥
अनपुट्ठराय पुट्ठिय पलानि। मुह कंठराय तालू लगान॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट न्रपत्ति सु तप्प॥ छं०॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व कथा पूछना।

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गने।

* यह गाथा मो. प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।

(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यौ न जाइ"

† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नहीं मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन । कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन । काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय । मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय । इंडज आक्रति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना ।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ । अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियो मानिक । जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी । करे अपमान निकासिय ॥
संभरि कै उपकंठ । रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै । बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक्क वधतो निरषि । हरषि आस वट्टिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मुरधर पंडह काल परि । लैब सही सँग झंड ॥
आय कमधती कर रहिय । चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना ।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच । पठय परधान विचच्छन ॥
दै असंघ धन धान । लगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ । कुंअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसह्ह दिसि उड़ि बत्त । सुने अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोल करि फौज को । गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के वज्जते । नव सुलष्य साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना ।

भुजंगी॥ नवं खष्य सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं॥
पखक्कंत अंदू गजं मद्द छक्के। कमट्ठं दिगंपाल नागं कसक्के॥
छं०॥ २००॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि त्रासं॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं॥
छं०॥ २०१॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं सुष्य क्रम्यौ सु मानिक्क जायं॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथंमं मिलानं॥
छं०॥ २०२॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सायरं सत्त अंबं॥
छं०॥ २०३॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचे बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फाट्यौ प्रगट्यौ कुमारं॥
छं०॥ २०४॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती॥
कवचं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं॥
छं०॥ २०५॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं॥
नवं तिष्य धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे॥
छं०॥ २०६॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं॥
वहे रत्त धारान के षाल नालं। परे भूमि झूमे भरं विक्करालं॥
छं०॥ २०७॥

परी पंपिनी जोगिनी वीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जगीसं ॥
कहां लग्गि चंदं वरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्य भुजा दंडि ॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि ॥
पुनि संभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय ॥
उद्ध पाल दिय नाम। विरद हाड़ा वुल्लाइय ॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लद्धिय तबै ॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्टपति। हड्ड मंड फट्टिय जबै ॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी ॥ संभरिह मझ्झ संभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव ॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन वरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि ॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़ि पवँग पहुमि षरि है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क ॥
करि हुकुम मात संभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि ॥
छं० ॥ २१२ ॥

द्वादसह कोस जतर कु्मंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत ॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ ॥
छं० ॥ २१३ ॥

उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास ॥
अनचिंत न्टत्त हुअ कलह बढ्ढि। बड़ पुच जराजित बंध कढ्ढि ॥
छं० ॥ २१४ ॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंषि जल घाट रुक्कि॥
षंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर बेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध बादि॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उषित्त षार॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि बिय रवि उदोत॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तब नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्रप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ २१९ ॥

कबिचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्रपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्षयं॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं॥
छं० ॥२२०॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस॥
कौ मंडे जस रस समूह। काल अमया न केन बस॥
सबे षाइ संसार। किनै संसार न षायौ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नच्चै न मोह जग द्रोह जिम । सुगति भुगति करि ना नचै ॥
वसि परै पंच पंचो अगनि । मोह छांह सब को पचै ॥छं०॥ २२१ ॥

चौपाई ॥ [1]हुंकारि चंद देवि बरदाइय । भट्ट विरह तिह्नं पुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय । मुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच ।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि । विना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ मन । मंचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय । है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ । प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है ।

दूहा ॥ उदय अस्त तो न्यन दिठि । जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन । कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिट्ठौ कैमास कवि । मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा वीरह सुमन । अप्पौ न्वप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह । कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ । कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि । निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि । हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय । देव संचो बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास । देवि बर छंडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै । सत्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि । जोग पाषंडह षाई ॥

(१) ए. कृ. को- हक्कारि (२) ए. कृ. को- तुरि ।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस ।

मानहु सु बात अरु बेग बत। कहिग साच कविचंद तत॥
मन बच्च क्रम्म कैमास धन। जौ दुरगा सची सुभत॥
छं० ॥ २२९ ॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद॥ छं० ॥ २३० ॥
हठ लग्गौ चहुआन न्रप। अंगुलि मुष्य फुनिंद॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं। कहै बनै कविचंद॥ छं० ॥ २३१ ॥
जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि॥
अब कित्ती उपर चंपौ। सिंचन जानि गमारि॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर सूर तन। जौ पुच्छै न्रप एस॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कब्वि कहेस। छं० ॥ २३३ ॥
होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मार्यौ आप धाइ॥ छं० ॥ २३४ ॥

गाथा॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं॥ छं० ॥ २३५ ॥

कवित्त॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्यौ॥
उर उप्पर [3]थर हर्यौ। बीर कष्यं तर चुक्यौ॥
बियौ बान संधान। हन्यौ सोमेसर नंदन॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। षनिव गड्यौ संभरि धन॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ। गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ॥ छं० ॥ २३६ ॥

---

(१) मो.- वित्तं। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंत।
(३) ए. कृ. को.-थरहर्यौ। (४) मो.-प्रलै।

राजा का संकुचित होना ।

दूहा ॥ सुनि न्रपत्ति कवि के वयन । अनन वीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ । सूर कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥
गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी । संझया वंदामि भट्ट वचनानि ॥
वुझ्झामि हाम को इनं । यम दम उर मझ्झ रष्पियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना ।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन । कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसम परिग सामंत । सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह । हुऔ मंची इह राजन ॥
निसि अद्दी आषेट । कियौ किं कीऐ भाजन ॥
किं भट्ट वीर जान्यौ सु रिन । कह सुझ्यौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल । अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना ।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं । कलिमलि चित्त सुभट सद्यानं ॥
के अवलोइ सु मुष्प चंदं । निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ जढ़ वर अप्पं । के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं । गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥
निरषे द्रग मुष रत्त करूरं । असद्दी तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजूरं । भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥
गहक्के बद्दर गज्जि गुहीरं । भय न्निघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं । उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मद्ध पंच पल सेषं । विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

---

(१) मो.-पेचन ।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बही देवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि श्रोनि आयासं॥
मन्ने सह आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन झत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठ आसन हुंत अराहं॥
चले अप्प जिन मग्ग सु ग्रेहं। पुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[१]उजमल मन्न उट्ठि सामंतं। कलमलि विकल उकल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [२]हनि कैमास दासि रस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्मप कानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [३]जग्गत बहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त॥ राजन मक्ष [४]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। संत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विसुष पग डगन सरक्क्यौ॥
अभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल षिन षिन सुक्क्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघर बत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्ग्यौ घरौ। मिटै न कलि सों उत्तरी॥छं०॥२४९॥

चौपाई॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। बर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मिचद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम बरन बरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे सामंत। (२) ए. कृ. को.-हति।
(३) मो.-जग्गे। (४) ए. कृ. को.-संभारिय।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना ।

पद्धरी ॥ निज रहन अंग साखा सु एक । आवास रंग रचन विवेक ॥
अंदर महल्ल अंतर अवास । अति [1]रचन चित्र आसासि तास ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पर्यंक उभय आभासि भासि । [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि ॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज । बिन तरुनि करुन सुष छाडि राज ॥
छं० ॥ २५२ ॥

दर रष्षि बोल आएस दीन । रुक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह ॥
किय सयन पेस न्नप जंपि अप्प । रष्यौ सु थान निज दुष्य रष्प ॥
छं० ॥ २५३ ॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट स्तूर घट्ट । रष्षे सु जक्कि सब थान थट्ट ॥
भय चकित चित्त अंदर वहाज । भयभीत मंन मन्ने अकाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

इह कत्य चित्त नयरी निवास । सब लोक दोष उद्दार रास ॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु वान । तिन रूप दिष्षि दिट्ठिय डरान ॥
छं० ॥ २५५ ॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह । कत्या सु कत्य मन्नेव एह ॥
इह कम्यौ दुष्य विते चिजाम । भयभीति निसा मन्नी [4]सहाम ॥
छं० ॥ २५६ ॥

भइ [5]पिनद जाम चव जुग समान । सब लोक दुष्य चित्ती डरान ॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस । गयौ सु दासि पूनह सरोस ॥ छं० ॥ २५७ ॥
चंदेन चिंति निज नाह सत्त । चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त ॥
छं० ॥ २५८ ॥

---

(१) ए. कृ. को-चरन । (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास" ।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट । (४) ए. कृ. को.-महाम । (५) ए. कृ. को. पिमद ।

उग्गियं भान पायाज पूरं। वज्जियं देव [1]दर संष तूरं ॥
*कलच कैमास चढ़ि वरन साल। वरदाइ देवि वर मंगि बाल ॥
छं० ॥ २५९ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन ॥ चलै चीय वर मंगन भट्ट सु भट्ट वर।
अप्पावै कैमास मिले जाइ अंग वर ॥
न्टर छुट्टी कवि हित्त घरी पल वरनि वर।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव वर ॥ छं० ॥ २६० ॥

रोला ॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी ॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब वर बरनि उचारी ॥ छं० ॥ २६१ ॥

गाथा ॥ बाला न अच्छि लग्गी। हुं बरदाइ कड्डिया अग्गी ॥
तंवाल विरस लग्गी। लच्छिन षुरसान रष्पिया मग्गे ॥छं०॥२६२॥
आदर दीन सु कब्बी। आसन आछादि रोहि तिय तथ्थं ॥
निज प्रारथना राजं। गोमक्ष्क्षे ग्रेह साजनं साजः ॥ छं० ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई ॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय। अंचल गंठि विलग्गिय धाइय ॥
को [2]अति जात अप्प जम आनै। अनि सिर मत्य अप्प सिर तानै॥
छं० ॥ २६४ ॥
जिन कैमास रिद्धि रज रष्पी। जिन कैमास मंच सिर सष्पी ॥
जिन कैमास देस नव आने। सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥छं०॥२६५॥

---

(१) मो-दरवार नूर।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है। मूल पाठ भी "उगियं भान पायान पूरं, वज्जियं देव दर संख तूरं। कलत्र कैमास चढ़ वरन साला। देवी बरदाय वर मंगवाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है। भुजंगी छन्द में चार यगण होता है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्व्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं। (२) ए. कृ. को.-अनिं।

तू भूल्यौ वरदाय विचारं। अच्छिर सुचिसुद्द मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ जा जीवन कारनह। धम्म पालहि व्रत टारहि॥
जा जीवन कारनह। अथ्थि दै चित्त उवारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति [1]अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। न्टपति वहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कालि वुझ्झै चधियार [2]भौ॥छं०॥२६७॥

जो मनुच्छ धर धम्म। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस वंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास वंधन जग्गो जुअ॥
मोर वीर अनुकार। सास नन असन वंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]वंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुप्प न करो महंत पिय॥छं०॥२६८॥

मात गरभ वस करी। जम्म वासुर वस लभ्भय॥
पिनन नग्गि पिरदाय। मुदय पिन हंस अलुभ्भय॥
वपु विसप्प वढ्ढयौ। अंत रुद्धह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निपत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्टपति। सकै न [4]प्रान पमुक्कयौ॥छं०॥२६९॥

दूहा ॥ समरि जाय कविचंद वर। वर लद्धौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलैं। मरन सुमंगल भार॥ छं० ॥ २७० ॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौं।
(३) मो.-वंधिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि । मरन संगरु अपुब्ब किय ॥
दरलि पिष्षि दरबार । रक्षि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जल्लनि प्रथिराज । नैंन नेनं जब दिप्यौ ॥
अति करना रस बीर । करी संकर रस लिप्यौ ॥
बुल्ल्यौं न बेन तब दीन हुअ । कनक काम कवि अच्छयौ ॥
तुम देव किति कुहलिय कमल । धरनि धरनि तन सुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन । कविन अम्म धर भूर ॥
इह अअम्म लग्गहि उरह । क्रम्म उरक्कहि जर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न मंगि वरयौ । काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै । संभरि वै राय रासं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना ।

दूहा ॥ पढ़िय किति बुल्लिय वयन । दिल्ली पुरउ नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर । को कहु कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना ।

कवित्त ॥ रावन किन गह्यौ । क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गह्यो । चीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्न गह्यौ। कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गह्यौ । पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड़्यौ न इंद्र गोतम रिषह । सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि । मति गह्य संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद । [4]नाक वत्ती [5]कन कट्टी ॥
अअम्म वीर विक्कम्म । सक्क वंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सद्द सु रारि । दिष्षि गंध्रव न्रप भंजों ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सिरयाई, सिरपाई । (२) कृ.-गुरवास हिल्लह ।
(३) ए.-रवनि ।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती । (५) मो.-कट्टी । (६) मो.-कट्टी

तमकि तास अगि मारि। किति पुत्त मुक्किय अग्गौं ॥
सो सत्ति वात आतम पुरिसि। तामस इह आपुन मिटै ॥
किं जान खोय किं किं ¹जपह। किति तोय वहु न्नप नटै ॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना।

मति कैमास मति मेर। दोस दासी न हनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। सामि दो हौ न गनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। दंड कुब्बेर भरिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। दाग विन धरनि धरिज्जै ॥
वहि गई सरक नगौर की। मंच जोर सेवर कहर ॥
चहुआन राव चिंतारि चित। गज्यौ कढ़ि दै करि न हर ॥
छं० ॥ २७७

दूहा ॥ दासि संग कैमास कढि। जग दिष्षवै नरिंद ॥
वरै वरनि अंगन परी। वर मंगै कविचंद ॥ छं० ॥ २७८ ॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना।

कवित्त ॥ रीस मेल्ही दासी सु। राज लिन्नौ अध खिष्यौ ॥
सो नट्ठी तिन वेर। कढ़ि कैमासह दिष्यौ ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ। अप्प वरनी वर लिन्नौ ॥
पुत्र वीर दाहिम्म। हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि। पेम पंसि विधि विधि करै ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। भावी गति को उब्बरै ॥ छं० ॥ २७९ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना।

कविय पुत्र कैमास। राज हांसीपुर दिन्नौ ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि। गोद नरसिंह ³सु किन्नौ ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज। बीर दुरबार सजोइय ॥
वरनि वज्जि नीसान। रोस छिम सात्वक होइय ॥

(१) ए. कृ को.-जयियं। (२) मो.-कैवास। (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ।

सुरतान गहन मोषन न्टपति । पंग चीय पातुर दरसि ॥
दिषि चीय सभा मन पंग कौ । छवि संमुह बरि बरि बिरसि॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्टप । सो अप्पे विह सत्त ॥
न्टप पुच्छत कबिचंद कौं । अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्टप अरु गुर कवी । तुम जानौ वहु काम ॥
किहि परि गह लंछन लगै । [1]को मेटै लगि साम ॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज । कल कहै वत्त सो नीत राज ॥
संभरहु स्तूर सोमेस पुत्त । कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त ॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज । सम दान मान सामत्ति साज ॥
पलटै कि राज लछ्छन लीन । बहु भंति कुलह विग्गरै तीन ॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै स्तूअ हंकार मभ्झ । वर जाय अप्प रस अम्म रज्ज ॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ । विग्गरै ग्रेह चीया अछाय ॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्टप राज राइ । तिन चंद चंद प्रातह दिषाइ ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ठ नेह । विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह ॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज । विग्गरै लच्छि बौहरे लाज ॥
प्रसट्ठै अध्रम्म विगरै ध्रम्म । संभरि सु राज राजन सु भ्रम्म ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-"के मेटन लागी काम"। (२) ए. कृ. को.-जग।

साधुम्म सेव गरुअत्त जीव । चिय राज नीति राजह न सीव ॥
विग्गरै पुन्य धीरह सु ब्रूव । भादक्क ग्रेह वहु दुष्ट ह्लव ॥
छं० ॥ २८८ ॥

विग्गरै राज परदार [1]पान । लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान ॥
विग्गरै राज सुय वाल ह्लर । संचरै वहुत सपि मक्रूक्त दूर ॥
छं० ॥ २८९ ॥

विग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान । विग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान ॥
विग्गरै राज राजन सु जानि । जो सुनै वत्त दुष्टं सु वानि ॥ छं० ॥ २९० ॥

परनारि [2]पित्त आचरन होइ । विग्गरै राज निज संच सोइ ॥
तन सद्दै राज चिंतन प्रमान । पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस । तत अद्दै राज नीतह सुरेस ॥
उच्चऱ्यौ राव जंवू नरेस । संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं० ॥ २९२ ॥

[3]तव वंस भाव जरतित्त मान । संभरी हुत ऊपत्ति थान ॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज । सो नीत राज जित [4]सुरग राज ॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान । वंधयौ सकल तिन राज [5]थान ॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड । दिज्जियै ओर जोगिंद डंड ॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै वंक कै वंक साख । भजि कठिन कंक कौ कठिन वाख ॥
वल पुच [6]माय सम सुमति जाइ । आनयौ पुष सज्ज रहिस धाय ॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय । न्रप दुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय ॥
न्रप नीति भ्रम्म समकाल लोय । वंकै कटाछ्य वंके न कोय ॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-थान । (२) ए. कृ. को.-पित्त । (३) ए. कृ. को.-तम ।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि । (५) ए. कृ. को.-थान । (६) ए. कृ. को.-न्याय ।
(७) ए. कृ. को-"भंडिय सुदेस हुज दान प्रीति" । (८) ए. कृ. को.-दीत ।

संसार नीति किय तत्त पंथ। विभ्भूत नीति मुनि नीति ग्रंथ॥
सह अग्ग पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम धास ब्रह्मा सु ध्यान॥
छं० ॥ २९७॥

रषिये सु अत्य रष्यन सु लच्छि। फिरि हीत ताहि हित तत्त अच्छि॥
न्रिप भजै नीति उमराव होति। न्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति॥
छं० ॥ २९८॥

न्रप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों प्रवह बेद॥
न्रप भेटि करै समता सरीर। बुझ्झवै अगनि जिम वरसि नीर॥
छं० ॥ २९९॥

भोग वैं राज परिगह संजुत्त। मति ग्रान करै सा अस्स पुत्त॥
रिषियै सु अत्य इन भांति मान। ते सामि काम अमरित्त जान॥
छं० ॥ ३००॥

सा अस्स सहै सो मित्त सेय। जानै न सामि उत्तर न देव॥
न्रप धास बत्त इह भांति जानि। कवि बहि लज्जि गंभीर वानि॥
छं० ॥ ३०१॥

न्रप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ॥
हय गय सु मांहि धुम्र परी लुम्भ। सम्भाइ जेम जल छांह कुम्भ॥
छं॥ ३०२॥

समसान अग्गि निधि न्रपति जीय। न्रप चित्त अंग कीटी [2]सु लीय॥
रष्यो सु अंब जो न्रपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सरूप॥
छं० ॥ ३०३॥

जन हथ्थ भ्रान पंकी सु रंग। तामंस लोह जनि [3]मनित पंग॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चिंत सदा कलपंत होइ॥
छं० ॥ ३०४॥

सा अस्स बिना परि गहन काच। रूपं न रत्त दरबार साच॥

---

(१) ए. दहै।
(२) मो.-तीय।
(३) ए. कृ. को.-मन पतंग।

दुज सफर जम्म [1]नाही सनान । संसार रतन नृप परष दान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

होय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि ललान ॥
अंब जीव वंछै अधिक । कहि कवि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्यों कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्या वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

षिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्यत तिन काल ॥
अति वर वर बुल्लै नहीं । सुकिम [2]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

मुरिल्ल ॥ चलौं भट्ट सेवक होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हूअ । तब संम्मरु अंग करौं दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समझयौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल पंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तीही ।　　(२) मो.-चलहु ।

मरन गरुत्र सिर हलुत्र है। जियन हरूत्र सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचन्यौ।
मरन लगन विधि हथ्य तत्थ कवि उच्चरयौ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय षंडिहौं॥ छं० ॥ ३१३॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय क्रित्ति मन्यो सु काज॥
दीनौ सुं हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि 'क्रत न्नि सथ्थ॥
छं० ॥ ३१४॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुत्र तिय वरष्ष ऋति रूत्र रंस॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। यप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ॥
छं० ॥ ३१५॥

दुत्र घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति जूर॥
छं० ॥ ३१६॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुम्भा सु भासि॥
अप्पान छत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प॥
छं० ॥ ३१७॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पी सु तेग हमकौं सु षोलि॥
किय सुमन सूर सामंत सव्व। हुत्र ग्रेह ग्रेह आनंद नव्व॥
छं० ॥ ३१८॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। षोले किपाट न्रप जुगति गन्नि॥
उद्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन॥
छं० ॥ ३१९॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुरिल्ल करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

वहुरेव सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कीने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति विधि कित्ति अंग। विन सच्च रच्च दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति वीर अत्ति। [1]सुभ्भै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा॥ उरसल्लो कैमास नृप। पुच परट्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अच्चल करिय। दिय हय गय वर थट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय वेरी भरन कन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-मुझै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।

(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच सुष्प गवष्प यह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । संथ्य सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग । तब्ब संभरै मंचि वर ॥
जब क्रीड़त जल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तथ्थ दाहिम वर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला । पुहप सुगंधह [1]वास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर साले मंचि दुष । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्ठी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झिय ॥
षीची राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झिय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज वर ॥
लोहानौ आजान । राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौं सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्य कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना ।

---

(१) ए. कृ. को.-वास । (२) ए. कृ. को.-वचन ।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर ॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज वर ॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै ॥
द्वै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै ॥
मन्नौ सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि ॥
बरनौ सु जाम जद्दव न्रपति। तबहि राज म्रगया सुभरि ॥ छं० ॥ ५ ॥

सज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर ॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर ॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ई वर ॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष बघेल भर ॥
सामंत सूर मिलि इक्क हुअ। " । सथ्थ राजन ररिय ॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज म्रगया करिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर ॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक बहत सिर ॥
सथ्थ लीन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि ॥
बानगीर हथ नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि ॥
घन लीन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय ॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी ॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज ॥
रस अग्ग सून्य सो तुंग एक। सथ लिये तुंग सो भषन तेक ॥
छं० ॥ ८ ॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वच्छंतिवार ॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटकि भुम्मि कट्टत करेज ॥
छं० ॥ ९ ॥

(१) मो.-रथ्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारद्ध सहस बल गनै कौन। धावंत भूमि भुल्लाइ पौन ॥
छल छेद भेद जीवन लपंति। जुट्टंति अंत पसु पल भपंति ॥
छं० ॥ १० ॥

पय तरह रत्त सुप अग्र जास। रत्ती सु रसन कोमल सु भास ॥
नप वीह अग्र कै वीय चार। चौंरार पुंछ तिष्पे सु तार ॥छं०॥११॥

कर पदह थोर जड्डे सजोर। नप तिष्प विद्ध गिरि वज्र रोर ॥
कटि क्रसल थूल नित्तंव जानि। उर थूल लंक केहरि समान ॥
छं० ॥ १२ ॥

गररत्त गरुअ विस्साल भाल। तिष्पे सु दसन दंपति कराल ॥
कप्पोल सरल वल प्रथुल रुच्च। सोभंत गात वैताल रुच्च ॥
छं० ॥ १३ ॥

विन अंग रोम के प्रथुल रोम। अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम ॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्प जास। जघनं सु गत्ति म्रगराज ग्रास ॥
छं० ॥ १४ ॥

जर हेम पट्ट के डोरि पट्ट। सेवक्क एक प्रति उभय धट्ट ॥
धावंत धरनि आजानवाह। वर वेग पवन मन लच्छि गाह ॥
छं० ॥ १५ ॥

नर जान रोह के अस्व जान। आरुढ़ मकट के रुपभ थान ॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार। अन्नेक देस साजोति सार ॥
छं० ॥ १६ ॥

सत तुंग भपन लंगीस राव। तुंगह सु पंच जामानि ताव ॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ। द्वै तुंग भपन लोहान नथ्थ ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय तुंग चंद पुंडीर धीर। द्वै तुंग राम गुज्जर [1]गहीर ॥
वलिभद्र एक्क सारद्द तुंग। परसंग राव द्वै तुंग जंग॥ छं० ॥ १८ ॥

द्वै तुंग मदन परिहार सार। चय तुंग वरुन बंधव सहार ॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग। गिरवर विहार थल वद्धि रंग ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. क्रु. को.-सहीर।

सारद्ध दून सें चित्त साज। वर साज वह्ल के भास भाज॥
हय रोय कैय आरोहि पिट्ठ। सौ गोस केस जन्नाव यट्ठ॥
छं०॥२०॥

फंदैत कुरँग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मषार॥
जुर वाज कुही तुर सतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त॥
छं०॥२१॥

[2]षेदा सु सहस सारद्ध एक। तरिया सु सहस चौ जूवि मेक॥
सें पंच मूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल॥ छं०॥२२॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। कौडुंन राज सम विषम थान॥
.... । .... ॥ छं०॥२३॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त॥ मन चिंतै सुरतान। आज संभरिपति भंजिय॥
पानी पन्न प्रवास। सबै सुष तिन दुष तज्जिय॥
तिन सु वैर उर चिंति। प्रात अष्षिय सम [3]दूतन॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धूतन॥
लिषि पत्र साह ध्रम्मान सम। सुष वानी इम रट्टियौ॥
कैमास कृत्य सामंत सम। षबरि विवरि सब पट्ठियौ॥ छं०॥२४॥

दूहा॥ दूत सपत्ते साहि तब। जहं कायथ ध्रम्मान॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान॥ छं०॥२५॥

ध्रम्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त॥ छं०॥२६॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धम्मायन का पत्र देना।

---

(१) ए. कृ. को.-घट्ट। (२) ए. कृ. को.-दोषा।
(३) ए. कृ, को.-दूतह, धूतह। (४) ए. कृ. को.-चिन्त।

दूत सपत्ते गज्जनै । जहँ गोरी सुरतान ॥
तपै साह साहाब बर । मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥
दिन चड़तें साहाब दर । आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब । मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना ।

कवित्त ॥ निसा एक निज ग्रेह । भट्ट साहाब द्रुग्ग बर ॥
धरिय देवि उर ध्यान । इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निसा अद्ध सुत जानि । देवि आई सुहित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड । मुझ्झ विग्यान इक्क वर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ । सुनिय अपूरब कथ्य तस ॥
सम वाद विद्य मंडौ रसन । जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं ।

कहै देवि सुनि द्रुग्ग । उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु । अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ । जाय चंदह सम मंडै ॥
छीन होइ मति हीन । ख्याति तिन वानी पंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम । एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वत्त विवह अप्पों अनत । पुच सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि । सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सेव । तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नन करहु तिन सम वाद । आन देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना ।

केदार अष्पय एम । चहुआन देषन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै मात। सुविहान पुच्छौं बात॥
बोली सु देवी बेंन। तुम चलौ दिल्लिय चेंन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पत्र परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्थिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लब्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्ट। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तत्थं पत्तौ अप्पं कब्बी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ ऊगि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कवि पहुंच्यौ दरवारं। करि सलाम साह वर गोरी॥
दिट्ठे वासव सेनं। पेंसत दिठ्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मझ्झै। ना सूझंत हत्थ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे साहि गोरी दरबार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागबानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलैं भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो वाज दिन संझने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय वचन सुरतान । दिष्षि बोल्यौ ततार वर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल । अप्प कित्ति तौ [१]हान मम ॥
वरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सुनि सहाव हसि उच्चरिय । दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंज धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना ।

सुनय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [२]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना ।

घरी एक विसमति भयौ । मुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना ।

सुनत बचन सुरतान मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि विराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार घन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दान मम ।　　(२) ए. कृ. को.-छछुंदरी ।

कवित्त ॥ [1]चल्लिय भट्ट बर ताम। नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवदेस। लष्ष अप्पै विलष्ष गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरद्दन षल पानं ॥
अरब षरब उप्परैं। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष षल ॥
भिद्दै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झैं कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्ष पंच पंथह गवन। आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर डुंगर [4]गह्वर वन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्थ। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत। हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रैणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल इक आया निध्धारे।
संभल्ल हक्क गहक्क ही उट्या [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबध्धा प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को. गहन। (५) मो.-दूत।
(६) ए. कृ. को. अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनंतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

जीह झाक झक झकै मनों बीज पयारे।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारे॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सारे।
संभरिया पंच मुष्प थापें देष्या दस वारे॥ छं०॥ ५४॥
आया कुंअर उप्परे पावास निहारे।
आडा आया संकडा परवार पचारे॥
आवत [2]सीस उझकिया सिर सिंगी झारे।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पछारे॥ छं०॥ ५५॥
रेंनि करष्षे कोपिया झुक्या असि झारे।
वहिया कांध विसंध होय दोय टूक निनारे॥
मनों सारे म्रत पिंड हो धग्गा कुल्लारे।
पड़िया सीस धरट्ट है परसह पहारे॥ छं०॥ ५६॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे॥
जानि अलुझ्झी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे॥ छं०॥ ५७॥
कूर कवारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे।
रेनि कहंदे धन्य हो जै सद्द उचारे॥ छं०॥ ५८॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना।

कवित्त॥ आषेटक संभरिय। कुंअर म्रगराज प्रहारे॥
जामदेव जद्दों। पुंडीर का कन्ह विचारे॥
दस दिस अरिय प्रचंड। तुच्छ सिकार सथ्थ हम॥
मिलि चिन्हय चहुआन। अप्प पिल्लियै भोमि क्रम॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ। मानि मंत सामंत किय॥
सित माह प्रथम वर पंचमी। पानीपंथ मेलान दिय॥ छं०॥ ५९॥

गोठ रचना।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे। (२) ए.-सीर।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु । करिय गोठि तथ्याहु ॥
घन पक्वान सुअन अनत । गनै कोन जी हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना ।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज । सह परिहार सवन किय ॥
आय सूर सामंत । अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्य समय इक भट्ट । नाम दुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि । सथ्थनो सर नीसारह ॥
सिर हेम छत्र उप्पर उरग । अंकुस तस कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्रपति । मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई : वट छाया वैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ । सुवर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन ।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह । अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै । किय न्रप सज्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा ।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं । रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वितर्क । सरल बानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार । रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह । लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि । लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोन बान बर भलक करि । वर विधान मा बुद्धि कबि ॥
बिय गुनिय देषि ग्रब्बह गरै । ज्यौं तम भगत देषंत रबि ॥
छं० ॥ ६५ ।

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई । (२) मो.-उकतं लहर तरंगयं रंगं ।
(३) मो -जुगत । (४) मो.-वंचे ।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद"।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिष्ट न्रपती प्रमान। बुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंद्रप्रथ्थ आजानबाह। तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ। तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग। तुंहि बीर सुरवि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि अम्मराइ। तुंहि भेद अभेदन बेद गाह ॥
तुंहि भोज त्याग दिष्यौ न ईस। नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्रम्म पच्छ सब बंध तूंहि। तुंहि साह पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिष्ट वाद श्रोतान लग्ग। सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कों। बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दँड भेद करि। तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव। चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ। भोमि गाहै पल पानं ॥
सूर गरूअ [1]गुर बीर। बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ। सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुवर। उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर। कहैं भट्ट द्रुग्गा सु वर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना।

करि जुहार चहुआन। भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट। चिंति मुकाम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान। भट्ट दोउ रस बड्ढे ॥

(१) मो.-गुर, उर।

उज उचार उच्चरत। वाद दोऊ तब बद्दे ॥
उच्चर्‍यौ द्रुग्ग केदार बर। क्यों बरदा अप्पन ग्रद्दै ॥
मानो तो साच बरदाय पलु। जो द्रुग्गा सँमुष कद्दै ॥ छं० ॥ ७२॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा ॥ कद्दै भट्ट न्रप राज सुनि। मुद्दि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बद्दन बाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं ॥
उभय ध्रम्म हिंदवान। आइ बैठे इक थानं ॥
उभय बेद रह जानि। उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान। उभय वर ह्वर सिद्ध नर ॥
न्रप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितह रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा ॥ थल अप्पौ सु दुहून कवि। ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससौ। इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक्क कहौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान ॥
कद्दै राज कविराज हौ। तत्तहि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट तास सम। किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ वाद विद्यान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु मत्ति ॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उमया। (२) मो.-प्रसंसित।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद विध कह्यौ। सुनो प्रथिराज राज वर ॥
मदन वाज नष लस्यौ। मदन वांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष घित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्य। उभय किय तोरि ताहि विय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बड्डियौ ॥
कटाच्छ सुरति वंकौ विषम। कौ काम दीप हुप सड्डियौ ॥छं०।७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
चौपानं सहु राजन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पत्र झार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भ्रंग सजि पंघ उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत विना इन सकल वुधि। सब्ब मनोरथ रह्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंससमुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसब वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम न्रपति दै आन। कढ्ढि सैसब तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तव भ्रंग तर। [4]सिसिर कढ्ढि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दोय रुंधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति घोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नित्रक्क। (२) मो.-मै।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-समिर।

अष्षर कुकवि कवित्त ज्यौं । गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]वरन सु अर्थ लिय । अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्षर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यौं । चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन ।

सो सरसत्तिय सुष दियन । वाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल । मत कवित्त वढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना ।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट । सत अग्र मुष्ष इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्प होंहि ज्वाला प्रचार । [2]मुष मुष्ष वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कविचंद कहैं सुनि भट्ट राज । प्रगटौ जु अप्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट । उच्चर्‌यौ मुष्ष प्रति अंग षट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सब मुष्ष प्रगटि पावक ज्वाल । किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद । उच्चर्‌यौ मुष्ष प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥

दस च्यार मुष्ष विद्या उचार । ज्वाला सु मद्धि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक । पूरौ सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥

बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट । केदार ताम करि अवर यट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक । [3]बुल्लाउं बाल जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

---

(१) मो.-वन्नन ।
(२) ए. कृ. को.-सब मुष्ष वेद विद्या विचार ।
(३) ए. कृ. को. बुल्लाउ ।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाप दिन एकवाल ॥
ठट्ठौ जु अग्ग जकि बाज राज। दिय अपित सीस केदार साज ॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठि विचंद दिय कुसुम सीस ॥
उच्चर्यौ बाज गाथा सु एक। आसीस राज वर विधि [1]विवेक ॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा ॥ जिन सारथ सजि पथ्यौ। निज रष्यौ सु गब्भ उत्तरया ॥
जिन रष्यौ प्रह्लादौ। सो करो रष्या राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९३ ॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल ॥ वै संधि वाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान ॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल ॥ छं० ॥ ९४ ॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग ॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग ॥ छं० ॥ ९५ ॥
[2]थुति करत सामँत सूर। धनि चंद मंच गरूर ॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान ॥ छं० ॥ ९६ ॥
गुन पढ़त रह्यिय सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट ॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद ॥ छं० ॥ ९७ ॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा ॥ प्रथम वाद पाहन कियौ। फिरि मंड्यौ बिय वाद ॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद ॥ छं० ॥ ९९ ॥

साटक ॥ छत्रं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं बरं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति।

ब्रह्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कवी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंद्वान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि सुषयौ तर्क्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अच्छौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरित्र विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
याप तात कौ संध्यौ पंठ। हुं तब छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अच्छी जानं॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भीनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

झाई सी बोल्लिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहराही ॥
षिझ्झयौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्ष बोल्यौ गुन हारं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-नर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल वर। गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ। विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज। हारि अंतरिप बुलिय वर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज। कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव। नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत। कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग। छंद बंध मुष उचरै ॥
सामंत सकल सेना सुवर। जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
वाला जा गुन वृद्धि मौर सु श्रितं न्त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंवी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं वीर वीरं प्रमानं। हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं। तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥
करै रिद्धि कौ काज सब्बै विहंसं। तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गन्नै सछंडै। तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥
इतं वात जानै न तो वाद जीतं। ननं सस्त्र वीरं मनं वीर रीतं ॥
जरी ग्ग्ह्ल सों जंच जालंधरानी। सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह। मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोथान। तूंव गुन में गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय। एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बद्ध। लष्य लष्यन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कवि। तत्त भेद नन अंग तिहि ॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि ॥ छं०॥ ११२ ॥

देवी का वचन।

दूहा ॥ सु कवि सों सरसति कहै। मो तो अंतर नाहि ॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अम्रत छांह ॥ छं० ॥ ११३ ॥

लीलावती ॥ हह तूं हह तूं नहं तूं नह तूं। ननंहु ननंहुं ननंहु तुं नांही॥
भयं तो भयं तो महं तो महं तो। कथं तूं कथं तूं जनं ह्रूं ननं ह्रूं ॥
॥ छं ॥ ११४ ॥

गुनं तो गुनं तो हु जंची हु जंची। तु जंचं तु जंचं कयंती पढ़ंती ॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती ॥
छं० ॥ ११५ ॥

छमे छेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ पय दष्षन कर उंच। मुष्प बोले तूं है वर ॥
कहै सु वर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रंम गुर ॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना ॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना ॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय ॥
उच्चर्‍यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय ॥ छं०॥ ११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा ॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बँध कीन ॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन ॥ छं० ॥ ११८ ॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [1]करै बनै कवि सोय ॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय ॥ छं० ॥ ११९ ॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय ॥
जो उमया सेंमुष कहै। तो सांचो बरदाय ॥ छं० ॥ १२० ॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ ॥
हो नंषों बर सुंदरी। तूं कर कढ्डि सु ताउ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. क्र. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवों। इक चंद छन्दों अट्ट ॥
दो बर साधि उमा कहै। अंतर मझ्झ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लालो प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त ॥ सुनि सैसव विछुरत्त। बाल पिय अमर अरुन द्रिग ॥
बान जगावन काज। रह्यौ [1]पिलदार जानि ढिग ॥
छीनत्त उन्नित बढ़ै। घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसाल गति पढ़ति। चिंति उतरादि सूर भ्रम ॥
इच्छह जु अंछि बंके कारन। संका [2]लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्पिए। श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद। कन्न तारक विहीनी ॥
कै प्राची दिसि त्रिया। विंद कै कंद्र छीनी ॥
कै कुंचिका शृंगार। काम द्रप्पत वर लोभै ॥
गाहनि काननि [3]ग्रनो। सिंघ नष गज सुप सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि वधुअ सुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्र एक एक इति रुप ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय वरदाय। सुरंग यासों सर धुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

*चान्द्रायना ॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धर्‍यौ।
मोहि चंद वरदाय। सु अंतर मति कर्‍यो ॥ छं० ॥ १२६ ॥

चौपाई ॥ सो विन अक्षर एक न होई। घट घट अंतर कव्विन गोई ॥
तुम बहु जुगति दुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

---

(१) मो.-पिलवार। (२) ए. कृ. को.-लंक। (३) ए. कृ. को.-गनी।

* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चांद्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं जुगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै। कियं कै सभुक्कं उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥

लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तइंदं बंदै लोय जाकी ॥
दरें रत्त सोभै बरन्नं सु चंदं। धसे गंग हेमं झुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पढ़ै तुंमरं ताहि पावै न पारं। दियौ चंद कव्वी हयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार वत्त तब जंपि एह। दिष्पाउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब वज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥

नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [2]स० सभा एह। दिष्षय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

आघात वात चलि फारि मेह। न्निम्मलिय नभ्भ रवि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥

भ्रमि भंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[3]सभ सकल मोहि रहि इन सु छंद। किन्नी अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अग्रारं। (२) ए. कृ. को.-सम सकल।
(३) ए. कृ. को.-सम। (४) ए. कृ. को.-छंद।

जे जेय विप्र देषी केदार। ले तेय चंद दिषिय [1]विचार ॥
बैठवा सु राज सिल एक तथ्य। दिष्षिय सु चंद उच्चरिय काथ्य ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सुनि वत्त अहो दुग्गा केदार। प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अग्र सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥

चिंत्तिय सु चिंत्त वरदाय देय। मन लच्छ क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर वानि ग्यान सम्यौ सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग ॥
भियौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रिकिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥

डुब्बी सु मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ वज्र वान [3]सरिवरि कविंद ॥
कविचंद कहै वर वदों तोहि। अप्पौ जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥

लग्यौ जु पढ़न केदार वानि। वर भास छंद अन्नेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलवि मध्य देवी हसंत ॥
अन्नेक बीज मंचह उचार। पढ़ै सु वानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

फिरि भयौ गलित गिरिवर सु अंग। काढ़िग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तत्र। सम तोहि दिपि न त्रिभुवन्न कत्र ॥
छं० ॥ १४३ ॥

कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। वर विमल तुंही वानी सु घट्ट ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार। वाद मंड्यौ मरनं चित ॥
सुवर [4]कट्ठ पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चिथार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-सरी।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं। (४) ए. कृ. को.-काष्ठ।

तब चंद वंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ॥
गंग छेत बरदाइ। बरनि नौ रस्स पढ़ायौ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर भ्रमत करि॥
घिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि॥छं०॥१४५॥

दूहा॥ नीर थ्रम तजि पिष्यियै। घट पष्यौ कविचंद॥
मानौ [1]किरनि पतंग की। षेलत पारस मंडि॥ छं०॥ १४६॥

चौपाई॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्यिय। भला भला ऐसा तुम अष्यिय॥
चंद सूर दोऊ करि सष्यिय। वाद विवाद परस पर रष्यिय॥
छं०॥ १४७॥

कवित्त॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल॥
घट वद्दै रिति कलिय। दिन्न आसीस हय सु बल॥
बर सुंदरि कढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ॥
जंच मंच बहु जुगति। मंगि फिर बोल सु दिन्नौ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार वर। देव विष्ट नंषे सुमन॥
जीत्यौ न कोय हाऱ्यौ न को। सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन॥
छं०॥ १४८॥

अन्त में दोनों का वाद बराबर होना।

दूहा॥ वाद विवादन बीर [2]कवि। सत्ति सुभाव सुधीर॥
द्रुग्ग सत्ति तौ संचरी। जौ चंद वयट्ठौ नीर॥ छं०॥ १४९॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी॥ पुब्ब राह पढ़मष्यरां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना॥ छं०॥ १५०॥
इक्कौ पुच विवद्ध कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां॥ छं०॥ १५१॥

---

(१) ए. कृ. को.-किराती। (२) मो.-कोइ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ वाद वीर संवाद। [1]रहै मन मझ्झ मनोरथ ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरँग। लग्यौ कि बान पथ्थ ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसे मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उच्चित सु अति। सु कवि दिष्षि तार्थे सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति मह्मिान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरँग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सु प्रसंसित कित्ति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

स्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुत्र प्रपौत्रस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ बर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसन बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रहेन। (२) ए. कृ. को.-कूप छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य। (४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*

आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारद्द सरद करिय ॥
आदर अद्ब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय ॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान षग्ग धर ॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ वाच वर ॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जो दिज्जै ॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै ॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ ॥
छं० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस ॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ वलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय ॥
[1]लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाब ॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय [2]तथ्थ तहाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गजनी के गुप्तचर का धर्म्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चरलावानि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़े के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मूल छन्द से बिलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्य वर दूत। रहै ऐसे परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो वाद वद्दे सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुवर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥ १६१ ॥
अद्ध सथ्य चहुआन। राज आषेटक पिल्लै ॥
हय हथ्थी वर साज। सवै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय वत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट वाद हाऱ्यौ सु [1]निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
छुम्मान वीर कग्गद लिय। करो साहि सो सत्ति धुर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय वत्त साहाव। वंचि कग्गर ततार वर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंघ राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ़न साहाव सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि वर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रंग रत्त पीत डेरा वने। हय गय मीर गँभीर जिय ॥ छं० ॥ १६३ ॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा ॥ वोलि परिग्गह सूर सब। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां षुरसान सु वोलि वर। वर वंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ कहै षान षुरसान। साहि गोरीं परिमानं ॥
वर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ वनि दानं ॥
लहुति लोह लोहार। षग्ग षुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत वर वेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-निव।

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुव्वा कव्यौ ॥
चतुरंग सज्जि बाजित्र सुर। करि गोरी आतुर चव्यौ ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय ॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय ॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि ॥
पंच निवाज विकाज। [1]जाइ गोरी गुम्मानहि ॥
इन वेर साहि सुरतान वर। करै दीन बत्ता सु गुर ॥
भर सूर सधै बंधै न्रपति। कै जीवत गड्डै सुधर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग ॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच वेग ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सौगँध मानि साहाव षरि। ढिल्लीवै चहुआन ॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुव्व बैर सुरतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पव्यौ जानि सायरन अंभ ॥
जल थल थलंन [2]जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं० ॥ १६९ ॥

बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत मेज सुरतान हाल ॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं० ॥ १७० ॥

सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर ॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज ॥
छं० ॥ १७१ ॥

सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज ॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि ॥
छं० ॥ १७२ ॥

---

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच्च ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्प। अप्पिय सु हेम राजन विलप्प ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय वत्त सुरतान वीर। धारेव उअर मझ्झे गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति पान। दस पंच हथ्थ उत सुव्विहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि। वर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्पिन वर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महुब्बति पान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम वज्जिय नौवत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाव वयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गा केदारह। दीन असीस बिविधि विद्यारह ॥
मिलि सहाव सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल बिविध दल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम द्रुग्गा केदार ॥
तन बिभूत जट सिंग म्रग। आए दूत सुच्यार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुवाह तिन चरच वस। काइम साहि सहाव ॥

(१) ए. कृ. को.-"अति द्रव्य कोर दौनौ सु भाइ"।
(२) मो.-साव। (३) मो.-उमराव।

[1]अग्ग बोलि गोरी गरुअ। तव अति दिष्यौ [2]आव॥ छं० ॥ १८१॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा॥ आयस दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षवरि विवरि चहुआनं॥
अरु सामंत सु धीरं। पुछियं प्रीति रीति साहावं॥ छं० ॥ १८२॥

अरिल्ल॥ बषत बड़े सुरतान मानि मन। बंधी गास पंग प्रथि मंतन॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत सूर भर॥
छं० ॥ १८३॥

भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं॥
भयौ षीन चहुआन मोंच दुष। गय पिपास निद्रारु षुधा सुष॥
छं० ॥ १८४॥

चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ सूर सामंत चिंति रजि॥
क्रीड़त देस मझि पंथानह। कंपै असि अरि मत्त पयानह॥
छं० ॥ १८५॥

भरि भंगान पुंडि मीना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह॥
छं० ॥ १८६॥

रोज तीस मुकाम थथ्यौ थह। उतऱ्यौ आनि मझि जलपंथह॥
बषत समथ साहि साहाव सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि महरनि रन॥
छं० ॥ १८७॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा॥ सुनिय बत्त साहाव चर। दिय निरिघाव निसान॥
अप्प षान मीरं वरा। कहो सजन सब्बान॥ छं० ॥ १८८॥
कही षान षुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति॥
कही सुचर सुनियै सबै। जुरन याह घर घत्ति॥ छं० ॥ १८९॥

(१) ए. कृ. को.-अंग वाले। (२) ए.-आव।

अरिल्ल ॥ कीय वत्त पुरसान ततारह । आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह । कूच कूच भय सेन सवानह ॥
छं० ॥ १९० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना ।

दूहा ॥ अप्प अप्पयह उम्मरा । आए सज्जित सब्ब ॥
चमकि चंड कैदार मन । आयौ तात [1]सु तब्ब ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सुनिय वत्त कवि विविध वर । पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुद्ध थिर । सलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १९२ ॥
द्रग्ग मत्ति सुत सों कहिय । तुम जानहु चहुआन ॥
पहिली भट अपराध वहु । माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १९३ ॥

कवित्त ॥ दल मोगर मेवात । राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट । राज वैसास न आनं ॥
करौ वत्त न्रप हित्त ॥ कपट दिष्यौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज । पवरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि ध्रम्म वंध संभरि न्रपति । निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेंन राज श्रीफल उदित । दे कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना ॥

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन । दरक चढ़ाइय सु वेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम । करहि नरह उद्वेग ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा ।

कुंडलिया ॥ दिष्य फौज सुरतान कीं । बंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुवर । है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट । सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर । भीर सज्जे बहु षानं ॥

(१) मो.-सुन । (२) मो.-लाज ।

तीस लष्य में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सीर फिरस्ते टारि। दब्ब मार्‍यौ सिंधु तट्टे ॥
सिंधु विछष्यै वीच। साह पुल्ल बंधज घट्टे ॥
हुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे ॥
उप्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे ॥
नीसान हवाई सुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षवरि सुरतान ॥
कहियो [3]वेगौ सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उठ्यौ दा सेरक ॥
मनु वामन किय वृद्ध। क्रम्म चयलोक मले सक ॥
[4]कुसा तिष्य कर कढ्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्षै ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्षै ॥
संचर्‍यौ एम संमीर वर। प्रोथ बात रोह्यौ प्रबल ॥
अध धर्‍यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल वेग हक्यौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम न्रिम्मल सु द्रह। पुलिन वर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम ॥

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-बुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-वेगी। (४) ए.-कसा।

सथ्थ सूर सामंत। मत्त षेलत हड्डूअ ॥
.... | .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअह। [1]हहकि दरक मन वेग तहाँ ॥
कविदास आय तव जंपि न्रप। करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्पै न्रप दिष्पियौ। गोरी साहि नरिंद ॥
हसम हयग्गह सज्जि कै। दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहवदी सुरतान अव। तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्पै देषौ न्रपति। घरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के वचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रवन्ध करना।

छन्दभ्रमरावली ॥ सुनियं तव राजन चंड तनं [3]वयनं।
तव जग्गिय वीरह धीर तनं नयनं ॥
तव सद्दिय सब्बह एक किए अयनं।
सव सामँत सूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं।
मुष रत्तह व्यंवह श्रोन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भोंह समं पयनं।
सवं आवध सज्जिय मत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तव सज्जि सेन प्रथिराज। मंत सव सामँत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि। काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चोंहान। सु थल या अग्गें वेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि वाम। पूर जल किन्न सु केहरि ॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सव। इक भाग रष्यौ चव्यौ ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्रप। भल भल सव सेना पव्यौ ॥छं०॥२०६॥

(१) ए. कृ. को.-हक्कि। *यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-मैं। (३) ए. कृ. को.-वनयं। (४) ए. कृ. को.-पय।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं वीर रस उंच वाजिच बाजं॥
भरं मंडलं मंडियं संडि अन्नी। [1]रसं सूर सामंत सा सूर मन्नी॥
छं० ॥ २०७॥

भरं सहस वा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रच्चियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार सार्जं॥
छं० ॥ २०९॥

भए च्यार सामंत सो कर्णि कारं। बियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ सध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१०॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाहं पगारं। तिनं मद्धि जद्दौं सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भौंहा सु धीरं। तिनं मद्ध सोहान सा विंझ बीरं॥
छं० ॥ २११॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्सं च अट्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि॥ छं० ॥ २१३॥
गंभीरां सुरतान दल। अति उतंग [2]बरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्षे गिरवानं॥

---

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-अति।

सजे सेन चतुरंग। दंद दंती वनि घट्टा॥
सुवर वीर सुरतान। वान [1]उव्वरि जल छुट्टा॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर। सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर। पग्ग कढ्ढि पग्गह पुल्यौ॥
छं० ॥ २१५॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन।

छनूफाल॥ आयो सु सज्जि सहाव। [2]उल्लथ्यौ सायर आव॥
है लष्य सारध एक। प्रति रची फौज विमेक॥ छं० ॥ २१६॥
जति अनंत वज्जै वज्ज। गिरधरनि अंवर गज्जि॥
भर सिलह वंधिय वीर। तजि आस जीवन धीर॥ छं० ॥ २१७॥
सजि कसे आवध सब्ब। वर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब॥
मद गज्ज अट्ठौ अट्ठ। वर वेग राह सु घट्ठ॥ छं० ॥ २१८॥
करि दौरि आयौ साहि। पंचास कोस [4]पहाहि॥
विच राज जोजन एक। विश्राम सज्जिय सेक॥ छं० ॥ २१९॥
तहां सिलह है गै भार। परसंसि मीर झुझार॥
उन्नमिय नेज उतंग। गनि जाइ रुवन रंग॥ छं० ॥ २२०॥
षुर षेह उड्डिय रेन। आकास मुंदिय तेन॥
गहगही सद्द सु गाह। रन गहर पष्पर पाह॥ छं० ॥ २२१॥
वानैति वानैं साज। रस वीर धरिय सु गाज॥
भय निजरि दूनिय सेन। भर भीर चिंतिय तेन॥ छं० । २२२॥
वज्जंत रन रनतूर। निज ध्रम्म संभरि सूर॥
जब देषि हिंदु उतारि। उच्चर्यौ षान ततार॥ छं० ॥ २२३।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना।

दूहा॥ कह्वि ततार साहाव सों। किय दल हिंदु उतार॥
हम उत्तरियै मीर सब। तुंम रहौ पुट्ठि साधार॥ छं० ॥ २२४॥

---

(१) मो.-उच्चरि। (२) ए. कृ. को.-उद्धर्यो।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब। (४) ए. कृ. को.-पहाड़।

कवित्त ॥ लष्प एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अद्ध लष्प दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुब्भर ॥
कुल अरेह अस्लील । बोलि पित पिच्च नाम नर ॥
अग्गै सु भार हथनारि धरि । बानग्गीर बानेत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि वीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन ।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हथनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरषंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जे वि सुब्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारद नद्दह मंडि मद्दह इष्षि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्या सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक सेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्क दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सीस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
वहि श्रोन पूरह काल कालरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बिताल तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमक्कि डौंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै धाक धाहै झाक आवध ओझरं ॥

(१) मो.-पदि नीर । (२) ए. क. को.-तुट्टहिं, लुट्टहि ।

असि पटापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुभ्भरं ॥
उठि उट्टि क्कसि केम उक्कसि सांइ सुध्यल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हकियं सु वेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जीह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग जरह प्रान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
विद्धवि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हकीय राज दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिलि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुद्ध अरुद्ध लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिद्धय संत रासह ग्रभ्र खोनह सीरयं ॥
.... ॥
.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

वरनी युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरथ। रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल सु। पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन वर चवै। सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार झिल्लै। प्रहार बीरा रस धारिय ॥
घरि एक भयानक रुद्र हुअ। सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ। सुगति मग्ग षुल्ले विदर ॥छं०॥२३५॥

लोहाना का फुर्तीलापन।

साटक ॥ सीतं [3]गोप सरेत भीतय वरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अम्रतं आलंब वाहं वरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेलहि। (२) ए. कृ. को.-जुध्यरं। (३) ए. कृ. को.-तोप।

दिष्षी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्थ बिय बुद्धयं ॥
गोरी सा सुरतान रक्षति तयं आजानबाहुं वरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर। लोहा लंगरि राव ॥
कढ्ढे लंबी तेग वर। साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर। [2]वढ्ढिय हय चढ्ढि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग। बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिठ्ठि दिष्षि फौजयं, पहार साहि सम्मयं।
चल्यौ सु राव सूर मंत, दिष्षि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिलौ दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, वीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी।
वरंत हूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति सूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं।
अहंत अग्नि एक पंति, उर्द्ध जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं।
परंत एक तुट्टि तेग, उड्डि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक्क बीर हक्क, सद्दि कंठ पूरयं।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस हक्कयं धरप्परं।
.... ॥ छं० ॥ २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]अभ्भि रंत संभरं।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुब्भरं ॥

(१) ए.-फौज। (२) ए. कृ. को.-कढ्ढिय।
(३) ए. कृ. को.-बंधि, बंदि। (४) ए. कृ. को.-भर।

वहंत सार वार पार ता रुरंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ संतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
करंत घाव जंम [1]डाव घाव घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं वगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पप्परं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड पंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नट्ठि षेत लिक्करं ॥
रुनी सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बक्कारि पग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर वीर षुट्टए। वीर बीरह आहुट्टे ॥
सार धार वज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हक्कारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
बर वीर साहि दिष्षौ निजरि। सां पुल्लै कुल चाढ़ि सहु ॥
जाने कि काल जीहा उक्कसि। उद्दिग बाह [2]पगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रथ्थ अरथ्थ हुअ। नर सों नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जने। भय भींभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सु भर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयंद दो। जुटि अंकस बिन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

(१) ए. कृ. को.-दावं। (२) मो. पसार।

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्य नासा नयन्नं बरालं॥
मिले छोह कोहं असम्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निधत्तं करग्गे ॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के। फिरै गेन देवी हकारंत हक्के ॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं। करें हूक हक्कं सु आहुत सद्दं ॥
छं० ॥ २५० ॥

ढरें संध बंधं बहैं षग्ग धारें। मनों चक्क पंकं कुलालं उतारें ॥
लगे [3]सेंग अंगं कढ़ें वार पारं। बहै जानि जादक्क श्रोनं प्रनारं ॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं जानि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जम्म दड्ढं महा मल्ल भेसं ॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छल्लिका जुद्ध [4]कित्तेति बीरं। दिषें भेज अंगं मनों सुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं ॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले श्रोन षारं मची कीच भूमी। अभूतं सु कंकं महाबीर झूमी॥
जहां षान तत्तार रुपि राह रूपं। तहां चक्क रुपी प्रथीराज भूपं॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्य गोयंद चहुआन कन्हं। जुरे जैत बलिभद्र परसंग नन्हं ॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पावै न जानं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहों साहि गोरी हरों स्वामि त्रासं। बहै सथ्थ लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुऱ्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं ॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं। (२) ए. कृ. को.-मसंधं।
(३) ए. कृ. को.-संग। (४) मो.-कित्ते सु।

* .... । .... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
षां षुरसान ततार। षान रुस्तम वे जुट्टिय ॥
अवर सेन अध लष्य। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। सुष्प सामंत विलग्गिय ॥
मत्तंति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उद्दं वरिय ॥ छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतो का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाव। दिठ्ठ पाहार सु दिष्षिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भोंहा भर लष्षिय ॥
लोहानों आजान। वाह उद्दिग पग्गारह ॥
विंझराज चालुक्क। देषि घट सामँत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अड्ड दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिझय साह पर ॥
छं० ॥ २५९ ॥

उत्तह वीस मसंद। इत्त सामंत सत्त घट ॥
वज्जै सार करार। झार उड्डंत रूक झट ॥
[3]पसरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन वीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्यौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भोंहा हय सीस गय ॥
घेर्यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानों गज रोह हय ॥ छं० ॥ २६० ॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तव। हन्यौ कंध गज मग्ग ॥
ढरिग सीस पुंतार सम। धरिनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

---

*मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो.-लोथि। (२) ए. कृ. को. सित्त। (३) ए. कृ. को.-पसरत।

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ ढरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार पंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गो सव आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक (२)जर ॥
परे सीर सत्तह सहस। सहस अड्ड हय (३)पंचि गय ॥
दिन अस्त माहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय चत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हह मंडीय। मोहि विसमै द्रिग खिन्निय ॥
अहत कोट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुक्करी। किन्न पूजा कज बढ्ढिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। कित्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उच्चाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। जोध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदढ्ढां जम दड्ढ। असम असिवर नर लग्गे ॥
षासर छत्र रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर बंध गए ढिल्ली तषत। जै बज्जा बज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रबि समान तप मान (३)धन ॥
छं० ॥ २६५ ॥

---

(२) ए.-जारन।　　(३) ए. कृ. को.-पंचि।　　(३) ए. कृ. को.-सम।

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहिय साहि आलम्म। गए प्रथिराज अप्प ग्रह॥
पोस मास पंचमिय। सेत गुरवार क्रत्ति कह॥
जोग सकल गहि साह। सज्जि दिल्ली संपत्तौ॥
अति मंगल तोरन। उछाह नीसान घुरत्तौ॥
दिन तीस रष्षि गोरी गरुअ। अति आदर आसन्न वर॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय। गय सु सत्त लिय मुक्कि कर॥
छं० ॥ २६६ ॥

दंड वितरण।

दूहा॥ अर्द्ध दंड [1]प्रथिराज पहु। दीनौ राव पहार॥
अवर पंच सामंत अध। दीनौ प्रथुक पथार॥ छं० ॥ २६७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५८॥

(१) मो.-पतिसाह।

अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साष साष भट भाष षट । । दर सम वर पुर इंद ॥
तपै सूर सामंत इछ । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत बर । जरि जराब बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छत्र विराज मद्धि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ मद्धि । सामँत रिद्धि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ षट सुभाष षट दंन । बहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि षट भजि । करिय सें अट्टह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सप्प । छके षट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि यह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयस रन डंडक गहन ॥
चहुआंन भान सम भान तप । रहन वास उड़पति धरन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ॥ सुधं निगंम बोधयं, जमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग अच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु बासयं, फलं सु फूल रासयं ।
बिरष्य बेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केसरं कुमंकुमं, मधुप्प वास तं भ्रमं ।

(१) मो.-जनु किरन्न । (२) ए. तिनह ।

अनार दाष पल्लवं, सु छत्र पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री षंड थंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं ।
जु चंपकं कदंबयं, षजूरि भूरि अंवयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननास जीरयं, सतूतयं जँभीरयं ।
अषोट सेव दामयं, अवाल वेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंगयं, सवद्द स्वाद होतयं ।
चवंत मोर वायकं मनो सँगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं ।
...., ... ॥ छं० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ उड़ि सु वास गुल्लाल अति। उड़ि अवीर असमान ॥
मनहु भान अंवर सुरत। बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरबार की शोभा और मुख्य दरबारियों के नाम।

* वेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं। सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुल्लाल लल्लिय अंगनं। आरत्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छत्रयं। वंधान बंधिय सत्रुअं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं। करतार कोन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं। मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निद्दुर सल्लषयं। धुर धरन गद्दिय नष्षयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु वन्नयं। सोमेस बंधव कन्हयं ॥
चष पट्टिय चष्षन यट्टयं। दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि आप आप विधुत्तयं। थिर रहै रिद्धि न युत्तयं ॥
गुरराम पिट्ठ विराजयं। जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.-वीसयं।

* इस छन्द को मो. प्रति में दण्डमालची करके लिखा है। वास्तव में कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्रति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को.-सज्जि कि संरगनं। (३) ए.-सज्जियं।

मुष अग्ग चंद [1]सु भष्षनं। रज रीति हद्द सु रष्षनं ॥
पुंडीर चंद सु पाहरं। नर नाथ दानव नाहरं॥ छं० ॥ १८ ॥

वनि अन्यो अन्य सु ठौरयं। सुनि तंति सुरगन सोरयं ॥
पिरै स दिठ्ठय पासनं। रचि अंब सेत हुतासनं॥ छं० ॥ १९ ॥

चावंड लष्य सु लष्यनं। रजि हिंदु राज सु रष्षनं ॥
रनधीर सामँत सुभ्भयं। भिरि भंजि मीर सु द्रभ्भयं ॥ छं० ॥२०॥

मुष अग्ग वाजन ठट्टयं। पहु दीप मझ्झल कट्टयं ॥
दोसत्त जुर रा दुष्पनं। चिहु चक्क चारु सु [2]पिष्पनं॥ छं० ॥ २१ ॥

घुरि चंब सुर तहं वज्जनं। गहि छंड गोरिय गज्जनं॥
रचि महल मधुरिति मधुरयं। भ्रम छंडि मंडि सु पिष्षयं ॥
छं० ॥ २२ ॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन।

चोटक ॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं। पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं॥
प्रथमं दिलियं किलयं कहनं। ग्रह पौरि प्रसाद घना सतनं॥
छं० ॥ २३ ॥

धन भूप अनेक अनेक भती। जिन वंधिय वंधन छत्रपती ॥
जिन अश्व चढ़ै [3]घरि असि लषं। वल श्री प्रथु मत्त अनेक भषं॥
छं० ॥ २४ ॥

दह पौरि सु सोभत पिष्य वरं। नरनाह निसंकित दाम नरं॥
भर हट्ट सु [4]लष्पनयं भरयं। धरि वस्त अमोल नयं नरयं॥
छं० ॥ २५ ॥

तिहि बीच महल्ल सतष्षनयं। लष कोटि धजी सु कवी गनयं॥
नर सागर तारँग [5]सुद्ध परें। परि राति सुरायन वादु घरें॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) मो. सु भूषनं। (२) ए. कृ. को.-चष्षनं। (३) ए. कृ. को.-घटि।
(४) ए. कृ. को.-सुष्पनयं। (५) ए.-सद्ध।

मचि कीच ओगालन हट्ट मझें। दिषि देव कैलासन दाव दझें ॥
[1]रजितार वितारत भंति नवी। परिजानि हुतासन लत्त छवी ॥
छं० ॥ २७ ॥

मनु सावक पावक मद्द क्रिय। विन तार अतारन मारि लिय ॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं ॥
छं० ॥ २८ ॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। धर मभ्भन तार अनेक सजं ॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गतयं। लषि लष्षि चौरासिय उड्डनयं ॥
छं० ॥ २९ ॥

पचि ललिय नीलिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं ॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझैं। करि दंत मिलंत गिरंत सझैं ॥
छं० ॥ ३० ॥

इय सामँत दामित रूप कला। बर वीर उठै धरि सत्त कला ॥
जिन सामँत सामँत सुद्धरयं। घटि बढ्ढि सँडे गिर दुम्भरयं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ परिहारह बन बीर। आय हय जोरि सु उभ्भिय ॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]प्रथु सामँत सुभ्भिय ॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय ॥
बहुत मंस पकवान। जबुकि प्रथमी आधारिय ॥
षट अन्न दरग्गह सोम सुभ्र। केसर अगर कपूर उर ॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दझी ढुंढा सहर ॥
छं० ॥ ३२ ॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक ॥ इह इंद्र पुरं किधों दिल्ल पुरं। इम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं ॥
इह मेर किधों इंद्र चापनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टिनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-रचिता विरलारन। (२) ए.-प्रिथा, ए. कृ. को.-प्रिथ।
(३) मो.-सुअ।

सुर मध्य विराजत सूर समं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं ॥
घन मद्धि तड़ित्त कला विकलं। पुर धाम सुभट्ट सषा प्रवलं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सुभ रूप तहां गनिका गनयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं ॥
गहि तंचिय जंचिय डक्क वजै। जनु मार किधों कुरु कोक सझै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि वीर अवीर न झारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं ॥
लष एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सव हीर मनं। रमि जूप वदै रमनी गमनं ॥
सव हारि निहारि कोपीन सझै। जव लिद्धिय नारि अपारि दझै ॥
छं० ॥ ३७ ॥

इन मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै ॥
वनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भीर वढ़ी नह दिट्ठ नयं ॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु वाल सजोवन प्रौढ वनं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मझै ॥
ग्रह दिष्षिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अम्रत सम्रत प्रान पती ॥
सुर अट्ठ सषी अँग रष्षि कला। मनु सेस वधू प्रभु की अवला ॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर वनी। जनु अंबर डंबर भान घनी ॥

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अमोर। (२) ए. कृ. को.-नटयं, नठयं।

सित सत्त कलस्स सु [1]सुंदरयं । तिन मझ्झ सषी बहु सुंदरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छत्रपती । प्रथिराज कैमास हन्यौ सु मती ॥
चहुआन बधू दसयं भनयं । भिरि लिद्धि मंडोवर दंपतियं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं । रिति छत्र कला सुर संपतयं ॥
तिय मिथ्यह व्याह्य पुंडीर कियं । मनु अंबर मद्धि तड़ित्त वियं ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अनि नाम चंद्रावति चंद सुती । सुष भाग सुहागन चंद सुती ॥
घर दाहुर दाहिम पुत्ति दयं । तिन पेट रयन्न कुमार भयं ॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि वृत्त सु भंतिय कृष्ण करी । मनु आनिय पीय सु कंध धरी ॥
तिन रूप [3]रूपं मनि लिद्ध रजं । चहुआन सु आनिय देव सजं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

वरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं । जनु मुष्ष सरस्वति गावतियं ॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं । जनु किस्न रुक्मनयं मिलयं ॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं । मनु चित्त कि पुत्तरि आनि धरं ॥
रिनथंभ हंसावति काम कला । तिन दीपति छिप्पत चंद कला ॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती । किय अप्प [4]जँजोग संजोग सती ॥
वह रूप अनूप सरूप मती । नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती ॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं । किधों षंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं ॥
सुर कोटि चिषंड नयन्न सुजं । तट तास सुवास जमुंन [7]सजं ॥
छं० ॥ ५० ॥

---

(१) मो.-सन्दरयं । (२) ए.कृ.को.-सुभयं । (३) ए.कृ.को.-रुपमनि । (४) ए.कृ.को..संजोग ।
(५) ए. कृ. को.-धनंक । (६) ए.-वढ़यं । (७) ए. कृ.-सज्जं ।

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं। पग नट्ट गिरं पवनंति बढं॥
बहु रूप अनूप सरूप भती। दिषि जानि कला सुर देव पती॥
छं०॥ ५१॥

गज षंभ छुटंत उमद्द मदं। मनु गाजत गज्ज अषाढ़ भदं॥
कि मनों घट्ट उट्ठिय कांठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं॥
छं०॥ ५२॥

बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दिपै। तिन मेर [2]सिषंन सुभान छिपै॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं। सुत सूर गयंन विदारनयं॥
छं०॥ ५३॥

दिनप्रत्ति रमें तट कूलनयं। सुर पेषि सुरायह भूलनयं॥
तट रेष रिषी सर पालनयं। कित नाम सुधारन कालनयं॥
छं०॥ ५४॥

राजकुमार रैनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा।

[3]सत तीन वरष्ष असी अगलं। जब ढूंढ़ ढंढोरिय भू सगरं॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं। मुनि जानि ब्रह्मा समयं दिषयं॥
छं०॥ ५५॥

तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं। मुनि जानि कृपाल कृपाल भयं॥
बजि तारिय भारिय सद्द वधं। प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं॥
छं०॥ ५६॥

जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं। मधि कन्न सुकी सुक मंडि घरं॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं। सिधद्रिग्ग उघारि दिषं नरयं॥
छं०॥ ५७॥

तिन पुच्छिय वत्त मही रिषयं। तुम बीसल पुत्त नरं [4]भषयं॥
अब किल्लिय दुल्लिय वास कियं। प्रथमं अजमेर कुबेर दियं॥
छं०॥ ५८॥

(१) ए.-मयंद। (२) ए. कृ. को.-सषंन।
(३) मो.-सित दोय वरष्ष असी अलगं। (४) मो.भषनं।

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मझि। दिय रिषि नें वर ताम ॥
जाह्नु सु पहिलै [1]अजय वन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गहनें ताये तारियं ॥
सतजुग संकर सधर। परत प्रथिराज सु पालियं ॥
द्वापर पंडव राव। सत्त कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन रवरि। फिरि दिल्ली चिहुं चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छत्त महि। [4]निव अमेव आवट्टि नर ॥छं०॥६०॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सवन। रिषि प्रमान करि भीर ॥
बिन तारी करतार बर। तट बहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्दह धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनों इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ अरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन षट्टू सु वासं ॥
छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह [5]जु सेन। पल मारि झारि कर बद्ध ऐनं ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सच सिर सिद्ध दाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सींह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्षि भ्रम्म घर वट्ट बापं ॥
छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सहस द्वै उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ को.-जुगह तेता ते तारिय।
(३) ए. कृ. को पारी। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर।
(५) ए. सु

परिहार पीय सुअ तेज पुंज। मनु दीप पक्क कै केलि कुंज॥
छं० ॥ ६६ ॥
गुरराम सुअन हरिदेव रूप। मुष मिठ दिट्ठ कलि परन भूप॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार। दस पंच वरष महि वजिय सार॥
छं० ॥ ६७ ॥
जग जेठ कुँअर चामंड जाव। जिन लिये कोट दस भंजि राव॥
सुत महनसिंह जैसिंघ वीर। जिन रष्षि वंस पिचवढ नीर॥
छं० ॥ ६८ ॥
पंमार सिंघ सुअ राजसिंघ। जुरि जुद्ध रुद्ध उड़ि वाह जंघ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम। दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम॥
छं० ॥ ६९ ॥
वरदाइ सुतन जल्हन कुमार। मुष वसै देवि अंविका सार॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद। गज दंत कढ़े जनु मील कंद॥
छं० ॥ ७० ॥
विंझा नरिंद सुत देवराज। सो जंग मंझ गज करत पाज॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट। तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट॥
छं० ॥ ७१ ॥
तोंअर सुतन्न किरमाल कान्ह। जिन करी रिद्ध दुज दे अमंत॥
पज्जून सुअन पाहारराइ। चहुआन इला कलि करन न्याइ॥
छं० ॥ ७२ ॥
नरसिंघ सुतन [1]हरदास हड्ड। गुर ग्रद्ध मान हम्मीर गड्ड॥
षीची प्रसंग सुअ मल्हनास। वचिं देव ष्षम्म वंदट्ट वास॥
छं० ॥ ७३ ॥
सुत तेज डोड अचला सुमेर। दीपंत देह मानों कि मेर॥
जंघार भीम [2]सुअ सिवहदास। कठियाराइ सुत कल्हिलास॥
छं० ॥ ७४ ॥
अततांइ सुतन आरेन रूप। भिरि भीम वंद्ध मारंत भूप॥
चंदेल माल प्रथिराज सूअ। भिरि जंग मझ्झ गज गहन भूअ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो.-सिवदास। (२) ए.-सुह।

संग्राम सुअन सहसो समथ्थ। जुरि जुद्ध भान रोकै सुरथ्थ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन। मनहु प्रथीपुर इंद॥
[1]कलि सोभन मोहन कवी। मनो सरद्दह चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन।

पद्धरी॥ रितराज राज आगंम जानि। पंचमि वसंत उच्छव सुठानि॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब। प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुत्त तह मभ्भ आइ। षिल्लहि वसंत गोपालराइ॥
परधान हुकुम सिर यर चढ़ाइ। सव वस्त रष्षि कन पहि काढ़ाइ॥
छं० ॥ ७९ ॥

घनसार अगर सत कासमीर। म्रगमद जवाद बहु मोल चीर॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार। मन हरत मुनिन सुरगंध तार॥
छं० ॥ ८० ॥

बदंन अबीर रोरी गुलाल। अति चोल रंग जनु भूड लाल॥
मिष्टान पान मेवा असंघ। मन चिपति होत निरषंत अंषि॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास। विच्छाय सु पट जाजिम नवास॥
अंमोल मोल दुल्लीच झारि। षंचाइ षुंट रुलितानि धागि॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाव पूरि। दिषियंत उड़ति अब्बीर धूरि॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप वास। तन बढ़त जोति सुब्बास रास॥
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि। नग जरित हेम बिसकर्म जानि॥
बैठाय पाट गोपालराइ। घन घंट संष झल्लरि बजाइ॥
छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-कवल।

सिरदंग ताल जहं पौंन धार । वीनादि जंच झिनकार सार ॥
नफफेरि भेरि सहनाइ चंग । दुर वरी ढोल [1]आवझ्झ उपंग ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दम्माम सवद वज्जत विनोद । वंसी सरल्ल सुर उपजि मोद ॥
[2]अनि अनि चरित्र नर नारि आनि । सक्कै न होइ तिन जाति जानि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत । रष्षंत पवन विय विप्र हेत ॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ । सम अग्ग सिंघासन वैठि पच्छ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

वैठिय सु कन्ह चहुआन आनि । झलहलत क्रोध उर अगनि शानि ॥
गहिलोत राव गोयंद आय । जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

निढ्ढुर नरिंद कमधज पधारि । आदर [4]अनंत न्नप करि उचारि ॥
कूरंभ कहर वलिभद्र आय । जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

फुनि आय अप्प अब्बू नरेस । भय भीम रूप जमनेस भेस ॥
अतताइ आइ तहं सिव सरूप । वैठिय सु उठ्ठि [5]भहराय भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

चावंड विना भट सब्ब आय । अरि धरनि धगनि जे देत दाय ॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद । अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव । जिहि वियन काम विन स्वामि सेव ॥
वय वृद्ध नाल सामंत सब्ब । अवधारि राज प्रथिराज तब्ब ॥
छं० ॥ ९२ ॥

फुनि आइ चंद [6]वरदाइ माइ । जिहि प्रसन जीह दुरगा सदाइ ॥
आये सु न्रत्य नाटक अधीन । गंधरव राग विद्या प्रवीन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

---

(१) मो.-आवझ्झ । (२) मो.-अन्नेक चरित । (३) मो.-पंडित ।
(४) ए. कृ. को. अत्यंत । (५) ए.-भरराय । (६) ए. कृ. को.-वरदास ।

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या बिलास ॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल ॥
छं० ॥ ६४ ॥

अनेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन ॥
तिम सुनत तवत तन पाप छीन। न्रप राइ रिझ्झि वहु दान दीन॥
छं० ॥ ६५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उठ्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज ॥
अनसंक कंक बंकान पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर ॥
छं० ॥ ६६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं नाम उनसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामँत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला कृत भेदं । हरपित [1]हृदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्रपति कै पातुर । गुन रुपक विचरति श्रुत चातुर ॥
नाटिक कला सँगीत आन रचि । अति [2]न्रत्यत करि विगति सु गति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु माठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रसुष्प यह । निंदत् चित्तरेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद वर । अपि सु पवरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज पुर पति बत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥

दिष्षि रहसि न्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अलि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय ।
(२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अंड ।
(४) ए. कृ. को.-इक्कें ।
(५) ए.-वत्ति ।

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्थ ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरि॰। सुनि सामंत सु नथ्थ ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हुंकारत सज्जं ॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। न्टप अंदेस देस रचि तासं ॥ छं० ॥ ८ ॥

थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं ॥
आय पंग तट इष्ष समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं ॥ छं० ॥ ९ ॥

इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फीफुनि साजन॥
लग्यौ राग श्रोतान रजानं। बुझ्झी बहुरि सु जंगम जानं ॥ छं० ॥ १० ॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त ॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुवेस बर ॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर ॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि न्टप देस जाति गुन ॥
फुनि अष्षै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर ॥
गंध्रव्व [2]वचन विच्चारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर ॥ छं० ॥ ११ ॥

संयोगिता का दूसरी वार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा ॥ देषि फेरि कहि नाथ पति। फुनि सुक्कलि कविराज ॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विचरै न्टपति समाज ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित बिरद बर ॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर ॥

(१) मो.-आचलि। (२) मो. वयन।

फुनि चहुआन सु पास। जाय ठट्ठे भए जामं ॥
कछु कवि रहिय राज। कछुक जंपे गुन तामं ॥
नृप लज्ज पंग ग्रह भट्ट वर। तुच्छ संपेप सु उच्चर्‍यौ ॥
संजोग समझ्झे उर नरह। कंठ ग्रथ्यु चौसर धर्‍यौ ॥
छं० ॥ १३ ॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा ॥ दुसर राज इह देषि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम ॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ फुनि नरेस अदेस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर ॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्रम्म क्रम्म वर ॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्न कर मंडं ॥
भूत भविष्यत वत्त। भव्वि जानी उर चंडं ॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतपि। दिष्षि देव देवाधि सचि ॥
वरनौ संजोग चहुआन वर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि ॥
छं० ॥ १५ ॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा ॥ कोप कलंमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि ॥
रोस सोस उर धारि तव। क्रम भति भई न चारि ॥ छं० ॥ १६ ॥
उट्ठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान ॥
विमुप निमुष दिष्यौ न्रपति। देव कृत्य परमान ॥ छं० ॥ १७ ॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त ॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गर्‍यौ दच्छ पति ॥
द्रुपद राय पंचाल। जग्गय विग्गर्‍यौ इष्ट रति ॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गर्‍यौ सु जानं ॥
[1]न्रघुष राइ [2]राज हू। गत्त जानी परमानं ॥

(१) ए. कृ. को.-नघुष। (२) ए.-राजरु।

स्रुति बर पुरान स्रोतास वल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
चय काल काल सामंत कह्नि। दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की। पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि। विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग। गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय। प्रसंग कल ग्यान भाव पट ॥
ब्रत उचार चहुआन। धरत कर करत अप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत। बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़। सोफी फुनि जंगल कह्यि ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन। दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कह्यि। दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने। दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना।

उठि राजन तब हुकम किय। बहुरि सूर सामंत ॥
पारिहार केहरि कमल। काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥
बुल्लिय स भूपति साधनह। दुतिय स ईसर दास ॥
बरन नेह विस्तार तन। आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥
गंग जमन जल उभय करि। करि अस्नान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु। उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥
असन मार आराम सुष। सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग ब्रत। संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥
*तब परिहार मु हुकम दिय। गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि। सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्गयौ सु राज श्रोतान राग । संजोग हत संभरि समाग ॥
अति असम वान वेधे सरीर । नह धीर [1]हसं नह भाव धीर ॥
छं० ॥ २७ ॥
[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकढ नव कुसुम [3]चंग ॥
कलयंठ कंठ उपकंठ अंव । पाठंत विरहनी पति सितंव ॥छं०॥२८॥
कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
सति मान जानि सिंदन सु तात । संजोग सुपद विरहिन निपात ॥
छं० ॥ २९ ॥
उन श्रवन सान गाजंत जोर । मधु हत्त समागध पठत घोर ॥
[5]साहीत सिषी चढ़ि सिपर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
छं० ॥ ३० ॥
सासन सुरंम धरि चिविध पोन । वारह मत्त लघुमात गोंन ॥
लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
छं० ॥ ३१ ॥
संवत्त संभ पंचास मेक । पप स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । न्टप मन विचार उर चलन कीय॥
छं० ॥ ३२ ॥
दूहा ॥ लग्गि वान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि वसंत ॥
सहै न्टपति अप्पै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते वसंत तपु ॥
मदन मानि मन मोद । लीन छेदे [7]प्रछेद वपु ॥
देस नरेस अदेस । देस आदेस काम कर ॥
नीर तीर नाराच । पंग वेंधे अवेध पर ॥

(१) ए. कृ. को.-चित । (२) ए. कृ. को.-रति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग । (४) ए.-उद्दास । (५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार । (७) ए. कृ.को.-अछेद ।

खलमलत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत ॥
बरदाय बोलि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उक्ति ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा ॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्टप ताम ॥
आनि बहुरि दीने सु तब। रष्षे तथ्थ सु काम ॥ छं० ॥ ३५ ॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार ॥
अब जीवन बंछै कहा। कहौ सु कब्बि विचार ॥ छं० ॥ ३६ ॥
अरु दिढ्ढ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत ॥
चलन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३७ ॥

कबि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कवि [1]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस ॥
चलत न्टपति बरजिय न कहुं। विधि न्नम्मान सुदेस ॥ छं० ॥ ३८ ॥
पंग सु जानहु तुम न्टपति। चलि कीनी तुम देस ॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली ॥
जारि पारि बेहाल। पलक कीनीं धर मिल्ली ॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर ॥
दंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर ॥
कर साँप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय ॥
सोमेस नंद विच्चारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय ॥ छं० ॥ ४० ॥
कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ ॥
पारावार अपार। कवन पलक्क तन कीनौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-राम। (२) मो.-कोरि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर। (४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवास। (६) ए. कृ.-बलवंड।

हेम सेल करताल। धऱ्यौ सिप नप्प सुन्यौ न्टप ॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस दप ॥
जन जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अकून रन जित्तियै ॥
चलहु नरेस परदेस मन। दै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीप कविचंद कहु। वहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरवार वरखास्त होना, सव सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुवर कविचंद ॥
ताम काम परिहार कों। दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तव सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज सुमंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन ॥
उट्ठि [1]सुभर न्टप करि। जुहार आरोहि सोह थन ॥
आय तव्व वर वुद्धि। [2]वीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ सहु ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग स्रोत स्रोता धरत ॥
पांवार तार उम्भय [3]अभय। जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय वंदियन। आय वरदाय वीर वर ॥
दिष्षि सभा राजिंद। इंद निदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि कालिंद्र वार भर ॥
नथ्थि वरुन वलिराइ। नथ्थि दनुनाथ लंकधर ॥
अनजोत निगमवोधह नयर। वयर साल [4]कट्ठन [5]महन ॥

(१) मो. सुभये। (२) मो.-"वीन धरन मिल व्रत्त पहुं।
(३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कट्टन। (५) ए. मनह।

सोभेम नंद अनलह कुलह। जंच कित्ति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥

गाथा ॥ दिष्षि सुभट्टह दिवानं। राजत वीर धीर अरोहं ॥

निरषि तास प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कव्वी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कबि जानी करतारं। रचना [1]सचन सब्ब भर सुभरं ॥

करन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ गन सभांज भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥

गहन मद्धि वाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥

तत कोहर इक भाल वर। षात अराम भिराम ॥

विहुरि न्रपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्यहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥

सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥

सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र बीझ वर ॥

सहनसीह सम पोप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥

गुज्जरह राम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥

हाहुलियराव मंडल्ल हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥

तहं सूकर सूतौ न्रिमय। कोहर तथ्थ सु [4]षोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥

धरि छत्तिय दिढ़ तुपक न्रप। हक्किय व्याधि वराह ॥

उट्ठि भयंकर षात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

बाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कबिय व्याधि वाराह। उट्ठि धायौ चंचल सम ॥

बदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि बीय सम ॥

(१) मो.-सचनं। (२) मो.-"चाढ़ि संक्रम्म नरेस पिथ"।

(३) मो.-अेह। (४) मो.-षेह।

सनमुप क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि जंतिय ॥
सबद रोस संचार। सूर जोवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहथ। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत योत धुक्किय धरनि। भल जंपिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार वर सूर पति। ग्रेह संपतौ जाय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के श्रृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आश्रत्त ईस ईसान थान। पुर अलक असुर सुर इंद मान ॥
जट विकट चुकुट झलकंत गंग। तिन दरसि झरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥

आभा अनूप विभ्भूति वार। प्रगटे सुपीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥

रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उड़पंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥

कटि तटि लपेटि लंकाल षाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। चयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६० ॥

डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि ॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्तिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) ए. कृ.-पपाल। (६) मो.-गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सांनि।

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेवं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चवरँग विसाल [1]माली प्रमथ्थ। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्थ॥
षट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अन्नेक वग्ग॥
छं० ॥ ६२ ॥

कैलास वास सिवरंग रोध। वर बसत आय थिर निगमबोध॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज॥
छं० ॥ ६३ ॥

निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्थ। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्थं॥
अन्नेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरन करन क्रमि आय तंग॥
छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उद्दित आनंद॥
कर कलंक तिरसूल कर। जै जै समर निकंद॥ छं० ॥ ६५ ॥
नमित दान शिव प्रमित सुष। वारह वार नरेस॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्षन दरसन तेस॥ छं० ॥ ६६ ॥
श्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार॥
मन सु ब्रह्म तन माम सो। ते देषे हरद्वार॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार॥ छं० ॥ ६८ ॥

पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस॥
रिषि रुष षटंग उचरंत चार। ओरद्दि राज दुज सम सुसार॥
छं० ॥ ६९ ॥

धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय॥
घट उमय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरध। (४) मो. रसुरीय अंब।

दधि सहस एक घट सहस पीर । मधु पंच सत्त सुच्छव सहीर ॥
घट सहस [1]रष्पि अद्दह प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान ॥
छं० ॥ ७१ ॥

रस उभय दून घट विसल वानि। अस्तूति चंद जंपै विधान ॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाव पंच । घट उभय नाग संभव सुरंच ॥
छं० ॥ ७२ ॥

घठ उभय जष्षि क्रद्दम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रबत्त॥
सिव सिर अवंत न्टप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

तंदुल सु दूब मधु पीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर ॥
सिव संषि सुघट पुज्जै चित्र'ब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिअंब ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सतपत्त कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुअंस ॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पत्त पल्लव सु भेव ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैवेद ईस आराधि जप ॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रस थारि कथा ग्रहि संभरेस। अन्नेक दांन रिषि दिय नरेस ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा ॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज ॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै । चल्यौ सु ग्रह फिरि राज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. कृ. को.-सरापि। (२) ए. कृ. को.-कारनीन। (३) ए. कृ. को.-घन हर।

अथ कनवज्ज समयो लिख्यते ।

(एकसठवां समय ।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते ।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना ।

दूहा ॥ सुक वरनन संजोग [1]गुन । उर लग्गे छुटि वान ॥
घिन घिन सल्लै वार पर । न लहै वेद विनान ॥ छं० ॥ १ ॥
भय श्रोतान नरिंद मन । पुच्छै फिरि कविरज्ज ॥
दिष्षावै दलपंगुरौ । धर ग्रीषम कनवज्ज ॥ छं० ॥ २ ॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा ।

कवित्त ॥ दीसै वहु विध चरिय । सुअन नर दुअन भनिज्जै ॥
वल कलियै अप्पान । कित्ति अप्पनी सुनिज्जै ॥
हीं डिज्जै तिहि काज । दुष्प सुष्पह भोगिज्जै ॥
तुच्छ आव संसार । चित मनोरथ पोपिज्जै ॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर । कही राज [2]कवि चंद कहि ॥
[3]मुक्कही सूर छल संग्रहै । तौ पंग दरसन तत्त लहि ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं ।

दूहा ॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच । ना बुल्ल्यौ सम राज ॥
अंबुज को दोऊ कठिन । उदय अस्त रविराज ॥ छं० ॥ ४ ॥
स्लोक ॥ गमनं न क्रियते राजन् । सूर सामंतमेवच ॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च । राजा [5]मध्ये गतं तदा ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-सुन (२) ए. कृ. को.-कहि । (३) मो.-मुक्कहि सूर रछ संग्रहे ।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं । (५) ए. कृ. को.- मध्य ।

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना।

दूहा॥ पुच्छि गयौ कविचंद को। इंछिनि महल नरिंद॥
सुंदरि दिसि कनवज्ज कौ। चलै कहै धर इंद॥ छं०॥ ६॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए।

इन रिति सुन चहुवान वर। चलन कहै जिन जीय॥
हों जानूं पहिलै चलै। प्रान प्रयान कि [1]पीय॥ छं०॥ ७॥
प्रान ज्वाव दूनों चलै। आन अटक्कै घंट॥
निकसन कों झगरौ पऱ्यौ। रुक्यौ गद्गद कंठ॥ छं०॥ ८॥

बसंत ऋतु का वर्णन।

साटक॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता।
[2]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता॥
कंठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने।
रत्ते रत्त वसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते॥ छं०॥ ९॥

कवित्त॥ मवरि अंब फुल्लिग। कदंब रयनी दिघ दीसं॥
भवर भाव भुल्लै। भ्रमंत मकरंदव सीसं॥
वहत [3]बात उज्जलति। मौर अति विरह अगनि किय॥
कुहकुहंत कल कंठ। पत्र राषस रति अग्गिय॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवों। नाह नेह मुझ चित धरहु॥
दिन दिन अवद्धि जुब्बन घटय। कंत वसंत न [4]गम करहु॥छं०॥१०॥
धुम्र चलिय बन पवन। भ्रमत मकरंद कंवल कलि॥
भय सुगंध तहँ जाइ। करत गुंजार अलिय मिलि॥
बल हीना [5]डगमगहि। भाग आवै भोगी जन॥
उर धर लगै समूह। कंपि भौ सीत भयत नन॥
लत परी ललित सब पहुप रति। तन सनेह जल पवित किय॥
निझरै अंग अंबुज हरुअ। सीत सुगंध सुमंद लिय॥ छं०॥ ११॥

(१) को. कु-पीउ। (२) ए. कृ. को.- वातो।
(३) ए. कृ. को.- वात। (४) ए. कृ. को.- गमन। (५) मो.- डंत।

साटक ॥ लैवंधं सुर यट्ट डंक्रित मधू, उन्मत्त श्रंगी धुनी ।
कंद्रप्पे सु मनो वसंत रमनं, प्रापत्तो धनं पावनं ॥
कामं तेग मनं धनुष्य सजनं, भीतं वियोगी मुनी ।
विरहिन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं ॥ छं० ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥ इहि रिति सुक्कि न वाल प्रिय । सुप [1]भारी मन लुट्टि ॥
कामिनि कंत समीप विन । हुई पंड उर फुट्टि ॥
हुई पंड उर फुट्टि । रसन कुह कुह आरोहै ॥
चलन कहै जो पीय । गात वर [2]भग्गो सोहै ॥
नयन उमगि कन वीय । सोभ ओपम पाई जिहि ॥
मनों पंजन विय बाल । गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि ॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ इहि रिति रष्पिय इंछिनिय । भय ग्रीपम रितु चारु ॥
कांम रूप करि गय न्टपति । पुंडीरनी दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की । दिसि चालन कौ सज्ज ॥
वर उत्तम धर दिष्पियै । पिष्पन भर कनवज्ज ॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना ।

न्टप ग्रीपम ग्रिह सुष्पनर । ग्रेह सुक्कि नन राज ॥
गोमगांम छादिय अमर । पंथ न सुझ्झै आज ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन । छीन जल धरवैसंनर ॥
चक्रवाक चित मुदित । उदित रवि थकित [5]पंथ नर ॥
चलत पवन पावक । समान परसत सु ताप मन ॥
सुकत सरोवर मचत । कीच तलफंत मीन तन ॥
दीसंत दिगम्बर सम सुरत । तरु लतान गय पत्त झरि ॥
अक्कुलं दीह संपति विपति । कंत गमन ग्रीषम न करि ॥ छं० ॥१७॥

(१) ए.- भासे । (२) ए. भग्गै-ए.-भग्गो ।
(३) ए. .क्र को.-जिहि । (४) ए. क्र. को.-दिस ।
(५) ए. क्र. को.-पस्पत ।

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता करं।
रेनं सेन दिसान थान मिलनं, गोमग्ग आडंबरं ॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरुन्या तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं ॥ छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुअ पत्ति जूथ चलि ॥
विरह [1]जाम बर कदन। मदन मैं मंत पील हलि ॥
पथिक बधू भरै। आस आवन चंदाननि ॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर ब्रंननि ॥
मन भुअन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन ॥
कंता न मुक्कि वर कित्ति गर। कहूं सुनो सोनिय बयन ॥छं०॥१९॥
षिन तरुनी तन तपै। वद्दै नित बाव रयन दिन ॥
दिसि च्यारों परजलै। नहिं कहों सीत अरध षिन ॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर लिसि वास निघट्टै ॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै ॥
त्रिय लहै तत्त अष्षर कहै। गुनिय न ग्रब्ब न मंडियै ॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै ॥छं०॥२०॥

*गीतामालची ॥ त्रिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु मेह षेहति ग्रेह लंपिति स्वेद संवित ऋंगनं ॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अम्भ उद्दिक कोप कर्कस मोषनं ॥ छं० ॥ २१ ॥
जल बुढ्ढि उढ्ढि सभूह बल्लिय मनों सावन आवनं।
हिंडोल लोलति बाल सुष सुर ग्राम सुर सुर गावनं ॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मुंद बुंद सुहावनं।
ढलकंत बेनिय तठ्ठ ऐनिय चंद्र सें निय आननं ॥ छं० ॥ २२ ॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं ॥
नष द्रप्प द्रप्पन देषि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दसन कामिनि जूथ जामिनि जाननं ॥छं०॥२३॥

(१) ए.कृ.को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है।

तंबोल रत घनसार भारह वेलि विद्रुम छावनं।
अलि गुंज मालहि देषि लालहि रंभ राज रिझावनं॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन। रहि ग्रीषम वर नेह॥
पावस आगम धर अगम। गय इंद्रावति ग्रेह॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना।

पीय वदन सो प्रिय परषि। हरष न भय सुनि गोंन॥
आह्न मिसि असु उप्पटै। उत्तर [1]देय सलोन॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चीहायते॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा मल्लिलता, लीला समुद्रायते।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते॥ छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ मग सज्जल सुभझौन। दिसा धुंधरी सघन करि॥
रति पहुवी कि चरित। लता तरु वौंटि सुमन भरि॥
आलिंगत धर अभ्भ। मान मानिन ललचावत॥
वर भद्रव कद्रव मचंत। कद्रव विरुझावत॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन। घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन॥
भरतार संग बंछै त्रिया। विन क्रतार [3]भत्तार विन॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै। पलक निस रेनि भिघट्टै॥
सजल सरोवर पिष्षि। हियौ तत छिन धन फट्टै॥
जल वद्दल बरषंत। पेम पल्हरै निरंतर॥
कोकिल सुर उच्चरै। अंग पहरंत पंच सर॥

(१) ए. कृ. को. देति। (२) ए. कृ. को.-श्रगाराय।
(३) ए. कृ. को.-भरतार।

दादुरह मोर दामिनि दसय। अरि चवथ्थ [1]चातक रटय॥
पावस प्रवेस वालम न चलि। विरह अगनि तनतप घटय॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि। करत आडंबर [2]अंमर॥
पूरत जलधर धसत। धार पथ थकित दिगंबर॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग। समान दमकत दामिनि द्रसि॥
विहरत चाचग चुवत। पीय दुपंत समं निसि॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन। परिरंभन क्रत सेन हरि॥
सज्जंत काम निसि पंचसर। पावस [3]पिय न प्रवास करि॥
छं०॥३०॥

चंद्रायना॥ विजय विहसि द्रिगपाल पायननि पंच किय॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय॥ छं०॥३१॥

गीतामालची॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्रिम्मल सोभिलं॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुभ्भर सलित दुभ्भर सद्दयं।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनसि बद्दर बद्दयं॥ छं०॥३२॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल अवति सज्जल कद्दयं।
पप्पीह चीहति जीह जंजरि मोर मंजरि मंद्दयं॥
जगमगति झिंगन निसि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं।
मिलि हंस हंसि सुवास सुंदरि उरसि आनन निद्दयं॥छं०॥३३॥
[6]उट सास आस सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयथ्थयं॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो.-चत्रिक, चातिक। (२) ए. कृ. को.-डंमर।
(३) मो.-प्रिय। (४) ए. कृ. को. नम।
(५) ए. कृ. को.-भूमिल। (६) ए. कृ. को. उत्र।
(७) ए. कृ. को.-कलिल। * यह पंक्ति मो० प्राति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(८) मो. मानिनि।

साटक ॥ जे [1]विज्जु झझ्झल फुट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, वरषा रसं संभरं ॥
विरहीनं दिन दुष्ट दारुन भरं, भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्के पिय गोरियं च अवलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]आवन वरिषा सघन । सुप निवास न्रिप कीय ॥
वर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रह । गयौ प्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय पोमिजी । फुनि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रवन्नौ चंद निसि । कित लभ्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्तं पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिव्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्के प्रिय वाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया सँजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमलिय । फूल फूलंत अमर धर ॥
श्रवन सबद नहिं सुझ्झै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उबारै ॥

---

(१) मो.-विज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को.- भुगता ।
(५) ए. कृ. को.- राजा छत्र निसान (६) ए. कृ. को.-अति ।

निग्रहन रत्त भरपंच सर। अरि अनंग अंगै वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
द्रप्पन सम आकास। श्रवत जल अम्रत हिमकर ॥
उज्जल जल सलिता "तु। सिद्धि सुंदर सरोज सर ॥
प्रफुलित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर ॥
उदति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग वर ॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। देषत दुति रिति मुष जरद ॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद ॥छं०॥४२॥
माधुर्य ॥ लहु वरन षट विय सत्त, चामर बीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे ॥
अति सरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
नव नलिनि अलि मिल्ल अलिन अलि मिल्लि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक्क चक्की चक्कित चकोर चष्पित चच्छ छंडित चंदयं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं ॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य निनद्दयं ॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्रपति राजत बीर भंभरि बग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुभ्भित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं ॥
अट्ठार भारह पुषित अभ्भित अधर अम्रत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी ॥छं०॥४५॥
कवित्त ॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि व्रत मंडै ॥
तनु न्रम्मल [2]षह चंद। चष्ष [3]चक्कोरति छंडै ॥
दुज अलसित बर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि ॥
[4]पिच नेह ग्रेहरचें। बाल छुट्टे अलकावलि ॥
करि स्नान धूत बसतर रचें। कंज वदन चिचंग चरि ॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि ॥
छं० ॥ ४६ ॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- वह।
(३) ए. कृ.-चक्कोरन। (४) ए.कृ. मो.-पित्र ग्रेह नेह रचें।

चंद रयनि न्निम्मली। सरिस आकास अभ्यासित ॥
पिया वदन सो चंद। दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
षंजन नयन अलोल। कीर नासा न्निम्मल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप। पुहप भाजन रजता भति ॥
नव गात न्निमल सुंदरि सरल। नवल नेह नित नित भलौ ॥
चित चतुर रीति बुझ्झै न्नपति। सरद दरद करि मति चलौ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद। गवन चित्त न्नप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय। सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ छिन्नं वासुर सीत दिघ्घ निसया, सीतं जनेतं वने।
सेजं सज्जर वानया वनितया, आनंग आलिंगने ॥
यों वाला तरुनी वियोग पतनं, नलिनी दहन्ते हिमं।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमंदा निरालम्वनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंव निसा वढ्ढत धन वढ्ढी।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचढ्ढी ॥
गिरकंदर तप जुगति जागि जोगीसर मंनं।
ते लभ्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति। भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै वनिता। अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर जल पीन। पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनीद मद उमद। कै छगन वसन [1]सवारी ॥
अनुराग वीत कै राग मन। बचन तीय गिर झरन रति ॥
संसार विकट इन विधि तिरय। इही विधी सुर असुर अति ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-झूमल। (२) ए. कृ. को.-सचारी।

रोमावलि वन जुथ्थ। वीच कुच कूट मार गज ॥
हिरदै[1] उजल विसाल। चित्त आराधि मंडि सज ॥
विरह करन क्रीलई। सिद्ध कामिनी डरप्पै ॥
तो चलंत चहुआन। दीन छंडै पै रुप्पै[2] ॥
हिमवंत कंत भुक्क न चिय। पिया पन्न पोमिनि परषि ॥
ग्रहि कंठ कंठ ऊठन[3] अवनि। चलत तोहि [4]लगिवाय रूष ॥ छं० ॥ ५२ ॥

न चलि कंत सुभचिंत। धनीं बहु[5] विंत प्रगासौ ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम। सौज आनंद उहासौ ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ। सीत संतावै अंगा ॥
अधर दसन घरहरै। प्रात परजरै अनंगा ॥
[6]ज्ञा ऐनि रैनि हर हर जपत। चक्क सद्द चक्की कियौ ॥
हिमवंत कंत सुग्रह ग्रहति। हहकरंत फुट्टै हियौ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चोटक ॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो। श्रिय नाग हन्यौ हरवाहनयो ॥
इति छंद विछंद विलास लहै। तत चोटक छंद सुचंद कहै ॥ छं० ॥ ५४ ॥
दिव दुग्गं निसा दिन तुच्छ रवै। जरि सीत बनं बनवारि जवै ॥
चक्क चक्कि चक्की जिम चित्त भवै। नितवांम प्रिया सुष [8]मोरि ठवै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बिरही जन रंजन हारि भियं। घनसार[8]मृगमद पुंज कियं ॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं। परिरंभन रंभन रे रतियं ॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं। .... ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं। तन कम्पत जम्पत मोचनयं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

नव कुंडल मंडल झल्ल रमै। कच अभ्रपटी जनु वीज भ्रमै ॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं। वरनं रचि छुट्टति पंति बगं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-हिरेदे उज्जल जल विसाळ चित्त आविति मांड गज। (२) मो.-रुक्कै
(३) ए. कृ. को.-अग्रत। (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लगीय रुष।
(५) मो.-बच्च। (६) ए. कृ. को.-जय नह रैनि।
(७) ए. कृ. को.-कोलि जवै। (८) ए. कृ. को.-मृदंमद।

अस कुंदति मुत्ति भरं उरनं। झलती जनु गिम्ह सिवं सरनं॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै। सुरमंजु¹ मंजीर अमीय अवै॥
छं०॥ ५८॥
रति ओज मनोज तरंग भरी। हिमवंत महा रित² राज करी॥
॥ छं०॥ ५९॥

शिशिर ऋतु का आगम।

दूहा॥ संगम सुप सुत्तौ न्टपति। ग्रिह विन एक न होइ॥
सुनि चहुआन नरिंद वर। सीत न मुक्कै तोइ॥ छं०॥ ६०॥
हिम वित्यौ आगम शिशिर। चलन चाइ चहुआन॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ। क्यों मुक्कै ग्रिह थान॥ छं०॥ ६१॥
साटक॥ ³रोमाली वन नीर निझ⁴ चरयो⁵ गिरिदंग ⁶नारायने॥
पव्वय पीन कुचानि जानि मलया, फुंकार झुंकारए॥
सिसिरे सर्वरि वारूनी च विरहा माहह मुव्वारए॥
मांकंते त्रिगवड मध्य गमने, किं दैव उच्चारए॥ छं०॥ ६२॥
*दूहा॥ अरिय सघन जीतन दिसा। चलन कहत चहुआन॥
रतिपति चल होइ पिथ्थ गय। ग्रह हमीर ग्रिह जानि॥
छं०॥ ६३॥
कवित्त॥ आगम फाग अवंत। कंत सुनि मित्त सनेही॥
सीत अंत तप तुच्छ। होइ आनँद सब ग्रेही॥
नर नारी दिन रैनि। मैंन मदमाते डुल्लैं॥
सकुच न हिय छिन एक। बचन मनमानै बुल्लैं॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि। रयनि गवन किम कीजइय॥
कहि नारि पीय बिन कामिनी। रिति ससिहर किम जीजइय॥
॥ छं०॥ ६४॥

(१) ए. कृ. को.-पुंज।　　(२) ए. कृ. को.-रति
(३) ए. कृ. को.-रोमावाले.।　　(४) ए. कृ. को. निझयो।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत।　　(६) ए. कृ. को.-नारायते।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

हनुफाल ॥ गुर गरुअ चामर नंद। लहु वरन विच विच इंद ॥
विवहार पय पय बंद। इति हनूमानय छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि सोर। परि पवन पत्त झकोर ॥
वन त्रिगुन तुल्ल तमोर। घन अगर गंध निचोर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुअ भोज व्यंजन भोर। लव अमर तिष्य कटोर ॥
रस मधुर मिष्टित थोर। रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कल कलस न्त्रित्ति किसोर। वय स्याम गुन अति गोर ॥
परि पेम पेम सजोर। अवलोक लोचन ओर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष अंत मुकति सकोर। .... ॥
रस रमति पिथ्थ न्रपत्ति। मनों भुवन वनि सुरपत्ति ॥छं०॥६९॥
इति ससिर सुष विलसंत। रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्त, षट रमनीय। रषि चंद वरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गह्वरि फेरि। प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप। पुंज गुंजत वैरनि धुनि ॥
ललित कंठ कोकिल। कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित। पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
विकसे किंसुक विहि। कदंब आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरह सम। भए समह वर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति। कंत असंत बसंत रिति ॥छं०॥७२॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति वारह मास गय। फिरि आयौ रु वसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि। तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सस।

कविचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जौ नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत ॥
जौ सुवास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत ॥ छं० ॥ ७४ ॥
रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग ॥
उहि रिति त्रिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

रानियों के रोकनें पर एक साल सुख सहवास कर पृथ्वीराज का पुनः वसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई ॥ षट्ट सु [1]वरनीं विय षट मासं। रष्ये वर चहुआन विलासं ॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा ॥
छं० ॥ ७६ ॥
दूहा ॥ वर वसंत अग्गें जिपति। सेन सजी वहु भार ॥
दिसि कनवज वर चढ़न कों। चितवति संभरिवार ॥ छं० ॥ ७७ ॥
कै जानै कविचंदई। कै प्रयान प्रथिराज ॥
सित सामंत सु संमुहे। पंगराय ग्रह काज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्नपति। चलन चिंत [2]पहु अज्ज ॥
दिन अप्पौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ चैत तीज रविवार। सुद्ध संपज्यौ सूर जब ॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस थान मान तब ॥
वर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेछ वर ॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर ॥

(१) ए. कृ. को.-वरुनी। (१) मो.-सुपहु। (२) मो.-वर।

भर रासि राह षोटौ न्टपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि॥
भावी विगत्ति मति उरह उर। जु कछु कह्यौ कविचंद षुलि॥
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा॥ नन मानी चहुआन न्टप। भावी चिंति प्रमान॥
सलष वोलि मंतह न्टपति। मत कैमासह थान॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त॥ मंत्रिय थपि पामार। मंति कैमास थान वर॥
ता मंची पन अप्पि। सूर सामंत मंझ भर॥
मंच दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिट्ठौ दिढ़ लोभै॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामध्रम्मह दिढ़ सोभै॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंची न्टप करन धर॥ छं० ॥ ८२ ॥

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंची न्टप करिय। पुव्व वंसह सु वीय सुधि॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस वसिन ईछ मुधि॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय नंदन परगासै॥
रोगजीत नन होइ। तान जिय लछि अभ्यासै॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य नन संग्रहै॥
पम्मार सलष मंची न्टपति। बल गोरी मुष संग्रहै॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंची पुच्छौ न्टपति। चलन चाइ चहुआन॥
दिसि कनवज धर दिष्यियै। पंग जोग परमान॥ छं० ॥ ८४ ॥
छग्गल पान नरिंद वर। अदभुत चरित विराज॥
चंद भेष चहुआन कौ। थेट सुपत्तौ साज॥ छं० ॥ ८५ ॥

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंबर करना उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढँकि किन्नं। छिपै न छिप कार सूर सघन्नं ॥
छिप्यत कवहुँ न मोमभ्भर तिन। रंकति न छिपै वित परषन षिन॥
छं० ॥ ८६ ॥

सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी। देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै। न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंवर तजिय। राज सोभै न राज गति ॥
आडंबर विन भट्ट। कव्वि पुनगार मेट यति ॥
आडंबर विन नट्ट। गोरि गावै नह रुकहि ॥
आडंबर विन वेस। रूप रत्ती न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष। हरुअत आडंवरह विन ॥
पर धर नरिंद बंदन मतौ। करि आडंबर वीर तन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावै।

दूहा ॥ मत पुच्छै चहुआन मुहि। सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं। जग्य विनट्टै पंग ॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्थ नरिंद सुनि। जो जानै पहुपंग ॥
वंधि देए करतार अरि। चोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि। सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन वर। [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुअ गोयंद कहि। वर ढिल्ली सुर पान ॥

(१) ए. कृ. को.-नन छिपै रजपूत मरकति वह दिप्पै। (२) ए. कृ. को.-वर।

इथ्थ वीर विरुझाइ चलि। धर लग्गौ सुरतान॥ छं० ॥ ६२ ॥
जिम लग्गो आखेट अगि। ढिल्ली वै सुरतान॥
विन वुझाय वुझि अग्गिया। जिम 'घट्ट जम पानि॥ छं० ॥ ६३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिन अप्पी मति नन्ह॥
सब भृत मझझनटारि लष। नृप ढुंढिय धन लिन्ह॥ छं० ॥ ६४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुबंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह॥
जोगिनपुर रघुवंश सौ। सो रष्षी तल लेह॥ छं० ॥ ६५ ॥
तत्त मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन॥ छं० ॥ ६६ ॥
एक वरष प्रस्थान ते। विय प्रस्थान सुपत्त॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त॥ छं० ॥ ६७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ बिपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ॥
निसा निद्र उत्तरिय। सघन उन्नयों सु रत्तौ॥
बीज तेज झझंत। तमत उथ्यौ भ्रत भारी॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल बर बर उच्चारी॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। बान विषम गुन बंधयौ॥
वल श्रवन दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ॥
छं० ॥ ६८ ॥

प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन मंगह॥
विय अलुक्क सुर बोलि। चित्त मुक्कौ तिन संगह॥

(१) मो.-हट्टे।

तीय वचन अपि जीहं। जीव सथ्यह जुवा छुट्टिय॥
कर चारहु मन राजं। कह्यौ छंदे अंग जुट्टिय॥
निस पतन भई जोगय विपन। हंकाऱ्यौ दुजराज वर॥
घरियार प्रात वज्जै सुघर। रत्त भार वर उग्गि धर॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विद्व कविचंद। अग्र भय छंद विचारिय॥
[1]सामि हथ्थ जस चढ़न। सुभ्रत आतुर रन पारिय॥
कलह केलि आगंम। सामि परिगह आहुट्टिय॥
बल सगपन किय दानं। हीन हीनह अप छुट्टिय॥
कहुई चंद कवि मुष्य तत। आरुघ राज न मानइय॥
सो भूत्त गति न्त्रिमान सति। ननं सिट्टै जुग जानइय॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा॥ नहिं वरज्यो कविचंद न्रप। कहि सुनाय सब सथ्थ॥
ज्यों विधिना वर न्त्रिंमयौ। [2]जम कग्गद चढ़ि हथ्थ॥छं०॥१०१॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूच करना

ग्यारह से एकानवै। चैत तीज रविवार॥
कनवज देषन कारनें। चल्यौ सु संभरिवार॥ छं० ॥ १०२ ॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना।

कवित्त। ग्यारह से असवार। लष्ष लीने सधि लेषैं।
इसें सूर सामंत। एक अरि दल बल भष्षैं॥
[3] तनु तुरंग वर वज्र। वज्र ठेलै वज्रानंनं॥
वर भारथ्थ सम सूर। देव दानव मानव ननं॥
नर जीव नाम भंजन अरिय। रूद्र भेस दरसन न्रपति॥
भेटयौ सु यह भर सम्भई। दिपति दीप दिवलोक पति॥छं०॥१०३॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो०.-सो. (३) ए० कृ० को०-तनु तन गब्बर वज्र।

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
इनिग राज कयमास। अवनि आकंप राज बर ॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै ॥
हय गय नर भर वीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि है वै ॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति ॥
कनवज्ज राज गग्गह कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन ॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर ॥
जाद्दव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर ॥
इत्तने सहित भूपति छज्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ ॥
[2]इक लष्ष लष्ष बर खेगिए। चले सथ्थ रजपूत सौ ॥छं०॥ १०५ ॥

दूहा ॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चढ़िक्रम्यौ [3]लय मग्ग ॥
हर हर सुर उच्चार सुष। उर आराधन लग्ग ॥ छं० ॥ १०६ ॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त ॥ एक सत्त बल सूर। एक बल सहस पानि बर ॥
एक अयुत साधंत। [4]दुरद रद दहन तत्त कर ॥
एक लष्ष आरुह्य। जुद्ध जम जेम भयंकर ॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान बर ॥
रवि तन समान तन उज्जले। सत घट अग्ग सु वीर तन ॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सामंतों की इष्ट आराधना ॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन ॥
[5]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन ॥

(१) मो० करन (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्ष वर लिषीए।
(३) ए. कृ. को.-मय। (४) ए. कृ. को.-डर। (५) मो.-एकदिन मन।

इक सठ्ठि चव रचित। एक पंचास उभय रत ॥
एक कन्ह हिय ध्यान। एक भैरव घोरत[1] मत ॥
इक जपत अंत अंतक मनह। एक पुरंदर रत्त उर ॥
इक उर विदार विद्दर मिरग। धरत ध्यान लंकाल सुर ॥

छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन।

भुजंगी ॥ गुरं अंत मत्त[2] पय पाय पायं। असी मत्त सब्बै गयनं सठायं ॥
लहु षोडसं[3] गोचवं अट्ठ सायं। चवै चंद छंदं भुजंगं प्रियायं ॥

छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्थं। चले सूर सामंत सथ्थं[4] समथ्थं ॥
चल्यौ सथ्थ सामंत कन्हं समथ्थं ॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं ॥

छं० ॥ ११० ॥

विरद्दं नरंनाह उग्गाह सोहं। कुलं चाहुआनं चपं पट्ट रोहं ॥
गुरू राव गोयंद वंदैं सु इंदं। सुतं मंडलीकं सवै सेनचंदं ॥

छं० ॥ १११ ॥

धरैं ध्रुंम सामित्त सा रायलंगा। सुतं राव संयम्म रन सें अभंगा ॥
सदा सेवसों चित्त हनमंत बीरं। रमै रोस रंगं तवै आय भीरं ॥

छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि सन्नाह सा देवराजं। सुतं वग्गरीराव सामंत जाजं ॥
सदा इष्ट आभिष्ट स्वांमित्त चित्तं। वियं वीर चित्तं सु आनै न हित्तं ॥

छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्थं सलष्षं। चल्यौ जैत सिंघं सु कंकं अलष्षं ॥
भरं जामजद्दों सु षीची प्रसंगं। करं कच्छवाहं सु पज्जून संगं ॥

छं० ॥ ११४ ॥

वलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्थं। करंबाह काथ्थं सु कंकं अकाथ्थं ॥
नरं निढ्ढुरं धज्ज कामधज्जराजं[5]। वडंगुज्जरं राम सो सामि काजं[6] ॥

छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-मन। (२) ए. कृ. को.-पाद्य। (३) ए.-गोचर।
(४) कृ. को.-सनथ्थं। (५) मो.-राजं। (६) मो.-संगं।

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई। चले हड्ड हम्मीर गंभीर भाई॥
वरंसिंघ दाहिम्म जंघार भीमं। बरं तास चंपै न को जोर सीमं॥
छं० ॥ ११६ ॥

सज्यौ वाह पज्जार उड्डिग्ग सथ्थं। चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम सथ्थं॥
बर चाहुआनं बरस्सिंघ वीरं। हरस्सिंघ संगं सु संग्राम धीरं॥
छं० ॥ ११७ ॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं। समं विक्भराजं सुवंधं अभंगं॥
सथं जागरं सूर सागौर गोरं। वरं वाररंसिंह सा सूर[1]घोरं॥
छं० ॥ ११८ ॥

बली वाररं रेन रावत्त रामं। दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं॥
निरब्बान बीरं सु नारेन नीरं। समं सूर चंदेल भोंहा सधीरं॥
छं० ॥ ११९ ॥

बड़ गुज्जरं कंक राजं कनकं। सहं सूर सामंत बंधैति अंकं॥
चल्यौ माल चंदेल भट्टी सु भानं। समं सामलं सूर कमधज्जरानं॥
छं० ॥ १२० ॥

बरं सिंघ वीरं सु मोहिल्ल बंधं। न्वपं राय बंधं बरंनं सुसिद्धं॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं। महा मंडलीराव सीहं अरोहं॥
छं० ॥ १२१ ॥

धनू धावरं धीर पांवार सथ्थं। चल्यौ तोमरं पाहरा [1]वारि वथ्थं॥
सज्यौ जावलौ जल्ह चालुक्क भारौ। षलं वग्गरी वाग्र षेताषंगारौ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बली राय वीरं सु सारंग गाजी। परीहार राना दलं रूव राजी॥
बरं बीर जादौं भरं भोजराजं। समं सांषुला सीह सामल्ल साजं॥
छं० ॥ १२३ ॥

कमंधज्ज बीकंस सादूल्ल मोरी। जरी ठंठरी टाक सारंन[2]जोरी॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कंठेरी। भरं भीम जादौं अरी गो उजेरी॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-घोरं। (१) ए. कृ. को.-वषि।
(२) मो.-सथ्थं। (३) ए. कृ. को.-मोरी।

सुतं नाहरं परिहारं महन्नं । समं पीप संग्राम साहं गहन्नं ॥
वरं वारडं मंडनं देवराजं । रनं अचलं पाय अचलेस साजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कचराराव चालुक्क वंभं । सुतं भीम संगं सदा देव संभं ॥
कमधज्ज आरज्ज आहं कुमारं । भरं भीम चालुक्क वीरंवरारं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

गनै लष्पनं लष्ष बघेल एकं । सुतं पूरनं[1] सूर वंदै सुतेकं ॥
परीहार तारन्न तेजल्ल डोडं । अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

बड़ंगुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं । सुतं कठ्ठियं सिंघ संग्राम वीरं ॥
विजैराज बघेल गोहिल्ल चाचं । लषंनं पवारं नही कूर राचं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरी छ्रम्म सामँत पुडीरं । भिरै सूर भग्गै नहीं सारभीरं ॥
कामध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं । भरं भारथंराय भारथ्थ भारं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं जागरं केहरी मल्हनासं । बँधंनौरवं कट्ट संग्राम वासं ॥
चल्यौ टांक चाटा सु रावत्त राजं । हरी देवलीराइ जादों सु जाजं ॥
छं० ॥ १३० ॥

वली राइ कच्छं[2] ओहट्टी गँभीरं । हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं ॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं । दलं दाहिमा जंगली राय साजं
छं० ॥ १३१ ॥

मुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं । सुअं पारिहारं रनंवीर रानं ॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्षं । बरं लष्षियै एक एकं मुलष्षं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल ॥ इक सेवक छिंगन कंन्ह तनौ । निरष्षे कविचंद पुरष्ष घनौ ॥
छह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं । कलवज्ज चल्यौ न्टप सोमसुतं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पूर (२) के. एहट्टी ।

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिलेसुर ॥
अवर स्वर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर ॥
समै निसा निज सिवरि। बोल सामंत सूर सब ॥
मधूसाह परधान। राज उच्चैर सूर तब ॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर वेध सुगंग धर ॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चलौ सुभट्ट समंग भर ॥छं०॥१३४॥

दूहा ॥ तट कालिंद्री तहँ विमल। करि मुक्काम न्रप राज ॥
सथ्थ सयन सामंत भर। स्वर जु आये साज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ अप्प जाति विन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब ॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब ॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं ॥
गुर वीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं ॥
अह अट्ट राज आवागमन। सजौ सेन सथ्थें सुविधि ॥
काज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिभ्झै तीरथ्थ सिधि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा ॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर बर साह ॥
सत क्रम्म लक्क सथ्थ घन। सजौ सक्र सन राह ॥ छं० ॥ १३७ ॥
एकादस सर एक न्रप। सौ सामंत छ सूर ॥
दिसि कनवज दिल्ली न्रपति। चैतह वज्जि [2]स नूर ॥ छं०॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ पारिहार रनबीर। राज अग्गें आभासिय ॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय ॥

(१) मे.-कार (२) मो..सनूर।

साज सब्ब वर [1]तास। भरों वासन द्रव रज्जिय ॥
अवर सब्ब परिहार। काज भोजन सथ सज्जिय ॥
साहनी सद्दि जगमाल तहँ। देहु सबन सामंत हय ॥
सारङ्ग सित्त तेजक्क हय। सजे सब्ब परकार तय ॥ छं० ॥ १३९ ॥

दूहा ॥ बोलि साहनी सोच मन। दल लष्यन अस लज्ज ॥
सामंतन कारन विल्हन। समपि समर जस कज्ज ॥ छं० ॥ १४० ॥
प्रथम संबोधे सथ्थ सह। सुत दुज रष्ये साह ॥
जाम सेष रजनी चल्यौ। सिलह सु सज्जी ताह ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ। अरु कविचंद अनूप ॥
जमुना [2]नावनि उत्तरिय। निकट महल अनुरूप ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भय भीत उपन्नौ ॥
स्याम अंग तन छिद्र। कलस संमुह संपन्नौ ॥
एक अंग तिय सकल। एक आभेस भेस वर ॥
एक अंग शृंगार। एक अंगह सुंदर [1]नर ॥
दिष्यौ सु नयन राजन रमनि। पुच्छि वत्त धारह धनिय ॥
शृंगार वीर दुअ संचरहि। अब्बू वै अप्पन भनिय ॥ छं० ॥ १४३ ॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना।

दूहा ॥ तोन बंधि भुअपति उभय। अरु कविचंद अनूप ॥
जमुन उतरि नावह निकट। मिलिय महिल इन रूप ॥छं०॥१४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ पानि नाल दालिमी। हास मुष नैन रोस निज ॥
उरसि माल जा स्हल। कमल कनयर सिरसी रज ॥

(१) ए. कृ. को.-ताह।　　(२) मो.-नावसु।
(१) ए. कृ. को.-बर।

वाम हेम आभ्रंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय॥
अद्ध केस सलवंध। अद्ध [१]मुकलित तिहि छंडिय॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि॥
किन महिली किन घरं न सुबर। किन सु राज अरधंग धरि॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल सगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [२]अध कुंत लंकल वंधि॥
अवतंस इक अव स्रोन। दिसि कंक आसिय वीन॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नैंन नागवि कीन॥
सल वाल भाल सुपत्ति। परसात कंकि [३]षत्ति॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेन विरोस। [४]नासाग्र उग्रन जोस॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वन्निय वाजि॥ छं० ॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध साल माल मवेत॥
दुति बरन भूषन रूप। जालंक कलसा नूप॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम॥
सुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। जालंक तंड सुरंग॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद जप॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम॥
सच साघ वाम सु पुल्लि। पद दच्छिनी क्रत गुल्लि॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥ इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष कल रत्त फुनिंद॥
उद्दिम आदर चलिय न्टप। तव नह वुभिभय चंद॥ छं० ॥ १५५ ॥

(२) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पत्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्रं उग्गनं जे।

*कहै चंद नृप ईस सुनि । दरस देवि दिय तोहि ॥
जगि भंजि अरि गंजिकै । दुलह संजोगिय होइ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना ।

बहुरि सगुन राजन हुअ । फल जंपै कविचंद ॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि । कहि समझावत [१]छंद ॥ छं० ॥१५७॥

पद्धरी ॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट । संक्रमन [२]मग्ग उच्छंग थट्ट ॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार । जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज । विधि कहौं सगुन रुब्बें सु साज ॥
दष्षिनहि वादि वामंग वादि । सम थान देवि उत्तिम उमादि ॥
छं० ॥ १५९ ॥

अति वृद्धि रिद्धि [३]अप्पै सु लोय । जस कुसल सुफल पंथी सजोइ ॥
सुर दून तीन दाहिनी देय । वर्ज्जंत गमन पथिकं परेय ॥
छं० ॥ १६० ॥

मंडलह स्हर तरि संझ सद्दि । मुक्कंत सीम पंथिक परद्धि ॥
वायंब हुंत दष्षिन प्रवेस । ताराय नाम जंपे सु तेस ॥
छं० ॥ १६१ ॥

एकीक कुसल दुअ कुसल काज । [४]तीसरी होत फल रिद्धि राज ॥
दाहिनी हुंत दिसि वाम आय । पंथी गवंन वरजंत ताइ ॥
छं० ॥ १६२ ॥

दूसरी घात बंधनह हत्त । तीसरी गवन [५]सूचंत मृत्त ॥
ताराय उंच फल उंच [६]देस । मद्धिम्म अधम अद्धी सु [७]तेस ॥
छं० ॥ १६३ ॥

---

*यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है ।　　(१) ए. कृ. को.-चंद ।
(२) ए. कृ. को.-लग्ग ।　(३) ए. कृ. को.-अप्पै ।　(४) ए. कृ.-नीसरी ।
(५) मो.-सयूंत ।　(६) ए. कृ को.- देह ।　(७) ए. तेयं । को. मो. नेस ।

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय वाय प्रसरंत गारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत ताम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं०॥ १६४॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूवों सु कट्ठ गोबर सु हंडि। आहट्ठि सद्दि गुनयंग छंडि॥
छं०॥ १६५॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो ग्रेह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं०॥ १६६॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह षरह नाहर जंवूक। सारस्स चिल्ह चाचिग अलूक
छं०॥ १६७॥

कपि कंठनील सुक सद्दि नाम। दिस संति सुष्य पूरंत वाम॥
पंचाइन दिस दाहिन अचार। सादंत अर्थ दष्षित सचार॥
छं०॥ १६८॥

सूचंत सुभय दारुन्न सथ्थ। पति सथ्थ निद्धि निंदं अतिथ्थ॥
चौ पंच सत्त एकं उभार। पहु काल मृग्ग दाहिन सुचार॥
छं०॥ १६९॥

भोजनं पच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थ अर्थीव ढाल॥
एकलौ असित मृग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं०॥ १७०॥

निक्काल सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं०॥ १७१॥

चाचिग्ग निकुल अज भारद्वाज। चामर सु छच वीणा सवाज॥
भृंगार बार विरही कनक। दुवारु[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो.-सुरि।

द्रप्पन कलाल वेसारु गज्ज। [1]सारन्न सिद्धि अघ्यै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग। .... छं० ॥ १७३॥
अंगार कच्च भसमंग पास। गुड़ लवण तक्र गोवर द्रास ॥
[2]प्रवरज्ज अंध मूकंत केस। गरदम्भ रूढ़ तजि अंदेस ॥
॥छं०॥१७४॥

प्रनयाम पंच छह करहि जाम। या दुष्ट सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन्न पुरिष सह वाम नाम। चिय नांम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ वनबिलाव घूघू घरह। परत परेव पंडूक ॥
एक थान दप्पिन दिसह। कहिय न अवन सम्रूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि। सिर वंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय। अवसि होइ प्रभु रारि ॥छं०॥१७७॥
अतिलक वंभन स्याम असु। जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्पियै। गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै। वामी उवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह सुपह। कीजै गवन न्रिपाल ॥छं०॥१७९॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक मच्छ ॥
सुनिय राज वरदाय भनि। एह सगुन अति अच्छ ॥छं०॥१८०॥
राज सगुन संमूह हुअ। धुअ तन [3]सिंघ दहारि ॥
मृग [4]दच्छिन छिन छिन षुरहि। चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [5]सारस सवद। उदय सुवहल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ। करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
कल कलार सद्यो समुह। हसि न्रप बुझ्यौ चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है। इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-साहसन। (२) ए. ध्रवरज्ज।
(३) मो. "सिंघह"। (४) मो. दाप्पिन षिन षिन।
(५) ए. कृ. को.- सारद।

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी ।

एक करहिं ग्रह नंद वह । इक छिन [1]भिन्न सरीर ॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै । जे वज्रंग सु वीर ॥ छं० ॥ १८४ ॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना ।

सुबर बीर सोमेस सुत्र । गुन अवगुन मन धारि ॥
दुष अति दाहिम्मा दहन । मरन सु मंगल रारि ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है ।

सम सामंतन राज कहि । पहु परमारथ मत्ति ॥
समर तिथ्थ गंगा उदक । उभय अनूपम गत्ति ॥ छं० ॥ १८६ ॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना ।

रति माधव मोरै सु तरु । पुहप पत्त बन वेलि ॥
राज कवी कारतह चले । सम सामंतन केलि ॥ छं० ॥ १८७ ॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना ।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआंन । जांम पिगीय पहु निकरि ॥
सजि दुल्लह सनमुष्ष । सुमन सेहरौ सीस धरि ॥
सजे पिट्ठ वामंग । रंग निज नेह प्रकम्मे ॥
पिष्षि राज प्रथिराज । मन्नि सा सगुन सु [2]म्रम्मे ॥
उदयंत दिवाकर चीय मिलि । सुभट अंत किय जुद्ध जुरि ॥
जय जंपि सथ्थ साहा गवन । बज्जे बज्जनि [3]सिंधु सुर ॥छं०॥१८८॥

(१) ए. कृ. को.-भीन । (२) को.-भ्रमे । (३) मो.-सिंधुसुरन ।

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना ।

वाग पंचि दिल्लेस । जाम उभया पिन उत्तरि ॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग । वास वित्ती तर [1]उप्परि ॥
दिसि वाइँ बर सद्दि । भसम उप्पर आरुन्नी ॥
ताम तंमि उत्तरी । इष्पि राजन सरसम्मी ॥
एकल्ल मृग्ग सन्हौ मिल्यौ । हयौ राज संधेव सर ॥
उत्तरी ताम देवी दुहर । देपि सर्व दुम्मन्न भर ॥ छं० ॥ १८९ ॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना ।

चल्यौराज प्रथिराज । उभय पिन तथ्य विलंबे ॥
मिलि संमुह जुग्गिनिय । दरस दीये न्नप अंबे ॥
कर पप्पर तिरसूल । सवद उच्चरि जय जंपे ॥
मधि पप्पर [2]धरि हेम । प्रनमि राजंग पयंपे ॥
साकत्ति सज्जि हय हंकि सव । अवर वारि आरोहि चिय ॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन किय । मिल्लिय राज सा संमुहिय ॥
छं० ॥ १९० ॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का वत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना ।

दूहा ॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्नपति । संपत्तौ भूसाम ॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ । कियौ मुकाम सु ताम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना ।

सहि राज रनबीर तहँ । किय भोजन सु उताम ॥
सव आहारे अन्न रस । चव्या जाम निसि जाम ॥ छं० ॥ १९२ ॥
अरिल्ल ॥ किय भोजन सवसथ्थ व्रहासन ग्रास दिय ।
तिथ्थि चवथ्थिय सीम जाम इक नींद लिय ॥

---

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि । (२) मो.-पर ।

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझ्झयौ कोइ अत्त ।
नट्ट सु बुझ्झै राज समज्जि न अष्षि व्रत्त ॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना ।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं । लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं । सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुरं वार आकास वाअंक लज्जी । दुहूं पष्प नीचं सवं दाव नज्जी ॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी । मुरी मध्य विद्दी उभै रूपकारी ॥
छं० ॥ १९५ ॥

न्वपं जोग तीरं जु जै जै करंती । दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती ॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं । गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं ॥
छं० ॥ १९६ ॥

सुवं अग्गि झालं म्रतं कास उट्ठी । वल्लैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी ॥
लियं मंस गिद्धी उषं हंनि मग्गी । बुलै सारसं वाम कुरलंत डग्गी ॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना ।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन । निकट इक गाम समंतर ॥
नट षेलत नाटक्क । भगल मंड्यौ भ्रम तंतर ॥
सत्त संगु उप्परै । नट्ट सुत्तौ जय जंपत ॥
कहुँत सीस कहु पानि । धरनि धर पऱ्यौ सु कंपत ॥
इह चरित पिष्षि सामंत सब । अप्प चित्त विभ्रम लहै ॥
पिष्षंत परसपर मुष [1]सकल । नको बुझ्झ राजन कहै ॥छं०॥१९८॥

(१) ए. कृ. को.- सयल ।

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक्क कहै कोइ तिथ्थ। कवन थानक को देवह॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह॥
कहिय जैत सम कन्ह। तुमहिं रष्यौ कहि राजन॥
कहै कन्ह नन लह्यौ। प्रथम बरज्यौ वह जाजन॥
पज्जून कहै बुम्झहु [1]सकल। इह अवस्य कनवज क्रमै॥
जानैं सुभट्ट कारज सयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै॥छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कूरंभराव ध्रुअ॥
जो भविस्य [2]न्निमान। सोइ मिट्टै न मूर [3]ध्रुअ॥
धरम सुअन [4]क्रत दूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्षेध न जानिय॥
सौमित्र वरज्जित राज रघु। कनक मृग्ग संधेव सर॥
दसकंध [5]निषेधिय मंचियन। सीय न अप्पिय काल वर॥छं०॥२००॥
किय जद्दव त्रिय रूप। श्राप दुर्वास सुधारिय॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर॥
भरि वेरी चामंड। किये दुम्मन सब्ब भर॥
इह गमन भट्ट बुम्झै न्रपति। करै कहा सुम्झै न मन॥
उप्पजौ कोइ क्रत्या अतुल। सोइ प्रह्लचिय राज म तन॥ छं० ॥२०१॥
*बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि बित्ती॥
कैं दुर्बल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्ती॥

* यह २०२ और २०३ दोनों छन्द मो.-और ए. प्रतियों में तो हैं ही नहीं। कृ. प्रति में लिख कर काट दिए गए हैं।

(१) ए. कृ. को- सयल (२) मो.-निरमान। (३) मो. कृ. ए.-भुअ।
(४) ए. कृ. को.-अम। (५) ए. कृ. को. निपेधन।

करि स्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नींदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि शेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत बरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न सय। सब बुल्लि सामन्त तय॥ छं०॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल दिष्षन मन संतं॥
जब जानौ युध समय। तुमै सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतैं निसतारौ॥
संभलिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मैं सब्बा सुमन॥ छं०॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नें। मन भावी सो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं०॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[1]सह समझि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[2] सु बंध। बरजंतै न्टप चल्लि॥ छं०॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [3]फुटि। प्रथम चित्त [4]फुनि होइ॥
[5]तन जंपै भट जोह करि। न्टपहि अमंगल [6]जोइ॥ छं०॥ २०६॥

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- नन। (६) ए. कृ. को.- होइ।

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर । न्निमलिय क्रिति रवि प्रात नूर॥
इक एक वीर दह दहति सूर[1] । देवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त । सज्जोति सेन सिरदार इत्त ॥
इक इक्क संग हुअ दुअन दाह । जनु दार पच्छ बाराह राह ॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग देविय प्रचंड । उनमन्न[2] रूप कर सजे दंड ॥
सजि चल्यौ संग भैरूं उभंत। सेवक सहाय अरि करत अंत ॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले दूय पंचास वीर । कौतक्क कहल मन हरषि धीर ॥
जुग्गिनिय सट्ठि चव चल्लि संग । किलिकिलत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन जमांति । घहराति घोरि सुर प्रेत पांति ॥
अनि अन्नि इष्ट सबदेव साधि। चल्ले सुमंत्र जंतनि अराधि ॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक वांक अनसंक चित्त । रचे सु स्वामि सब सेव हित ॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ । पोइनिय पत्त जल ज्यौं जनाइ ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु सित्त सामंत सूर । उनमत्त अंग जनु नदिय पूर ॥
ढलहलिय ढाल मालह सजूर । वस्संत जानि हल्लत षजूर ॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप । चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप ॥
सामंत सूर[3] सूरहि नरंभ । दिष्षियै लाज तिन मुष्ष अंभ ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

---

(१) ए.- रूर। (२) ए. कृ. को.- उनमत्ते। (३) ए. कृ. को.- सूरद।

सामंत किरनि प्रथिराज सूर। अरि तिमिर तेज कट्टन करूर ॥
पूहवी न बीर इन समह कोइ। कवि कहै बरनि जौ आन होइ॥
॥ छं० ॥ २१५ ॥
रहिं पंड समय भूभार पथ्थ। तिहि काज भयौ अवतार [1]तथ्थ॥
भय अभय चिंति हृद सुषहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत ॥
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना ।

जोजनह पंच गय चाहुआन। पर पुरह जानि उग्यौ सुभान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २१७ ॥
दूहा ॥ पर पुहमी पत्ते सु पहु। उग्ग भान पयान ॥
दल वद्दल सद्दल दिसह। पूरन [2]छयत गयान । छं० ॥ २१८ ॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना ।

उदय हंस सज्जे सगुन। बज्जे अनहद सद्द ॥
दिष्षत दरसन परस तप। पुल्ले दस दिस जद्द ॥ छं० ॥ २१९ ॥

प्रभात समय वर्णन ।

कवित्त ॥ [3]चढ़ि चतुरंग चहुआन। राइ संभरिय सुयंभर ॥
सकल सूर सामंत। मंत भंजन समथ्थ वर ॥
पर अहंन सम समय। होत सकुन कुल सोरं ॥
वज्जि पंचजन देव। सेव अंबर [4]मग ओरं ॥
जल पात जात मिलि विच्छुरत। रोर अलिन सल्लिन सुषद ॥
[5]लंपट कपाट विट चिय तजत। तम चर चर कीनी मुषद ॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो.- पिथ्थ। (२) ए. कृ. को.-सयत। (३) ए. कृ. को.-चढ़ि चतुरंग चतुरंग।
(४) ए. कृ. को.- मन। (५) मो.-लंपट किपाट विट चिय तजंन। चम चर चंर कीनी भुखद।

पद्धरी ॥ नव सज्जि सुदल विद्दल विसाल । पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंवरिय धरनि आरोह गेंन । दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] ऐन ॥
॥ छं०॥ २२१ ॥

सासंत सूर हैवर अरोहि । आक्रत्त [5]क्रत्त मलि अगम सोह ॥
ढलवीय ग्रीय ढलकंत ढाल । दधि झाल पलव वैरष विसाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा पुर विहर वाह । तारच्छ सु तन अंतर उलाह ॥
ऐसे सुवीर रिन[6]विपम धार । अरि अंव[7]अचन अग्गयि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

चहुआंनभान अरि तिमिर तार । मानंत सूरकरिकर प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट नेंन । सीभंत भंति तन धरिग्ग सेन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विहसत विहाय सथ्यान थान । सतपत्र फुल्लि मिलि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [8]मिलि मंद वात । मिलि चले भ्रमर परसन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक ग्रीय नह तजत प्रौढ़ । नव पंज रंज [9]तल मलत मौढ़॥
सहंत चक्र साहीत वैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि सेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परसान करंत। रसना रसान हरि वर धरंत॥
संफटि तमोघ [10]तिमरनि तरार । अंजनह नगर उठि पवन धार॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]माम । अवलोक देव वंदन सु राम ॥
....　　....　　।　　....　　....　　छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-गोंन । (२) । ए.-मूरंत । (३) मो.- डम्मरि ।
(४) मों. पसरंत । (५) ए. कृ. को.-क्रम्म । (६) मो.-निरमले ।
(७) ए. कृ. को.-मो. अचपन । परंतु अक्षर बढ़ता है । (८) ए. कृ. को.-जागि ।
(९) मो.-नल । (१०) ए. कृ. को.-नमूनि । (११) मो.-राम, को. कृ.-समान ।

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रनं मन ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उद्थान विघंनन ॥
नेंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल अंगन ॥
अवलोकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्यियै बदन दूलह हगनि। सदन रंग [1]दुलही क्रमत ॥
बंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंबर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चकितचित होना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट विभूति कर कंवयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। अव सचिय मुद्र विनूट ॥
चरचर्य्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत नेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। सँग रंग स्वानह माल ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव हक्क गज्जत गन। लघु दिग्घ चुट्टत बैंन ॥
हिय रत्त स्याम सु थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [2]रंग रमाल। कंबु ग्रीव [3]पीत सु आल ॥
अव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरन रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्षि न्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीस। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
सित असित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

---

(१) मो.-दुल्ली। (२) ए. कृ. को.-रैंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

राजा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नौज का युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुद्ध। रन त्रिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रेता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन ताम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घल्यौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अच्छी सु कमधज बंस। जुन्हाइ उदर प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुसीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कुल संघार। सम पानग्रहन सु बार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कीन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.... । .... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिघट तीय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरा स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुषग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

हिय नेन सेन बिहास। नवरंग नारि इहास ॥
तिहि समय सुभ्रम चंद। मुष अग्ग न्रप वर संद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- घन।　　(२) ए. कृ. को.-पुगराज।
(३) ए. कृ. को.-प्रकास।

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु ग्रसिय [1]इंद उरंग ॥
नग मुक्ति सुमन सुभाल। हर रूढ़ कालि कपाल ॥ छं० ॥ २४६ ॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट ॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल ॥ छं० ॥ २४७ ॥
[3]भुअ बंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुमुद विहार ॥ छं० ॥ २४८ ॥
नव नासिका सुकनंद। रति बिंब बढ़िय अनंद ॥
तिन अग्र मुकति सु नंद। रस सुक्र ससि नष कंद ॥ छं० ॥ २४९ ॥
कल काम आल कपोल। तहँ अलक झलकत लोल ॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल सी ज ॥ छं० ॥ २५० ॥
बनि चिबुक स्याम सु वयंद। बसि कुमुदनी अलिइंद ॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]तेष ॥ छं० ॥ २५१ ॥
करकुमुद अमुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप ॥
कुच मद्धि हार विराज। हरद्वार गंग जु राज ॥ छं० ॥ २५२ ॥
कटि छीन छवि मृगराज। पचि अंग पीत समाज ॥
रचि श्रौर कंचन थंभ। लजि दुरिग कुल कल रंभ ॥ छं० ॥ २५३ ॥
बनि पिंड नारँगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग ॥
नष चरन बरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप ॥ छं० ॥ २५४ ॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल ॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात ॥ छं० ॥ २५५ ॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कून पयान ॥
मो देवि पुर जुगिनाथ। मो प्रकति भिन्न अकाथ ॥ छं० ॥ २५६ ॥

---

(१) ए. कृ.-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आड़।
(३) मो.- भुव वंक धनुष सु राह। (४) कृ. ए. ताय।
(५) ए. कृ. को.-रद कनक। (६) ए. कृ.- भेष, को.-नेक।
(७) मो. को.-को नाम तुम तात को बंध को पित मात ॥

उस सुन्दरी का उत्तर देना।

गाथा॥ पयं पौयं गत नयं। घट्ट कट्टंति हूरयं॥
भरता पित कुल वद्धं। सापं सुमंतयो मुनी॥ छं०॥ २५७॥
कलह प्रिया मो नामं। मंजु घोषापि रंभया सोरं॥
समरस्य जग्य समये। प्रछन्नं कथितं मया॥ छं०॥ २५८॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों। कह्यौ कौन इह भाव॥
कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि। सुन डंकिनिपुर राव॥ छं०॥ २५९॥

भविष्य वर्णन।

कवित्त॥ कहर कंक कल कलिय। भार फनिमन कर भज्जिय॥
सजिय सेन चहुआन। किन्न कारन अरि कज्जिय॥
अप्प अप्प सजि इष्ट। चलै जैचंद सभानन॥
वर अप्पन चौसट्ठि। करह सो कर दैवानन॥
रुधि गहन पच दारुन दिवहि। चंद भट्ट आसिष्प दिय॥
सुर करिय कित्ति भय भीत भर। करन अत्त आगम कहिय॥
छं०॥ २६०॥

चिहुर बंध बंधियहि। काल घल्लियहि कुलाहल॥
.... । ... . ॥
अधर पाइ धर धरनि। कंठ रुधि पियै सु नच्चिय॥
मनो पुज्ज प्रति पाउ। पच पचन उरि लच्चिय॥
संजोग व्याह [1]विध जोग सुनि। चलत राह उद्यान मग॥
रन राग रंग पचन भरन। दुरति रूप दानव सु द्रग॥छं०॥२६१॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

एन बान असुरान। भिरन महिषासुर भग्गिय॥
एन बान राषिसन। राम रावन्न उछग्गिय॥

---

[1] (१) ए. कृ. को.-बुध।

एन बान कौरव ममथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय ॥
एन बान संकर सुभग्ग। चिपुरारि सु पारिय ॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर ॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चल्लै कहर ॥छं०॥२६२॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम देखि भयंकर ॥
गिर तरु लग्गिय गेन। षलन षंडन तरु षंषर ॥
वैल गैल जट जूट। पिठु तठ काम विराजै ॥
गंग उदक उछछरै। सार चंमर सिर राजै ॥
जब चष्य पिष्य चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर ॥
पेषंत पाइ दुज्जन दुसह। धऱ्यौ पिठु सवि अप्प कर ॥छं०॥२६३॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह ॥
बरन अनँत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह ॥
करी चर्म गरलइ विक्कंम। रच्छिस उर दाहन ॥
द्रिग्ग चयन ज्वाला बयन्न। क्रंद्रप्प न मानह ॥
तरु तरुन तार चिय बर चसहु। रिसहु सचु चहुआन रषि ॥
भरि भूत धूत दिद्धिय पियहु। लिय अग्या सिर नाइ सिष ॥
छं० ॥ २६४ ॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा ॥ चले राहु पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह ॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह ॥ छं० ॥ २६५ ॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कंन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त ॥ दुज [1]उद्धो दल नाह। प्रवल तन जोति प्रगासिय ॥
मुष विद्धी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय ॥

(१) ए. कृ. को.-उभ्भौ।

दृग पट्टिय छुटि पट्ट । लग्यौ उद्दोत सुराजह ॥
भाग रूप भज नाह । दिट्ठ नाराजो [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिट्ठ दिय । मम संके जुद्दह निपुनं ॥
फिरि तथ्थ विप्र नह [2]पिष्पयौ । तुम हम मंडल रवि मिलन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना ।

चलिय अग्ग चहुआन । एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन सज्जि । निर्जरि ता ताहि न लग्गिय ॥
जीह वीज विकराल । धजा घन वद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गदा सोभंत । भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्पिय सलष । हनूमान चंदह कहिय ॥
वाजंत नह विधि विधि वसुह । चह सुवज्जि चंवक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना ।

दूहा ॥ चंद गयौ अग्गें सुवर । तीतन रूप चयाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम । करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराव का सहस्रबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ सोहन्त । धूम्र ब्रनह सुष मग्गह ॥
ऑघ तेज अगि जानि । पानि पलचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत । हथ्थ डंकनि फिक्कारैं ॥
जै जै सुष उचरंत । सिंह वह वर वक्कारैं ॥
लंगोट वंध काया प्रचंड । लोहालंगर समुष करि ॥
धारंत हथ्थ मथ्थें धरिय । सासु पंष मथ्थें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय का इन्द्र के दर्शन होना ।

जोजन तीन जलद्धि । राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि । इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दोनह । (२) ए. कृ. को. दिष्पई । (३) ए. कृ. को.-ता रंगह ।

एक कोस आवंप। भद्र जाती उज्जल तन॥
सहस दंत सित हथ्थ। मनो राका जोतिवन॥
विमान देव बहु जटित मथ। चमर छत्र अच्छरि चलिग॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुझ्झ इम ग्रह मिलिग॥
॥ छं० २७०॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विबर एक वट मंझ। तास मझ्झह कंदल ग्रह॥
भान तेज झलकंत। आय सेना उत्तरि सह॥
चंद गयो चलि अग्ग। देवि पूजा घन किद्धिय॥
बध्ध रूप आरोहि। आय उस्भी हर सिद्धिय॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज संजोगि ग्रहि॥
चौसट्ठि सुभर भेटें सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि॥
छं०॥ २७१॥

दूहा॥ चयत दिवस चय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न॥
जोजन इक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न॥ छं०॥ २७२॥

समस्त सैनिकों का निद्रागस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त॥ बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि विक्तिय॥
के दुब्बल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय॥
करि अस्तुति सब सथ्थ। अस्व तजि नींद सु ग्रासं॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं॥
पत्तौ सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंन वर थान नय॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बोले सामंत तय॥ छं०॥ २७३॥

(१) को० झलंत। (२) ए. कृ. को. तहां।

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता हूं बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज । करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छग्गर कविचंद । महल [1]पिष्षन मन संतं ॥
जग्ग आनौ सुध समै । तुमै सब काम सुधारौ ॥
मो चिंता मन मांहि । सोइ [2]तुमतें निसतारौ ॥
संभलत सब्ब सामंत मत । भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु दृष्ट अप्पान अप । आस्रम्मे सव्वां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ अयनि जांम वासुर विसरि । घटिग हंस तन रात ॥
जु कुछु चष्ष इच्छा हुती । सोइ दिष्षौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज । [3]शमित सामंत सुरेसं ॥
मो चिंत्यौ तुम कंध । सुनौ कारन क्रत एसं ॥
चितिया दिन बाईस । कोस चौवीस चवथ्थौ ॥
षट चौसह पंचमो । तीस अठ षष्टि सपथ्थौ ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि । इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति । क्रत्य सब्ब तुम कंध लगि ॥छं०॥२७६॥

पृथ्वीराज प्रति जैतराव के बचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवित्त ॥ बहल चंद किरन्न ; छिपै नन सूर छांह घन ॥
भूपति छिपै न भोग । रंक मन छिपत बसन तन ॥
माह नेह नह छिपत । छिपै नन पुहप बास तर ॥
कुलट * कुटंब न छिपै । छिपै नन दान अधर धर ॥
छिप्पै न सुभट जुद्दह समै । चतुर पुरष कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि । तू न छिपै छग्गर गह्या ॥छं०॥२७७॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिष्षन । (२) ए.-लम ।
(३) ए. कृ. को.-सब्ब । * कुढंग

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द्र का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्रप। जंपि विगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा स राज बेन। उब्भरे [1]रोम लग्गे सु गेन ॥
अप्पानि अप्प [2]दैवत्त चिंत। संभान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

मंड्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कन्ह गोयंदराज। पज्जून सलष निड्डुर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुंडीर चंद तूंवर पहार। जामानिजद्द आजान बार ॥
पंमार सिंह लष्षन वघेल। चहुआन छत्तताई छबेल ॥
छं० ॥ २८१ ॥

बलिभद्रराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरामह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठे स राज आवरि अशेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उथ्थान मान वर जथ्थ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [3]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्षत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। कंधेव तंम सोभानि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [4]विहसि सुभा विकसे सुमन। न्रप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि मुष जंपिरू विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

---

(१) मो.-रोस। (२) मो.-देवान।
(३) ए. कृ.-पंग। (४) ए. बिहरि।

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वीराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत। राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन। गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग। तलप अलपह आनंदति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज। पुरह संकर सानंदति ॥
सुनियै निसान ईसान घन। जनु दरिया पाहार गुरि ॥
[1]निस अद्ध घरिय ऊपर चतुर। पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस। घोर सपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम। उठिय घोर दरमान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु। सुर वज्जे सहनाइ ॥
रस दारुन भय संचरिग। घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [2]वटिय च्यार रुप्परह। अद्ध जामनिय जरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस। सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सप्तमी। अश्वनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन। [3]गंग मंडल वर यानह ॥
अगगह सुभट्ट मारग सुमग। कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल विछोह तन होत जल। जाल वाल चूरन [4]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि कन्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो।

बचनिका ॥ राजा सामंतन सौं बोल्यौ। हूं पंगुरे कौ दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूप सरूप [4]दुराओ ॥ और सरूप करि साथ आओ ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी। सो निसा जुग एक बरावरि जानी ॥

---

१ (१) मो.-घरिय। (२) मो.-गगन मंडल वर भानह।
(३) ए. कृ. को.-कारिय। (४) ए. कृ. को.-दुराओ आवौ।

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी ॥ चंपी सुभोमि कनवज्ज आइ। दसगुनौ सूर बर चढ़त भाइ ॥
उच्चर्‌यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। दीसई राज रवि सम समथ्थ ॥
छं० ॥ २६० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। दरपन्नि न सूर तिस तिस दृढ़ाय ॥
ओपंस चंद जंपी सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय ॥*
छं० ॥ २६१ ॥

उत्तुरिय चित्त चिंता नरेस। वेतरहि सूर सुरलोक देस ॥
इक कहत लेंहि बल इंद्र राज। जस जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २६२ ॥

कर करहि[1] सूर अस्नान दान। वर भरत सूरसुनि ज्ञन निसान ॥
सरबरिय साल वंछहित भांन। मुध बाल जेम इच्छत बिहान ॥
छं० ॥ २६३ ॥

गुरु दयत उदित ब्रित मुदित ठूल। झलमलिग तार तरु झलिग पत्त॥
देषियत इंद किरनीन मंद। उदिमइ हीन जिम न्नपति चंद ॥
छं० ॥ २६४ ॥

धरहरिग [2]चिंप्ति सुर [3]मुह मुंद। उप्पज्जौ जुद्ध आवद्ध दुंद ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर ॥
छं० ॥ २६५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि मित मान। नष्यंत तोरि भूषन प्रमान ॥
घसुवंत अंसु उल्लास आइ। बिरहीन कंत चंदह बुलाइ ॥
छं० ॥ २६६ ॥

पह फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कसाल ॥
[4]न्रिप चंसि गंग सव पुब्ब देस। आरब्ब अरिन उत्तरि नरेस ॥
छं० ॥ २६७ ॥

---

* ए. कृ. को.-बल बंधि पिय संग दिन दिढ़ाय। ओपम चंद जांनी समाय।

(१) ए. कृ. को.-वित्त। (२) ए. कृ. को.-सह।

(३) ए. कृ. को.-नमाति। (४) को.-नृप भूमिग जानि यह पुब्ब देस।

न्रप अजिग जानि इह पुव्व देस। धरि गयर [1]नीर उत्तर कहेस ॥
हर सिउ दिव्व कनवज्ज राव। तिन धज्यौ अंग धर अंम घाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ पह फट्टिय घट्टिय तिमिर। तमचूरिय कर भान ॥
धक्कमिय पाय [2]प्रहारनह। उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरवि। किरन परष्षिय खेत ॥
कलस पंग नहिं होय यह। विय रवि बंध्यो नेत ॥ छं० ॥ ३०० ॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांध कर चलना।

रत्ति तंमुह संमुह [3]उयौ। इह है मग्ग समुज्झि ॥
भूलि भट्ट पुव्वह [4]चलिय। कहि उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
कंचन फूलिय अर्क वन। रतनह किरंनि [5]प्रसार ॥
सु न कलस जयचंद घर। संभरि संमरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुंचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना।

कवित्त ॥ रह कलस कवि चंद। दंद मंड्यौ मुष रव्विय ॥
जग उप्पर जगमगत। [6]भूलि कैलासह छव्विय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज। षग्ग कामधज्ज बांहबर ॥
दान षग्ग अनभंग। धजा विय दान बंधि पर ॥
आभंग अवँग कनवज्ज पति। सुष नरिंद [7]दुनि इंद वर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहाँ। नवै रस्स षट भाय गुर ॥ छं० ॥ ३०३ ॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल। करहि जु भंति अनेक ॥
नट [8]नाटिक संभरि धनी। बर विष्यात छवि केक ॥ छं० ॥ ३०४ ॥

---

(१) मो.-जानि। (२) ए. कृ. को.-प्रहारनल, पहार नर।
(३) ए. कृ. को.-उचौ। (४) ए. कृ. को. चल्यौ।
(५) ए. कृ. को.-प्रचार। (६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुछि छवि।
(७) ए. कृ. को.-दुति। (८) ए. कृ. को.-नागर।

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ थट्टे गयंदा। मनूं पिष्पियै रूप ऐराप इंदा॥
कहूं फेरिचिंत भूप अच्छे तुरंगा। मनों प्रव्वतं बाय बद्धे कुरंगा॥
छं० ॥ ३०५ ॥
कहूं मल्ल भूदंड ते [1]रोस साधैं। तिकै मुष्टिकं जोर चानूर बाधैं॥
कहूं पिष्षि पाइक्क बानैत बाधैं। नवं इंद्र [2]आहंस कै वज्ज साधैं॥
छं० ॥ ३०६ ॥
कहों विप्र उठ्ठंत ते प्रात चल्ले। कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले॥
कहूं जग्य जापन्न ते राज काजैं। कहूं देवात देव न्नित्यान साजैं॥
छं० ॥ ३०७ ॥
कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै। तिनं दिष्षियै रूप संसार भागै॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं। कहूं हेम सम्मान प्रथ्वी समानं॥
छं० ॥ ३०८ ॥
कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं। कहूं [3]औघटं वीर संगीत गानं॥
कहूं दिष्षि सिद्धं लगी तारि भारी। मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी॥
छं० ॥ ३०९ ॥
कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं। रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [4]पानं॥
इत चरित पेषंत ते गंग तीरे। स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन। कह महत तिन न्हान॥
कह महत सुमिरंत तिन। कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं। जो फल गुनी गाइयं गेयं॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं॥
छं० ॥ ३१२ ॥

(१) सरों। (२) ए. कृ. को.-आसेह।
(३) ए. कृ. को.-देवान। (४) मो.-औघटं।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं। *छन्द ३१२ मो.-प्रति में नहीं है।

जं जय भाव सु बुद्धं। तं तं कहियंपि सुंदरी कथ्थं ॥
महिलान बाल अच्छं। सामं घनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए।

अरिल्ल ॥ जं तं न्हान महातम जानौं। दरसनं तंत महंत बषानौं ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे। सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि। वेद पढ़त षलि बीरज ॥
सहस बहत्तरि कुंअर। उपजि भौजंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध। कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास। रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत। सु कविचंद ओपम कथियं ॥
सामंत सूर परिगह सकल। उतरि तट्ट भागीरथियं ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संबंध मे एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तज्यों न मधुपं, मध्ये रह्यौ संपुटं ॥
सो लैजायं सरोज संकर सिरं, चट्टाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत स उप्परं घट भरं, गंगा जलं धारयं ॥
वारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इकं मृग्ग पियंत नीर डसियं, काली समं पन्नगं ॥
साई व्यालय मृगछालय बही, शृंगी बही सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथी संगती ॥
* आनंदी दुज वैल लैन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना; गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन।

दूहा ॥ हो सामंत सुमंत कहु। सु हरि चिंति तजि बाज ॥

* "३१६ से ३१७ तक ये छंद मो० प्रति में नहीं है।

त्रिपथ लोक प्रथिराज मुनि। नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप मनंमथ हरन। गंग नव बंध अनै पर ॥
हरि चरनन करि जनम। काम छंडै सु दुष्य वर ॥
तीन लोक भर भवन। तहां प्राक्रम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरी। भ्रम्म तट काय प्रमानन ॥
वंछहि सु चतुर नर नाग सुर। दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि। जस सम उज्जल बसु अपर ॥छं०॥३१९॥

साटक ॥ ब्रह्मा कष्य क्रमंडले कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा त्रयलोक संपद पदं, तंवाय सहसंनवी ॥
अघ काष्ठ ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
जजाल जग तार पार कारनी, दरसाय जाह्नंवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्म कमंडल तें कल गंगा। दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह। [3]सातुक उदक गंग मझझारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि बरदाय वर। पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई। क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई॥
चंद कह्यौ राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ हथलेवा मिलत है॥

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी। पट कूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिथ। मिलहि हथह हथ लेव ॥छं०॥३२३॥

काव्य॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला। पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं॥
त्रिवलिय गंग धारा मद्धि घंटीव सबदा। मुगति सुमति भौरे नंग रंगं त्रिवेनी॥
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-विवर। (२) ए.-ढिल्लींच।
(३) ए.-सादुक।

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक । सम नरिंद किय केलि ॥
चिरल चिभंगी छंद पढ़ि । चंद सु पिंगल मेलि ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

गंगाजी की स्तुति ।

चिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे सित चंगे ।
हर सिर परसंगे जटनि विलंगे विहरति दंगे जल जंगे ॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै वंदे छित अघ कंदे सुष चंदे ।
मति उच्च गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छंदे गत दंदे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥
वपु अपु विलसंदे जम भृत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे ।
.... । .... ॥
थिति मति उर मालं सुगति विसालं विर धुत कालं सद कालं ।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर छर नालं विधिवालं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥
दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं ॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर बहु पाजं सुर साजं ॥
[1]अंमर तरु मंजरि निय तन जंजरि वर वर रंजरि चय पंजरि ॥
करूना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि माभंकरि ॥
छं० ॥ ३२८ ॥
कलिमल हरि मंजन भव अत भंजन जन हित संजन अरि गंजन॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल । तरल तरंगति अंग ॥
पाप विडारन अंग तें । भ्रंम तरुन्नि विहंग ॥ छं० ॥ ३३० ॥

राजा का गंगा स्नान करना ।

बचनिका ॥ राजा षीरोदक पहिर स्नान कर्यो ।
तब चंद बहुरि और अस्तुति करत है ॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना ।

(१) ए.-अमरत ।

भुजंगी ॥ तिके दिष्षियै गंग चिहु पास बालं । तहां उप्पमा चंद जंपै विसालं
जरै कामनाथं दया गंग आई । मनों हार धारी रती तत्त छाई ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरभाई । तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई ॥
असे चंद कुंभं करं इंद दंदं । मनों विच पारीर मेटै फुनिंदं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं । तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं ॥
चमकंत लक्कं सु कप्पोल सोहै । मंनों उट्टितमं चंद कै पास रोहै ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलक्कं कनक्कं कलस्संत नीरं । मनों सज्ज सथ्थै सुपंतीज मीरं ॥
दिष्यै गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं । किधों [1]मुगति तिथ्थं किधों काम तिथ्थं॥
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै ।
चष चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै ॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै ।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

चषतिष्षी वरबाल बाल सति सहस वर ।
आप मनोरथ करै कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमासि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन ।
मधुसहज्ज वरषंत विहंगन सूर तन ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन ।

कवित्त ॥ सह चंद इकलास । पास कोवंड कुरंगा ॥
कीर विंबफल जुगल । उभय भूतेस अनंगा ॥
मग्गराज गजराज । राज पिष्षिय एकंतं ॥
पुच्छि तांम कविराज । कहा इह अचरिज वत्तं ॥

(१) ए. कृ. को.-सुगति ।

वरदाइ ज्वान दीनौं वहुरि। निरषि तट गंग दासि तन॥
यांनक प्रताप जयचंद के। वैरभाव छंडिय[1] सु इन॥ छं०॥ ३३७॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन।

दूहा॥ द्रिग चंचल चंचल तरुनि। चितवत चित्त हरंति॥
कंचन कलस झकोरि कैं। सुंदरि नीर भरंति॥ छं०॥ ३३८॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन।

लघुनराज॥ भरंति नीर सुंदरी। सु पांनि पत्त अंगुरी॥
कनक्क वंक जे जुरी। तिलग्गि कद्रि जेहरी॥ छं०॥ ३३९॥
सुभाव सोभ पिंडुरी। जु मेन चिनही भरी॥
सकोल लोल जंघया। सुनील कच्छ रंभया॥ छं०॥ ३४०॥
कटिंत सोभ संसुरी। बनी जु वांन केसरी॥
अनंग छब्बि छत्तियां। कहतं चंद वत्तियां[2]॥ छं० ३४१॥
दुरांइ कुच्च उब्भरे। मनो अनंग ही भरे॥
रुलंत हार सोहए। विचित्त चित्त मोहए॥ छं०॥ ३४२॥
उठंत हथ्थ अंचले। रुलंत मुत्ति सजले॥
कपोल लोल उज्जले। लहंत सोल सिंघले॥ छं०॥ ३४३॥
अरद्ध अद्ध रत्तए। सुकील कीर वत्तए॥
सुहंत दंत आलिमी। कहंत वीय दालिमी॥ छं०॥ ३४४॥
गहंग कंठ नासिका। विनाग राग सासिका॥
जुभाय मुत्ति सोभए। दुभाय गंज लोभए॥ छं० ३४५॥
दुराय कोय लोचने। प्रतप्प काम मोचने॥
अवद्ध ओट भोंह ए। चलंत सोंह सोहए॥ छं०॥ ३४६॥
लिलाट राज आड़ ए। सरद्द चंद लाजए॥
.... ॥ छं०॥ ३४७॥

(१) ए. कृ. को.-मंडिय। (२) ए. कृ. को.-रचियां।

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ हसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि चुक्कौ अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। बाल बरनि बिन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

ढिल्ली सुह अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कांच न षंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[1] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित विचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्षाय कित्तियं बलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिज्जे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि द्रम। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडन भरतार ॥
सुह कारन विह निरमई। दुह कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्ठियै। उंच थांन जे बाल ॥
कै रवि देषत मतषननि। कै मुष कंत विसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[2]। रहि भगि भ्रंग सरन्न ॥
सरस वुद्धि ष्टंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिति मुष्षं। घन दीहंति ईस सेवायं ॥

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि। (२) ए. कृ. को.-विहसि।

ज्ञानिज्जै मन[1] अप्पं। [2]प्रीतमयं तप्प अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख शृंगार वर्णन।

दूहा ॥ पुनर मंडि जनमेज जगि। पित अरि कुल दइ अग्गि ॥
अग्गि शेषकुल शेष रहि। रहि त्रिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि जग्गे। सु ये सेस सेसा तिके पिट्ठ लग्गे॥
मनं मग्ग[3] मोहन्न मोती न मानी। मनों धार आहार के दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं नगं देषि जगजोति जग्गी। मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
दुअं अव्वरेषं भुअं देषि जग्यौ। मनों कांम चापं करं उछि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्ठे नयंनं विचिं ऐन दीसं। मनों जोति सारंग निर्वात रीसं॥
तेज चाटंक ते श्रोन डोलं। मनों अर्क राका उदै अस्त लोलं॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं। मनों चंद रथभंग है भान जानं॥
उरज्जं गंभीरं भई मंझ झोलं[5]। उवं दिव्यदर्शी अरूढील बोलं॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त साईं। मनों चंद बिय बिंब अद्दने बनाईं॥
कहों ओपमा दंत मोतीन कंती। मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं। अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं। उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं कोक नद्दंति कंचू समुभ्भं। मनो तिथ्थराया त्रिवल्ली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि कुल केलि दुरि मझ्झ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन। (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पंत अप्प अधिकाय।
* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (३) ए. कृ. को.-मगं। (४) मो.-प्रगुर।
(५) मो. जोलं। (६) ए. कृ. को.-जिसे। (७) ए.-आनंत।

नितंवं उतंगं जुरे वे गयंदं। तिनं मज्झ रिपुछीन रघ्यौ मयंदं॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं। मनों काम की जौति बढ़ी सरालं॥
छं० ॥ ३६५॥

जघं वन्न सोवन्न भोहन्न[1] थंभं। मनों सीत उस्नेव रितु दोषरंभं॥
नरंगी निरंगी सुपिडी छछोटी। मनों कनक कुंदीरु कुंकु अलोटी॥
छं० ॥ ३६६॥

किधों केसरं रंग हेमं झकोरं। किधों बढ़ियं बांम मनमथ्थ जोरं॥
सदं रोह आरोह मंजीर वादे। मदं छिद्र तेजं परंकार वादे॥
छं० ॥ ३६७॥

पगं एड़िअं डंबरं श्रोन बानी। मनो कच्च चीनीन में रत्त पांनी॥
नषं न्निमलं द्रप्पनं भाव दीसं। समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं॥
छं० ॥ ३६८॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं। मनों पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं॥
सुकोवं सुजीवं जियं स्वामि जानं। रवी पंग दरसं अरव्यंद मानं॥
छं० ॥ ३६९॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना।

कुंडलिया॥ दरस चियन ढिल्ली न्रपतिं। सोवन घट वर हथ्थं॥
वर घुघट छुटि पट्ट गौ। सटपट परि मनमथ्थ॥
सटपट परि मनमंथ्थ। [3]भेद वच कुच तट अेदं॥
उष्ट कंप जल द्रगन। लग्गि जंभायत भेदं॥
सिथलं सु गति लजि भगति। गलतं पुंडरि तनं सरसी॥
निकट [4]निजल घट तजै। मुहर मुहरं पति दरसी॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

गाथा॥ कमोदं वरं विगासं। सरसीरुह सरसियं[5] तेजं॥
चक्रति चक्र एकं। अरकं रेकइ प्रथ्थ संजोगं॥ छं०॥ ३७१॥

(१) ए. कृ. को. सोहन्न। (२) मो.-अंतर। (३) ए. कृ. को. भेद तंट कुच वच्छेदं।
(४) मो.-निज्जल। (५) ए. कृ. को.-ससीयं।

रोरंत कच विलास । चंद मुखो दरसि सरसिय प्रतिय ॥
मवसं प्रांन वेसासी । दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
कुमुदं कुच प्रगासी । हार वीचं तनं तयं अंवं ॥
अभिवर तरंग ओपं । रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
पावस धनुक सुकंती । अंवर नीलाद्र पीतमं वाले ॥
जानिज्जै परमासं । स्यांम घन मद्धि तड़िताय ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना ।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि । पुर रट्ठौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै । जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चौपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं । सोम सूच्य तिथि षष्टी जानं[1] ॥
अंतरि पट्ठ सुनंत नरिंदं । भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ सो पट्टन तजि न्टपति । चल्यौ कनवज्ज राज वल ॥
जाय [2]संपनौ राव । गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि मिस्नान परमान । थान आश्रम्म सु उज्जल ॥
दीय जाप मन करै । भ्रंम भंजै सु अभ्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय । तिहि जय जय सुरलोक हुअ ॥
दिन पतत निसा वंधय सयन । रस पिल्लिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना ।

दूहा ॥ निसि नंषी चिंतान भर । भयग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगटिय किरनि । वर प्रयान न्टप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥
निसि चियाम बित्तिय सु जव । उच्छ सुपिन दा प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ । चढ़ि चल्ल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

(१) ए. कृ. को. थानं ।   (२) ए. कृ. को.-सपन्नौ ।

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ जग्गि सु न्रप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि ॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि ॥
इहह दिष्षि कनवज्ज। जहां वसि थान सुरत्तं ॥
दई विधिना त्रिम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं ॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्ष मंषी जियन ॥
तुम सत्त ग्रहौ बंधौति षग। मंत अप्प देषौ बयन ॥ छं० ॥ ३८० ॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। वीर आहुट्ठ नरेसर ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर ॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं ॥
लोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं ॥
लष्षन बघेल गुज्जर कनक। वारहसिंघ सु अग्ग चलि ॥
बिय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन बल अकल ॥ छं० ॥ ३८१ ॥
दूहा ॥ इह समग्ग सव सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद ॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]वरचंद ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्रपति। [2]आरन छिनक सपन्न ॥
मतौ करन साईं सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह ॥ छं० ॥ ३८३ ॥
कवित्त ॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंची ॥
तंतसार बिन तुंब। जंच वाजै हिन [3]जंची ॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई ॥
सुभर अप्प रजपूत। पत्ति रष्षे पति पाई ॥

---

(१) ए. कृ. को. कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरानि।
(३) मो.-मंत्री। (४) ए. कृ. को.-आंगि।

दरबार पंग दैवाल भर। काल जलद सौ उल्लै ॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत वर। दल भंजै पुज्जै दलै ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

सुनि कन्ह चहुआन। कन्ह विथ्यौ जु कन्ह जुगि ॥
कन्ह अनी कुव्वर। भेछ मोरन्न मुट्ठि पगि ॥
सामध्रम्म अगि प्रान। नीति रापन राजंनिय ॥
तिहि कारन तुअ अंषि। निहि पाटी जुग जानिय ॥
आचिज्ज सोइ कनवज्ज वर। पूछि न दिषि तन तन नयन ॥
प्रथिराज काज तौ सुब्बरौ। छोरि पट्ट सज्जौ सयन ॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना।

दूहा ॥ कूच करिग भावीं श्रवन। वर वर चलि सहरत्त ॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि। सुनि निसान धुनि पत्त ॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मित्तज वर। वर पुच्छन हग सव्व ॥
वर भावी गति चिंतकिय। नयन सु वरजी तब्ब ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ (१)जहां दिष्पियै जासु संदेह सेहं। उअं अर्कसा कोटि संपन्न देहं ॥
वने मंडपं जासु सोब्रन्न गेहं। तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

रुधिं सित्त माहीष बहु मध्य रत्ती। तिनं प्रात पूजंत न्नेम अत्ती ॥
भुजं डंड दुंदेस देसं प्रकारं। अमै देवता इंद्र लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

बजै दुंदभी देव देवाल निन्तं। बरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं ॥
बजै मद्द झंझै समं जोग भिद्दं। निरत्तं न पायं तिनं कब्बिचंदं ॥
छं० ॥ ३९० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तहां।

सुष पंड भारथ्थ विय बैर साजी। मुषं देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै अकारी। मनों अग्गि ज्वाला जलं में उजारी॥
छं० ॥ ३६१ ॥

[1]नमो तूंअ तातं नमो मात माई। तुअं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुअं थावरं जंगमं थान थानं। तुअं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३६२ ।

तुअं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुअं पंचभूतं स्वयं देह यट्टी॥
तुअं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै जाप वंदी॥
छं०. ॥ ३६३ ॥

तबै वैन आकास मद्दि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तबं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुअं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुअं सारसं ॥
हंदीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया द्रुग्गया ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रक्रति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। हवी हवीतेज [3]मुगति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उच्चरै बलयं ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद कित्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मझझाइं ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नमो तू अतानं।

(२) ए. कृ. को. "कै मातुल परक्रति गति"। (३) ए. कृ. को. मंगति।

चौपाई ॥ इच्छा नाम छचि जौ लई । सार धार डुल्लिन वल कोई ॥
चौ अग्गा छल दायें वीर । जौ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रदक्षिणा देकर चलना चाहिए।

दूहा ॥ किय विचार नृप नगर कौ । सह सामंत समेव ॥
चंद वुझिक्क तव मन कियौ । चल्यौ सु [2]दष्यन देव ॥छं०॥४००॥
देत प्रदिष्यन नगर कों । होत तहां वहु वार ॥
राज देय पच्छै करै । एह सकल विचार ॥ छं० ॥ ४०१ ॥
हर सिद्धी परनाम करि । राषि समंत सु साज ॥
कनवज दिष्यन राज ग्रह । चल्यौ चंद वर राज ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना।

भुजंगी ॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं । धरी अंक भोमं चली थान थानं ॥
कहै चंद कव्वी उपम्मा सु पत्तं । गजै मेघ मानो नछचं सहित्तं॥
छं० ॥ ४०३ ॥

धुनं संभरी कन्न साम्रंत भीतं । ग्रहै साध भ्रम्मं सहै साधु नीतं ॥
सधें मग्ग हेतं ग्रहं भ्रम्म जीयं । [3]निहं दोस मंदेह छचं [4]पतीयं॥
छं० ॥ ४०४ ॥

सोई भ्रंम कन्हं चितंतं प्रमानं । दिपी लज्जि मन्नं कलं जोति मानं॥
धरै सामभ्रमं जिनं धूम्र लीनं । जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

सगुनं प्रथीराज दीसै नरिंदं । धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं ॥
वुलै देवि वामं घटं वाल मथ्यै । वुलै वायसं वाम चढ़ि अस्ति रथ्यै॥
छं० ॥ ४०६ ॥

---

(१) मो.-सु । (२) ए. कृ. को. दिष्पन ।
(३) ए. कृ. को.-तिहं । (४) ए. कृ. को.-पयहिं ।

दिषी राज दिष्टं गलंती ज ईसं। लरै वाम नंदी अनंतं सुरीसं॥
दिसा दच्छिनी लोह भट्टी सु जागी। तहां चक्रितं चित्त कविचंद लागी॥
छं० ॥ ४०७ ॥

कवित्त ॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्षिन निक्कारी॥
बर उचिष्ट पावक्क। विहन तिन मझ्झ चमंकै॥
मेघ दृष्टि आकाल। मध्य धुमंरिय गहक्कै॥
आरिष्ट भाव कविचंद कहि। तब चिंत्यौ न्रिमान बसि॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि॥
छं० ॥ ४०८ ॥

दूहा ॥ सिंगिनि बंदि विरंम करि। बाग पंग न्रप जाइ॥
दिषि अराम सिष ग्रह परसि। रहि सुगंध बरछाइ ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार वर। सुमन राइ फल लिद्ध॥
क्रूर दिष्ट मन रह वढी। ससि तारक भ्रित रिद्ध ॥छं०॥ ४१० ॥

पद्धरी ॥ बर मग्ग बग्ग चिहु कोद दिष्षि। विस्तार पंच जोजन्न लष्षि॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं० ॥ ४११ ॥

प्रतिव्यंब अंभ झलकत सरूप। उप्पम तास बरनत अनूप॥
नव विद्ध गत्ति सह जल प्रवेस। मुसकंत झुंड दिष्षी सुदेस॥
छं० ॥ ४१२ ॥

प्रतिव्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून॥
दीपक माल मनमथ्थ कीन। हरभयति दिष्षि इह लोक दीन॥
छं० ॥ ४१३ ॥

हलहलत लता दमकंत वाय। मनु बध्यौ सपतसुर भंग पाइ॥
चल्लै सुगंध बर सीत बत्त। जानियै सब्ब हथ्थीन जित्त॥
छं० ॥ ४१४ ॥

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं विंवं अंव मौरे । सुरं कंठ कल्लियंठ रस प्रस्त भोरें ॥
फली फूल वेली तरं चढ़ि सोहै । तिनं ओपमा दैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥
रवी तेज देषी ससी वाल भागी । मनों तारिका उड्डि तर सब्ब लागी॥
कहीं जुहि जंभीर गंभीर वासी । तमी तप्पनी सेव सीसंम सासी ॥
छं० ॥ ४१६ ॥
असै भोर मकरंद उडि बाग मंही । मनों विरहनी [1]दिघ्घ उस्सास लेही॥
कितं एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै । [3]मनों जीवनं पीउ पीयूप फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥
कहूं सेवसत्ती फुलै ते प्रकारं । किधों दिष्पियं प्रगट मकरंद तारं ॥
कहूं सोभही थट्ट गुल्लाल फूलं । चयं भोर मकरंद सहफूल भूलं ॥
छं० ॥ ४१८ ॥
वरं वोरसरि फूल फूली सुरंगी । छके भोर भौरं मनं होइ पंगी ॥
कहूं कहली सेसुरंगं जु पंती । किधों [4]मंत मथ्यं कि वीचैं धमंती ॥
छं० ॥ ४१९ ॥
धरी एक चहुआन तिन थान राही । असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुल्लै निनारै । वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे ॥
छं० ॥ ४२० ॥
सवैं कव्विराजं उपम्मा न पग्गी । मनों नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै । कवी जेम वत्तं रसं सो वषानै॥
छं० ॥ ४२१ ॥
न लालं न [5]पिंगी षजूरं अमग्गी । नरं उंच न्त्रिपंत सो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा ॥ विलम सगुन चल्यौ न्टपति । नेन दरसि सो सथ्थ ॥
वर दीसी हट नैर कौ । मिलन पसारत हथ्थ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

(१) ए. कृ. को.-दीरघ, दीर्घ । (२) ए. कृ. को.-प्रात ।
(३) ए. कृ. को.-"मनों जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै" । (४) मो.-मनमथ्थ ।
(५) ए. कृ. को.-पीगी ।

नगर प्रवेसनि देषि न्रप। जूप साल अठाइ॥
ता हन्नन रस उप्पज्यौ। कहत चंद वरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के वाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते संगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्षियै कोटि कोपीन नंगा॥
जिते जूपकों चोप चौंपें जु आरी। तिते उचरें सो आनंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥
जिते साधु संमारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्षियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥
जिते दासि कै चास लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत बग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहें सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥
वचं उच्चरै बैंन निसि की उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उड़ै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥
कुसम्भं सर्म चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कद्‌ली सु ग्रभा॥
रसं राग छत्तीस कंठं करंती। बरं बीन बाजिच हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥
तिनें देषि असमान रूग्गी ठठुक्की। मनो मेनिका न्रत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भावं लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रठ्ठौर पुर। उज्जल पुण्य विपष्ष॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्ष॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय बिठ्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा म्रदंग सुब्भवै।
सु दछ्छिनं समस्त रूप स्याम काम लुब्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

करंकर कंकन अंकह जोव। मनों दुजहीन सरदहि सोव॥
जरे जिव प्राल प्रकारति लाल। मनों ससि सझ्झह तार विसाल॥
छं० ॥ ४४२ ॥

झलंत जुघंतत राजनु जोप। मनों घन मड्डि तड़ित्तह ओप॥
जरेजिव नंग सुरंग सुघाटि। ति सुंदरि सोभ उवावति पाट॥
छं० ॥ ४४३ ॥

दु अंगुलि जोरि निरष्षहि हीर। मनों फल बिंबहि चंपहि कीर॥
नषं नष चाहलि मुत्तिय अंस। मनों भष छंडि रह्यौ गहि हंस॥
॥ छं० ॥ ४४४ ॥

दसों दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार॥
.... । .... . ॥ छं० ॥ ४४५ ॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना ॥

दूहा ॥ हय गय दल सुंदरि सहर। जौ बरनों बहुबार॥
इह चरित्र कहँ लगि कहूं। चलि पहुपंग दुआर॥
॥छं० ॥ ४४६ ॥

चलत अग्ग दिष्यौ न्टपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ्घ अपराध॥ छं० ॥ ४४७

कौतूहल दिष्यै सकल। अकल अपूरब वट्ट॥
पानधार [4]छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट॥ छं० ॥ ४४८ ॥

राजद्वार और दरवार का वर्णन।

कवित्त ॥ गज घंटन हय [5]षेह। विविध पसुजन समाज [6]इव॥
घन निसान घुम्मरत। प्रवल परिजन समथ्थ नव॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लत्त आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को-गनों।
(४) ए. कृ. को.-छगगल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रच।

पुंभीद अवनि सुम्भय महल । जनु डुल्लित उम्भिय करन ॥
दरवार राज कमधज्ज कौ । जग मंडन मभ्भह धरनि ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप । दिष्षिय दर चंदह ॥
पंगराइ दरवार । वार आगत जै विंदह ॥
सत जुग्गह वलिराइ । नगर पुर भ्रंम प्रमानं ॥
त्रितिय जुग्ग रघुनाथ । अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाग नागर नगर । जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन । कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥
॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरवार । छत्र धरि फिरिहि विनहमद ॥
भ्रमर गुंज पुंजरत ।(१)कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुसंकारह । मत्त गम्भित कंठीरव ॥
वामुर संझ विहारि । वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुघन । सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम मर कटकि । समन दमन वस भूरि वह ।
छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रबंध वर्णन ।

लष्ष सुभर आवंत । लष्ष दरवार हरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज । लष्ष इक नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तानि सिलहान । गिरद रष्षै दरवारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड । संक मानै नह सारह ॥
लष असिय सकल सेवा करै । द्वादस सूरज जोति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित । पवन पाइ ऐराक भल ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

(१) ए. कृ. को. मुकत क्रमत दुरहु रद ।

नागाओं की फौज का वर्णन।

गज्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय ॥
मनक्रम चिय बच रहित। सहित सन्नाह सुधारिय ॥
रिप सरूप जयचंद। सहस संषहधुनि रष्षन ॥
आवध साल प्रलंब। षंभ रुप्यौ अति तिब्बन ॥
मन सित्त एक हथ्थिय फटक। इक्क हथ्थ ठेलत्त बल ॥
भुज दंड प्रचंड उचाय कर। धरत जानि मदगल कि मल ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ सित ऊरध षंभ। बान नंषत सत भारिय ॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय ॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभत तिष्षारिय ॥
कितक बथ्थ भरि षभ। कढ्ढि नंषंत उछारिय ॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल ॥
उच्चर्यौ राज भट्टह सरस। इह कौतूहल पिषिष भल ॥
॥ छं० ॥ ४५४ ॥

संखधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्त्र। मोर सिर मुकुट विराजत ॥
मोर पंष वल्लभ अनंत। पंषे कर साजत ॥
तप सु तेज पिचीय। चष्ष बघघह भुज सुंडह ॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह ॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय ॥
लष असी मझ्झ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय ॥
॥ छं० ॥ ४५५ ॥

(१) मो.-इक।

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह। विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद वरद्दिय उकति करि। सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥

कहिय चंद राजन्न प्रति। कहा सोचि मन मंडि ॥
अत्तताइय जुध जुरै। जव इन सम्चन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥

भाषनि भाष सु मिलिय दिस। दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अरु सपन सष। जोध सुपंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष। राथान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष। [1]चक्रित सुनाथ हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतों का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवति मिलि प्रात मिलि। हय गय देषिय साज ॥
षिचरि सुभर करिवर [2]गहिय। किनहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु। रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्य निसि दिन रहै। इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) ए. कृ. को.-"चक्रित सुनाथ दुज निरषि साप" (२) मो.-गहिइ।

कवित्त ॥ एक ठौर पृथिराज । रास मंगै हल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कासिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल आप लुक्किय ॥
मतिसिष्ट पुरष तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल केलि लागी विषम । टारी टरै न पुव्वगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना ।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
सो जागी ओ तान जल । मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना ।

सुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरवारह । जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास वर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन ।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परम उद्दंड चंड बल ॥
दिध्घ देह सुंदर समथ्थ । अति सुमति सु न्विमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परम सपन्न सव्व जग ॥
अवर भूप पिष्षत लयन्न । परसाद लग्गि नग ॥
सुकलम्भ कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुअ ॥
प्रति हार राज दरवार सहि । दिषि वरदाय नमित्त हुअ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो ? कहां से आए ? कहां जाओगे ?

(१) ए. कृ. को.-पग ।

सुरिल्ल॥ रषि कंविद हेजम बुल्लिय हसि। कौन थांन वर चलिय कौन दिस॥
को न्रप सेव देव का नाम। किहि दिसि चिंत कस्यौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना।

हो हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथीअवतार॥
फिरि ढिल्ली कवियान नरिंद। मो वर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना।

द्वारपालवाक्य।

स्लोक ॥ मंगिवांन विवारता कविन, संधिवान् कि विग्रहात्॥
जुद्धवान पंग राएन्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं० ॥ ४६८ ॥

दूहा ॥ बैरो काटन राज बंच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानन मेदियन। हिंदू [1]मुसलमान॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असंतिनि बोलहु हेजमन। अन्न करहु जिम आलि॥
जु कछु समर चित्तें रनह। इह देषहु तुम कालि॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहौं कविंद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन।

पंग दरस जंचन मिसह। कै मोकलिग बसीठ॥
कै मिलि षट मंडल न्रपति। राज रांज सू दीठ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

---

(१) ए. मुसलमान। (२) मो.-असत बोलहु हजमेन।

कवि का कहना कि कवि लोग वसीठ पन नहीं करते।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर। भट्ट बसीठ न हुंति ॥
पति घट्टत्त छिनकह मरै। जस मंगन नन षंति ॥
जस मंगन नन षंति। कौन प्रथिराज दान वरि ॥
का दिष्षन राज सू। कहा नलराइ जुधिष्ठिर ॥
मंडली मोहि जाचन नियम। दरिद करिय चहुआन चुनि ॥
पंगुरौ न्नपति देषन मनह। रघुबंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ [1]तू मंगन कविचंद। सथ्थ मंगन नन होइय ॥
तौ देषत तिय थान। इंद्र भुल्लिय [2]द्रग जोइय ॥
एह कपट कवि हस्यौ। नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्नपज होइ दरबार। भूत भय छंद विचारै ॥
दरबार कव्वि विरम्यौ न्नपति। [2]भर संमुह रष्यौ न दर ॥
तुम राज नीत जानहु सकल। हुकम विना रष्यौ न वर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरम कीनौं सु कबि। सष सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा। भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना।

न्नप कवि हेजम मझ्झि दर। रष्षि गयौ, न्नप पास ॥
भट्ट संपतौ राज पै। वंने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥
आदर करि हेजम [3]कविहि। गयौ जहां न्नपति नरिंद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ। कह असीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हेत हेजम उठिग। दिषत चंद बरदाइ ॥
न्नप आगे गुदरन गयौ। जहां पंग न्नप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुग। (२) ए. कृ. को.-तर। (३) ए. कृ. को.-सुकवि।

हेजम गय पहु पंग पैं । स्वामि आय कविचंद ॥
नत नंपी बुल्ल्यौ सुभट । सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजैं चिंतक सुतो । जानत होइ अजान ॥
हरुअत्तन गरुअत करै । सोई न्रपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को वाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना ।

वत्तनंध रूपक ॥ तव सु हेजम तव सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥
.... । .... ॥
सीस नयौ [1]दसवार तिहि । सेत छत्र[2]पति मद सुदिट्ठौ ॥
सकल वंध सथ्थह नयन । चकित चित बुलै गरिट्ठौ ॥
तव सु कियौ परनाम तिहि । वर करी राय [3]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै । सुकविचंद दरवार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नायि वुल्लौ वयन । औसर पंग रनेस ॥
कवि जो जुग्गिनि पुर कहै । संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारीफ ।

कवि सरस वानी सरस । कित्ती रूप प्रमान ॥
चंद [4]वत्त हर विदुप जन । गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ । उक्त तिरु हरि तरंग ॥
जुपति कवित म्रज्जाद ज्यौं । रतन वच्च प्रपरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं । गत्ति जुगत्ति विचार ॥
सुष्य नरेस निधान धन । [5]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन विथ्यौ नष्यै धनी । तोन प्रकारय कित्ति ॥
सरसंसर उतकंठ कर । अव्वह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

---

(१) कृ. को.-दरवार,दसार   (२) ए. कृ. को मद ।   (३) मो.-प्रहार ।
(४) मो.-बलहरे ।   (५) ए. कृ. को.-अनु

आडंबर बरभट्ट बहु। भर बर सथ्थ कविंद॥
तब रुक्यौ दरबार में। संग रष्षि कविचंद॥ छं०॥ ४८७॥

राजा जैचन्द का दसोंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

बयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुभ सुर्भहि नरिंद॥
तिन दसोंधिय सों कह्यौ। बोलि परष्षहु चंद॥ छं०॥ ४८८॥
कवियन तन चाह्यौ न्रपति। जो सुष तकौ न जान॥
जौ लाइक लष्यौ लषन। तौ लाओ इन यान॥ छं०॥ ४८९॥

* दसोंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई॥ आयस भोगु तियन तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ॥
कैधौं डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु बानी॥
छं०॥ ४९०॥
ते चवि आइ चंद पहि ठट्टै। मिलतें हेत प्रीति रस बट्टै॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यौं सक्कर पय भूषें पाए॥
॥ छं०॥ ४९१॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी॥ कितं दंडिया डंबरी भेष धारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी॥
सुने भट्ट भेजे ह च्यारं प्रकारी। किधों ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी॥
किधों ठग्ग कै ठोठ कै हेजगारी। .... ॥ छं०॥ ४९२॥
कहै राइ पंगु सुनौ कव्वि सव्वी। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनब्बी॥
छं०॥ ४९३॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कविंदं। तिनं पास आडंबरं नथ्थ इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरथ्थं सुरथ्थं कुरथ्थं प्रमानं॥
छं०॥ ४९४॥

---

* दसोंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसोंधी भी कहलाती है, दरबार के नाज़िर या कड़खे कहने वाले जोगबर अबतक इस वंश में होते हैं।

कठोरं कुवोलं पंढते तिरप्पं । ग्रद्दिष्टं अराजं प्रजानी निरप्पं ॥
जिते राज जानो कवीचंद जाजं । तिते पंग दिट्टं अदानं प्रमानं ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

अचित्तं सुचित्तं सु वित्तं विचारौ ।रसं नौ छ भाषा स साषा उधारौ॥
परंमान ग्यानो विग्यनो विरूरं ।लपौ वुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं० ॥ ४९६ ॥

दसौंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना ।

चौपाई ॥ ति कवि आय कवि पहि संपत्ते । गुरु व्याकंन कहै मन मत्ते ॥
थकि प्रवाह गंगा सरसत्ती । सुर नर श्रवन मंडि रहै वत्ती ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते । मुन उच्चार कऱ्यौ सरसत्ते ॥
गुन उच्चार चार तन कीनौ । जनु भुष्षै पय सक्कर दीनौ ॥
छं० ॥ ४९८ ॥

सब रूपक कहि कहि कवि जित्ते । नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूग्र ग्रंह गुन गंजहु । श्रीधर वरनि पंग मन रंजहु॥
छं० ॥ ४९९ ॥

श्रीवर श्रीकर श्रीपति सुंदर । सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर ॥
वीठल विमल बयन बसुधा बन । द्रुपद पुत्ति चिरु चीर बढ़ावन ॥
छं० ॥ ५०० ॥

ग्राह गहत गंधर्व गयंदह । रष्षहु मान सुभान नरिंदह ॥
तुअ चिंतत सचु सब मित्तिय । विष दातव्य विषा लड्डी चिय ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

जब अर्जुन कोवंड धरिय कर । तब [2]संघरिय सकल पोहिन भर ।
जब अर्जुन मन मोह उपायौ । तब भारथ मुष मज्झ दिषायौ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परसंन । (२) ए. संघिय ।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारथ श्री दासी ॥
सा भारति मुष मझ्झ प्रसन्नी। तव न वरस साटक भाष छ भन्नी ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

साटक ॥ अंवोरुह मानंद लोइ लरिसी, दारिम्म लो बीयलो ॥
[1]लोयन्ने चल चाल, चाल,य वरं, विंबाइ कीयौ गहौ ॥
के सीरी कै साइ बैनिय रसौ, चीकोमि को नागवी ॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भासा छठौ ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई ॥ कवि पिष्षत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवं ज संपत्तौ॥
कवि एकह अंगी क्रित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा ॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज वर। क्यों ढिल्ली पुर छेह ॥
जंपि कहौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह ॥ छं० ॥ ५०६ ॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा ॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं ॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए ॥ छं० ॥ ५०७ ॥

दूहा ॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट ॥
देषि ग्रव्व सुरपति गरै। पंग दरसि सो थट्ट ॥ छं० ॥ ५०८ ॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन ॥
इह अचिज्ज वर भट्ट सुनि। तुछ निडुर संमान ॥ छं० ॥ ५०९ ॥

---

(१) ए.-को-लोदन्ने, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पाजं तनक लिज्जे।

दसोंधी का कहना कि यदि तुम वरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरूअ ग्रेह मन रंजहु। किन गुन पंग राय मन गंजहु॥
जो सरसै वर हैं तुम रंचौ। [1]तौ अदिष्ट वरनौ कवि संचौ ॥
छं० ॥ ५१० ॥

अरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [2]प्रवीनं। भट्ट नयन सोहै रसलीनं ॥
दान पग्ग सरवंगे सूरौ। अनीवानि [3]अब्बंगै पूरौ॥छं०॥५११॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कह्यौ। कविन करौ मन मंद ॥
जै सरसै वर कछु हुए। तौ वरनौ जयचंद ॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहो चंद वरदाइ कहावहु। कनवज्जह न्रप देषन आवहु ॥
जौ सरसति [4]जानौ वर चाव। तौ अदिष्ट वरनौ नृप भाव ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रबंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ वरनों जैचंद को। तौ सरसें वर मोहि ॥
छंद प्रबंध कवित्त जति। कहि समझाउं तोहि ॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित। सुनहु चंद वरदाइ ॥
दिठि दिष्यौ वरनै सकल। अदिठ न वरन्यौ जाइ ॥ छं० ॥ ५१५॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद। गुनगहर सकल साजै सु इंद ॥
सिंघासन आसन सुभ साज। मानिक जटित बहु मोल भ्राज ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

---

(१) मो.-तौ अदिष्ट वरनहु नृप संचौ। (२) ए. प्रचीनं।
(३) मो.-सरवंगै। (४) ए. कृ. को.-जानू।

वासन्न सेत मधि पीति सोहि । ब्रन्नंत ताम कविराज मोहि ॥
मंझ्यौ किरीट बररूव सीस । उत्तंग मेर हर सिषर दीस ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बैठो सुभूप मुष दिसि कुबेर । रजि रुद्र थान रचि जानि मेर ॥
दाहिनै वांम भर भर बयट्ठ । सूरत्त दत्त गुन सकल दिट्ठ ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

सिर सेत छत्र मंड्यौ सु भूप । बहु देस रिद्धि बहु तास रूप ॥
सनमुष्ष बैठि बर विप्र भट्ट । इह चव सु विद्य कलताम घट्टि ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

तिन पच्छ बैठि गायन सु गेव । किन्नरह कंठ रस सकल भेव ॥
हिमदंड छत्र किय सेत पान । ठट्टौ सु पिट्ठ विस भूप जानि ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दुहु पिट्ठ साजि वर चँवर ढार । रजि रूप जानि अश्विनि कुमार॥
ठट्ठौ सु पन्नधर दच्छि थान । प्रतिबिंब रूप दुअ इंद जानि ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बैठे सु पिट्ठवर पासवान । बनि रूप रेह जित राज जान ॥
रत्तौ सु कीर मुष अग्र जान । भुज्जंत पक्क फल करक पान ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

थरि करह बाज ठट्ठौ समुष्ष । देयंत ताम तामो सुरूष्ष ॥
इहि विद्धि बयट्ठौ पंगराज । आसनह जीति जोगिंद साज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक ॥ जा सीसं चमरायते सित छतं, षं षिन्न इंदोलिता ॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कीटी तयं मौलिता ॥
सस्चे सस्च समस्त षिचि दहियं, सिंधु प्रयाते षलं ॥
कंठे हार रुलंति आनक समं, प्रथिराज हालाहलं ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन।

दूहा ॥ नील चंच अरु रत्त तन। कर करकटी भषंत ॥
जोइ जोइ अष्षै राज नृप। सोइ सोइ कीर कहंत ॥छं०॥ ५२५ ॥

कवित्त ॥ नीम चंच तन अरुन। पानि आरोहि राज सुक ॥
रुचि संपार परंम। चरन पिंगल सुभंत जुक ॥
कंठ मुकत गुन रतन। जटित ओपत आभूषन ॥
[1]रूर वारु कर नषनि। दष्षि भष्षित तन पूषन ॥
जिम जिम उचार अष्षत न्रपति। तिम तिम कीर करंत सुर ॥
भूलंत सुनत क्रत बेद बर। रस रसाल बानी सु फुर ॥
छं० ॥ ५२६ ॥

दूहा ॥ सहस छच बज्जन वहल। वहुल बंस विधि नंद ॥
एक सहस संषहधुनी। महल जानि जयचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

दसौंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो।

दूहा ॥ तब तिन कवियन उच्चरिय। अहो चंद वरदाइ ॥
[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ। बरनिरु हमहि सुनाइ ॥
छं० ॥ ५२८ ॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना।

पद्धरी ॥ राजिय सुसभा राजै सपंग। बिहु बांह पंति रंगह सुरंग ॥
सोभन्त सुरस सुर समय सार। हनि ह्रतअसुर दरबार भार ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

दष्षिनिय अंग रयसल कमंध। तिन अंग बीरचंदह सुबंध ॥
जहवह भांन जुगरान वीर। कासह नरिंद रविबंस धीर ॥
छं० ॥ ५३० ॥

---

(१) ए.-रूर चारु कर नषनि, कृ.-रूचिरु रनि पनि, मो. उरट चारु कर नषनि।
(२) ए. कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब"।

बरसिंघ राव बघेघल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर॥
परताप वीर तेजंप नाथ। रा राम रेन राहप्प पाथ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कट्ठी सु आस। करनाट भर काहप्प तास॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी मुवंद परमार राव॥
छं० ॥ ५३२ ॥

बीरंमराव नर पाल बीर। नरसिंघ कन्ह सम भुज गंभीर॥
सहदेव समह हरंसिघ बंक। मेहान इंद सद सार कंक॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पूरज्जरांव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परबत पहार पाहार सत्त॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सचसाल अवधि पाटन नंरिंद। साषुला हीर भुज फर कंविद॥
हन्नू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उट्ठ द्रुग सबर नाह॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप कृष्णराय सड्डन अरेर॥
श्री मकुंदराइ वीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज वाम वंक सेनी सधीर। आघात पात वज्जंग बीर॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनवीर धीर आवड्ड भ्राज॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्त्रप चंद्रसेन पांवार राव। न्त्रप भीमदेव आजान दांव॥
नरसिंघ सूर चालुक्क वीर। वर रुद्रसिंघ कंठी संधीर॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव॥
छं० ॥ ५३९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-श्रांकार, ए.-स्राकार।

अट्टह सुदेव सारंग सूर। वीरंभ सवन घाती समूर ॥
जैसिंघ कमध आजानि पांनि। पंमार भीम रण सिंघ थान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस। आसोक राइ साहन सुरेस ॥
चंदेल वीरभद्दह सवीर। सहदेव वंक भुज धज गँभीर ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

केहरी ब्रह्म चालुक्क वीर। हरिचंद तेज चहुआन नीर ॥
हरसिंघ राइ रजि पास वान। निसुरत्ति वीर ममरेजषान ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

इतमीस[1]मीर वंहबल मसंद। [1]आरासषान पीरोज वंद ॥
कंमोदषान जहान भार। जुग वलिय अमिय अल्लिय करार ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

महमुंद षान केलिय गंभीर। अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर ॥
सल्लेम साहि [2]इसमित्त षान। [3]आरोज साहि असवद्द षान ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

ढारंत चँवर जुग पच्छ भूप। हरि वीर रास सम वय सरूप ॥
ठट्ठौ सु दषिन कर मंचि राव। थट्टे मुकुंद पहु वाम थाव ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत। उर सुनत सत्त पत्तह [5]पिलंत ॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट। जुग जोर समुष कमधज्ज पट्ट ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

जुग पुरुष आय बिनतिय समान। पठ्ठए नाथ तिरहुत्त थाम ॥

दसोंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर। सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

---

(१) ए.-आरात। (२) ए. कृ. को.-इसमीर। (३) मो.-आरज्ज।
(४) कृ. ए.-सिलंत। (५) मो.-लिपंत।

कवि कमल विमल गुन अद्दरेस। अप्पियै अंषि निज वर नरेस॥
छं० ॥ ५४८॥

दूहा॥ * मंगल बुध गुरु सुक्र सवि। सकल सूर उड़दिट्ठ॥
आत पच धुअ जिम तपै। सुभि जयचंद बयट्ठ॥छं०॥ ५४६॥

नव रस सुनि हिठ अदिठरस। भाषा जंपि न्रपाल॥
सद्दह पत्त कुपत्त लिषि। गुन दरसी चयकाल॥ छं०॥ ५५०॥

कवि का एक कलश लिए हुई स्त्री को देख कर उसकी छबि वर्णन करना।

जान्यौ वर वरदाइयन। वर संचौ कविचंद॥
कंद्रप कितो कि और वर। लेत पीठ जैचंद॥ छं०॥ ५५१॥

चौपाई॥ दस दिस कवि संमुहौ उहाई। घट धरि बाल [1]कुरित्तन जाई॥
धरत सुधरि छाइं मुष [2]छाइया तिहि कविराज सु ओपम [2]पाइय॥
छं० ॥५५२॥

दूहा॥ वर उपजै विपरीति गति। रहत सहायक इंद॥
तत्त विरम्भि निवेस किय। [3]चित्तहि तत्तहि चंद॥छं०॥५५३॥

कवित्त॥ तहां सुदिष्षि कविचंद। चंद दह दह संजुत परि॥
पूरानन आनंद। जुद्ध मकरंद सुद्ध जुरि॥
म्रगा मीन गुन गनै। गुनह लज्जीत छिपाकर॥
तहां अपुब उप्पनौ। हीर चक्रवाक प्रभाकर॥
सज्जीव मदन बेली विहसि। बरकमोद सामोद घटि॥
संजोग भोग सम जोग गति। रति प्रमान मनमथ अनटि॥
छं०॥ ५५४॥

---

*यह दोहा मो. प्रति में इस छन्द पद्धरी के पहिले और दोहा छन्द ५१७ के बाद है।

(१) ए. कृ. को.-कुरित्तिन। (२) ए. कृ. को.-छाई पाई।

(३) ए. कृ. चित्तरि ततरि चंद।

कवि की विद्वत्ता का वर्णन।

दूहा ॥ भाषा घट नव रस पढ़त। वर पुच्छै कविराज ॥
संप्रति पंग नंरिंद कै। वर दरबार विराज ॥ छं० ॥ ५५५ ॥

भाष परिछा भाष छह। दस रस दुम्भर भाग ॥
वित्त कवित्त जु छंद लों। षग सम पिंगल नाग ॥छं०५५६ ॥

कवित्त ॥ भेद भाव गुन कला। सुनत आचिज कविंद घन ॥
नृपति वरन अनदिट्ठ। सभा सद विवह बचन घन ॥
छंद कवित पारस प्रचार। मुरधार नंदि सुर ॥
रस रसाल बानी [1]पुनंत। गय भज्जि उरह जुर ॥
दीरघ दरस्स कविचंद वर। सुनि नंरिंद कनवज्ज पति ॥
[2]अनि गुनिय कला गुन सष्यवै। सरसें वर धरि सरस मति ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

कविचन्द का दरबार में बुलाया जाना।

दूहा ॥ प्रभु बोलिय कवि मझ्झ ग्रह। दरसि पंग असथान ॥
मनुं भान चरन नव ग्रस परसि। नक बैठो सुरथान ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

राजा जैचन्द का ओज साज वर्णन।

कवित्त ॥ जिम सरद ससि व्यंब। तिम सु [3]महि छच विरज्जिय ॥
जिम सु भ्रम्म पव्वय। पविच [4]छोरनिधि जिम छज्जिय ॥
जग मंडिन जिम मुत्ति। कित्ति तानिय वितान तिम ॥
जिन सु सत्त [5]मय पुंज। सेत सुरतरु फुल्लिय तिम ॥
सित सहस पच विगसिय जिमसु। दुरद मत्त अलि सुम्मयौ ॥
अति तुंग सुधा रस राजग्रह। पिषत कव्वि द्रग भुल्लयौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनत। (२) ए. कृ.-अति।
(३) ए. कृ. को.-माछे। (४) ए. कृ. को.-छीर निधि। (५) मो.-मय

हेजम का अलकाव बोलना और कविचन्द का आशीर्वाद देना

दूहा ॥ हक्कान्यौ हेजम्म कवि। निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें बर संभारि करि। कवि दीनी आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति। जिम सु उड़पति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल। जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मयन। सकल गुण संग सील जिम ॥
वरन मध्य जिम उगति। चित्त इन्द्रिय जालह तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर। दारिम न्टप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उन्नित करिय। सुकविचन्द आसिष्ष दिय ॥
छं० ॥५६१॥

बचनिका ॥ साहि भार साहि विभ्भार। बलिय साहि कंध कुहार ॥
सवर साहि मान मरदान। निवर साहि मान भूमि वरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस। दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुक्कति राइ बाहन बरीस। विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दराबरी बैठक वर्णन।

कवित्त ॥ मंगल बुध गुरू सोम। सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
हत तप [1]धुतम नरिंद। पंग सोहीज मंडि जप ॥
सकल सूर बर सुभट। सुबर मंडिली विराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद। [2]सुभत सुरराज सुभाजै ॥
क्रंम वेन सम उच्चर्यौ। विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ षिटें सु बर। मध्य बीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥५६२॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं। मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै विराजै। तिनं देषि रंगं धनंपति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-घुतम। (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै।

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं। मनो भूमि रविक्रंज मिल चलहि तेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही। मनो आवरे बंधु धर नील माही॥
छं० ॥५६४॥

ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही। तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही॥
मनुं आरुही भान लगि लग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५॥

उठै छत्त पंगं उपम्मा समग्गं। मनो नौग्रहं मान तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं वरद्दाय वीरं। कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारीफ करना।

दूहा॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल। अमर सु आदर कौन॥
पुव नरेस परसंन दिट्ठि। सब जंपयौ प्रवीन॥ छं०॥ ५६७॥
चंद अग्ग प्रथिराज वर। हन्नौ फुनि फुनि एष॥
जिम जिम न्टप पुच्छै विरद। तिम तिम वढ़ै विसेष॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त॥ कोरि जोर दल प्रबल। अचल चल सुथिर थरथ्थर॥
नाग सु फनि फन सकुचि। कच्छ पुप्परिय परप्पर॥
चढ़त भान छावंत रेन। [1]गयनेव दसं दिस॥
दीपक ज्यौ वसि बात। आत पचं [2]आधारिस॥
कमधज्जराइ विजपाल सुअ। तो बर भूपति हय किसौ॥
बरदाइ चंद हैदेवि वर। जिसौ होइ अष्षै तिसौ॥ छं०॥५६९॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार।

प्रथम परसि संदेह। भयौ आनंद सबै जन॥
अरू गंगा जल न्हाय। पाप परहऱ्यौ ततच्छन॥

(१) ए. कृ. को. गयनेन दसंज्जिय।　　(२) ए. कृ. को.-आधारिय।

गयौ चदं दीवान। अनी बानी सु फुरंतौ ॥
सुफल हथ्थ सुष विरद। राय भिंथ्यौ सु तुरंतौ ॥
श्रुत सुनिय विरद पुच्छिय तुरत। संच पयंपहु भट्ट सुनि ॥
जिम जिम अचार ढिल्लिय न्त्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन ॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी ॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं॥
धरा अस्स दिगपाल धर धरनि षंडं। धरै छत्र सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहें सु पंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनें हेम परवत्त सें सव्व ढाहे। [2]जिनें एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

जसं जंपियं [3]सच्च सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं जाय तिरहूत पिंडं ॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विचारै। जिनैं उतर्‍यौ सेतवंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल दुअ बान वेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय वार षेध्यौ॥
तिनं दिन्न जुद्ध भिरै भूमि रुंडं। वरं तोरि तिल्लंग गोआल कंडं ॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिद्द वैरागरें सव्व हीरा ॥
जिने गज्जने सूर साहाव साही। तिने मोकल्यौ सेव निसूरत्ति भाहीं॥
छं० ॥ ५७५ ॥

वरं भुल्लि भष्षी षनं जोव रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं वंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां वंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै ॥
छं० ॥ ५७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दंड। [२] मो.-जिते। [३] ए. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को.-दछिन। [५] मो.-रिटवरं।

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्त्रपति रिपु कौ वयन। तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरह। को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
रतन वुंद वरषै न्त्रपति। हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न वुंद सु मग्ग तन। सिर पर छत्र दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*वरद्द दुवला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन। जंगलराव सु हद्द ॥
वन उजार पसु तन चरन। क्यों दूवरौ वरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन। आन फेरीत परद्धर ॥
तास जुद्ध मंडयौ। जास जानयौ सवर वर ॥
केइक तकि गहि पात। केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न। गए दस दिसनि भाजि [1]डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ। मान सवर वर मरदिया ॥
प्रथिराज षलन पड्डौ जु पर। सु यों दुव्वरौ वरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुव्वरौ। मुत्ति लभ्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुव्वरौ। करौ चंपे न कंठ कह ॥

(१) ए. कृ. को. कर।

* "बरद्द" शब्द के दो अर्थ होते हैं एक बरदाई दूसरा बैल। अब भी बैसवाड़े में बैल को बरधा, बरध या बधिया इत्यादि कहते हैं।

अग्ग न्याय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन ॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरी मीत मन ॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि ह हरदिया ॥
जंगर जुरारि उज्जर षर न। क्यों दुब्बरो बरद्दिया ॥ छं० ॥ ५८२ ॥

धुरै न लग्गी आरि। भारि लद्यौ न पिट्ठ पर ॥
गज्जवार गंमार। गही गट्ठी न नथ्थ कर ॥
भम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन रुत्तौ ॥
पंच धार ललंकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहों हरद्दिया ॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८३ ॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज वर ॥
धुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिट्ठपर ॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भाँवरि किम मंडै ॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै ॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरद्दिया ॥
प्रथिराज षलनि षद्यौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८४

प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन ॥
सोझंत्ते भर भीम। सीम सोधीत सकल बन ॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पचजु षद्दा ॥
ठट्ठा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लद्दा ॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरद्दिया ॥
प्रथिराज षलन षद्यौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं०॥५८५ ॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कबि बयन। नयन श्रुत बदन रत्त वर ॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि सास झर ॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह ॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह ॥

आदर सुभट्ट राजिंद किय, अंग ए डाइ वित्तारि कर ॥
मन मिलत मोहि संभरि धनिय। कही वत्त मुष निरद वर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य हैं महाराज आप को। आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है।

जिहि वरद चढ्ढि कै। गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्प संपेषि। हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन जोर। झोलि रष्पौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्परै। मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रह्मंड मंड मंडिय सकल। धवल कंध करता पुरस ॥
गरुअत्त विरद पहुपंग दिय। क्रपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं। कह्यौ चदं कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनी। सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं।

उनि मातुल मुहि तात कहि। नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अद्दरिय। तिम तिम दान च्ढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्गहन। जब ढिल्ली पुर कीन ॥
हम गुरजन, सब बत्त करि। बहु धन मंग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कमान सद्धौ सु इह। सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप। सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[१] मो.-मिले. न मुहि।

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव। तुअ तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस। तब लग्ग मेछ [1]इथ्थह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बंधि। संहर्‍यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामित्त रूप छत्ती कुलाह। सामंत सूर दुहु विधि दुवाह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज। कुल छच पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध। जिन करहु राव उन मिलन षेध॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिँदवान जेन लग्गीय धाय। उहि छिच कौन द्रिग विजै राइ ॥
मानिक्कराव दुअ बंस सुद्ध। रघुवंसराव जिमनि किन दुद्ध ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुकल्यौ तोहि दिष्षनि बरीति। राज सु जेम मंड्यौ प्रवीति ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जैचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद। येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान। भार भर थंभर जित्तौ ॥
कौंन समै इह वत्त। घत्त षेल्ली किम गोरी ॥
यादिन ही सुहि परम। परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि। राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तब कह्यौ चंद वचनह विवर। एह कथ्थ संमूल सुनि ॥ छं० ॥५९७॥

(१) ए. कृ. को.-हथ्थह। (२) मो.-संगानि। (३) ए. कृ. को.-तब कही चंद वरदाइ ने।

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना।

संवत तीस चिआर। विजय मंड्यौ सुपंग पह ॥
जीति देस सब अवनि। लीन करमथ्थ हिंदुसह ॥
[illegible]सि दच्छिन संपत्त। कोपि गोरी सहाव तब ॥
[illegible] बुद्धि वर अप्प। वोलि उमराव मीर सब ॥
तत्तार षान षुरसान षां। षां रुस्तम [1]कालन गनिय ॥
जेहान मीर मारूफ षां। वोलि मंत मंचह मनिय ॥ छं० ॥ ५९८ ॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ई करने का मंत्र करना।

गुज्झ महल साहाव। दीन सुरतान सपत्तौ ॥
मंडि मंत एकंत। वोलि उमरावन तत्तौ ॥
इह काफर वरजोर। जीति अवनीय अप्प किय ॥
तेज अनंत मति अनँत। सेन सज्जै भर वंकिय ॥
आए सु साज कंगुर करषि। करन सेव को देन कर ॥
वर जोर हिंदु सा दीन पहु। घटै न रंचि सु वुद्ध [2]नर ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा वड़ा जबरदस्त है।

कहिय षान तत्तार। साहि साहाव दीन सुनि ॥
विषम जोर वर हिंद। जीति पहुपंग अप्प फुनि ॥
मिले सेन सुरतान। [3]मलिक अनेक द्रव्य भर ॥
द्रव्य पानि पथ्थार। संकरि सब वस्य अप्प पर ॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुवर। आतम चरित [4]अनेक करि ॥
आवंत पंग साधर सयन। [5]लरि मनमथ्थ पिथाज अरि ॥
छं० ॥ ६०० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोवे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसलमान सरदार का भी है।

(२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को.-मिलक।

(४) ए. कृ. को.-अनंत। (५) ए. कृ. को.-जीरे मनमथ पिय थान लरि।

शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाव। अहो तत्तारषान सुनि ॥
षुरासान रुस्तमां। जमन मारुफ षान गुनि ॥
काल जमन जेहान। सुनौ बर बत्त चित्त तुम ॥
मंत सत्त सुद्धरौ। दीन नन हीन करौ क्रम ॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल ॥
हरि(१) रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस जालिय अप्प बल ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

दूहा ॥ सज्जि सेन (१)साहन(२)समुद। गज्जनवै सुरतान ॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस थन थान ॥ छं० ॥ ६०२ ॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास स्यासिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी ॥ मिलि सेन साहि आलम असंष। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि ॥
अमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

वर तुरिय तेज अग्गल उभ्भाव। उत्तंग अंग (३)जिम वेग वाव ॥
सजि लष्ष चढ़े गोरीस सेन। रज्जे सु बाज बज्जे सु गेन ॥ छं० ६०४ ॥
धज नेज झंड हल्ले अनंत। बहुरंग अंग लभ्भै न अंत ॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय नमान ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

गहरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संचरहि थान ॥
संपत्त सेन कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रमनेस ॥ छं० ६०६ ॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै विहाल ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुह। (३) ए. कृ. को.-तनि।

कवित्त ॥ कुंदन पुर वघेल। राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाव। सेन सज्जिय [1]वीरह तिन ॥
सहस उभै साहन। समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
वंधि नारि नग ढारि। रह्यौ निज सेन सज्जि वर ॥
आवंत सेन रुक्यौ सकल। भयौ जुद्ध हरि उग्ग मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यौ सकल। भयौ जुद्ध अद्भुत्त तिन ॥ छं० ६०८।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाव सायं। अगें गज्ज चालीस मत्ते महायं॥
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा। सयं सत्त सासद वादी सु चंगो ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्संच पंचं गजं वाज पूरं। महावीर वाजिच वज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं। कहै सूर रैसिंघ अप्पं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं टून छुट्टै सुभारं उभारं। सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क वज्जी भरं टून टूनं। चपे सिंघ न्रसिंघ हक्कं सजूनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी चंपे सिंघ रायं। परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं। भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कड्डि तत्तार कत्तार तिष्षं। भली मुच्छ भोहैं भई रत्ति अंषं ॥
करैं फौज अग्गै चल्यौ गज्जि गोरी। चवै दीन दीनं लषै झल्लि षोरी॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे। धुरं भ्रुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
झरं आवधं आवधं झाक बज्जै। बजै बीर वाजिच गोमेंन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा कार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं। उभै हार मन्नै नहीं आय अंतं॥

(१) ए.-वारह। (२) ए.-मोहं।

मिली दिठ्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय सायं षुलै पग्ग ऊनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करै दिठ्ठ तत्तार कम्मान मुठ्ठी। कसे बान गोरी महा दठ्ठ दिठ्ठी॥
लगे जर सीसंग फुट्टे परारं। हंसे भार संगी हयौ षान सारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पर्यो षान तत्तार बाजी विहालं॥
हयौ सिंघ कालन्न मीरं सनेजं। पर्यो राय रनसिंध रन अंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगो फौज हिंदू जुधं जीति मीरं। धर्यौ षान तत्तार भोरी सु तीरं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

मुस्लमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ परे हिंदु सय तीन धर। सत्त पंच पर मीर॥
गुर गुस्ताना नंचिया। बजि बाजिच गुहीर॥ छं० ॥ ६१९ ॥

संझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ माहाव॥
साज सज्जि चर्ल्यौ सु फुनि। जनु उलौ (१)दरियाव॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजिच निहाय॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस॥ छं० ॥ ६२२ ॥

---

(१) मो.-दधि आव।

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज । चढ़्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन । राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर । बोलि बघघेल्ल सु लष्षन ॥
लोहानौ आजानबाह । मिलयौ सु ततच्छिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध सम । चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुलिराव हम्मीर हर । मिलिय सेन दस सहस सर ॥छं०६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि । चढ़्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजिच बजि । सज्जि सयन [1]जुध साज ॥ छं०॥६२४॥

कुमक सेना का प्रबंध ।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडौस । दीन आयस प्रथिराजहु ॥
तुम पट्टपुर जाहु । [2]जहां तिथि मंचिय काजह ॥
लै आवहु कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्षर सूर । सज्जि आतुर सु जुभ्झ हर ॥
कहियौ सु वत्त साहाब सब । भंजि देस कनवज्ज इन ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि । आवहु आतुर षेत रिन ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंडे के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी ।

दूहा ॥ पठय चंद पट्टपुरह । चढ़्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बहिय अवधि न्रप । सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
जाइ चंद पट्टपुरह । कहिय षबर कैमास ॥
चढ्यौ सु अप्पन सुनत हीं । आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

---

(१) ए.-सुध ।　　(२) ए. कृ. को.-जहां थिति मांची कैमासह ।

सारुंडै चहुआन पहु। संपत्तौ बरबीर ॥
सुनिय बत्त [1]सुरताान की। जोजन सित्तह [2]तीर॥ छं० ॥ ६२८ ॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं। बजे बीर बाजिच [3]आयास गाजं॥
धुअं सीस सामंत सूरं सुधारे। भरं बंधियं राग रज्जे करारे॥
छं० ॥ ६२९ ॥
तुरी सद्द उत्तंग षुंदै धरन्नी। मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरन्नी॥
पुरं जाइ संपत्त सो संकराई। सबें उत्तरे बाग मध्ये सु भाई॥
छं० ॥ ६३० ॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय।

दूहा ॥ चवै चंड पुंडीर तब। अहो राज चहुआन॥
निसा जुड सज्जिय समय। भंजिय सेन परान॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करके आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना।

कवित्त ॥ मानि मंत चहुआन। मंत पुंडीर चंद कहि॥
घटिय सत्त दिन सेष। राज सज्जिय सु सेन सह॥
चल्यौ राज प्रथिराज। नद्द नीसान बीर सुर॥
कीन दान तं हान। सूर सामंत सब्ब भर॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय। निसा अड्ड पत्ते सु पुर॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति। चढ़ि चौकी गोरी गहर ॥छं०॥६३२॥
दूहा ॥ चौकी चढ़ि षुरसान षां। सहस सत्ति हय रज्जि॥
उभय सत्त गज मद गहर। गुरु सनाह हय रज्जि॥ छं० ॥ ६३३ ॥
घोटक ॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं। पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि। मनों बन कूटहि कट्ठि कवारि॥
छं० ॥ ६३४ ॥

(१) ए. कृ. को.- चहुआन। (२) मो.-नीर।
(३) ए. कृ.-अकास। (४) मो.-चंपय।

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसलमानी सेना का परास्त होना।

उलक्किय चंपिय छूर सुधीर। मद्धा भर सामँत विभ्रम वीर॥
मद्धा पर चंपिय चौकिय काल। ठिलै भर भग्गिय मिच्छ बिहाल॥
छं०॥ ६३५॥

कपंकव सद्द सु मच्चि करार। सुन्यौ सुरतान भजे दल भार॥
वजे मुष मारि चँपे चहुआन। लरे मक्कि अप्पह मेछ अपानं॥
छं०॥ ६३६॥

छवक्कहि धक्कहि सेलहि संग। पटा भर झार विडारिय अंग॥
वहै किरमाल सुचाल सुभेद। मनों सुभ सार करव्वत छेदि॥
छं०॥ ६३७॥

परे सिर नंचत उट्ठक मंध। करे रिनषंड सु धार विसंद॥
घलक्कत स्रोन नदी जिम घाल। परे गज बाल भरे रन ताल॥
छं०॥ ६३८॥

करप्पत केस सु एकहि एक। परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक॥
तरप्फत उट्ठन लग्गत कंठ। सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि॥
छं०॥ ६३९॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति। मनों मतवार लरै रस मीत॥
किनक्कहि बाजिय बीर सुभार। [1]फिरें गज भीर करंत चिक्कार॥
छं०॥ ६४०॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुंडीर। हयौ हिय सेल भगी भर भीर॥
भग्यौ रन सेन सहाव सचस्सि। निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि॥
छं०॥ ६४१।

रह्यौ पतिसाह इकल्लो वीर। भयो जिम मीन गयै सर तीर॥
धरी गर सिंगनि चंद पुंडीर। सयो पतिसाह सु बंधिय बीर॥
छं०॥ ६४२॥

(१) ए. कृ. को.-परै। (२) ए. कृ. को.-अवदिस्स।

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा ॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इक्कल्लौ गह्यि सार ॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधह्यि दिय डारि ॥ छं० ॥ ६४३ ॥
भगे सेन साहाब रन। उग्गि सूर सुविहान ॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान ॥ छं० ॥ ६४४ ॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [1]दरपुर कीन मुकाम ॥
लुट्टि रिद्धि चिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम ॥ छं० ॥ ६४५ ॥

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अट्ठ सहस हय सब्ब ॥
घत्ति सुघासन पट्ठ घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब ॥ छं० ॥ ६४६ ॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवै गंजि पिय। जस लिन्नौ षल मारि ॥
सरवर सक संभरि धनी। कोइ न मंडी रारि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक सूर संभरि धनी। कितक देस [2]दल बंधि ॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि न्रप बूझयौ चंद ॥ छं० ॥ ६४८ ॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

(१) दरपुर (या) हरपुर। (२) ए. कृ. को.-बल।

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस। अंदेस कहत करि ॥
कितक देस बल बंधि। [1]राव रावत्त छत्रधर ॥
कितक कोस मेंगल मदंध। तोषार भार भर ॥
कितइक गहि करिवार। कलह विदारि वीर झर ॥
कित इक मौज विदरन वहत। अति पर आगम जानियै ॥
उग्गौ न अरक तित्तह लगै। तिमिर तितें बल मानियै ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सूर जिसौ गयनह उवै। दल बल मारन आस ॥
जब लग अरि कर उट्ठवै। तव लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन। हनत गज कुंभ झार पग ॥
विय विहंड होइ षंड। परत धर रत्त धार जग ॥
दल वल धरै न आस। तेज आजानबाह वर ॥
लपत नाग सर पार। तार [2]कोवंड तजै कर ॥
मत्ते दुरह रद सह वर। पारि झारि मध्यै धरनि ॥
विसगा विकार उप्पारि पटु। मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना।

दूहा ॥ विहसत कवि बुल्ल्यौ वयन। इह लच्छन छिति है न ॥
सूत्र सु मूरति लच्छिनह। को दिपवों पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
मुकट वंध सब भूप हैं। सब लच्छिन संजुत्त ॥
कौन वरन उनहार किहि। कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु वल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना।

कवित्त ॥ वत्तीसह लच्छिनह। बरस छत्तीस मास छह ॥
इस दुज्जन संग्रहत। राह जिस चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को.-राह।　　(२) ए. कृ. को -कोदंड।

एक छुटहि मद्दिदान । एक छुट्टहिति दंड भर ॥
एक गहहि गिर कंद । एक अनुसरहि चरन परि ॥
चहुआन चतुर चावदिसहि । हिंदवान सब हथ्थ जिहि ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया । प्रथीराज उनहारि इहि ॥ छं०॥६५४॥

इसौ राज प्रथिराज । जिसौ गोकुल मद्धि कन्हह ॥
इसौ राज प्रथिराज । जिसौ पथ्थर अहि वन्नह ॥
इसौ राज प्रथिराज । जिसौ अहँकारिय रावन ॥
इसौ राज प्रथिराज । राम रावन संतावन ॥
बरस तीस छंद्द अग्गरौ । लच्छिन सब संजुत्त गनि ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । प्रथीराज उनहारि [1]इनि ॥ छं०॥६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज । नरेस अंदेस हुअ वर ॥
दंग दहन जोरन जरंत । परचंत अंत पर ॥
स्रुत्ति अरुन मुष अरुन । नेन आरत्त पत्त सम ॥
पानि मींडि दवि अधर । दंत दब्बंत तेज तम ॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन । छित्ति अछिति षची कवन ॥
चल दल्ल समान रसना चपल । विफल बाद मंडौ मवन ॥छं०॥६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा ॥ देषि थवाइत थिर नयन । करि कनवज्ज नरिंद ॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक थह दोइ मयंद ॥ छं० ॥ ६५७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि नयन रा पंग । दंग चहुआन महा भर ॥
अंकुरि नयन विसाल । भाल झारंत रंच उर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-इहि ।

दुल्ल यार कंठीर। [1]पल ग आकज्ज करत तमि ॥
वर बाजी तमग्ग। मत्त मातंग रोस [2]जजि ॥
कामधज्जराज फिरि चंद कहु। कहत वत्त संभरधनिय ॥
वर वर कवित्त कवि उच्चरिय। अव सुकित्ति कथ्यौ घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं।

अति गँभीर पहु पंग। मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज छग्गरह। पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि वेंन। वालि वंदन वरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै। दिष्ट गोचर तत लाइय ॥
संभरै जंम देषै सुभट। अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम चित्त करि। क्यौं मुझ्झहि नाहीं [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है।

दूहा ॥ मत मंती लहु मंत कहि। नीतें नीति वढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै। तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया।

कवित ॥ चहुआना कुल रीति। भ्रम्म जानन सोमी वर ॥
वर सोमेसर सीस। तिलक कढ्ढ च अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त। राज ढिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान। राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-षलन। (२) ए. कृ. को.-जिमि। (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह।
(४) ए. कृ. को.- भिलत। (५) ए. कृ. को.-लोइ।

तिन्नेंति बीर तिथ्थह गयौ। रहसि फेरि विष पत्त दिय ॥
जे सुरिय न्रपति कविचंद [1]कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना का मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुकारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सब्बारै ॥
मैं बल हकि साहिब्ब। सेन खग्गा षुरसानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोषै तुरकानी ॥
मो सरन रहन हिंदू तुरक। जग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
बिग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्ग[2]ते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर बर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहुपंग जानि चहुआन अरि। बसि परि सकै न मुक्कियै ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छौ पहुपंगने। तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-सुनि।

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान । बोलै सु छंद पाधरी मान ॥
संभरि सु बीर सुनि तत्त राज । नीतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नीतिय सु लहिय लद्धो सु राज । धन ध्रम्म कित्ति तिहिं तेज साज ॥
जीवन सु नीति न्रप जमिन पीन । बड़ मरन बीर कुल भ्रंमहीन ॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब । राज स्तू जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि । बर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥

कट्टन कलंक ससि मंडि जग्ग । गज्जरे कुष्ट बर बीर अंग ॥
रघुराइ जग्य मंडे प्रमान । काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

इच्छिये इच्छ गुर मंडि बीर । नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ विचारि । कुब्बेर बरषि सोव्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥

मद दान कलहि षोडस्स होइ । राजस्तू जग्य मंडै न कोइ ॥
सुन्नै सरूप पँगु लभ्भ कीय । देवरह ध्रम्म बड़ बंध चीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥

राजस्तू जग्य को करन भाय । नन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन । हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

---

*यहां से मो.-प्रति में पाठ नहीं है आवांतर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

संकलित नग्ग तिहि संग च्यार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता पच्छ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन वेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि अलेह। तारक गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान वेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि वेदी रवंन। डाभाग्र रहि न षाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कीरत्ति भूप। दस सहस नदी चल्लाय नूप ॥
तक्कि सक्किय न झेल आहुत्ति वन्हि। तजि कुंड गइय ब्रह्मा सरन्नि॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव जब्ब। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तब्ब ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न अंस वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज पंड। पनवार अप्प श्री कृष्ण मंडि ॥
गुहरिय तब्ब इह चंद भट्ट। जैचंद राइ सों विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर होइ कारन कहु कौन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्पहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

*साभ्रम्म होइ जोगिन पुरेस। आमंत निरषि संची नरेस ॥
नीतह सु अंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति विष्षरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अघ इट्ट जान। कट्टै जु अड्ड दिन घरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइं मुक्कियै अंग। रष्षियै भ्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

---

* यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

त्रिन राजनीति ग्रह श्री प्रसङ्ग । घट घटहि नीर छिन गलति सभङ्ग॥
बिन राजनीति दुति तजिय जोन्ह । सोव्रन्न प्रतिम मंडियै बैंन ॥
छं० ॥ ६८१ ॥

इह सुनिय बैंन पहुपंग बीर । मुष तत्त मुष्ष कलह सरीर ॥
न्त्रिप कलह साउ जेही जनाय । कालंत कहिय काल किति्त गाय ॥
छं० ॥ ६८२ ॥

घाटंक निमुष घटि कला जाइ । आनौ सुकाल छल हीन ताय ॥
रत गुन अरत्त रत्ते न मोह । उप्पंम चंद जंपै सद्रोह ॥छं०॥६८३॥
रँग रंग गत्त मज्जीठ मन्न । कस्सूँभ रंग रँग मोह पन्न ॥
बर बिरत श्रोन लच्छिन प्रमत्त । नव नवी बाम इच्छा रमत्त ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

'सातुक्क सक्कहूं हित वढंत । आतंम मोह माया चढ़ंत ॥
दिष्यौ ज मग्ग चिंता सरंत । संसार कूप रस में परंत ॥
छं० ॥ ६८५ ॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ ।

दूहा ॥ सत सुवत्त कविचंद सुष । तव पुच्छिय इह वत्त ॥
हों पुच्छौ चाहूं सुमति । सो जंपौ कवि तत्त ॥ छं० ॥ ६८६ ॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अविवाहिता लौंडियां ला रही हैं ।

जे त्रिय पुरिष रस परस बिन । उठिगराइ सु निसान ॥
धवलग्रह्व संपन्न कहि । भट्टहिं अप्पन पान ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना ।

मह्ल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुअ । यथों ब्रन्नै बर कव्वि ॥
सरसें बुधि ब्रन्नन कऱ्यौ । सुष दिष्षे नन रव्वि ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

'(१) ए. कृ. को. सक्क हितहि वढंत ।

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

कछुक सयन नयनह करिय। कछु किय वयन बषान॥
कछु इक लछिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि॥छं०॥६८९॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कह अथ्थि सु हथ्थ किय। जे राजन ग्रह अच्छि॥
ते सुंदरि सब एक समं। चली सुगंधनि कच्छि॥ छं०॥ ६९०॥
षोड़स बरस समुच ग्रिह। ले सब दासि सु जानि॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छिरिय समान॥ छं०॥६९१॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं॥ छं०॥ ६९२॥
सुधा समान सथ्थही। सुगंध हथ्थ हथ्थही॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई॥ छं०॥ ३९३॥
बरन्न रत्त श्रीर जे। कसीस कासमीर जे॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए॥ छं०॥ ६९४॥
सु वंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै॥ छं०॥ ६९५॥
नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं॥
चरन्न हंस सद्दही। उपम्म कब्बि बद्दही॥ छं०॥ ३९६॥
सुनंत होड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई॥ छं०॥ ६९७॥
सुरंग कुंकुमं भरी। षराद काम उत्तरी॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम षंभ आलसे॥ छं०॥ ६९८॥
नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के॥
लवन्न अंग गुंजही। सुगंध गंध पुंजही॥ छं०॥ ६९९॥

दिपंत डोर कंकनं। कटि प्रमान रंकलं ॥
टिके न दिठ्ठ लंकयौ। विलोकि अष्पि अंकयौ ॥ छं० ॥ ७०० ॥
उतंग तुंग तामयौ। कि भ्रम्म लोभ कामयौ ॥
सु रोमराजि दिठ्ठयौ। हलंत बेनि पिठ्ठयौ ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
सु चंपि चंद गाढयौ। विपास काम चाढ़यौ ॥
जुअन्न हीय सोभई। सु सिद्ध मैंन लोभई ॥ छं० ॥ ७०२ ॥
ग्रहन्न रंग चालई। सु लज्जि लंक हालई ॥
उठंत कुच्च कंचुअं। कि तंबु काम रच्चयं ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
बजे प्रमान सज्जनं। सुमेर अब्ब भंजनं ॥
जु पोत पुंज सोभयौ। सु चित्त काम लोभयौ ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
सु जित्ति राहु थानयौ। सु चंद बैंठि मानयौ ॥
जराइ चौकि कंठयौ। उपम्म कब्बि तंठयौ ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
ग्रहं जु इंद आइयं। चरन्न चंद साहियं ॥
वनित्त सब्ब जंपयौ। सुराहु थान अप्पयौ ॥ छं० ॥ ७०६ ॥
चिबुक्क चारु सोभयौ। उपम्म कब्बि मोहयौ ॥
सु बाल अंग पत्तयौ। सु कंज मुक्कि जत्तयौं ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
सुरत्त अद्ध [1]रत्तयौ। लहै न ओप अंतयौ ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ। प्रबाल रत्त मोहयौ ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
सुधा समान मुष्पही। दसन्न दुत्ति रुप्पही ॥
सु सद्द बद्द पंचमं। कलिन्न कंठतं कमं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
सुनी सु कव्वि राजई। उपम्म कब्बि साजई ॥
ससंक सारगं हरी। प्रगट्ट काम मंजरी ॥ छं० ॥ ७१० ॥
धनुक्क भौंह अंकुरे। मनों नयन्न बंकुरे ॥
श्रवन्न मुत्ति ताल जे। अलक्क बंक आलुजे ॥ छं० ॥ ७११ ॥
सबद्द सोभ जो घुलैं। रहंत लज्जि कोकिलै ॥
अनेक हन्न जो कहै। तौ जम्म अंत ना लहै ॥ छं० ॥ ७१२ ॥

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौं।

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरयन वेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय जुथ्थ पर ॥
दिष्षि न्रिपति प्रथिराज। दासि आरोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। भकुचि गुर पंच मझि घटु ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरसंत दिस ॥
उस्ससे अंग उभ्भरि अरषि। परसपर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ बहुआनह दासी सिर कंपिय। पुर रठ्ठौर रही दिसि नंषिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं पंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कवि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह॥
कविवर सथ्थ प्रथीन्रप आयौ। सो लछ्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर गुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। षटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक्क चवै क्रत बढ़न। एक षल नथ्थ जानि थिर ॥
इक्क कहै प्रथिराज। इक्क जंपय षवास बर ॥

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-भूमह।

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ। कहत दीवान अज्ज भर॥
कढ़िया [2]विकट केहरि कहर। जहर भार अंगय मनह॥
संग्रहौं आय रिपु दुष्ट ग्रह। समय सह रा पंग कह॥छं०॥७१६॥

दूहा॥ भै चकि भूप अनूप सह। पुरष जु कहि प्रथिराज॥
सुमति भट्ट [3]सथ्थह अछै। जिहि करंत तिय लाज॥ छं०॥ ७१७॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना।

अरिल्ल॥ करि बल कलह स मंची मार्यौ। नहि चहुआन सरंन विचार्यौ॥
सेन सुवर कहि कवि समुझाई। अब तूं कलह करन इहां आई॥
छं०॥ ७१८॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना।

समझि दासि सिर वर तिन ढंक्यौ। कर पल्लव तिन द्रग वर अंक्यौ॥
कव रस सवै सभा कमधज्जी। भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी॥
छं०॥ ७१९॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन।

कवित्त॥ वर अद्भुत कमधज्ज। हास चहुआन उपन्नौ॥
करुना दिसि संभरी। चंद वर रुद्र दिपन्नौ॥
वीभछ वीर कुमार। बीर वर सुभट विराजै॥
गोष बाल भंषतह। द्रिगन सिंगार सु राजै॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि वर। लोहालंगरि बीर कौ॥
मंगाइ पान पहुपंग वर। भय नव रस नव सीर कौ॥
छं०॥ ७२०॥

दूहा॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि। सु विधि चिंति स्वामित्त॥
बहुरि सु जिम तिम ही कियौ। [1]लवन विचारिय हित्त॥छं०॥७२१॥

---

(१) मो.-रासिंघ। (२) मो.-निकट। (३) ए.कृ. को.-अथ्थह।
(४) ए. कृ. को. सिंगनि गुन। (१) ए. कृ. को.-नवन।

एक कहै बैठै सुभट। इनह सथ्थ प्रथिराज ॥
ए न्रप जीवन एक है। तिनहि करत चिय लाज ॥ छं० ॥ ७२२ ॥

जैचन्द का कवि को पान देकर बिदा करना।

अप्पि पान सनमान करि। नहि रष्यौ कवि गोय ॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ। प्रात समप्पौं सोय ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय।

हक्कारयौ रावन न्रपति। कै कै मुष्कि सुवास ॥
पच्छिम दिस्सि जैचंद पुर। तिहि रष्यौति अवास ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना।

आयस रावन सथ्थ चलि। अयुत एक भट सथ्थ ॥
अग्ग राह सो संचरै। मेर उचावहि बथ्थ ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

कवित्त ॥ पच्छिम दिसि पुर चंद। सु कवि सौ न्रपति सपत्तौ ॥
रावन सथ्थ समथ्थ। वचन सो कवि रस रत्तौ ॥
धवल मझ्झ सपन्न। कलस कुंदनह वज्र दुति ॥
जठित षंभ जगमगहि। कनक वासन विचिच भति ॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति। मानिक मध्य विविद्ध भति ॥
आसनह पट्ट बहु मोल विधि। मनु मनि भूमि कि संझ क्रति ॥
छं० ॥ ७२६ ॥

दूहा ॥ डेरा सु कवि विरंम तुमं। करि कवि लषौ चरित्त ॥
राजनीति रज गति चरित। चित गनि कहौ [1]सुचित ॥
छं० ॥ ७२७ ॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना।

(१) ए. कृ को.-चरित्त।

डेरा कराइ रावन चल्यौ। थान थान तिन ठाहि॥
सुप्प सुषासन आरुहै। तहां पंग न्रप आहि॥ छं० ७२८॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना।

कवित्त॥ बोलि लियौ सब सथ्थ। तथ्थ प्रथिराज [२]सुअत्त॥
सलिता जेम समुद्द। मुद्ध पति मिलन सपत्त॥
चामर छत्र रपत्त। लियै सामंत सपत्ते॥
रति सुभ्भौ राजान। मद्धि ग्रह पति रवि रत्ते॥
आए सु सुहर सब चंदपुर। देषि अनूपम पंति तथ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर। आय सपत्ते सब्ब सथ॥ छं०॥ ७२९॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना।

दूहा॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब। भित सामंत रु सूर॥
हय हयसाला बंधि गै। सुभि राजन दर नूर॥ छं०॥ ७३०॥

अरिल्ल॥ मंदिर बंटि दिए सब भूपन। आप रहै निज ग्रेह अनूपन॥
हीर हिरंनन की दुति पंडिय। तापर लाल परग्गहि मंडिय॥
छं०॥ ७३१॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना।

दिय डेरा सामंत समानह। फिरि आवास सुवास सबानह॥
दर रष्ये दरबार सुजानह। बिन आयस न्रिप रुक्कि परानह॥
छं०॥ ७३२॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर मिजवानी भेजवाना।

दूहा॥ सभा विसरजी पंग पहु। गय मधि साल विचित्र॥
तहां सुषासन इंद्र सम। तिष्ठ सुमंचिय मंच॥ छं०॥ ७३३॥

१ (२) ए. कृ. को.-सुअप्पं।

कवित्त ॥ तब राजन जैचंद । बोलि सोमिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ । मुक्कंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस । जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह । सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर । कट्ठ कपूर सुगंध सह ॥
आदर अनंत उपचार वर । करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३४॥

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको बिदा करना ।

तब आयस जैचंद । मंनि सो मिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ । मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि । लिए उपचार सार सब ॥
गये कव्वि सुस्थान । रुके दर सथ्थ सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार न्टप । भय पवास संबोलि सह ॥
धरि वस्त विबह अग्गै सु कवि । विविध विवरि वर लष्ष लहु ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है ।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं । किय विद्य सु विद्यह जीति जियं॥
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं । लषि नीति सु कित्ति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥

रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती । महनूर अदब्ब न जाइ मती ॥
कवि ध्रत्त सरूप सु भूप वरं । तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चित चक्रित मंचि मुकंद गुरं । भए देषि बिमन्न अहन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही । चिचसाल सुधूपह बोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

सब पुच्छिय कब्बि चरित्त कला। कहि मंचिय [1]मोसहु वार न ला ॥
कहै मंचिय विप्र सु राज एनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै
छं० ॥ ७३९ ॥
रज रीति अनूप अदब्ब लही। छित देपि अनूप न जाय कही ॥
छित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं ॥
छं० ॥ ७४० ॥
कवि सथ्थ जु छितह तेज नवं। भर पंग निरप्पिय नैन सवं ॥
...　....　।　...　....　॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा ॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह काय चित्त ॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्य सु ऋत्त ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई ॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह ॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहचरि मंत सुमंतिय ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा ॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ वीर वरदाई ॥
तिहि नव रस भाप छ भनियं। पठाइयं [2]अस्सनं तथ्यं ॥छं०।७४४॥
तिहि संपि बोलि सुथानं। चित्तनि चित्त केसरी समुपं ॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं ॥ छं० ॥ ७४५ ॥
दूहा ॥ पंगराइ वर वीर वर। सेंन अप्पि सहलीन ॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन ॥छं०॥७४६॥
पद्धरी ॥ चौवार स्याम वर पंग ग्रेह। ग्रिह मद्धि रतन कै मद्धि केह ॥
षोड़स वरष्प अप्रपत्त बाल। [3]दिष्षियै पंग भामिनि विसाल ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

(१) मो.-मां मति। (२) मो.-तये। (३) ए. कृ. को.-दिष्षी सु।

दिषि हरन कत्ति करवत्त काम। मनों मीन मीन विश्राम ताम ॥
पदमिनिय हंस चित्तनिय वाल। सोभै सुपंग ग्रिह मुरु विसाल॥
छं० ॥ ७४८ ॥

पदमिनी कुटिल केसह सुदेस। अस्तनह चक्र वक्रह सुनेस ॥
बरगंध पदम सुर हंस चाल। जन जीभ रत्त म्रिग अंकि साल ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पदमिनी [1]हरै पहुपंग मन्न ॥
आसीस भट्ट बोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार ॥
छं० ॥ ७५० ॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व कथा।

कवित्त*॥ सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या ॥
तरवर तुंग कैलास। साष संग्रहि कर सत्या ॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक ॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक ॥
वाचिष्ट रिष्षि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्थि विवाह किय ॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय॥ छं० ॥ ७५१ ॥

अरिल्ल ॥ पंग हुकम अरुहान जुन्हाई। भट्ट न्रपति चहुआन सुनाई ॥
रहि सि चीय चित दै बहु बड्डै। [2]जनों किरन कल पचम चड्डै ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

दासियों की शोभा वर्णन।

सुरिल्ल ॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं ॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन भोर परै ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो.-प्रति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चढ़ै।

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंबर ॥
सहस अद्व नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
म्रिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा पंगी ॥
मुक्कि गंध काकीन । सेत बंधह भारंगी ॥
दारिम्म विजोरी द्रष्य वर । विमल मद्द मोदक भरन ॥
अरु गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन वेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

मझ्झ हिय सुलष्य सुबुद्धि । लषि नेंन लपन सु बुद्धि ॥
[2]क्रंमारि माला मुष्य । सम हंस गोरिय रुष्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

वर वीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । वहु सषिय वोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥

जुन्हाइ जंपिय तत्र । पति दिलिय आयौ कत्र ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्य । [4]सम जाहु सषिसम सथ्य ॥ छं० ॥ ७५८ ॥

मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रूप पवित्र ॥
सें तीन वानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥

रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जट्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रून ॥ छं० ॥ ७६० ॥

तंमोलि चौसट्ठि पान । द्वै सहस हेम जुतान ॥
हिम हंस एक अनूप । जस जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥

मानिक्क जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि विन रेह । वर हद्द मुत्ति जलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥

मनि जटित विवह विराज । वर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुत्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥

वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संष । वहु रूप राजित अंष ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

---

(१) ए.-ढुंमर ।　(२) ए. कृ. को. -क्रम्मारि ।
(३) ए. कृ. को.- थह ।　(४) ए. कृ को.-लै ।

अनि वस्त विवह विभंति। गनि जाति कौंन गिनंत॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६५ ॥

दूहा॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय। विवह वस्त लिय सब्ब॥
सो निज स्वामिनि अंग सुनि। क्रमिय सु अथ्यह कब्ब॥छं०॥७६६॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन।

लघुनराज॥ रजंत बान सा सषी। द्रगंत बानता तिषी॥
सिंगारि साज सब्बयौ। दिषै छरीव गब्बयौ॥ छं० ॥ ७६७ ॥
सु गोंपि वास रासयं। तमोर भष्पि आसयं॥
वदन्न रूव रज्जयौ। सरद्द [1]विंव लज्जयौ॥ छं० ॥ ७६८ ॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं। विराजि काम नेनियं॥
सुभाल कोर वासनं। उही सुमुच्छ भासनं॥ छं० ॥ ७६९ ॥
चाटंक सोभि अमरं। तड़ित्त दुत्ति संमरं॥
[2]खंत कढ्ढि मेषरं। चकोर साव से सुरं॥ छं० ॥ ७७० ॥
सुरंस हंस हंस ग्यौ। समूह साव रंसयौ॥
सुरं समथ्थ कामिनं। समोहि मुट्ट वामिनं॥ छं० ॥ ७७१ ॥
वरष्प अट्ठ अट्ठयं। सवंक कंपि तट्ठयं॥
रुलंत हीय हारयं। समुट्ठि काम कारयं॥ छं० ॥ ७७२ ॥
विचित्र हंस कामिनी। मयंद मत्त गामिनी॥
सषी सुबीय सष्पयं। क्रमंत अंग पष्पयं॥ छं० ॥ ७७३ ॥
प्रवीन बीन वद्दनं। सुरन्न षद्ध अद्धनं॥ ॥
विचित्र काम जं कला। कटाषि चाल अष्पिला॥ छं० ॥७७४॥
विसाल वैन चातुरी। मनो सु मोहिनीं जुरी॥
सु सामं दान भेदयौ। कुसल्ल दंड षेदयौ॥ छं० ॥ ७७५ ॥
कला सु अट्ठ अट्ठयौ। सुभेव भाव गट्ठयौ॥
सभाव चन्न सोभिलं। बदंत काम कोकिलं॥ छं० ॥ ७७६ ॥

(१) मो.-रूप। (२) मो. रचंति।

चलों सु सब्ब संजुरी। मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं बरं। सरोहि कै हयं बरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं। गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं। सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कव्वि थानयं। दरं सु रष्षि मानयं ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत सोवंत[1]। फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार। धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संझ समय तब ब्रह्म। देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि। रहे दानव ललचाइय ॥
नष सिष मानहु तिहि सम। रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कमधज पठय। कलन सु छल पिथ्थह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ सतु दासी न्रप थान सपत्ती। नूपर सद कवियान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे। जूथ बजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना।

गाथा ॥ सषि दरबार सपन्नी। आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं। नइबेदयं तथ्थ सब्बायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥
चौपाई ॥ बोलिय मझ्झ सु कव्विय बालह। तब सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मझ्झ स बुद्धिय। आदर विवह वानि कवि किद्धिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कवि को पालागी कहना और कवि का आशीर्वाद देना।

---

(१) को.-सोवत्त।

विवह विचित्त धरी मुष अंवह। कही असीस जुन्हाइय कव्वह ॥
तुम त्रिकाल दरसी बुधि पाइय। बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय॥
छं० ॥ ७८४ ॥

तुम चहुआन सु भट्ट समत्तिय। अगम सुमग गत लहौ सु गत्तिय॥
मंगिय विदा सु कव्वि प्रसन्निय। देषि चरित रजगत्ति सु[1] मन्निय॥
छं० ॥ ७८५ ॥

दासी का रावर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय। देषि चरित अचिज्ज सु मुन्निय॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह। पयलग्गी विधि कही विनानह॥
छं० ॥ ७८६ ॥

गाथा ॥ कहि आसीस सु कव्वी। सुप्रसन्नों दिष्टतो भासं ॥
[2]तो तन चिंता भंगो। कथ्थि आसीस केलि कव्वीसं॥ छं॥ ७८७ ॥
रामा रज गति [3]लद्धी। आदर अदब नीति अनभूतं ॥
कवि यह अथ्यह राजं। संपिष्षे य कह कहंनाई॥ छं०॥ ७८८॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई। दिय निज कम्म सव्व सपिएनं ॥
निज हिय चिंता ठानी। संपन्नी धवल मझ्झनं॥ छं०॥ ७८९॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा ॥ तहां सु सूर सामंत मिलि। मधि [4]नायक कवि चंद॥
प्रथीराज सिंघासनह। [5]जनु परिपूरन इंद ॥ छं०॥ ७९० ॥
अहो चंद इह दंद भलि। हंज दरसन किय गंग॥
मन उछाह पुनि मुझ्झ भयो। कछु बरनन करि रंग ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कही असीस केलि कव्वीस"।
(३) मो.-रिद्धी।
(४) ए. कृ. को.-ताकिप। (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद।

कविचन्द का गंगाजी की स्तुति पढ़ना।

कहै कव्वि न्टप राज सुनि। मो मुष रसना एक ॥
इह सु गंग सुर मुनि जिते। [1]लहहि न पार अनेक। छं० ॥ ७९२॥

भुजंगी ॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते। गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मे तरंगे। बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे॥
छं० ॥ ७९३ ॥

चतूरान पानं व्रह्मंडं कमंडं। त्रयीकाल संभ्या रिषी दोष षंडं॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं। तुही एक तें चंद चकोर राधं॥
छं० ॥ ७९४ ॥

तुमं सेव भागीरथं जानि कीनी। सवें मेलि जाचानि तू संग दीनी॥
हुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं। धसी प्रब्बतं पेलि नाना प्रकारं॥
छं० ॥ ७९५ ॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं। मनो एक मुष्यं मती मूढ़ ग्यानं॥
कँपै पाप जो भीर पत्तं सु सत्तं। रहै दिव्य संसिष्य तद्धार भत्तं॥
छं० ॥ ७९६ ॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुद्धि कासं। तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती। तुही आहितं छित्त चितं चरंती॥
छं० ॥ ७९७ ॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी। तुही वारिधारा अधारं अरिष्टी॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै। तुही नाद रूपी सजोगी अराधै॥
छं० ॥ ७९८ ॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै। जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै॥
लषै को गती तो मती देव गंगे। रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे॥
छं० ॥ ७९९ ॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे। तिसौ तोसने अप्प अप्पं अपारै॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै। रसन्नाजि कै देवि तो नाम जंपै॥
छं० ॥ ८०० ॥

(१) मो.-लहत।

न्निभारं करै पाप भारंत दूरं। रची पुन्य कै क्यारवै भ्रम्म सूरं॥
सते साध गहि लोक तें सीस रष्यौ। तबै बेद भय वेद सब छेद नंष्यौ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

अमी आइ अंगाइ न्निमया न किन्नौ। हुंतौ दीप आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ॥
तुंही देषि करि तेज कप्यौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंड्यौ सु चंदं॥
छं० ॥ ८०२ ॥

धरे सहस सत रूप आनूप भारी। कला नेक नेकं अनेकं प्रकारी॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसौ भेद पय पान जान्यौ न नीरं॥
छं० ॥ ८०३ ॥

जिसौ सिंह अरु मगति भयभीत भारी। जिसौ मुत्तिहर मूर तें झाकझारी॥
जिसौ अप्प अप्पै अपारं अनंतं। तिसौ मोष नर भेद पावै तुरंतं॥
छं० ॥ ८०४ ॥

त्रिया रूप हुय भूप रावन सहाऱ्यौ। भये देवकी अंस चानूर माऱ्यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। इहै द्रोपदी होइ भारथ्थ ठानी॥
छं० ॥ ८०५ ॥

[1]समी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारें॥
[2]इहै कालिका काल जिम दुष्ट मारै। इहै संभनिस्संभ धायौ प्रहारै॥
छं० ॥ ८०६ ॥

तूंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप काल अलष गंगे॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं० ॥ ८०७ ॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही॥
न्हायै दुष्ष समूह मिटै भव सात के।
अंब हरै लगि बूंद सहस्रति गात के॥ छं० ॥ ८०८ ॥

(१) मो-रमी। (२) ए. कृ. को.-रहै।

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं । सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं । सोइ फल पिअत अंव अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं । अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं बिलंबे । तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं म्रग्गयं कस्तूरी । करी कच्छपं भीजियं हथ्थ चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं कीट पट्टं । विलेपन्न कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग वल्ली विरष्षं बरंगं । मह्दी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती । कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं । अचिज्जं कहा पावनं मोषथानं ॥
सुने क्रन्न तामं कहै कन्ह काकौ । पियें अंव निसि दीह वड़भाग ताकौ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति । सुनी रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोऊ सधै । जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तब सामंतन चंद कहु । सब पुच्छिय न्रप वत्त ॥
जु कछु सत्य सँबोध भौ । निठ्ठुररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

अरिल्ल ॥ तत्त करे न्रिप निट्ठुर बुज्झिय । राजा चंद प्रहास समुज्झिय ॥
आदि दियै कमधज्ज सु रायहि । दासि समेत कह्यौ सब भायहि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

आचिज एक भयौ चहुआनह । मान्न सबै मुक्किय न्रप पानह ॥
भट्ट निवेस करै कर जोरहि । छत्र धऱ्यौ कहि कौन निहोरहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कह्यौ कविचंद सु बत्तिय । पंग प्रताप गयौ तप छत्तिय ॥
प्रान सु पात तुम्हें गर थल्लिय । भट्ट कहै कर छुग्गर [1]झल्लिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानौं । जं भ्रम काज धऱ्यौ कर पान्यौं ॥
काल्हि सु भेस करौं भुअपत्तिय । कंप न तोहि धरब्बर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना।

भट्ट सों कन्ह निपट्ट रिसानौ । तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि । सूर सीस दे सत्रुन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ । न्योंति जम इंद्र बुलाइय ॥
द्रिग्गविजय तँह करत । फौज लै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि । चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिया । रूप धरि उग्गरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं । रंग क्रकेटक सुरपती ॥
मंडिक मदब्ब गऱ्यौ वरुन । चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-थलिय। (२) मो. छुट्टहि। (३) कृ.-कगह, को.-कयह।

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन वर । भोजन सह सबै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद वर उट्टे । धरिय कन्ह निज बाह स रुट्टे ॥ छं० ॥ ८२२ ॥

सब का शयन करने जाना।

तौ लगु भोजन भष्य संपज्जें । हसि करि मंन सुचेतन लज्जें ॥
हौ सब साथ सनाथ सयानौ । सूर कहै कब होइ बिहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्ता ॥ जब लगि मिष्टान पान सरसे । तब लगि अंबर (१)दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना।

दूहा ॥ भइत निसा दिन मुदित बिनु । उडुपति तेज बिराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्प सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेंन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रत चित्त तह । मानों थान बिहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सथ्थ भुअंग ॥ छं० ॥ ८२६ ॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै जाय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुपट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच बिरंच कौं । निजरि पंग लगि क्रूर ॥
साच दिषावन राग रँग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति वर । बोले भट्ट नरिंद ॥
ओसर पंग नरिंद कौं । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

(१) ए. कृ. को.-दिनरय।

जैचंद की सभा की रात्रि के समय की सजावट और शोभा वर्णन।

सुरिल्ल ॥ सुनि न्रप भट्ट महल तजि आइय। देषत पंग सु ओपम पाइय॥
नहि रावन्न सजै सु प्रमानं। काम लच्छी [1]गिर अंध गजानं॥
छं० ॥ ८३१ ॥

दूहा ॥ मृदु मृदंग धुनि संचरिय। अलि अलाप सुध व्यंद ॥
ताल चिग्गम उपंग सुर। औसर पंग नरिंद॥ छं० ॥ ८३२ ॥

कवित्त ॥ दस हजार मन तेल। सित्त मन अगर फ़ुलेलह ॥
सत्त सहस सोब्रन्न। जरित दीवी सित जेलह ॥
सहस पाल असुदेज। वेल पाना सु जनावर ॥
सीह स्रग्ग सोहन्नं। कपिल हस्ती बहु, नाहर ॥
पंषी अनेक जलचर प्रबल। जल थल प्रब्बत हूका हुए ॥
जैचंद राइ तप तेज थी। कु निजरि कोई नह जुए॥ छं० ॥ ८३३॥

दूहा ॥ ज्वलन दीप दिय अगर रस। फिरि घनसार तमोर ॥
जंमनि कपट उच महल मुष। जनु सरद अभ्भ ससि कोर ॥
छं० ॥ ८३४ ॥

राजा जैचन्द की सभा में उपस्थित नृत्तकी (वेश्याओं) का वर्णन।

तात धरम्मह मंत इह। रत्तह कांम सु चित्त ॥
काम बिरुद्ध निविद्ध किय। न्रत्य नितंबिनि नित्त॥ छं० ॥ ८३५ ॥

भुजंगी ॥ सजी पातुरं नट्ट दीसै सु पंगं। चिहुं पास पासं अतंकी अभंगं॥
उड़ी धाम अग्गार ने धाम छाई। तिनं देषतें चंद ओपंम पाई
॥ छं० ॥ ८३६ ॥

सुरं नूपुरं सद्द बद्दं विहंगं। बरं तारि ता रूप पाचं सुरंगं ॥
करै जमनिकं पट्ट दीसै सुरंगी। गतं चंदलं चंद उप्पम्म मंगी॥
छं० ॥ ८३७ ॥

---

(१) मो.-गिरधंगज।

हरं वार पुब्बं मनंमथ्थ सज्जं। बंध्यौ काम जारं मनो सीम [1]मज्जं॥
बजै नूपुरं सद्द पर सद्द धंमै। बजै दुंदभी समर सम राज क्रम्मै॥
छं० ॥ ८३८ ॥

नगं हेम बर जटित तन घन विराजै। तिनं ओपमा चंद बरदाइ साजै॥
लगै नौग्रहं उग्रहं काम लग्गयौ। मनों आतमा आतमा भाव जग्गयौ॥
छं० ॥ ८३९ ॥

तिनं भट्ट संकै कहै बाल संचै। तिनं कारनं पातुरं साथ नंचै॥
कटिं छुद्रघंटी रुलंती विराजै। तिनं उप्पमा सुबर कविचंद साजै॥
छं० ॥ ८४० ॥

दिपै धनुष कामं षिजै सिंभ चासी। लगै पंच ग्रह चंचलं तं धरासी॥
रुरै हार भारं सु मुत्ती अनूपं। दमं मुष्य कंती प्रतीव्यंब रूपं॥
छं० ॥ ८४१ ॥

कथी चंद बंदी उपम्मा अनूपं। करै चंद आटन्न जल सेत कूपं॥
रुरै बाल कंठं समं [2]मुट्ठि पुंगं। कहै चंद कव्वी उपम्मा [3]अनुज्जं॥
छं० ॥ ८४२ ॥

तिनं भेष सोहै फिरै बंध नंगं। धरै चंद तत्तं हरं मथ्थ गंगं॥
बरं भूषनं दूषटं बाल साजै। बरं अट्ठ दूनं सिंगारं विराजै॥
छं० ॥ ८४३ ॥

वेश्याओं का सरस्वती की वंदना करके नाटक आरंभ करना।

साटक॥ दीपांगी चंद्रनेत्रा नलिन अलि मिली, नैन रंगी कुरंगी॥
कोकाषी दीर्घनासा सुसर कलिरवा, नारिंगी सारदंगी॥
इंद्रानी लोल डोला चपल मति धरा, एक बोली अमोली॥
पूहपा बानी बिसाला सुभग गिरवरा, जैत रंभा सु बोली॥
छं० ॥ ८४४ ॥

(१) मो.-वज्जं। (२) ए. कृ. को.-कुच्च। (३) ए. कृ. को.-लघुजं।

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्पय चाइ॥
छं०॥ ८४५॥

मुरिल्ल॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद वर वुल्ली॥
देषि सुबर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालासजि चल्ली॥
छं०॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा॥ मंग प्रथम जंपं जपै। जै गजमुष अग्रजाइ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ॥ छं०॥ ८४७॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, बाज, ताल, सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज॥ उअं अलाप मद्धिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
षडंग तष्य मूरछं मनुंत मान संचमं॥
निसंग थारंत अलप्य जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई॥ छं०।. ८४८॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं॥ छं०॥ ८४९॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्षियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्षियं॥

---

(१) ए. कृ. को. सुर। (२) ए. कृ. को.-बोलि।

कलं कलं सु [1]सथ्यनं सुभेदनं मनंमनं ।
रनक्कि झंकि नूपुरं वुलंत झंझनं झनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥
थमंडि थारु घंटिका भमंति भेप रेपयौ ।
[2]जुटंति पुंत केस पास पीत स्याह रेपयौ ॥
लजंति गत्ति तारया कटिं प्रमान कंटरी ।
कुसम्मसार आउधं कुसुम्म ओड नंटरी ॥ छं० ॥ ८५१ ॥
उरंप रंभ भेप रेप सेपरं करं कसं ।
तिरष्पि तिष्य सिप्पयौ सु देस दच्छिनं दिसं ॥
सुरंति संगि गातनी धरंति सासने धुने ।
जमाइ जोग कट्टरी चिविज्ञ नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥
तिरष्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिपावहीं ।
कै अठ्ठ ग्रे ह बीय चंद भोर कै भ्रमावहीं ॥
छतीस राग बंधि तार वाल ता बजावहीं ॥
.... छं० ॥ ८५३
सु क्रम्म तार धी मृदंगचित्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र धूव उच्चरं ॥
समीप रथ्थ भेदयो जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति चातुरी जुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥
सिँगार ते कलेवरं परस्सि उम्भ रावके ॥
सिँगार सोभ पातुरं कि [4]चातुरं सिंगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरट्टि चक्कि चाहनौ ॥
निरत्ति नेंन राषि जानि बंभ पुत्ति बाहनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥
विसेष देस द्रुप्पदं बदन्न देंन राजयौ ॥
सु चक्र भेष चक्र हत्ति वाल ता विराजयौ ॥
उरद्ध मुद्ध मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुत्ति दुत्तिमा मनों मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मथ्थनं ।　　(२) ए. कृ. को.-जटंति ।
(३) ए. कृ. को. पातुरं ।　　(४) ए. कृ. को.-पातुरं ।

प्रवीन वान उड्डरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्षि भेष उड्ड्यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकने घने ॥
अपा अपा भनंत भे जपंत जान ज्यौं जने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नेनयं न वेंन भुंषने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुष्पने ॥
.... । ....छं० ॥ ८५८ ॥

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति ।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर । [2]न्निपनिय नीद निवार ॥छं०॥८५९॥

घटि चियाम घरियार वजि । ससि मिटि तेज अपार ।
अकस अच्छ दिन सो तजौ । चिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा ।

साटक ॥ सुष्पं सुष्प मृदंग तस्स जघनं , रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासने समजितं , कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरी , सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्पह काम कुंभ गहिता , जय राज राचं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविंगलिता , साषा न गल्हस्थलं ।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं , कलि कुंभ निंदा दलं ॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं , अलि भार गुजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राचं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दक्षिन (२) ए. कृ. छो.-न्रिय तिय निंदनिवार ।
(३) ए. कृ. को.-प्रान ।

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई ग्रम वेर अथवंत निसं। गछि चोर परद्दर कपट वसं ॥
झलि झालरि देवर सुप्प नदं। भइ विप्र उचारिय वेद वदं ॥
छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद थानह न्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
भट्ट सथ्थ चहुआन सत। वंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
सयन करहि दरवार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीप दई कविचंद ॥
निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
जगि वरदाइ वर वुलै। वरवंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रसवीर लासं॥
सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
छं० ॥ ८६८ ॥
तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ वीरं। जिनै पत्ति वंध्यौ पुरासान मीरं॥
छं० ॥ ८६९ ॥
सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
सभा मभ्भ सारंग चालुक्क मंद्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंद्यौ॥
छं० ॥ ८७० ॥

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेहरो स्वामि वित्ती चढ़ायं॥
रजं राज पामार लष्षं सलष्षं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्षं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन्न रायं। जिनै ठेलि ठट्ठा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रक्कं सरद्दं गँभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस झिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि लारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै षेदि सब्बं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्थ जंपै ननिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चोरं जु दीसं। मनों उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ट विहु जन्न एकं। जनों आरजं वार वर इंद मेकं
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपौ बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठो जेम प्रथीपुर इंदं ॥छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुलिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपच। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन उपारं॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पंग बीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-वीर

उद्धरं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आपेट हुकम दै पुब्ब दिसि । चंद समप्पन दान वह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आपेटक पहुपंग । वाजि नीसान प्रथम वर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयरु सज्जीय [1]धरद्दर ॥
दुतिय वज्जि नीसान । सवै भृत हैवर सब्बर ॥
मग्ग अठु पय वांम । राज कमधज्जह समभर ॥
वज्जै निसांन त्रयतिय चढ़ौ । पंच सवद वाजिच वजि ॥
सामंत सूर वर भरि भरिय । करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥ ८७९ ॥

दूहा ॥ आपेटक पहु पंग कत । चढ़िग लष्य वजि तूर ॥
आज वीर कमधज्ज सौ । इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥

कह्यौ राज जैचंद वर । जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित । अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥ ८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग । मान सेना कितीस तर ॥
मनहुं काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर वंग विराजत ॥
अंतरथ्यि हय [3]हथ्यि । मनहुं पातुर तिय साजत ॥
दरवार उतरि भयभीर भर । सकल लोक वर इंद कों ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कों ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

छंद नाराच ॥ चल्यौ नरिंद पंग राइ वाजि वीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि दि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्करीन कंध्वियं ।
मनों समंद उछि सोर वीर बोझ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

(१) मो. भर पर । (२) मो.-चंक, चक्क ।
(३) मो.-हच्छि । (४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जाम ।

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ ज दंति पंति चोरयं॥
तिमद्द रद्द हेम पट्ट घट्ट थट्ट फेरयं।
सुभंत छत्र राज सीस हेम दंड मेरयं॥ छं०॥ ८८४॥

धनुष्षधार मीर बंद दुट्ट [1]अप्प दिष्षयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसष्षयं॥
सुढुंद सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चल्लयं।
मनों करीय नाग अग्ग पट्ट कांम षुल्लयं॥ छं०॥ ८८५॥

दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरै।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरै॥
.... छं०॥ ८८६॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा॥ मिसि बज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव॥
चढ़त सुधासन संमुहौ। जहं सामंत न्टपेव॥छं०॥ ८८७॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कबि की बिदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त॥ बोलि सु मंचिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल॥
भट्ट क्क्तित्ति चल चित्त। भट्ट निस चलह किंत्ति चल॥
भेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय॥
सवें मनोरथ भग्गि। सुष्ष आसुष्ष विलग्गिय॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल॥
संभारै बाल संभरि धनी। जम्म चंद भग्गौ जलल॥ छं०॥ ८८८॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान बेताल सु विक्रम॥
अइ लष्ष मन कनक। अंक मेटन विधि अक्रम॥

(१) ए. अप्प।
* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंत्र इह कुमति किय । वरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन कितौ कहरि कप्पन्न होइ । इतिक विदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना ।

हनूफाल ॥ सो मंच मंचिय तव्व । करि अरज फेरि सु कव्व ॥
दहतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन जूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज झरनि झरंत ॥ छं०॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम वसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥८९३॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै वानी हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
दै लाप पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि होइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरय कीनी कोस । सकलाति फिरगरु तोस ॥
जरवाफ कसब जराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
वहु जात चामर रूप । सिर ढुरै जानि सुभूप ॥
जिन चरचि वहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जै चंद इंद विराज । है गै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

कविचन्द की विदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
दै सें चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनह सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परषि ते गंठहि बंधिय ॥
सकलाति फिरंग चामर चरचि। कसव सबें विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। द्वै सैं तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बदर बहु संग लिय। भट्ट समंपन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंपन जात। राज नट विंद प्रवंषो ॥
सीस वैंन नहि चित्त। मझ्झ हक्कत सालष्षी ॥
सिभू[2] भेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथी ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तत रुंथी ॥
उष्षई कुंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करै ॥
जंनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती[1] त्रिलिहय गयन। चंच विलग्गो सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्कित चिंत न्टप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सवन्नी सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्थ ॥
धन्नि ध्रंम भरि क्त्ति जन। ज्यों अरि आवै हथ्थ ॥ छं० ॥ ९०३ ॥

---

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ स्रेस।

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना।

भुजंगी ॥ ननं मांनियं जानियं देव भंती। गयं [1]चंद न्रप ग्रेह देषै बिरंती॥
गतं सायरं साम गंभीर दालं। सदं जा प्रवालं पवनं [2]प्रचालं॥
छं० ॥ ९०४ ॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं। सुरज्जं समं पाइ संचार आलं॥
बरं लावनं हंदियं दिग्ग पालं। बलीनं बलीनं भरं विभ्र बालं॥
छं० ॥ ९०५ ॥

ब्रह्मंडं विजै थंभ करि हथ्थ बज्जं। पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ सज्जं॥
दिदी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी। धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी॥
छं० ॥ ९०६ ॥

दिषी पंग जैचंद इंदं परष्षी। तहांईय आसीस बरदाय भष्षी॥
छं० ॥ ९०७ ॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना।

कवित्त ॥ जीत मत्त पहुपंग। बोलि राठौर सुबीरं॥
सास दान करि भेद। डंड बंध्यौ अरि मीरं॥
छल बल कल संग्रहै। दई दुरजन दावानल॥
भट्ट यान आहुट्टि। पंग बुट्ठ सारह जल॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन। दै दुबाह घायन चढ़हि॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल। सुनौ सुभर सो बुद्धि इद्दि॥
छं० ॥ ९०८ ॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

१ (१) ए. कृ. को.-गयंदंच। (२) ए. कृ. को.-प्रवालं।

दूहा ॥ अगि मोकलि रावन न्टपति । हक्कार्यौ कविराज ॥
भट्ट हट्ट मोकलि सु वर । कांक विसाहन काज ॥ छं० ॥ ९०९ ॥

कवित्त ॥ मेर उच्चवहि वथ्थ । देय तन वज्ज पात कर ॥
भषै च्यार अज इक्क । नेर सम क्रंति देह धर ॥
हठिय अग्ग रिन परहि । स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि ॥
पर नायि पर मुष्य धर । धरा धीर सु रष्पहि ॥
कर चलहि अप्प पय अचल वर । रावन सथ्थ सु मंडि लिय ॥
दिष्षिय सु भंति इह कव्वि करि । मनु सरद अब्भ ससि कुंडलिय॥
छं० ॥ ९१० ॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना।

दूहा ॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग वर । एकादस न्टप राह ॥
दुष्ट मंच दानह करिग । भट्ट सुमंदन राहु ॥ छं० ॥ ९११ ॥
गयौ रावन मैलान वर । कपट चित्त मुह मिट्ठ ॥
दान समप्पन भट्ट कों । चित बंधन वर दिट्ठ ॥ छं० ॥ ९१२ ॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना।

कवित्त गयौ रावन मेल्हान । चंद वरदिया [1]समष्षन
देषि सिंघासन सथ्यो । पास पारस्स इंद्र जनु ॥
कवि आदर बहु कियौ । देषि कनवज्ज मुकट मनि ॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त । वियौ नहि गनै तुम्झ गिनि ॥
थिरु रहै थवा इत वज्ज कर । छंडि सिकारहि छिन कुरहि ॥
[2]जिहि असिय लष्य पलानि यहि । पान देहि दिढ हथ्थ गहि ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

(१) मो.-समद्यन । (२) मो.-निसि ।

पान देह दिढ़ हथ्य। परिस षावास पंग वर ॥
जा अग्गै अस तेज। तेज कंपहि जु नाग नर ॥
देषि प्रथीपुर उदै। सूर सरनै गौ तंतक ॥
वर कंपै द्रिगपाल। चित्त चंचल गत्ती अक ॥
अघ हरन किरन किरनौ प्रचंड। देखि दून गति देषियै ॥
अप्पि वर पान पारस सुगत। दुती परस सो लिष्पियै
छं० ॥ ९१४ ॥

पान धार दै पान। भट्ट न्त्रिप जानि मंडि कर ॥
नर नरिंद जैचंद। जग्गि सम मंडि देव वर ॥
इंद्र मौज जच्चन [1]विसा। सह होय जचाइय ॥
। .... । .... ॥
[2]त्रय हथ्य लंक उप्पर न्त्रपति। तरन हथ्य कामधज्ज कहि ॥
आदि करि देव दानव सुरह। वलि जांच्यो वावन जुजहि ॥
छं० ॥ ९१५ ॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा ॥ पान देइ दिढ हथ्य गहि। वर करि हथ्य दिवंक ॥
मनु रोहिनि सो मिलिग ज्यौं। वीय उदित्त मयंक ॥ छं० ॥ ९१६ ॥
लिय सु पान भुअ राज रुष। मुखप्रसन्न [3]मन रोस ॥
दिषत न्त्रपति चल चिंत किय। पुत्र प्रसन्नौ दोस ॥ छं० ॥ ९१७ ॥
करै न कर प्रथिराज तर। धरै न कर जैचंद ॥
उभय नयन अंकुरि परिग। ज्यौं जुग मत्त गयंद ॥ छं० ॥ ९१८ ॥
[4]सुनि तमोर पट्ठिय सुकर। मुष उत करि दिठ वंक ॥

(१) मो. पिसाल।　　(२) मो.-त्रय लोक हथ्य लंक उद्धर नृपति।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुत।　　(४) ए. कृ. को.-मुनि।

जनु छैलनि कुलटा मिलै। बहुत दिवस [1]रस पंक ॥ छं० ॥ ९१९ ॥
राज पान जब अप्पही। पंग न मंडै हथ्थ ॥
रोस न्रपति जब चिंति मन। कही चंद तव गथ्थ ॥ छं० ॥९२० ॥

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक ॥ तुलसीयं विप्र हस्तेषु। विभूति प्रिय जोगिनां ॥
तांबूलं चंडि हस्तेषु। चयो दानेव आदरं ॥ छं० ॥ ९२१ ॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठेल कर पान देना।

चौपाई ॥ भट्ट जानि करि मंग्यौ राय। उहि तंमोर दियौ न्रप चाइ ॥
ठट्ठै पानि दियौ नित ठेलि। मनों वज्रपति वज्रह मेलि ॥ छं० ॥ ९२२ ॥

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा ॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज ॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ९२३ ॥
कर चंपे न्रप तास कर सारंग दिद्व सुचंग ॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग ॥ छं० ॥ ९२४ ॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त ॥ पान धार दै पान। दिष्ट आरुहिय वंक बर ॥
एक थान द्वै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर वर ॥
[2]विहुन हथ्थ विभ्भरै। लाज संकर गर बंधिय ॥
अंष वद्द दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय ॥
निश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग बर ॥
लग्गौ सु पान न्रप वज्र सर। पान धरे वर वज्र [3]सर ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

दूहा ॥ प्रथमहि सभा परष्षयौ। पानधार नहि भट्ट ॥
न्रप कविथान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट ॥ छं० ॥ ९२६ ।

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-बहुन। (३) ए. कृ. को.-कर।

भुअ बंधौ किय पंग न्टप। अप्पि हथ्थ तंमोर॥
मनहु वज्जपति वज्ज धर। सत्र अप्पौ तिहि जोर छं० ॥ ९२७॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त॥ गहि कर पान सु राज। फिऱ्यौ निज पंग ग्रेह वर॥
सोमंत्रिक परधान। बोल उच्चरिय क्रोध भर॥
गहौ राज संभरि नरेस। सामंत अंत रिन॥
मिटै बाल उर आस। आस जीवन सु मिटै तिन॥
बोलिय सुमित्र कमधज्ज वर। छग्गर भट्ट न पृथु गहन॥
भृत भ्रात तात सामंत सुत। छलन काज पट्ठिय पहन।

छं० ॥ ९२८॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है।

दूहा॥ छलन काज पट्ठिय पहन। मिलिन छ्प्रम दरवार॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै। न्टप वर सोचि विचार छं० ॥ ९२९॥

कवित्त॥ न्टप वर सोचि विचारि। संग सुझ्झै वरदाइय॥
अवधि वसीठ रु भट्ट। वंस न्टप लगै बुराइय॥
इह कलि किित्ति नरिंद। रज्ज अपजस हुअ ढंकन॥
दिट्टमान विनसिहै। लग्गि अंमर कुल अंकन॥
जुग्गिनि समथ्थ जौ इन हुए। तौ सब भ्रत गिनि मारियै॥
रिधि मंच राइ राजन सुनौ। विप्र भट्ट नन टारियै॥ छं० ॥ ९३०॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं।

चौपाई॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय। बरदाई मिथ्या न उचारिय॥
फिरि जैचंद पिथ्थ ग्रह आयौ। निज कर [1]रावन भट्ट बुलायौ॥

छं० ॥ ९३१॥

(१) मो०-राव सुभट्ट।

कवित्त ॥ अष्पि पान करि मान । नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन । तास बर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक । जास गुन जान ग्यान बर ॥
आदि बंध मुनिवर । प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत । चतुर देह चातुर सु तप ॥
रष्यौ न राज अप्रछन्न कवि । कहत तत्त कनवज्ज न्रप ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

चौपाई ॥ बोलो भट्ट सु मत्ति विचार । किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनों ततच्छिन । नहिं तुझ है गै 'देउ' अथ्यि घन॥
छं० ॥ ९३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि । सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दछ्छिन जन्ह गिरि । निड्डर वाम विराज छं० ॥ ९३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो [२]सुभट्ट आरोहि पिठ्ठ । तिन ढिगह सोभ इंद्रह बयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंझ। छव्वाह सरूप फुल्लीत संझ ॥छं०॥९३५॥
डोलीय पंच आरोहि तिथ्थ । तिन मझ्झ बयठ निड्डुर समथ्थ ॥
वल्ल कन्ह देषि पट्टी अरोहि । कौरवह घत्ति कर्नह समोहि ॥
छं० ॥ ९३६ ॥

पुच्छै सु बत्त कनवज्ज राइ । देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि । लिन्नौ सु भ्रंम जम्मह स लेष ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक । पट्टनह राव मार्‍यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस । जिन दोय फेर गज्जन गहेस ॥छं०॥९३८॥
जैतह पमार अब्बू नरेस । छत्रह धरंत मथ्थै असेस ॥
पंडियौ राय बंध्योति साष । बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ९३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिया। (२) ए. कृ. को.-जु।

हरसिंघ नाम वर सिंघ वीर। तिन हथ्थ जुट्टि पचवट्ट नीर ॥
वालुका राव सध्यौ सु पंग। संभलिय राय झाला प्रसंग ॥
छं० ॥ ९४० ॥

विंझ राज देषि चदुआन रूप। जिन भरिय लष्ष द्रव्यान कूप ॥
परमाल देषि चंदेल राज। बंधिया राय द्रव्यान काज ॥
छं० ॥ ९४१ ॥

वारड़ सु राव अधिपत्ति सेन। तिन चढ़त लग्गि वह उड्डि रेन॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध। मुरधरह राइ पडिहार बंध ॥
छं० ॥ ९४२ ॥

परिहार पीप सामंत सुद्ध। पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्ध ॥
निढुरह राय अवनी अकंप। गजनेस राइ ज्वाला तलंप ।।छं०॥९४३॥
तोंवर पहार अवनी सु जोर। बंधयौ राइ कन्हा समोरि ॥
कूरंभ राव पज्जून वीर। सद्धये जेन इक लष्प मीर ॥छं०॥९४४॥
नरसिंघ एक नागौर पत्ति। रिनधीर राज लीयौ जुगत्ति ॥
परमार सलप जालौर राह। जिन बंधि लिद्ध गजनेस साहि ॥
छं० ॥ ९४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि। कीनी सु एक पिच वट्ट राह ॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ। मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ ॥
छं० ॥ ९४६ ॥

जद्दव सु जाम पीची प्रसंग। लीनें सु देस अवनी पुलिंग ॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस। लीए सु सत्त पतिसाह देस ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

जंघार भीम उड़गन सु सोह। रिन जुद्ध बीर संकर अरोह ॥
सारन्न राइ मोरी भुआल। कट्ठिया राइ जिन किद्ध काल ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

तेजलह डोड परिहार रान। भिड़ एक तेक बंदै सु भान ॥
गुजरात धनी सागौत गौर। आरनि सु माहि बंधंत मौर ॥
छं० ॥ ९४९ ॥

परिहार एक तारन सुरुप्प । कर सलय लोय सेना समप्प ॥
वारड़ सुधीर सहसौ करन्न । वरियाति वीस हुअ छिन्न भिन्न ॥
छं० ॥ ९५० ॥

चहुआन एक अततोइ रूप । कालिंज राइ बंध्यौ अनूप ॥
बलिराइ एक भारथ्थ भीम । कूरंभ राव चंपेव सीम ॥छं०॥९५१॥
भौंहां चंदेल जिन बंधराज । पानीय पंथ प्रथिराज काज ॥
गुज्जरह राम धूवत ससान । मारयौ जेन आलील षान ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

चंदेल माल थट्टा अरोह । साधियौ वीर जनचंद मोह ॥
रस सूर रोह मेरह समान । जिन हेम प्रवत लिय जोर पान ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

मंडलीक राव बघ्घह अरोह । आवद्ध एक चिस्सूल सोह ॥
पूरन्न माल षल हंड षेत । जिन सूर दीन सत अश्वसेत ॥छं॥९५४॥
धावरह धीर सामंत राज । जिन जीव एक प्रथिराज काज ॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह । बंधयौ जेन गिरि पातिसाहि ॥छं॥९५५॥
रावत्त रास सामंत सूर । जिन द्रिग्ग देषि नट्ठे करूर ॥
जावलौ जल्ह रिनतूर वज्जि । लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

चालुक्क एक भारो जु सोह । लीयें जु फिरै इक सहस लोह ॥
बग्गरी बघ्घ षेता षँगार । रिनथंभ तेन करि मार मार ॥ ९५७ ॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम । मारयौ वरुन करुना सु काम ॥
मंडलीक [1]कंकवे सेल चंद । बंधयौ जेन भौमह नरिंद ॥छं०॥९५८॥
परमार सूर सामल नरेस । रिन संभ अटल दल असहेस ॥
परमार कनक पछवान लीन । प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

संजम हराय बर जुड्ढ नेस । षोडस्स दान दिय वाल वेस ॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंद । देषंत जानि धुअ रूप इंद ॥ छं०॥ ९६०॥

(१) ए. कृ. को.-कंसवे ।

विरसन्न इसौ चाटंत सेन। रिन जुवत सेन उड्डुंत रेन॥
साषुलौ सहस मलनेत बंध। दस सहस ग्राम पट्टैति बंध॥
छं०॥ ९६१॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ। जिन देस भोग लीयात नाय॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन। बंधिया राइ अवधूत तेन॥
छं०॥ ९६२॥

मोरीति सुभट सादल नरिंद। कंठिया राव वासीति हिंद॥
वघेल सूर सोहंत सेन। लिन्नौय षग्ग बल दष्षि नेन॥
छं०॥ ९६३॥

लंगरिय राव सथ्थह भुआल। अध देस दिद्व व्याघात काल॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्थ। किरनाल नेच कीनी अकथ्थ॥
छं०॥ ९६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह। देषंत अछर करि मोह सोह॥
केहरिय मल्हनासह विधूस। बधनौर वास सत जाइ भूम॥
छं०॥ ९६५॥

हरिदेव सहस सामंत रूप। जहव सु जाज अवनी अकूप॥
उहठी गंभीर सोहंत एह। रज रीति रूप रष्षीति रेह॥
छं०॥ ९६६॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ। जिन लीन दिल्लि जीधान कथ्थ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गट्ठ। बंधि लिय राय सोक तल वट्ठ॥
छं०॥ ९६७॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन। चलंत सथ्थ उड्डंत रेन॥
परिहार इसौ रिनधीर सोह। रिंन चढ़ै जन्म जालिंम लोह॥
छं०॥ ९६८॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस। तिन पिट्ठ सूर सत्तह कहेस॥
तिन पिट्ठ सूर सुभटह हजार। रिन जुद्ध करंतह मार मार॥
छं०॥ ९६९॥

सामंत एक बुंदह सु जत्त। उठंत वीर घरि एक सत्त॥

जुध करहि सूर धड़ मचहि सार। मस्तकहि पिठ्ठ करै मार मार ॥
छं० ॥ ९७० ॥

पंगुरै देषि चित चक्रित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ ॥
डेरौ सुदीन चयक्रोस माहि। जे लिए रखत उत्तंग साह ॥
छं० ॥ ९७१ ॥

अन्नेक कमल अन्नेक रूप। रह वास थान तल उंच रूप ॥
कनवज्जराय तब उठ्ठि चल्लि। रायान राय साषा न हल्ल ॥छं०॥९७२॥

दस लष्ष रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल ॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस [1]भान ॥
छं० ॥ ९७३ ॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त ॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन ॥
असिय लष्ष हय दलह। षबरि किज्जै सु षिन्नषिन ॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै ॥
मिलिय सेन रघुबंस। चंद तब भट्ट प्रगासै ॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। आज नीक परतह बहै ॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै ॥छं०॥९७४॥

पहचान्यौ जयचंद। इहत दिल्ल सुर लिष्यौ ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ ॥
कर संग्यौ करिवार। कहैं कनवज्ज मुकुटमनि ॥
हय गय दल पष्षरहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन ॥
इत्तनौ सोच भुअपति उठ्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ ॥
सामंत सूर हसि राज सों। कहै भलौ रजपूत भौ ॥ छं० ॥ ९७५ ॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

(१) ए. कृ. को.-पसिमान।

धनि धनि धनि सामंत। सूर कहि राज इंद वर॥
निरषि हरषि कर करषि। परषि कनवज्ज जाय तर॥
निरभै सोम सिंगारं। करन कलहंत मंत मनं॥
नरनि नाह कन्हह कमंध। उच्चऱ्यौ वीर तन॥
आभासि अवर आनन सुभट। यट्ट मंति चट्टे चलन॥
करि साथ तुरंगम सथ्य भरें। कसि ठट्टे अप अप बलन॥
छं० ॥ ९७६ ॥

दोनों ओर के वीरों की तैयारियां करना।

रसावला ॥ उठ्यौ पंग राजी, रवी तेज साजी। उठे वीर सूरं, छछोह सभीरं॥
छं० ॥ ९७७ ॥
भृंगीराज राजी, सुराजी विराजी। चिह्नं पास साजी, अरीदोस गाजी॥
छं० ॥ ९७८ ॥
दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जांनि अग्गी। .... ॥छं०॥९७९॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज।

कवित्त॥ कंठ सूर दाहिम्म। अंग लज्जी सुवास तन॥
लष्य मझि दुहु प्रगटि। अग्गि उट्ठी सूरं घन॥
चंद वीय ज्यों वट्ट। अग्गि लग्गी दरसानी॥
हय [1]हय हय उच्चार। गहग्गह सुनिये वानी॥
लंगरीराव [2]लोहा लहारी। चावीगो चहुआन दल॥
वर भरी बीर जित्तन अरिय। [3]मुगति पंय षुल्लिय सु विल॥
छं० ॥ ९८० ॥

कवित्त ॥ पंचैसर प्रथिराज। राज सोमेसर संभरि॥
लंगी लंगरराइ। राय संजम सुअ जंबरि॥
वारा झाथह भुल्लि। वघ्घ उठ्यौ लोहानह॥
पारद्धी भुलि धार। मूल चंप्यौ चहुआनह॥
वर वीर वराहां उप्परैं। केहरि वट्टारी बढन॥
इक चप्प क्रन्न कर पंग इक। सावक मुष लग्गा रहन॥छं०॥९८१॥

(१) मो. गय। (२) ए. कृ. को.-लोहो। (३) ए. कृ. को.-मुकति।

अद्धा आसन अद्ध। राज अद्धा तंमूलं ॥
अद्धा देस सुवेस। एक आदर संमूलं ॥
पंगानै दीवान। रहै न रष्यौ चलि सथ्थह ॥
काया तुंग सु कन्ह। देव साष्यौ भुज वथ्थह ॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ। प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ ॥
दरबार राव पहुपंग दल। चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥ छं० ॥ ९८२ ॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना।

पद्धरी ॥ जुध जुटन लंग उठ्यौ भीम। मानों कि पथ्थ गो ग्रहन सीम ॥
संभरिय राज सों करि जुहार। चय सहस सुभट सजि लोह सार ॥
छं० ॥ ९८३ ॥
मद गंध करी च्यालीस सोह। गज फूल कनक रूप्पह अरोह ॥
आनेज सहसमल सथ्थ व्योम। धुंधरिग [1]भान इह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ ९८४ ॥
हम्मीर कनक राठौर बंस। चाल्यौ कि क्रष्ण मारनह कंस ॥
हरि सिद्ध जाइ कीनौं प्रनाम। दुअ सहस मुहुर दुज दिन्न दाम ॥
छं० ॥ ९८५ ॥
दरवार जाइ दरबान रुक्कि। सत सहस पौरि दरवान मुक्कि ॥
लष तीन महल चौकीन हल्लि। परधान सुमित्र तब तेग झल्लि ॥
छं० ॥ ९८६ ॥
हहकारि सीस दर गयौ लंग। दल हल्लिय सुभट देषंत पंग ॥
उंचे अवास जाली सु भंति। दस पंच महल मंडी जु पंत ॥
छं० ॥ ९८७ ॥
तिन मद्धि पंग देषै सु भट्ट। अनेक अवर मिलि एक थट्ट ॥
घम घम निसान चय लष्ष बज्जि। सिंधूर राग करनाल सज्जि ॥
छं० ॥ ९८८ ॥
गुजरत्त सद्द जंगी तबल्लं। मानो कि भूम्म करिहै जु मल्लं ॥

(१) मो.-वांम।

अनेक गिद्धि परि ठौर ठौर। जंबुक कुलाह जिय नद्द सोर॥
छं० ॥ ९८९ ॥

चौसट्ठि रुद्द तुंवर [1]अनेय। रंजि रंभ रह्वी टगटगी लेय॥
संजोगि मात पुच्छै सु जोइ। आचिज्ज एह यह कवन लोइ॥
छं० ॥ ९९० ॥

अद्धा सु अंग इह कहां दिट्ठ। तरवारि झपट पारंत रिट्ठ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि। नय लष्ष घटा लीनी लपट्टि॥
छं० ॥ ९९१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना।

अनेक छिंछ आकास उट्ठि। जैचंद यट्ट रहे निट्ठ निट्ठ॥
विहथंत तेग [2]वाहत अछेग। उड्डंत सीस धर परत वेग॥छं०॥९९२॥
निरषंत सीस घर मंडि पंग। दुअ लष्प सेन करि मान भंग॥
हल हले सहर दुनियां अकंप। वाडलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप॥
छं० ॥ ९९३ ॥

जयचंद घरनि सब निरषि व्योम। धुंधरिग धराधर उड्डि धोम॥
उड्डंत बीर झपटंत सेन। लरषरहि परहि उड्डंत तेन॥
छं० ॥ ९९४ ॥

निकल्यौ महोदधि जन्द बीर। मुह लेय चिन्न उतर्‍यौ नीर॥
लेयंत सीस हर हार कौन। वरयौं सु मिच अपछरन लीन॥
छं० ॥ ९९५ ॥

किलकंत सट्ठि रुधि पीय पूर। सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर॥
अंतह अलुभिझ पग बेरि वाहि। धर झार धार भर पारि याह्नि॥
छं० ॥ ९९६ ॥

कहचर उड़ंत पल धापि लेय। आवंत रथ्य अनेक केय॥
चालंत रुधिर सलिता प्रवेन। तिन मध्य चली अनेक सेन॥
छं० ॥ ९९७ ॥

(१) ए. क. को.-अनेक। (२) ए. क. को.-चाहत। (३) को.-उड्डंत।

पट्टनह हट्ट बिच चलिय नद्द । मागीय सु करि वहता सु मद्द ॥
चौसट्ठि पच्च बुद्बुदा चल्लि । अंगुली भिंग सल सलत सल्ल ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

भस्सुंड करी मग रहवि बुद्धि । कमलनि सुभंत सर सद्धि रुद्धि ॥
उप्परह भौंह सो भंवर तुंड । अपछर अनेक तट जानि झुंड ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

पुप्फरिय कछ सेवाल केस । लंगरिय किद्ध क्रीड़ा नरेस ॥
ऐसौ सु जुद्ध करिहै न कोउ । चय लष्ष मान आवट्ट सोउ ॥
छं० ॥ १००० ॥

घर मद्धि रुधिर पलचर अमेय । घर छोड़ि सरन हर सिद्धि लेय ॥
तुट्टौ अकास धरनिय पलट्टि । गिद्धनी सलित उप्पर झपट्टि ॥
छं० ॥ १००१ ॥

संभले राज प्रथिराज सेन । करि है न जुद्ध करुना सु केन ॥
संजमराय सुत सकल संभ । गम्मयौ दरिद्र रुद्र तनौ रंभ ॥
छं० ॥ १००२ ॥

किलकिका नाल छुट्टी अग्राज । लै चली लंग पर महल साज ॥
दस कोस परे गोला रलक्कि । परि महल कोट गज्जी धनक्कि ॥
छं० ॥ १००३ ॥

संजमह सुअन लै चली रंभ । सब लोक मद्धि हूऔ अचंभ ॥
.... ॥ छं० ॥ १००४ ॥

जैचन्द के तीन हजार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त ॥ परे तुरिय सत सहस । परे मदगंध सहस्सह ॥
परे षेत षंगार । पर्‌यौ मंची सु धरंनह ॥
परे सुभट चय लष्ष । परे लंगा चहुआनह ॥
परि सहसो भानेज । परे चय सहस सबानह ॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति । रुधिर कन्नित कनवज बही ॥
पर मद्धि परी गिद्धनि अछरि । सु कविचंद ऐसी कही ॥ छं० ॥ १००५ ॥

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन ।

एह जुद्ध लंगरिय । आय चौकी सम जुथ्थौ ॥
एक अंग लंगरिय । तीन लष्पह हय पुथ्थौ ॥
सार सार उछ्छरंत । परी गिद्धा रव भष्पन ॥
गज वाजिन्न निहाय । वज्जि उत्तराधि दष्षिन ॥
इम भिर्‍यौ लंग पंगह अनी । हाय हाय मुष फुट्टयौ ॥
हल हलत सेन असि लष्प दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंचौ राव सुमंत । हथ्थ विंटचौ सचलंतौ ॥
दुज्जाई दिल्लीप कोप । ओप कुंजरनि वढ़ंतौ ॥
हालो हल कनवज्ज । मंझ केहरि कूकंदा ॥
संजमराव कुमार । लोह लग्गा लूसंदा ॥
चहुआन सहावै जुद्ध हुअ । ग्रेहा गिद्ध उड़ाइयां ॥
रन भंग रावनै वर विरद । लंगै लोह उचाइयां ॥
छं० ॥ १००७ ॥

एक कहै अप्पान । एक कहि वंधि दिवाना ॥
वंधौ वंधन हार । मार लद्धी सिर कान्हा ॥
बावारौ वर तुंग । षग्ग [1]साहै विलझाना ॥
लंगी लंगरराव । अद्ध राजी चहुआना ॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल । संजम राव समुद्द हुअ ॥
प्रारंभ जुद्ध जुद्धे सवल । चलि चलि वीर भुजंग [2]भुअ ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य ।

जौ पच्छिम दिसि उयै । पुब्ब अंथवै दिनंकर ॥
धर भर फनि फन मुरहि । गवरि परहरै जु संकर ॥
ब्रह्म वेद नह चवै । अन्नित जुधिष्टिर जौ वुल्लय ॥
जौ सायर जल छिलै । मेर [3]मरयादह डुल्लय ॥

(१) ए. कृ. को.-सोहै । (२) ए. कृ. को.-हुअ । (३) मो.-मरयादा ।

इतनीय होय कविचंद कहि। इह इत्तौ पिन में करहि ॥
कुम हीन, दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहिं ॥
छं० ॥ १००९ ॥

लै संजोगि न्टप षेत। जाइ ठट्ठौ एकत बर ॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चट्ठे संमुह धर ॥
रावन रन [1]उत्तऱ्यौ। सामि फौजह अधिकारिय ॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय ॥
बनबीर रान सिंहा सुभर। मुक्कल्यौ वेगि चतुरंग दल ॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं० ॥ १०१० ॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

तब झुकि पंग नरिंद। दिष्टि कीनी झुकि अग्गी ॥
जिम सुकिया दुति बचन। दूत टारिय अंषि अग्गी ॥
ज्यों जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै ॥
झुकिय कित्त [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै ॥
भयभीत न्टपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि ॥
यों बढ्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि ॥
छं० ॥ १०११ ॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना।

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर ॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि ॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर ॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि ॥
फिरि पऱ्यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि ॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल बक्कारियहि ॥ छं० ॥ १०१२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उच्चऱ्यौ। (२) ए. कृ. को.-कोटवार।
(३) मो.-सजि।

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिऱ्यौ हथ्थ जमजालं। ग्रहनं अति चार पच्छ फिरि॥
नीर थंभ यह फिऱ्यौ। तुट्टि जल फिरै मीन हरि॥
पवन फेर पित फिरै। वीर ज्यों फिरै हकाऱ्यौ॥
फिरै हथ्थ वर रोस। पेम ज्यों फिरै संभाऱ्यौ॥
भज्जई हथ्थं हथ्थीअ वल। करिस नैंन रत्ते रुधिर॥
जानै कि दड्ढ जम की विसल। [1]चुवै जानि मंगलति झर॥
छं० ॥ १०१३॥

मोरि हथ्थ विड्डारि। काल विड्डारि भवन कौं॥
तिरस जानि रस मुट्ठि। चल्यौ [2]मोरन्न पवन कौं॥
काम अंध दिष्यै न कोइ। सोच सुद्धित मदपानिय॥
राज मंद राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय॥
करि देषि मंत रावनं वलिय। उप्पर हरि धावै लरन॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कवहूं करन॥ छं० ॥ १०१४॥

ज्यों कलंक पर हरै। न्हान गंगा तिथ्थह वग॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै स्रूद्र नर॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्य गुर॥
इम मुक्कि करिय रावन वलिय। राज सेन उप्पर पऱ्यौ॥
जमजाल काल हथ्थी सु वर। ता पच्छै क्रम क्रम पऱ्यौ॥
छं० ॥ १०१५॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि॥
स्रूर किरन फट्टंत। वान छुट्टंत पथ्थ फटि॥

(१) ए. कृ. को.-वचै। (२) ए. कृ. को.-सोरन्न।

हैं गै मत्त मतंग। [1]दंद दंतिन धर छाइय॥
ज्यों बद्दल इल उपरि। छांह चल्लै सो धाइय॥
ता पछै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहूत जुध॥
जाने कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बँध॥
छं०॥ १०१६॥

चांद्रायन॥ इह ओपम कविचंद। पिष्पि [2]तन रन्नियं॥
सोज राज संमेत। जपेपय तन्नियं॥ छं०॥ १०१७॥

अरिल्ल॥ सूर करी मधि डार कहंकह। कहै प्रथिराजन लेउ गहंगह॥
.... । .... ॥ छं०॥ १०१८॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग॥
गात गिरव्वर नाग गति। [3]चालत सोभ सुअंग॥ छं०॥ १०१९॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज॥
गहन राज प्रथिराज कों। सेन सुरंगह साज॥ छं०॥ १०२०॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्षरी॥ देषियहि राज रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस हल्लै॥
वेंन आकास सर लल्ल कल्लै। देषियहिं पंगुरें नेंन लल्लै॥
छं०॥ १०२१॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त॥ मिले सूर बज्जे अघात। [4]सस्त्र बज्जे अस्त्रन सों॥
ज्यों ताल ताल बज्जए। जीभ चिय भग उलाल सों॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं॥
बजि न्निघात उतंग। सस्त्र घल्लै सुर पानं॥

---

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ए. कृ. को.-रन, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को.-सस्त्र वज्जे जु सस्त्र सों।

चहुआन आन कमधज्ज करि। पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हक्कै पहक्क कायर परै। देव रूप आदत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग वहत मंडली। रोप जनु करी तुंग वर ॥
पूर जूह आवंत। रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि। मेर हथ लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मझ्झि गिरत। तिनह में मोती वाहै ॥
भेदै न कमल जल सुब्बर वर। कमल पत्र छिंटन्न लग ॥
हवि गात तेग आतुर बहै। रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥छं०॥१०२३॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना ।

दूहा ॥ तब हुंकारौ कीय न्टप। चढ़ि मच्छर वर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि मझ्झि। लै करि ढारिय घीव ॥छं०॥१०२४॥
मंचिय जुद्ध अनुद्ध सुनि। अरियन ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर। पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इम उच्चरिय। जन जन मुष मुष वेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं ।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं। तुम वरदाय कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत। यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूरा उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलवल अचल है ।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरौ। विनु सु (१)झंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित झंगरी। हरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैसे रा जयचंद। असंष दल पार न पायौ ॥

* छन्द १०२७ और १०२८ मो. प्राति में नहीं है। (१) को-डंगुरी।

चालुक इक सर सरित। दलन हरवल्ल अघायौ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि। अद्ध कोस दल तब बह्यौ॥
कविचंद कहै जैचंद न्रप। तातें दल पंगुर कह्यौ॥ छं०॥ १०२८॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद अग्गित झरि बीर। बिमय झाला सु प्रजलि चलि॥
नैंन दंत आरुहिज। मत्त दंती सु दंत षुलि॥
तम तामस उक्करै। बीर नीसान धुनंके॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न। मद्द गजराज झुनंके॥
विंटये सूर सामंत न्रप। रावन सब न्रप मग्ग गसि॥
असि लष्य न्रपति पहुपंग दल। सूर [1]चिंत नन मंत वसि॥ छं०॥ १०२९॥

दूहा॥ असि रावन चिहु मग्ग रहि। सर प्राहार प्रमान॥
अहन राज चहुआन कौं। पंग वज्जि नीसान॥ छं०॥ १०३०॥
साम सनाह कनंक वर। सलय सु लष्य प्रमान॥
मग रष्यन रजपूत वट। अरि मुक्यौ न सु थान॥ छं०॥ १०३१॥

कवित्त॥ रावन दल दलमलत। हलत भग्गेव सुभर अरि॥
भग्गें दल बोहिथ्थ। बीर भाटी पहार फिरि॥
घरी एक आहत्त। झंझ बज्जी जुध जग्गी॥
जनु कि महिष मैंमंत। अत्त विभ्रम बल लग्गी॥
भर सिंघ पंच पचाइनह। तजन राज रज राज भिय॥
पांवार धन्नि धावर धनी। मग्ग षग्ग मग भीर लिय॥ छं०॥ १०३२॥

जैचन्द का मुसल्मानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई॥ वज्जे सुनवि पंग सुर रूपं। चक्रित चित्त भूपाल सु भूपं॥
[2]मुक्कारे बर उन न्रिप अंगं। अरि गौ भंजि षान सुर मंगं॥
छं०॥ १०३३॥

---

(१) मो.-चित्त। (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी।

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग वज्जौर वीर । फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
वंधि सिलह कान्ह उभ्भौ करूर । मनु धाइ छुट्टि [1]भद्दव तिसूर ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

सन्नाह सज्जि गोरी पहार । जानियै सूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर । मिलि पंग हेत वर वीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

जानियै वीर वीरन्न जूर । कंद्रप्प कित्ति जानीय सूर ॥
मनु हक्क सज्जि सजि सिलह थान । वहकारै वीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

हज्जार साठि सजि परे मीर । कलहंस मान कसि अंग वीर ॥
हय गय पलान पहुपंग घुल्लि । दैपंत किरनि वर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

हलहलत होत गजराज छुट्टि । आयस आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभैं सु भूप । द्रप्पन झलक्कि प्रतिव्यंव रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

सोभै अनेक आकार वीर । मानो मद्धि इक्क सोभै सरीर ॥
पप्परैं भीर हय भीर जंपि । गति डुलैं प्रवत प्रव्वत सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

वर हुकम पंग न्रिप इहय दीन । टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
विड्डरे सेन कमधज्ज पान । ग्रहन भौ ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥

उग्रहन वत्त करतार हथ्थ । रुक्कवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना ।

कलाकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत वीर । भयौ रस रुद्र कवैं कवि भीर ॥

---

(१) मो.-भद्दव कि ।

भैभंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुष जंपि ॥
छं० ॥ १०४२ ॥

तहां रस संकर द्वै अरि संच। उथ्यौ अदवुद्द महारस नंचि ॥
लियौ रस निट्ठुर बीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग ॥
छं० ॥ १०४३ ॥

हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु बीर दुधार ॥
भयौ रस सत्त सुगंत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग ॥
छं० ॥ १०४४ ॥

रचैइ सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस बीर घगं घग अंभ ॥
.... । .... छं० ॥ १०४५ ॥

दूहा ॥ कल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग ॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गीह न दग्ग ॥ छं० ॥ १०४६ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लोग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज ॥
जौ रुक्कौ षिन षेत में। देषौं नगर बिराज ॥ छं० ॥ १०४७ ॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त ॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि को तजै इकल्लै ॥
कै रषि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै ॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव वर ॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिठ्ठ बंधीय अप्प कर ॥
सो चलै संग छाया रुकिय। कै छांह स्वामि मुक्यौ भिरन ॥
चहुआन नयर दिष्षन करै। दुरन देव सोभै किरन ॥
छं० ॥ १०४८ ॥

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं । एकलौ विन वग्ग ॥
दइ विधिना फिरि में लई । जाय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्रप । रे मत मंड समथ्थ ॥
जो मुक्कै सत सथ्थियन । तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
जौ मुक्कौं सत सथ्थियन । तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कों । फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन । तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन । चित्त मनोरथ वंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ । चौकट बुंद न अभ्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै । ज्यौं जल चौकट कुंभ ॥छं०॥१०५३॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दस सुंदरि गहि बालं । विसालं सुष्प अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि बज्जे पहुपंग । चरितं सो भुल्लियं बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ़ि गवष्षन बाला । सु विसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्के विमान सूरं । सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥
दूहा ॥ देषन लच्छिन न्रपति वर । गौ दच्छिन क्रत वेर ॥
अवन राज चहुआन बढि । पंग घरंघर वेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की । बोलि सहेट प्रमत्त ॥

हम सीलत बंचे सु बट। न्त्रिप तिह मिलहिं न मत्त ॥छं०॥१०५७॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। बजि निसान सरभैर ॥
सकल सूर सामंत सम। लेहि नरिंदह घेरि ॥ छं० ॥ १०५८ ॥

कवित्त ॥ पल्लान्यौ जयचंद। गिरद सुरपति आ कंप्यौ ॥
असिय लष्य तोषार। भार फनपति फन तंप्यौ ॥
सोरह सहस निसान। भयौ कुहराव भूअ भर ॥
घरी मझि तिहुलोक। नाग सुर देव नाम नर ॥
पाइक्क धनुद्धर को गिनै। असीं सहस गैंवर गुरहि ॥
पंगुरौ कहै सामंत सम। लेहु राज जीवत घरहि ॥ छं० ॥ १०५९ ॥
हय गय दल धसमसहि। सेस सलसलहि सलक्कहि ॥
सहस नयन झलझलहि। रैंन पल पूरि पलक्कहि ॥
तरनि किरन मूंद्यौ। मान द्रगपाल स छुट्टिहि ॥
वसंत पवन जिम पच। अरिय इम होइ सु यट्टहि ॥
पायान राय जैचंद कौ। विगरि पिष्य कुन अंगमै ॥
हय लार बहति भाजंत थल। पंक चहुट्टै चक्कवै ॥ छं० ॥ १०६० ॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन।

विजय नरिंदह तनौ। रोस करि इम धरि चल्ल्यौ ॥
इम हम षुर षुंदत। एम पायालह [1]डुल्ल्यौ ॥
एम नाद उछ्र्यौ। एम सुर इंद गयंदहि ॥
एम कुलाहल भयौ। एम मुद्दित रवि इंदहि ॥
दल असिय लष्य पष्षर परहि। एम भुअन आकंप भय ॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि। बिन प्रथिराजह को सहय ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

एक एक अनुसरिग। अंग दह लच्छि कोटि नर ॥
धानुक धर को गिनै। लष्य पचासक हैंवर ॥
सहस हस्ति चवसट्टि। गरुअ गाजंत महाभर ॥
समुद सयन उलटंत। डरहिं पन्नग सुर आसुर ॥

(१) को.-झुल्यौ।

जैचंद राइ चालंत दल। चक्क सूर पुज्जन चल्लिग ॥
गढ़ गिरिग्ग जलथल मिलिग। इत्ते सब दिष्षिय जुरिग ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन।

मत्त गत्त सन भिरिग। हट्ट पट्टन सह तुट्टिग ॥
कच्छि कच्छि जुरि भीर। घंट घंटा हरि फुट्टिग ॥
वाल वाल आलु झिझ्झ। करन सम करन लागि पग ॥
मेंगल मदगल चलत। थार हस्ती सन चंपिग ॥
जैचंद राय चालंत दल। गिरिवर कंपहि चंद कहि ॥
देषंत राइ भंभरि रहहि। दंति पंति दस कोस लहि ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

दूहा ॥ जल थल मिलि दुत्र कंप हुत्र। टुटि तरवर जल मूल ॥
देषि सपन सामंत वल। छलन कि वामन फूल ॥ छं० ॥ १०६४ ॥

दल पंगुरे के दल वद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

वाघरा ॥ दह दिसा थर वियरंत। दिगपाल दसन करंत ॥
उरवी न धारत सेस। ससि होत फेर दिनेस ॥ छं० ॥ १०६५ ॥
धरधुंध रज छदि व्योम। सद नास थिर गहि गोम ॥
कठ कमठ पीठ कमंठ। थल विथल फिरत न कंठ ॥ छं० ॥ १०६६ ॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात। सर सूकि सवित उपात ॥
मम चढ़हु पंग नरिंद। हरहरत गगन गुरिंद ॥ छं० ॥ १०६७ ॥
हरि सीस रज वरषंत। द्रिग उरग मद्धि परंत ॥
हुंकार प्रगटित अग्गि। चिय नयन प्रजलि विलग्गि ॥छं०॥ १०६८ ॥
ससि तवैं अमिय पतंत। [1]अवि वुंद सिंह जगंत ॥
ववकारि [2]गज्जत सद्द। विहुरत धवल दुरद्द ॥ छं० ॥ १०६९ ॥
सिव फिरत तिन सँग जूर। नन चढ़हु पंगह सूर ॥
ब्रह्मंड नष अरु एक। इल मिलत होत समेक ॥ छं० ॥ १०७० ॥

(१) ए. कृ. को.-आप। (२) ए. कृ. को.-सज्जत।

गन सैंन विथुरित भूमि। घन मिटत नासा धूम॥
जल प्रलय लोपत लीह। धर विथरि होत अगीह॥ छं० ॥१०७१॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। नीसान गज्जत गोम॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक ढरति अवाज॥ छं०॥ १०७२॥

कवित्त॥ डर दुग्गम षरहरहि। अढर ढरि परहि गरुअ गिरि॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसमसहि हयनि भर॥
सर समुंद षरभरहि। डिढह डिढ डाह करकहि॥
कमठ पिठ्ठ कलमलहि। पहुमि महि प्रलय पलट्टहि॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुनि ब्रह्मंड विछुट्टि हय॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहित प्रलय पलट्टि हय॥
छं०॥ १०७३॥

दूहा॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय बाग॥
मुगता ग्रह सुक्क कवित्त कह। [1]जलथल यग्ग अमाग॥छं०॥१०७४॥

कवित्त॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ठ दिग्गं [2]करवर कर॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करतु फनवै फन टारहि॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ षोपरि जल भारहि॥
भारहि सुजल्ल पुप्परि उछरि। उच्छरि है पायाल जल॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल॥
छं०॥ १०७५॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सवल्ल॥
छत्रपति करि जीरन भषिग। तूं नित नितह नवल्ल॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि निष्ष महि। रमहि न गंग सु तट्ट॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुहित सु वट्ट॥छं०॥१०७७॥

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को.-करु। (३) मो.-मट्ठ, को.-झट्ट।

भौ टामंक दिसि विदिस कहु। बहु पप्पर बहु राव ॥
मनु अकाल टिड्डिय सघन। पक्ष्य छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे। मनों रब्बि रथ्थं सु आने प्रहारे॥
जिके स्वामि संग्राम झल्लै दुधारं। तिनं ओपमा क्यों बदी जैं छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं साहियं वग्ग गट्टे न लारा। मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टे जिकारा। सयं सज्जियं सूर सव्वै [2]करारा॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पाषरे प्रान जे मार वारा। तिके कंध नामै नहीं लोह झारा॥
तहां घाट औघट्ट फंदै निनारा। तिनं कंठ झूमंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर वज्जै तुरक्की। तिनं धावतें धूर दीसै पुरक्की॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की। तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंपी न झंपी मनक्की। तिके सास कट्टै न चंपै न नक्की॥
तिनं राग चंपै न सुद्दी डरक्की। मनों ओपमा उंच आए धरक्की॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी। गनै कौनं कंटील कंटील कच्छी॥
धरं षेत षुंदंत रुंदंत वाजी। [4]हरंवी हए एक तत्तार ताजी॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे। मनों दुझन दल तुच्छ देषंत लाजे॥
इसी एह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ। तिनं रब्बि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डंबरी रेन अप्पै न पारं। अषीनं [5]पषीनं सषीनं निहारं॥

(१) ए. कृ. को.-लाजी अहारे।
(२) ए. कृ. को.-तुषारा।　　(३) ए. कृ. को.-सिंधं।
(४) ए. कृ.-हेरंवी हए एक ताजी तत्तारी।　(५) ए. कृ. को.-अपीनं।

तहां कोन सामंत राजं न [1]ठट्ठै। मनों मेर उत्तंग हस्ती न चट्ठै॥
छं० ॥ १०८६ ॥

मुषं जोव जोवं भरं भूप भारे। [2]तिनं काम कनवज्ज मभ्भै पधारे॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा॥ भर हय गय नीसान बहु। इह दिष्षिय सह थान॥
जौ चढ़िजै हर [3]दिष्षियै। त्रिहु दिसि समुद प्रमान॥
छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज। जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे।
मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे॥
चमक्कती सनाह संग बीज तेज विप्फुरै।
मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै॥ छं०॥ १०८९॥
सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई।
मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई॥
गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ विथ्थुरे॥
सुने सवद्द तेज सूर कायरं स विद्दुरे॥ छं०॥ १०९०॥

इतने बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा॥ सुनिय सबर दल गंग हिन। लंगा लोह उचाय॥
पंग सेन सम्हौ [4]फिरिय। बोलि वज्ज विरुझाइ॥ छं०॥ १०९१॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त॥ लंगा लोह उचाइ। जूह झल्लिय संमुह भिरि॥
दुज्जन सलष पुंडीर। धरै बंधव उप्पर करि॥
तूंअर तमकि ततार। तेग लीनी गढ़ तत्ती॥
बर पुत्र मित्र अचाल। भान कूरंभ सुभत्ती॥
सांषुला सूर बंकट भिरं। मोरी केहरि सूर भर॥

(१) ए.-डट्ठै। (२) ए. कृ. को.-फिनं।
(३) मो. दिष्षिकै। (४) ए मो.-परिय।

मह पंग सेन सम्हौं भिरिग। सु वज्जि वीर वर विप्पहर ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं। षग्ग षोलं झरं ॥ वीर हक्कं वियं। लोह लग्गी लियं॥
छं० ॥ १०९३ ॥

षग्ग लग्गे स्रूलं। भिन्न रत्तं पलं ॥ वीर हक्के अरी। घाय वज्जं घरी॥
छं० ॥ १०९४ ॥

तुंग वाहं वरं। नंषि वड्डप्फरं ॥ वीर लग्गे भरं। कालते संघरं ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

द्रोन नंचं धरी। मार हक्कं परी ॥ कूक वीरं करी। गिद्ध उड्डे डरी॥
छं० ॥ १०९६ ॥

टूक पावं बटं। षग्ग टेकें उटं ॥ घाइ घुम्मे घनं। मत्तवारे मनं ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

कंधनं बंधरं। जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चसी। सूर पानं हसी ॥
छं० ॥ १०९८ ॥

घाव वज्जे घटं। पाइ कैं सुब्बटं ॥ अंत तुट्टै वरं। पाइ आलुझ्झरं ॥
छं० ॥ १०९९ ॥

भट्ट ऐसे रजं। तंति वंधे गजं। मुगति मग्गे अरी। षग्ग षोली दरी॥
छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवरत। पंग संघार अरिय पर ॥
लुथ्थि लुथ्थ आहुट्टि। रुद्र रस भयत वीर वर ॥
हय गय नर भर भरिय। पऱ्यौ रन रुद्धि प्रतापं ॥
षग्ग मग्ग अरि हलिय। चलिय धारनि धर आपं ॥
दुअ जन्न भट्ट हक्कारि करि। कमल सेन जिन चिंत परि ॥
उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों। गोटन कोट गहन फिरि ॥ छं० ॥ ११०१ ॥

चौपाई ॥ धाए न्त्रिपत न लोह अघानं। छुट्टक सिद्ध किद्ध लिरझानं ॥
संझ किधौं घरियारन घाई। चच्चर सौं चुतुरंग बजाई ॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा।

दूहा ॥ भंजन भीरन जो न्टपति। करिभन भौंर चरंच ॥
सांई बिन जीवन्न कों। पोहनि कारन छ पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान चलि। भान भिरंतह भान ॥
अस्ति समंपिय भान कों। दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो सिग सु। गंध गज मद झरि दानं ॥
सो कायर पत पीप। पत्त झर झर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन। मान भिरि भिरि अग्गह हर ॥
लज्जा छोह सुरंग। रंग रंग्यौ सु सुरंग वर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर। कूक कूह कोकिल कलह ॥
फूलिग्ग सुभर अंजइ सुरन। पवन त्रिविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥

अट्ठ अट्ठ अरु अट्ठ। एक आगरे पंच वर ॥
षग्ग मग्ग दित पत्त। भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
धर पलचर हर रंभ। नंद नरिंदह आघाई ॥
सुगति त्रिपंग मन मज्जि। अंब पीवन जिहि आई ॥
गोरष्य कित्ति जित्ती सपन। मात पित्त गुर बंध [1]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं। इन समान कीरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥

अरिल्ल ॥ ठट्ठ के सुसेन पहूपंग अग्गं। छिले लोह सूरं मनं ज़ंग भग्गं ॥
सबै धाय बीरं रहै बीर पासं। न को कंध कट्टै ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना।

दूहा ॥ पंग प्रपत्तौ पुत्र दिषि। झुकि किय [2]मुष दिसि वाम ॥
बीर मत्त रत्त नयन। उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत। (२) ए. कृ. को.-सुख।

पंग पुत्र के वचन।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ। राज संमुह उच्चारिय॥
असुर ससुर नर नाग। जुद्ध दिष्यौ न संभारिय॥
अप्प सथ्थ [1]मुनि सामि। अरिन सम्हौ छक्कारिय॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध। जीह आवै न प्रकारिय॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के। धनि सु हथ्थ पहुपंग भर॥
घरि तीन मोहि सुझयौ न कछु। सार अगनि अग्गैं सु नर॥
छं० ॥ ११०९॥

नन जित्यौ दल अप्प। दल न भग्गौ चहुआनं॥
द्वादस हथ्थिन वीच। लुथ्थि पर लुथ्थि समानं॥
पच्छै दल सुनि स्वामि। लोह छीनं अनलोपं॥
राज कहन मुकलीय। सामि अवगुन सुनि कोपं॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन। रन में ढुंढिय पंग वर॥
हज्जार उभै अप सेन परि। तुच्छ सु परि चहुआन भर॥छं०॥१११०॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर। चित्त सपच्छ हस हथ्थ॥
यों चलै चहुआन दल। लच्छि गमाई हथ्थ॥ छं० ॥ ११११॥
[2]झुक्कि पंग दिय हुकम सह। गहन मीर चहुआन॥
प्रात सु डंबर मझझतं। किरन सु छुट्टिय भान॥ छं० ॥ १११२॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लवलीन होना।

पद्धरी ॥ बर हुकुम पंग दुअ दीन दीन। मंची सुमंचि सजि सिलह लीन॥
अप्पों तुरंग पहुपंग फेरि। भर सुभर लेत घन मझझ हेरि॥
छं० ॥ १११३॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनि। (२) ए. सुकवि, कृ. को.-झुकावि।

गजराज पंच आकास आन्न ॥ सोभै सु पंग रत्ते नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजै सु लीन। चहुआन भूलि वर चरित मीन ॥
छं० ॥ ११९४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्र जु भुल्लि वहु। नट नाटक वहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग कौ। हरि चित रत्ती रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुलि। अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौ। छुट्टि सु मंची सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं। रसं वट्ट जानं। लहु क्रूर मानं ॥
छं० ॥ १११७ ॥
लघै चट्टि चव्वं। वरं रत्त रन्नं ॥ हयं उट्टि तिन्नं। तुलं वज्र छिन्नं ॥
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं सोभ घन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हयं वीव तानं। वनं नप्पि धानं ॥
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध तीनं। घची विभ्भरीनं ॥ [1]रठं रंक धन्नं। सुनी सुद्ध मन्नं ॥
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कठ्ठि लिन्नं ॥ [2]जवं जानि तीनं। जुधं जीत वीनं ॥
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदाहत्त पंनं ॥ धरं दुद्व रानं। ससी झल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं लंघि पूरं ॥ जहं जं प्रियारीं। रुके पार सारी ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल। दई समानति रुक्कि ॥
जंघारो जोगी बली। बावारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय सुक्किय न पग। लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो.-टरं। (२) ए. कृ. को.-बजं।

पंग सम्मुह संमुह पऱ्यौ। हर वडवा नख धाइ॥ छं०॥ ११२५॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्दे क वारं। वढ़े षग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं॥
हयं नारि सोवान कीह्लक फुट्टै। करै हथ्थ छत्तीस आवद्ध छुट्टै॥
छं०॥ ११२६॥

वरं वीर वीरं तथा विद्ध पारं। [3]पगं वाजि सो षग्ग झामं किसारं॥
सहंनाइ में सिंधुऔ राग वज्यौ। लगी लोह [4]में जुद्ध आजुद्ध गज्यौ॥
छं०॥ ११२७॥

गयं मुष्प हाकी हहाकी करारी। [5]वरं वीर सोमंचियं जुद्ध भारी॥
वढ़ी वाजि सो मुक्कि प्राधान वीरं। लगी धायसो लंगरी वद्ध पीरं॥
छं०॥ ११२८॥

पलं पंचकं लोकलं किित्ति भुल्लौ। वरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ॥
वरं लंगरी राइ प्राधान वीरं। भगी सार मा भग्गिथं सूर नीरं॥
छं०॥ ११२९॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी षग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं॥
इकं पंच तें पंचकं विद्ध नच्चं। हके तिन्न के सीस सारं सु नच्चं॥
छं०॥ ११३०॥

वरी लंगरी वीर प्राधान वारे। भयौ भार उत्तारनं वंग धारे॥
छं०॥ ११३१॥

दूहा॥ पऱ्यौ वीर लंगरि सु वर। जंघारो घन घाइ॥
सु बर वीर सामंत मिलि। मंची सोम उपाइ॥ छं०॥ ११३२॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन न्टप॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप॥

---

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंध मत्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गोरं। (३) ए. कृ. को.-पगं।
(४) ए. कृ.-सें। (५) ए. कृ. को.-कक्कारी।

लै आवौ प्रथिराज। पंग है विहुर सेन ॥
पष्पवै न पथ आज। भयौ भर अंतर केन ॥
यों करिग देव दच्छिन सु दुज। दिषि सामंत पटंग वर ॥
संजोग दासि इंदह न्रपति। ठठुकि रह्यौ [1]तणि थान नर ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना।

दूहा ॥ फिरि राजन कनवज्ज महँ। जानि संजोगिह वत्त ॥
चढ़ि विमान जै जै करहि। देव सु रंगन कित्ति ॥ छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ नगर सकल गुन मय। निहार लद्धीय सुप न्रपति ॥
मंडप सिषर गवष्य। जालि दिट्ठी सु विचित्र अति ॥
द्वार उंच पागार। विपुल अंगन आगारह ॥
जह तहं निझ्झर झरंत। निरमल जल धारह ॥
नर बाज दुरद वन गेह पसु। भरिय भीर पट्टन परम ॥
सुर असुर चमंकत सबद सुनि। सु फिरि समुद मथ्थन भरम ॥
छं० ॥ ११३५ ॥

दूहा ॥ करिग देव दच्छिन नयर। गंग तरंगह कूल ॥
जल छुटै तब इच्छ करि। मीन चरित्तन मूल ॥ ११३६ ॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना।

भुजंगी ॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी। नकस लाज वर्दं सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्ने। रही फैलि रवि इंद मानों किरन्ने॥
छं० ॥ ११३७ ॥

हसै घ्याल षेलै तहां म्रग्ग नैनी। भरें माग मुत्ती गुहै बैठि बैनी॥
सजै छत्र आचार आनंद भीनै। तिनं सीस भीरानि आदत कीनें॥
छं० ॥ ११३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेहि।

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं । तनं चीर सारी पटं कूल नेसं ॥
चमक्कंत चौकी कनैं फूल झब्बी । गरैं पीति पुंजं रिदै हार फब्बी ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

कटिं छुद्रघंटा वंली जे वनीयं । पयं झंझनं सद्द श्रवने सुनीयं ॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं । लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं ॥
छं० ॥ ११४० ॥

वनी निकट नारी सुगंधाय वासै । सवै चंद वदनी तहां चंद भासै ॥
तहां संभरी नाथ लागै तमासै । लरैं मीन हय फीन, तिन देषि हासै ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

कुंडलिया ॥ मीन चरित्र जु भुल्लि न्टप । पंग न भुल्लिय युद्ध ॥
तीन लष्य अग्गों न्टपति । जो भारथ्थ विरुद्ध ॥
जो भारथ्थ विरुद्ध । दई अंगमै सु सब्बल ॥
दई वन लाई कलिय । जुपिय रुक्कियै सवद्दल ॥
वल अभंग अरिभंग । पंग सिर पान सु लिन्नौ ॥
कहर कन्ह साहस्स । सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ ॥ छं० ॥ ११४२ ॥

दूहा ॥ इतें सेन चढ़ि पंग वर । द्वै गै दिसा दिसान ॥
दछिन नैर नरिंद करि । गंग सु पत्तौ ध्यान ॥ छं० ॥ ११४३ ॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों को मछलियों को चुनाना ।

चन्द्रायना ॥ भूलौ न्टप द्रह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह ।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लष्य दह ॥
होइ तुछ तुच्छ सु मुत्ति मरं तन कंठ लह ॥
पंक प्रवेस हसंत झरंत न कंठ मह ॥ छं० ॥ ११४४ ॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गौख में से देखना ।

कवित्त ॥ सुनि वज्जन संजोग । सुनिय आवन्न न्टपति वर ॥
भयौ चित्त चर चित्त । मित्त संभरि सु रंग नर ॥

बल बींटिय राज नह। लाज रष्षी मत किन्नौ ॥
गौष कुंअरि सिर रही। उठि सुंदरि बर चिन्हौ ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन न्टप। बर लोचन मन षग्ग मग ॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु डग ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पव्वय ॥
पव्वय उप्पर भ्रंग। भ्रंग उप्पर ससि सुभ्भय ॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर न्टग दिट्ठौ ॥
न्टग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प वयट्ठौ ॥
अहि मयूर महि उप्परह। हीर सरस हेम न जऱ्यौ ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पऱ्यौ ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

दूहा ॥ भूल्यौ न्टप इन रंग महि। पंग चल्यो हय पुट्ठि ॥
सुनि सुंदर बर वज्जने। अई अपुब्ब कोइ [1]दिट्ठ ॥ छं० ॥ ११४७ ॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ौ मन आस ॥
नर कि देव किधों नाग हर। गंगह संत निवास ॥ छं० ॥ ११४८ ॥

अरिल्ल ॥ बजि वीर निसान दिसान बजी। सु किधों फिरि भद्दव मास गजी ॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सज्जी। सुनि सोर संजोग सु गौष रजी ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

चौपाई ॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। षिन अलपह तलयह मुष झल्ली ॥
देषि रंजि संजोगि सु अल्ली। फूलि वाह मुष कुमुदह कल्ली ॥
छं० ॥ ११५० ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना ॥

स्लोक ॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते ॥

(१) ए. कृ. को.- दुट्ठि। (२) ए. कृ. को.-बढ़ौ। (३) ए. कृ. को.-वजी।

कामधुज्ज वर वीरं। विगलति नीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१ ॥
मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि चिकंडं ॥
फरन फराक भये षग भग्गे। जनु चंमक लोहान सु लग्गे॥छं० ॥११५२॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति विंव निरष्षि हरष्षिय वाल। लई सषि सथ्थ चढ़ी चित्रसाल॥
साइक्क समान न प्रौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार सु षोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥
स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नेंन सु मेंन निबद्ध ॥
पिनं पिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजैं किम कोकिल जास रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
लगी वर जालि न गोपन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्र समाइ ॥
रही वर देषि टगं टग चाहि। मनों चित्र पास न कै दिन जाहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधों दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधों मन मध्य कै काम अकार॥
छं० ॥ ११५६ ॥
कि इंद फनिंद नरिंद्द कोइ। किधों व्रत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक्क कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक्क कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद ॥ छं ॥ ११५८ ॥
सुनि वर सुंदरि उभैं तन। उभैं रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नेंन पिषत प्रथुरंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

त्रोटक ॥ हिय कंप विकंप विपथ्थ पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

निज निंदति मंथुर पंथनियं। धव धक्क धकं धक अस्ति हियं॥
सुर भंग विभंग उमंग पियं। रद मंडल षंडल चंपि लियं॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर झारि नितंब छियं। रिजु नेंह दुनेह चिमंग चियं॥
चिबुकं चिकु उद्दिम विंदु धुअं। कटि मंडल हार बिहार सुअं॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी बर भंगत पौ पलकं॥
सत भाव सतं [1]तिल की कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथयं
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँस्सिह रम्य करी करयं। सषि साषि परष्षि हँसी हरयं॥
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना।

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अवली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सह हीनं, भिन्नं की माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुड्डन थह कली॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुझ्झिझय पेम सु मंझ चिय॥ छं० ॥ ११६६ ॥

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल्ल ॥ सारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भी लोचन नीरं॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठुर लगि तीरं॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जन गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि॥
अमहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुल अच्छै पुच्छ बिकार आवहि॥
छं० ॥ ११६८ ॥

---

(१) ए. कृ. को. तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

चोटक ॥ मन पंचिय सौजुग यौ जविघं। सुमरौं मन लज्जिय मात पघं ॥
अध दिट्ठ करी चितयौ सु हितं। गुरनी गुर बंधिव गंठि चितं ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

चन्द्रायण ॥ जनो गोचर कथ कलंनि कथं कय अप्पियं।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भप्पियं ॥
जान इहै परमान विधानन लप्पियं।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अप्पियं ॥ छं० ॥ ११७० ॥
तत्र पंगुर राय सु पुत्तिय मुत्तिय थाल भरि।
जौ हिय इह प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि ॥
जौ इन लच्छिन सव तत्र विचारि करि।
है व्रत मोहि न्रप जीव तौ खेउ सजीव वरि ॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिट्ठ फंद संजोग। दासि पिल वारि हथ्थ दिय ॥
म्रग वंधन चहुआन। पुत्र ओतान पेद किय ॥
पुत्र रूप गिद्दीव। मद मन मथ्थ संभारिय ॥
भय म्रग पंग नरिंद। चंद वंधन वन डारिय ॥
हक्कैति हक्क हाका सपिय। मूर गौष अपवंध सिय ॥
वेधंत आनि वानह [1]अभुल। अगुक सीस कामंग इय ॥छं०॥११७२॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना।

दूहा ॥ सुंदरि धरि अवननि सुन्यौ। गुन कह्यौ गुनं विद्ध ॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय। प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध ॥छं०॥११७३॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ निचारन वुल्लइय।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथीति प्रसंग तिय ॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंजुलिय।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंजुलिय ॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे विना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना।

(१) ए.-अभुज। (२) ए. कृ. को.-परष्षि।

दूहा ॥ अंजुलि जल मंडत नृपति । जव विक्कै गलमुत्ति ॥
जलहल भै अंमन कियौ । षमीति वाल निपत्ति ॥ छं० ॥ ११७५ ॥
गौष निरष्षहि सुभ्भ चिय । हियै हरष्षहि वाल ॥
उभै पानि एकत करिग । दैषि गुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

वृत्त नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि (१)चंद ए ॥
अपंत अंजुलीय दान जान सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए ।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति वित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए ।
... . ॥
सुटेरि नैन फेरि रेन तानि पत्ति चाहियं ।
तरप्पि दासि पास कंपि संकियं न वाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात अम्म दिष्षयौ ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग नित्त पिष्षयौ ॥
अनेक संग रूप रंग जूप जानि सुंदरी ।
उछंग गंग मद्धि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे ।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अद्दरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये ।
करी न केहरी न दीप इंद एन यान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतष्ष हीर जुद्ध धीर जौ सुवीर संचही ।

(१) मो.-बन्दए ।

बरंत प्रान मानि नीच सो सु देन गंठही ॥
सुनंत छूर अश्व फेरि तेज ताम हंकयं।
मनों दृग्गि रिद्ध पाद जाय कंठ लग्गयं॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक कोटि अंग धात रास बास मालची।
रहंत भोर भोर स्याम छत्र तत्र कामची ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक अलि हल्लियं।
मनों मयन्न रत्ति रन्न काम पास घल्लियं॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करल्लि काम कंकनं जु पानि फंद माजए।
जु भावरी सपी सु लाज भुंड सो विराज ए॥
अनेक संग डोर रंव रत्त मत्त सस्सियं।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तस्सियं॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सव्व दोउ पष्प जंपियं॥
सु गंट्ठि दिट्ठ एक चित्त लोक लीक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं।
मुसकि मंद हासयं ससुप्प दिप्पि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी।
भिलंत होय कथ्य मोहि स्वर्ग वास मंदरी ॥
अनेक सुप्प सुप्प सास जुद्ध साध लग्गियं।
सुकंत कंति अप्यिता तमोरि मोरि अप्पियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध धिरताईं कहत। विड्डिय विड्डि निपद्ध ॥
सुप्प सु विड्डय जान सें। मुप्पह विड्डि निषिद्धि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दियन सासु सहस वखिय। अरि चत्त सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है। मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्रित चित्त चहुआन हुअ। दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कट्टन मिसह। जहां रन्न विष वद्द ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर बेदिल होजाना।

(१) ए. कृ. को.-संगरी। (२) ए. धिरताई कृ. को.-धिरताई कहै।

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन न्रप वर ठट्ठी। भेद बांच पंडुर तन चट्ठी ॥
उष्ट कंप जल नेंन जंभाई। प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८९ ॥
दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी। रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
इंद्र इंद्र रस भरि ढरि चीनौ। मनो मुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११९० ॥
करिवर दासि संजोगि दिषाई। दिष्षत न्त्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंकत तुछ तन स्वब्ब न सारन। सुकल ससि रवि हस्सै पारन ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दूहा॥ चंद चमक झंषिम गवष। चंद्र पत्ति दुति मार ॥
मनों बदन चहुआन कौ। बंधति बंदर वार ॥ छं० ॥ ११९२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ बंधन हो जाय तो अच्छा हो।

मुरिल्ल ॥ कुसल जोग[१] राजन चित हट किय। जनम पुब्ब प्रथिराज घट्ट किय ॥
वर बिचार वर बाल बुलाइय। गंठ जोरि ग्रह वर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११९३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [२]जित्त हर। अनजंपै विहरंत ॥
अहि डट्ठै छच्छुंदरी। हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११९४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना।

चन्द्रायन ॥ उतर देन संजोगिय धाइय दासि दस।
चावद्दिसि चहुआन सु बिट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस।
मनु दह रुद्र न बिंटि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११९५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना।

(१) मो.-रोज। (२) ए. कृ. को-चित्त।

दूहा ॥ सुक्कि सुवर चहुआन को। अखी सु कहिय सु वत्त ॥
पुब्ब अंक विधि वर लियौ। को मेटे विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ। जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति। मनु पुच पंग सु एह ॥ छं० ॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना ।

कवित्त ॥ देषि तथ्य संजोगि। नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम। कटाच्छ दुज बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर। [1]वयन अंदोल कसय सव ॥
हरन दुष्प द्रुम रुम मिवालं। कुच चक्र वाक सोदि सव ॥
द्रिग भवर मकर विंवर परत। [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]वर विदुर न्रपति म्रनाल नें। नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा ।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्यहन। सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिपि विवाह सुभ्यौ वदन। ज्यौं सुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता ।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय। कौन वंध्यौ अकास मज ॥
अमर न देषे देव। वेद गंध्रब्ब रिषिय सुज ॥
रुषमनि अरु गोविंद। वेद गंध्रव सुष किन्नौ ॥
दमयंती नल व्रत्त। पत्त अग्गं तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सव।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनों मुनि सकल अंग ।
(३) ए. कृ. को.-वर विदुर नृपति मृनालते तत जानो केहि दाहि लागि ।

यों वृत्त खीन संदरति पन। धावि अगें सो सुन्नही ॥
संजोगि अंग जो विहि लिष्यौ। सो मिटे न सिर नन धुन्नही ॥
छं० ॥ १२०० ॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना।

दूहा ॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि। दिसि सुहथ्थ वहु लाइ ॥
मिलि कमोद सत पच रवि। दूती दूह न माइ ॥ छं० ॥ १२०१ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना।

हनूफाल ॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ। मनों सरज जोरित नथ्थ ॥
संजोगि न्रप बर राज। उप्पंम कवि बर साज ॥ छं० ॥ १२०२ ॥
पद्मिनिय पन्न प्रमान। हरु अंग्रिआन अधान ॥
सषि विंट दंपति सोभ। कविराज ओपम लोभ ॥ छं० ॥ १२०३ ॥
दिषि चंद रोहिनि लास। गइ लास कुमुदनी पास ॥
फिरि रंभ आरँभ कीय। न्रप वाम वाम सुलीय ॥ छं० ॥ १२०४ ॥
तन बंध मन दै दान। न्रप छोरि गंठ [1]प्रवान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १२०५ ॥

दूहा ॥ वरि चल्ल्यौ ढीली न्रपति। सुत जयचंद कुमारि ॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग। प्रान करिग मनुहार ॥ छं० ॥ १२०६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना।

कहि चल्ल्यौ चहुआन चित। उरझे चित्त सु [2]पथ्थ ॥
[3]वद चल्ले प्रथिराज न्रप। हठ संजोगि सु तथ्थ ॥ छं० ॥ १२०७ ॥

श्लोक ॥ प्रयाने पंगपुत्री च। जैतिकं जोगिनीपुरं ॥
विधि सर्व निषेधाय। तांबूलं ददतं न्रपं ॥ छं० ॥ १२०८ ॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना।

गाथा ॥ सुनि इंदो अनुराओ। दिट्ठो रिझाइ सब्ब सो अप्पं ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमांन। (२) मो.-तथ्थ। (३) ए. कृ. को.-वदालि चले।

दै हथ्यं हवि छुट्टा। छाहं जे बज्जनो हियये॥ छं० ॥ १२०९ ॥
इंजेह आइ नंषी। कंपी तनपाइं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं। या [1]बाला जोवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नग आसुर सु रंभ मन। [2]सवल वंध अवलेह ॥
थान लाज चहुआन कौं। टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन ।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं। रह्यौ विचारि कब्बि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै। तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम मो मन सा जानं। जो हत लीय जिहो चहुआनं ॥
सुष भरि वेंन नेंन अवलोकं। गंठि वंधि पुव्वह परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कह्रं कंति धर मुछि वल वुल्ली। पौन देहु दुति छुट्टी लल्ली ॥
कल अधकी अध छिप्पत मन्नं। रुकि चतुर्राथ्य सुकल ससि जन्नं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी। [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी। रष्पि सषी सषि सों सषि जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दक्षिण से अनुकूल होजाना।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ। रिझ्झाए सव सोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही। देह जे वज्र न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
वर दच्छिन पुव्वह न्टपनि। भौ अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्ह अप्पन वावन। पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
मुरिल्ल ॥ मन रूषी तन पिंजर पीरे। दंपति दुष जंपति तन तीरे ॥
हरुअ दुष्प सुष सषी प्रगासी। परमहंस गुर वैन सन्यासी॥छं०॥१२१८॥

(१) ए. कृ. को.-बाले। (२) ए.-सपल।
(३) ए. कृ. को.-माहस अद्ध घरी घर संसी।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रोलव रावदित।

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। अंषि कनक क्रप नंधन ॥
न्रप मन धन दक्षिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यों कुलाल घट अग्गि। पचषयौं उमझि उट्ठि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहुन कहि। बिछुरि साथ चक्रवाक जिम ॥
ज्यों सहै दुहन जिहि कुल बधू। कहत साध पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि न्रप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज ने। ज्यौं रति बिछुरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्षि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो जनु व्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज न्रप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बाढय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सों। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुझ्झयौ। वाम जग्ग्यौ जु कंक अगि ॥
बर दंपति हथ लेव। बंधि बंदी उपंम मनगि ॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

कै भगि भगि भन्नि पाल। मंगि माला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्प वर। देव देव मिलि जंपइय ॥
भांवरिय लाज सपि ज्यों जुरिय। धीर वीर [1]मिलि वज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पन्यौ राव लंगरी। पंग भंजै परधानं ॥
इर्द दमन कूरंभ। परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले संमरह। सिंह न्त्रिग्रान सभानं ॥
वर प्रताप तूंवर ततार। सकति सुनि न्त्रिप कानं ॥
रघुवंस भीम जै सिंघ दिनि। भान भष्प गौ झुलयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली वहुअ। न्त्रिप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ।

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्त्रपति। वत्त कहंतह वेर ॥
फिरि सामंतन सूर मिलि। करहि न न्टपति अवेर ॥छं० ॥ १२२७
दुज दासौ संयोग पै। कहन लोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित। ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥
कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि। जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्य न दुष्य। जीत भौटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी। गिद्ध वेताल सु कंपी ॥
हंस हंस उड़ि चलै। रुद्धि जल कमल नियंपी ॥
रस वीर विचें सेवाल कच। क्रित्ति भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल कित्तिय अथय। सूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥
दूहा ॥ सुनिय वयन संजोगि कहि। लिषि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्त्रिम्मयौ। मिलन तेहु चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना।

(१) ए. कृ. को.-मिसि। (२) ए. कृ. को.सलयानं। (३) ए. को.-इत्तह।

चौपाई ॥ लै पटि बंचि कन्ह गिरि संगं । चल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम वर चल्लै चहुआनं । तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । पास गुर कन्ह मन ॥
चिंति स सूर सँजोग । चल्यौ चहुआन राह पन ॥
सौ क्रम दस ता अग्ग । पंग दल रुद्धि जुद्ध बल ॥
इक्क कहै [2]प्रिथु पथ्थ । इक्क तप जुत्त जुधिष्ठल ॥
रुकयौ रतन सा निद्धि पत । रतन सौंह चिहु मग्गि गसि ॥
झंकारि सूर सम्हौ फिरिय । संभरि वै कढ्ढीति असि ॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना।

नंषिहै मान नरिंद । बज्जि षुरतार कंपि भुअ ।
बज्रघात न्रिघघात । वज्र संपत्त कंपि भ्रुअ ॥
अट्ठ सु चल दह विचल । उड्डि बंबर धर धुम्मर ॥
बजी सद्द पर सद्द । मद्दतजि रह्हिग मद्द करि ॥
अै चक्क सुभर न्रप बीर वर । लष्षि वीर चहुआन वर ॥
[3]बर नच्चे बीर सुनि कन हंसे । जियत बत्त प्रथिराज नर ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसल्मान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी । पंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ौ, तेज बीयं बढी । बान नष्षं भरं, मोह [4]मंमं झरं ॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज बिच सारयं, पंच हज्जारयं । बंक धंकं डनी, बीर नंषे धुनी ॥
छं० ॥ १२३६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध। (२) मो.-प्रथिराज।
(३) ए. कृ. को.-वरनवे। (४) ए. कृ. को.-मत्तं जंर।

रापि लज्ज धनं, बोलि पत्त मनं। फौज फट्टी फिरी, कन्ह रुक्के अरी॥
छं० ॥ १२३७ ॥

सामि कट्ठे बलं, काज रुद्धं पलं। ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर। जद्द रुक्यौ न्रप अग्गा ॥
राज कन्ह दुज गुरू। सार छल सूरह लग्गा ॥
नग सम सत्त पुरप्प। पूर मंचह असि वर पढ़ि ॥
होम जाप जुथ्यौ सु। वीर सरसं प्रहार चढ़ि ॥
सम सेवग सेव सु स्वामि ध्रत। कित्ति देव संतोष बलि ॥
पॅड अग्ग भाग प्रथिराज कौ। देव ध्रम्म उग्गारि बल ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

फिरि पच्छो चहुआन। वान आरोह प्रथम करि ॥
पां वहिरम वरजही। फुटि टट्टर टरिग्ग धर ॥
वीय वान संधान। पान पीरोज सु भग्गा ॥
पप्पर अश्व पलान। मीर सहितं धर लग्गा ॥
त्रय वान कमान सु संधि करि। सुगति मग्ग गुन चंद कहि ॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड। वालि प्रान संमह सढहि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

वान चवथ्थै राज। तूटि कंमान पनक्की ॥
उडि गासी छुटि तीर। [1]पंच वहु सद्द भनक्की ॥
इति उत्तरि चहुआन। षग्ग कढि वज्र कि पायौ ॥
दुति उप्पम कविचंद। तीय विक्रम असहायौ ॥
नषि राज वाज उप्पर वसिस। सक्क मीर अवसान चुक्कि ॥
षग मीर ताप तप्यौ नही। मुक्कि अस हिसि वाम धुक्कि ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

(१) मो.-पंच।

दूहा॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि। नर भर दिसन दिसान॥
पंग राव कोपिय सुबर। गहन मेछ चहुआन॥ छं०॥ १२४२॥
रैन परै सिर उप्परै। हय गय [1]गतर उछार॥
मनहु ठग्ग ठग मूरि लै। रहिग सवैं मुंछार॥ छं॥ १२४३॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना।

मनहु बंध अनभूति धर। है तिन जानत थट्ट॥
बच्चन स्वामि भंग न करहि। सह देषहि न्टप बट्ट॥छं०॥१२४४॥
अवलोकति तन स्वामि मन। भौ सामंतनि सुष्ष॥
हँसहि सूर सामंत मुष। कायर मानहि दुष्ष॥ छं०॥ १२४५॥
धीरत धरि ढिल्लेस वर। बहु दंती उभ [2]रंभ॥
न्टपति नयन तन अंकुरे। मनहु मद गज सोभ॥ छं०॥ १२४६॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं।

कुंडलिया॥ देषि सुभर न्टप नेन। आनि भौ आनंद चंद॥
अरि गंजे रुप न्त्रिप्प। बीर हक्के ग्रह दंद॥
बीर हक्के ग्रह दंद। मुकति लुट्टे कर रस्सी॥
आज सामि रन देहि। बरै अच्छरि कुल लस्सी॥
काम तेज संभरी। देव कंदल जुध पिष्षे॥
गुरु गल्ह उच्चरै। टुट्टि धारा रवि दिष्षै॥ छं०॥ १२४७॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है।

दूहा॥ हरषवंत न्टप भत्त हुअ। मन मझ्झह जुध चाव॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ। कह्यौ कन्ह इह काव॥छं०॥१२४८॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय। धर भर छंडि फं,निंद॥
इह अपुब्ब धीरत्त तुहि। कंकन हथ्थ नरिंद॥ छं०॥ १२४९॥

(१) ए. कृ. को.-गज। (२) मो.-रोस।

छय्यह कंकन सिर तिलक । अच्छित लगे लिलार ॥
कंठ माल तुम्र कंठ नहि । कहि न्रप कवन विचार ॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका ।

चौपाई ॥ सुनि सुनि वचन भुमि सिर नायौ । कपन दान ज्यौं वंजि दुरायौ॥
पंच पंच अन्न लीन क चिंतर । छंडित वह्नि दियौ तव उत्तर ॥
छं० ॥ १२५१ ॥

वरिय बाल सुत पंगह राय । वह व्रत भंग मोहि हत जाइ ॥
तिहि संधहि अव जुद्ध सुहाई । अथ्यि अवासह देउं वताई ॥
छं० ॥ १२५२ ॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा ।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं । छंडिय कन्ह रुदंत अवासं ॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ । तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ ॥
छं० ॥१२५३ ॥

जौ अरि थाट कोरि दल साज । तौ दिल्लिय तषत दैंहि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै तोहि । परनि मुक्कि सुंदरि इह होइ ॥
छं० ॥१२५४ ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम ।

स्लोक ॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु । कामकालेषु शोभिता ॥
सर्वं च वल्लभा बाला । संग्रामे नन गेहिनी ॥ छं० ॥१२५५ ॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे ।

चौपाई ॥ हंम सौ रजपूत रु सुंदरि एक । मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक ॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि । तौ दिल्लिय तषत दें हि प्रथिराजहि॥
छं० ॥१२५६ ॥

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान । जोग मंडन सुष मंडन ॥
दुष बंटन जम ग्रसन । नेह पूषनि मन षंडन ॥
काम वंत सोभाय । पूर चित समर विमत्तन ॥
भय सुष दिष्षत मोह । लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुबरनी सरम रूष । करहि सरन अनमुष्प रुष ॥
अरि धरनि मुक्ति धारन न्रपत । चलहि कित्त जुग एक सुष ॥
छं० ॥१२५७ ॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ अग्नि काल धूम काल कौ । सब्ब काल सोभित्त ॥
पूरन स्रब सारथ्य सग । मोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८ ॥
भर बंकै अच्छरि बरन । रस वंके दिसि वाल ॥
दुहु बंके पारथ कारन । चढि सूरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सूरति सथ्थ हुअ । [1]रन निसंक मन भोंन ॥
सह अचार सुष मंगलह । मनहु करहि फिरि गोंन ॥
छं० ॥ १२६० ॥
पति अंतर विछुरन विपति । न्रपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कोंन विधि । दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
मुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय । सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[2]षिन तलपह अलपह मन कीनौं । ज्यों वर वारि गये तन मीनौ ॥
छं० ॥ १२६२ ॥
अंगन अंग सु चंदन लावहि । अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि । विरहायन दाहन रवि उद्दहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
फिरि फिरि बाल गवष्षनि अष्षिय । तासिष दैंन बैंन बर सष्षिय॥
विन उत्तर सु मोंन मन रष्षिय । मन बच क्रम प्रीतम रस कष्षिय॥
छं० ॥ १२६४ ॥

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-षिन तष्पन तलयह ।

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना।

कवित्त ॥ वाली विजन फिरन। चंद चारी क्रितम रस ॥
के घन सार सुधारि। चंद चंदन सो भति लस ॥
वहु उपाय वल करत। वाल चेतै न चित्त मय ॥
है उचार उचार। सखी वुझयति हयति हय ॥
श्रवनें सु नाइ जंपै सु अलि। नाम मंच प्रथिराज वर ॥
आवस निवत्त अगाद भय। तं निवलह द्रिग छिनक कर ॥
छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना।

दूहा ॥ तन तज्जै संजोगि पिय। गहि रष्यौ फिरि वाल ॥
जानि नछचिन परि गिरी। चंद सरइति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥
अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए। सोम कमल दिनयर दरसाए ॥
उझकि झंकि दिष्यो प्रन पत्तिय। पति दिष्पत मन महि अलि [1]रत्तिय॥
छं० ॥ १२६७ ॥
व्याह नाथ संजोगि सु लच्छन। जिहि तुम कर साह्यौ वर दच्छिन॥
सा तुअ तात भए दल तत्तो। सरन तोहि सुदरि संपत्तौ ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन।

दूहा ॥ ता सुष मुंदिन मोद किय। अलियन जंपहु आलि ॥
दाधेज पर लवन रस। म्रतक न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
अंध न द्रप्पन दिष्षिहै। गुंग न जंपहि गल्ह ॥
अश्रुत नर गान न लहै। अवल न [2]करै सबल्ल ॥ छं० ॥ १२७० ॥
में निषेद किनौ जु कथ। दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
टरै न गंध्रव गंध्रविय। विधि कौनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रज्जिय। (२) ए. कृ. को.-जैरे।

श्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति । तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति । यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥

दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सषिनि सों । दिषि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै । तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

इह चिंतित बत्ती सु सुनि । क्रोध ज्वाल सरि अंब ॥
रही जु लिषिये चित्त मैं । ज्यों सरद्द प्रतिव्यंब ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना ।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्षन सिर लष्यौ । अंबुज मुष ससि अंब ॥
अनिल तेज झलहल कंपै । सरद इंद्र प्रतिव्यंब ॥
सरद इंद्र प्रतिव्यंब । चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज । साज सुंदरि अपकालन ॥
हय सत भट्ट सु भूप । मग्ग भोंहैं न गनंतन ॥
मानि विसव्वा वीस । सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो ।

चौपाई ॥ झंकत न्रप दष्षी बर बुल्लै । गंग निकट प्रतिव्यंब सो हल्लै ॥
चिहलै पत्यौ चंद तरपीनौ । कै झग तिल देषि मन मीनौ ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

मुच्छि बाल संजोगि उठाई । देवर तर दिसि दिसि पट्ठाई ॥
कै श्रोतान सूर सुनि झूठे । कै कातर अवहीं न्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि । पंग पुति घटि मंत ॥
एक लष्ष भर लष्षियै । जै कढ्ढै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

---

(१) मो.-नर्जितं ।

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा। जिव्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा। अह वांमा कंत कथ्यायं ॥छं०॥१२७९॥
आर्या ॥ कहु लोभा सो चंद लासौ। मन मध्यं पहु पांजलि ॥
वरन सान निसा दिवसे। धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं लूट गई तो कहीं की न रही।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्ठहि आरुहौं। घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ। तव मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं।

तव हँसि जंप्यौ न्रप वयन। गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों। सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै वैंन। ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत। पवन हलहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै। गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सड़ै सुरलोक। लहहि अच्छरि नन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहिं बहुल। बहु समूह भुज बल कहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी। पलन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

---

(१) मो.-प्रानेव।
(२) ए. कृ. कौ.-पुट्ठौं। (३) ए. कृ. को.-मुहि। (४) मो.-चलौं।
(५) ए.-दास।

गाथा ॥ अवलोकित न्रप नयनं। वचनं जिव्हा सु कातरा सामी ॥
निंदा सह स्तु,त माने। घोरं संसार पातकी ॥ छं० ॥ १२८४ ॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त ॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत वर सद्दह ॥
करुना वुल्लि इहि बीत। रुद्र कामिनि कथ बद्दह ॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक ॥
वीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सयानक ॥
छिन संत मंत इय कंत तुअ। पिय विलास दिन करि करिय ॥
इमं कहै चंद बरदाय बर। कलहकंत तुअ तौ डरिय ॥छं०॥१२८५॥
जे पट्टुरी बिमान। तेह पट्टुरी बिमानह ॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह ॥
जिहि कित्तिय गय कोस। तेइ कित्ती गय कोसह ॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय सघन सरोसह ॥
विल्लोर पयोहर गै मलन। मलन विलोर पयोहरह ॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुअ हुअरु बसंत रह ॥छं०॥१२८६॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै ॥
महुरैजल पुट्ठै सु। पंक सरिता सर सुक्कै ॥
पानी ठाहर षेह। एह उड्डती विराजै ॥
बर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै ॥
दिगपाल कंपि हल्लि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै ॥
बर न्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै ॥छं०॥१२८७॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का बचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज बर ॥
जे भर पंग नरिंद। सबें भंजों अभंग [2]घर ॥
सम सामंत सहित्त। जंग जैचंदह मंडौं ॥
जब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त विहंडौं ॥

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-षल।

जदपि बहुत्त गोमाय गन। तदपि म्रग्गपति नह डरै॥
मससंकि चित्त चिंता न करि। पहुचाऊं दिल्ली घरै॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग वर वीर। नाग वर वीर दढिय अहि॥
जिहि कर करिवर धरिय। घरिय ते भार विदुष महि॥
चित्त करिग कुंडली। अप्प पोषंन वाय वर॥
कर कढ्ढिर कलिवान। नाहि धारंत इक्क कर॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन। सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय॥
जानैं कि हथ्थ तत्त कि त्रिय। सुवर भांजि कर कर करिय॥
छं०॥ १२८९॥

हाहुलिराय हम्मीर का वचन।

दूहा॥ हाहुलि राव हमीर कहि। सुनि पंगानी वत्त॥
एक भिरै असि लष्ष सों। सो भर किमि भाजंत॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का वचन।

कवित्त॥ कोरि एक चंचल। चलंत हवर वर पष्पर॥
ता उप्पर दस सहस। बालि जिसे असि होइ जलच्चर॥
सोलह सहस निसान। सहस सत्तरि गैवर घन॥
तीस लष्ष गैंवर प्रचंड। षग्ग फारक न्नभै तन॥
चालंत सेन विजपाल सुअ। पहुमि भार फनयति मुरिय॥
कह होइ सूर सामंत हो। पंग सु दल बल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमीं लोग हैं या कोई और।

चवै चंद पुंडीर इम। कह बल कथ्थह पुब्ब॥
पंग पंग पग नरिंद कौ। जग्य विंधवंस्यौ सब्ब॥ छं०॥१२९२॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ। बर [1]चढ्ढी द्रिग बंक॥

(१) ए. कृ. को.-उट्ठरी।

किधौं बाल मन मोहिनी। कै विय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२९३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय बचनं बर कन्ह। सीस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
ध्रग्ग जियन ध्रत सब्ब। पिंड वेचिय उर थप्पिय ॥
मल्ल वचन तन रत्त। ध्रम्म छुट्टै सुष भग्गा ॥
गरुश्र पान जो जिअन। जूह जीयनं तुछ लग्गा ॥
सो ध्रम्म छचि र्‍ष्यन [1]सु तन। जो सांमि निंद कांनन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परन आन र्‍ष्यै [2]ननैं ॥छं०॥१२९४॥

कन्ह का बचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हौ चहुआन समथ्थ। हरू[3]रिपु राय भुजनं बल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै[4]भुश्रन वर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पंन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कौं। तौं अप्पों ढिल्ली तषत ॥छं०॥१२९५॥
तेग छोरि जद्दवन। सोंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि शृंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अबलत्त छंडि मन सबल करि। बिधर राग सिंधूव किय॥छं०॥१२९६॥
सुनि उच्चरि गोयंद। गरुश्र गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हरो।
(४) मो.-भुजन।

वीर पंग लगि धीर। लग्गि को छरन छिन्न कर ॥
जुध जूह पहु पंग। करिग गौ पैज सूर सर ॥
सवर सेन भर अग्ग। धाय दुअ लग्गि सेन धर ॥
जद्यपि सु रहि रष्षै अलष। अरकु तदपि रहि हन सरै ॥
जदपि अगनि सम्हौ वलै। जीरन अग उंछी'परै ॥छं०।१२६७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निढ्ढुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी।

कहै चंद पुंडीर। सूर नहि सूर घरघ्घर ॥
चास लगै नन सस्त्र। भजै आभंग मंत्र वर ॥
पंग पान वुट्टंत। तन्न भज्जैन ज्वाल पर ॥
प्रथी जेम वल अवृन। संग चतुरंगो निढ्ढुर ॥
निमषक निकष वर ब्रह्म कौ। दौरि जुगी वहुतें जुषल ॥
असि प्रान मान सामंत कौ। न्रिप सुंदरि नन चिंति वल ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

राम राय वड़गुज्जर का वचन।

प्रति सुंदरि न्रप काज। कनक बोल्यौ वड़ गुज्जर ॥
हरि चक्रह सहज वत्। जाल नन रहै वुद्धिवल ॥
कोट क्रम्म संजवत। अंति भज्जै हरि नामं ॥
नीर परस संजवत। मैल नन रहै विरामं ॥
नन रहै गुनी अग्गैं अवधि। सिध अग्गै सिद्धि न रहै ॥
संजोग जोग भंजंन क्रम। राह सूर चंपिरु ग्रहै ॥ छं० ॥ १२६९ ॥

आल्हन कुमार का वचन।

तव वोलै अल्हन कुमार। सव्व ब्रहमंड वीर वर।
जिहि मिलंत भर सुभर। होहि तन मत्त वीर सर ॥
मिलै सरित सव गंग। होइ गंगा सव अंगा॥

(१) मो.-आंछी।

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा ॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन ॥
जानै न बत्त बर बंध की। पहुंचावै ढिल्ली सुधन ॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन ।

बोलि सलष पांवार। पार लभ्भ्यौ न सत्तबल ॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अवरेष रूप कल ॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय ॥
सो कहि असति चरित्त। ब्रत पाषँड अधिकारिय ॥
सौ जुझ्झ पार धारह धनी। जुद्ध पार लभ्भ्यौ न दोउ ॥
तिहि सत संजोगि सुहै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ ॥छं०॥१३०१॥

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। वीर बाल्यौ विह से बर ॥
* .... ॥छं०॥१३०२ ॥
कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर ॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुझ्झन न्टप कग्गर ॥
बरष सात सामंत। सोभ पत्तिन परख्यं ॥
बर दंपती [1]निसंक। सस्त्र भग्गा न विसष्यं ॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्यै चहुआन इम ॥
दिषि वत्त सति संयोग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम ॥
छं० ॥ १३०३ ॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल ॥
बर अगनित अंजुली। पंग सो सै समुंद दल ॥
सार मेघ बुठ्ठतैं। बीर टट्टी बिच्छोरै ॥
बर दंपति सँयोगि। बंधि दल गौत न जोरै ॥

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।
(१) ए. कृ. कों.-न सकं।

उप्पारि सत्त गो ब्रह्मनह । न्त्रिप रषि वज्जी जेम काल ॥
कामधज्ज इंद बुट्टै प्र पुनि । सुमन संच जानैं अकाल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का बचन।

पल्हनदे कूरंभ । लाज बड पन बड वीरं ॥
न्त्रिप लग्गै नन अंच । पंच जौ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी । सूर सो भ्रम्म न होई ॥
सौ मे एकज होइ । तेज मुक्कै ग्रह जोई ॥
इक अग्ग पंच जौ सत्त है। सत्त मेर सत जीन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज सँग । रषत कोटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का बचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि । इक वन मज्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि । सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक्क मधु कारह । तथ्थ विस्रामि गुंजा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम । रह्यौ मधि [१]भंवर विचारत ॥
ह्वै है विर्त्तित जामनि सवै । तवै गमन इह वुद्ध किय ॥
विन प्रात होत विधि इह करिय । ले कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के बचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तब दाहिम नरसिंघ । [२]सिंघ बुल्ल्यौ बंचाइन ॥
सुनिय वचन सुंदरी । जवाल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि । जोय जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन पच्छै बलदेव । जम्म गति दिष्षि निहारै ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुंजारं । (२) ए. कृ. को.-करै ।

उद्धरौं बीर दंपति दुहुनि । सरस मदहम मथ्थिलै ॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कौं । मुकति भुगति हम हथ्थलै ॥
छं० ॥ १३०७ ॥

पुनः सलष का वचन ।

सु बर बीर पामार । सलष वुल्ल्यौ प्रति धारं ॥
जग्गि जलनि कमधज । जोग जीवन जुग तारं ॥
ए अमंत सामंत । भज्जि जानै न अभंग अपु ॥
वंज्र सार भल्लै प्रहार । निश्चलित सार वपु ॥
जं करै गहर संजोगि सुनि । सुगति गहर वित्तिय घरिय ॥
[1]जग्गाय पंग दिष्षै दलं । रषित कुंअर केअरि फिरिय ॥
छं० ॥ १३०८ ॥

सारंगदेव का बचन ।

सारंग सारंग बीर । बीर चालुक उचारिय ॥
षग्ग मग्ग बो हिथ्थ । मरन जिहि तत्त बिचारिय ॥
बीच राज प्रथिराज । सूर चावद्दिसि चल्लै ॥
ज्यों सिर मग धुअ भाल । भूअ सामंत न डुल्लै ॥
संजोगि करिन कायरह तौ । पहुँचावै ढिल्ली घरह ॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर । तौ पँग सूर एकत धरह ॥छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का बचन ।

तब रायां रघुवंस । जनक उच्चै उचारिय ॥
हम निकलंक छचीय । जुद्ध बर जुद्ध विचारिय ॥
जे मेरें कुल भए । हुए ते षंड तन भुभ्भर ॥
मत्ति सस्त्र हसुमंत । बीरं जंपिहि बड़ गुज्जर ॥
संजोगि बचन कातर कहिग । सहिग प्रान मभ्भह रहिग ॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर । जम कंपत षग्गह गहिग॥छं०॥१३१०॥

---

(१) ए. कृ. को.-जग्गवे ।

भोंहाराव चंदेल का बचन।

भोंहा राव नरिंद। वीर उच्चरि बीरत्तं॥
पै लच्छिन बतीस। पंग पुत्री घटि मत्तं॥
तिहि इक लछिन हीन। बही लछिन नन सष्षै॥
एक एक सुरइंद्र। आइ दुज्जन दल भष्षै॥
सत कोस पंच घटि थांन न्टप। हमह सत्त छह अग सुभर॥
इक इक कोस इक इक भर। पहुँचावै संयोगि वर॥छं० ॥१३११॥

चंदपुंडीर का बचन।

तब कहि चंद पुंडीर। मतौ सुनि सस्च सूर बल॥
लष्ष एक लष्पियै। एक भंजैति लष्प दल॥
बल अगनित अति जुद्ध। पंग जीरन तिन सेनं॥
दावा नल सामंत। सस्त्र मारुत वल देनं॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि। कवल पीर कन्हहति वर॥
नष्षै सु बाजि गम भीम दुति। पंग सेन प्रथिराज भर॥
छं० ॥ १३१२ ॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय। सब्ब सामंत राज प्रति॥
पंग सेंन [1]निरदरहु। अब्ब बोल्यौ सुदेवभित॥
मन मथी गोंविद चंद। होइ न कहि कालं॥
मन पुच्छिरु कहौ जीह। काल घत्ते जिहि जालं॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी। तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्थ दै॥
सत षंड जीह जंपत करौ। पै चल्लि राज इह लल दै॥छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन। गरुअ गोयंद कन्ह कहि॥
सुजै अप्प जौ चलै। चलै हम हथ्थ रंभ ग्रहि॥
जो अप्पन आभंज। सबल बंधी अब बंधी॥

(१) ए. कृ. को.-निरदरे।

ढील न करि सुंदरी । खीह अलध कल संधी ॥
ढंढोरि ढाल पहुपंग दल । तन अरत्त जिम तोरियै ॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा । जम्म जजर तन जोरियै ॥छं०॥१३१४॥

संयोगिता के मन में बिश्वास हो जाना ।

दूहा ॥ बाले बल सामंत कलि । देखि सूर सम चित ॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै । [2]भ्रिकत बुद्धि इन वृत्त ॥ छं०॥१३१५॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा बिचारना ।

चंद्रायना ॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन ।
माया गुरजन चित्त बिगोवत वेर तिन ॥
* .... ॥ छं० ॥ १३१६ ॥

अरिल्ल ॥ सुबर चंद औपम लिय कथ्थं । ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्थं ॥
† .... ॥छं० ॥१३१७॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हो रही है ।

कवित्त ॥ बाल कहिग संजोगि । पुब बंधी सु गंठि बर ॥
रिष सराप अरु देव । काज भौ भरन मरन भर ॥
स्वरग मग्ग रुक्कयौ । मरन संभरि चहुआनं ॥
केवल कित्ति सु कंत । रंभ बर बरनन पानं ॥
बंधई गंठि संभरि धनी । अब इत्तिव अंतर रहिय ॥
सामंत सूर संभरि सु कथ । न्त्रिपति सु दंपति इम कहिय ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है ।

चंद्रायना ॥ राज सेन दे नैन समझिझय चंद कबि ।

(१) ए. कृ. को.-चंपिये ।
(२) मो.-भ्रिग्ग वुद्दि दग्ग वृत्त ।

* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है ।
† चारों प्रतियां में ऐसा ही है ।

सुनि संजोग इह जोग वुझ्झि मन दुष्प हवि ॥
आंसू भरि छह [1]सात [2]अगनि भेज पव्वर पंग।
रहै गल्ह जुगजाइ सव्व संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित। प्रथम व्रत लियौ राज वर ॥
वरजि मंत पित बंध। वरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य विग्गरि। ध्रम्म लोपे सु लोह कुल ॥
सहस मुष्प अपहास। हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिपिय कर। स्वांमि द्रोह वर विछुरन ॥
मै लीन भाव भावी विगति। नन मुक्कों चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्लीं मुषहि। ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत। मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥

चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुझ्झित गहृ गहृ कंठ भरि।
तवहि पानि प्रथिराज सुषंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सब्ब सु लच्छनिय।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय। पुट्ठि लग्गी सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन। अरक बैठे सुहर बिप ॥
काम रित्त रहि चढी। काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग। वियन ओपम [4]छपि माजं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-वार। (२) मो.-अगनि भंजे जु पंगवर।
(३) ए. कृ. को.-पुछनिय। (४) ए. कृ. को. छिति।

सामंत सूर पारस नृपति। मधि सु राज राजंत बर ॥
ग्रह सत्त भान ससि बिंटिकै। दिपत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह वद्ध होकर चलना।

पंग पुत्ति आरुहिय। सूर चावद्दिसि रष्षे ॥
दिसि ईसान सु कन्ह। पंग षंधार बिलष्षे ॥
केहरि बर कंठेरि। पंग पहुरै सो मुक्यौ ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद। धाराहर रुक्यौ ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ। धार कोट ओटह सुभर ॥
पांवार धार धारह धनी। सुजस लष्ष लष्षन सुवर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर। सार पाहार पंग छल ॥
भौंहा राव नरिंद। सांमि रष्षे रुकि कंदल ॥
नयन रत्त दल सिंघ। रिंघ रष्षन कमधज्जी ॥
बर लच्छन बघघेल। सार सारह भुअ छज्जी ॥
दिसि मरुत बीर बर सिंघ दे। लष्ष सेन आरुहिय रन ॥
बर बंध बरुन साई सु पथ। जम बिसाल कंपन डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस। रनह रुद्दे रावत बर ॥
उभै स्वामि षल और। छंडि मदमुष्ष भेष बर ॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र। [1]जांम जद्दव अवरोही ॥
दई दुवाह दो बीर। रंभ रंभन मन मोही ॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै। दुहूं दिसा जै उच्चरिय ॥
सामंत सूर रष्षे नृपति। पंग राय पारस फिरिय ॥छं०॥१३२६॥
कोट पंग आरुहिय। नीम कित्तिय यह मंडिय ॥
थंभ सूर सामंत। अटल जुग ससि सिष छंडिय ॥
बर चिनेत अरु प्रेत। ताल तुंमर नारद पढ़ि ॥
देव रूप प्रथिराज। लच्छि संजोगि वाम गढ़ि ॥
कामना मुकति अप्पै तही। जो बीर रूप संचै धयौ ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि। पार बरी तारन भयौ॥छं०॥१३२७॥

(१) मो.-भान।

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्योय संजोई। एकथ्यौ होइ समर नियोसौ ॥
　　अनि लेय यथा पदमं। अंदोलए राज रिदएवं ॥ छं० ॥ १३२८ ॥
दूहा ॥ मन अंदोलित चंद मुष। दिषि सामंत सरूप्प ॥
　　अंदोलित प्रथिराज हूअ। सिर कट्टिय सुष दुष्प ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

　　वय सु लग्गि एकत करह। कक्कर लग्गिय लाज ॥
　　वय जुग्गिनि पुर चलि कहै। लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥
चौपाई ॥ वै सुष सब्ब सँजोगि बतावै। राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
　　दोई चित्त चढी बर राजं। वै विलास मरनं कहि [1]लाजं ॥
　　　　छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं वर पान भय। नव भामिनि रस कोक ॥
　　अमर राइ [2]इच्छति सबै। लाज सुष्प पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥मो तजि मति चोहान सुजाई। ज्यों जलबिंदु सब कित्ति समाई ॥
　　तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई। तिन जिय जाहु ये लज्जन जाई॥
　　　　छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह। उत्तर दीय न लज्ज ॥
　　वै विलास उत्तर दियौ। अज्ज, लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

　　वै सुष कौपि प्रमान से। मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

---

(१) ए. कृ. को.- काजं।　　　　(२) ए. कृ. को.-इच्छैति के।

स (१)हलका दंतीन के । धार उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
बैतन कुरषि निरष्षयौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कौन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है।

कहत भट्ट दल विषम है। तुहि दल तुच्छ नंरिंद ॥
परनि पुत्ति जैचंद की । करहि जाइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को बिदा करूंगा।

झुकित राज उत्तर दियौ । सो सथ सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज यट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुलहिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो इंछै नृप तुझ्झ मन । ठट्टौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु सुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कहौ चंद न्रप पंग दल । जुद्ध जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढिग सूर सामंत सह । न्रिप अम्मह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । चिय जु बरिग प्रथिराज ॥छं०॥१३४१॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नंरिंद ॥
धरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनों राहु अरु चंद ॥ छं० ॥१३४२ ॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपथ्य में) प्रश्न।

श्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य बाजित्र बाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संनाह पष्षरं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर।

दूहा ॥ छलि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥छं०॥१३४४॥
गाथा ॥ सा याहि दिल्लि नाथो । सा यंतु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुत्री । जुद्ध मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-ए हेला देतीर के ।

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन कौ। भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि। चंपिय वद्दल वांव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मै सुनंतं। तहां कंपियं केलि तिय पुर कँपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं। तिनं जानियं जोज जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तवं कमक मिरु सेस सिर भार सहियं। तहां किम सु उच्चास रवि रथ्थ सहियं॥
तहां कमठ सुत कमल नहिं अंबु लहियं। तबैं संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कबि किन्न कहता। उनं सकति सुर महिष बल धन्न लहिता
मनों कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता। तिनं भ्रम्मियं एम भय लच्छि सुरता ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ्ढियं सूर आजान बाहं। तिनं तुट्टि बन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मोंन धर हलिय ओजैं। भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तबै उप्परें फौज प्रथिराज राजं। मनों बांदरा लेन ते लंक गाजं ॥
तवं जग्गियं देव देवं उनिंदं। तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तबै चापियं भार पायाल दुंदं। घनं उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कौन अगनित्त रावत्त रत्ता। तिनं छच छिति भार दीसै नपत्ता॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्की रहै कौन संता। सु वाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा। [2]तिनं झिल्ल वैतेग तेचैच गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा। मनों बद्दलं थंति बंधी विहंगा ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उचं। (२) ए. कृ. को.-तिनं झिल्ल चैचे मते वैच गंगा।

जिरह जंगीन बनि अंग लाई। मनो कट्ठु कंती सुगोरष बनाई॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरै हथ्थ लग्गै सुहाई। तिनं घाइ गंजै न थक्कै थकाई॥
तिनं राग जरजीव बनि बान अच्छै। भरं दिप्पियै जानु जोगिंद कच्छै॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै। इसे सूर सामंत सौ राज राजै॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी।

कुंडलिया॥ बाद बत्तवै कढ्ढि न्त्रिप। बहु उपाइ तो साज॥
मैं वपु लज्जै सौंपि कर। कै चल्लै प्रथिराज॥
कै चल्लै प्रथिराज। कित्ति भग्गौं भगि जित्तौ॥
मरन एक जम हथ्थ। दुरै भज्जिन जम वित्तौ॥
ते अप्पन तिय राज। लाज इक राग सदेवति।
गति के प्रान तिन काज। राज हन्नहि सु बद्द ब्रत॥छं०॥१३५७॥

अुरिल्ल॥ जब लाज सवै वे कर रस बद्दे। तब लगि पंग बीर रस सद्दे॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद। ज्यौं गाह्यौ बर ससि पास [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना।

दूहा॥ दुहु [2]एनौ तन चढ्ढियै। लज्ज प्रसंसत राइ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि। चढ़िय सु उत्तर राई॥ छं० ॥ १३५९ ॥

पृथ्वीराज का वचन।

तूं लज्जी तन चढ्ढयौ। लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ॥
अब कित्ती वत्तीय लगि। [4]अब सन चूक न तथ्थ॥छं०॥१३६०॥

(१) ए. कृ. को.-गुव्यंदं। (२) ए. कृ. को.-एतौ। (३) मो.-सथ्थ।
(४) ए. कृ. को. अवसन सूक न नथ्थं।

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव ।

अुरिल्ल ॥ वाजि न्नपत्र विचित्र सु बाजिग । मेघ काला दल वद्दल साजिग॥
वंवरि चौर दिसान दिसानं । दस दिसि [1]रत्ते घोर निसानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजे सुचंगा । दिसा दच्छिनं देस लीनी उपंगा॥
तवल्लं तिदूरं जुजंगी म्रदंगा । मनों न्रत्य नारद्द कड्ढै प्रसंगा ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

वजै वंस विसतार बहु रंग रंगा । तिनं मोहियं सथ्थ लग्गे कुरंगा॥
वरं वीर गुंडीर संसे ससंगा । तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा । सिरं सिंधु सद्दनाद्द श्रवने उतंगा॥
रसे स्तूर सामंत सुनि जंग रंगा । .... ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरी नवं रंग सारंग भेरी । मनों न्रत्यनी इंद्र आरंभ वेरी ॥
सुने सिंगि सावद्द नंगी न नेरी । मनों झिंझ आवद्ध हथ्थैं करेरी ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी । चितं चिंति तन हीन बाढी कुवेरी॥
घ्नन्यं ओपमा पंड नैने निभग्गी । मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना ।

दूहा ॥ सुनि वज्जन रज्जन चढ़िग । सहस संष धुनि चाइ ॥
मनों लंक विग्रह कारन । चढ्यौ रघुप्पति राइ ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह वंदर विषम । रष्षस रावन वृंद ॥
असी लष्य सौं सौ जुरिग । धनि प्रथिराज नरिंद ॥छं०॥१३६८॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की वीड़ बढ़ना ।

दल संमुह दंतिय सघन । गनत न वनि अगनित्त ॥

(१) ए. कृ. को.-जोरत ।

मनों[1] पन्नय बिधि चरन किय। सह दिष्षिय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद ॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद ॥ छं० ॥ १३७० ॥

भुजंगी ॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छत्र छहरंग चौरं ढुरंता ॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। वाय वहु वेग झटकंत दंता ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सार संमूह धावै हकारे ॥
उज्जर बान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मीठ मंगोल्ल चिहु कोद वंके। इसे भूप वाजून वाजून हंके ॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज झमकंत जलमेघ पष्षी ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

घटं घेन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं॥
बिरद बरदाइ आगे वृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

तेह तर जोर पट्टेव झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं ॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

रेष वैरष्ष पति पात वल्ली। मनहु वन राइ द्रुम डाल हल्ली ॥
सीस सिंदूर गज जंप झंपे। देषि सुरलोक सहदेन कंपे ॥
छं० १३७६ ॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । .... छं० ॥ १३७७॥

दूहा ॥ गहि गहि कढि सेना सकल। हय गय बन उठि गब्ब ॥
जनु पावस पुब्बहु अनिल। हलि गति बद्दल सब्ब ॥छं०॥१३७८ ॥

(१) मो.-पवन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अंदन।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि।

सुसज्जित सेना संग्रह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं । ¹उनम्मियं जलद्दरं ॥
दिसा दिसानं वज्जये । समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उप्पली । सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक ताल रीगनीं । सु चक्कयो वियौगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयान्न पाल पल्लए । द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रहति छवि छज्जए । सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे । कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत ²गंग कूल ए । समुद्र झून फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अपंड रेन मंडयौ । डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमट्ठ पिट्ठ निठ्ठुरं । प्रसाल भाल विथ्थुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान्न हंस मग्ग ए । समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर वड्डए । जटाल काल लुड्ड ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
नरिंद पंग पायसं । सु छवि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे । सु अप्प अप्प विपफुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी बद्ध होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ अप्प अप्प दल विप्फुरे । दिल्ली गहन नरिंद ॥
* मीर जमांम हमांम कौ । दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६॥
दिसि दिसि अग्गै सज्जि वर । चतुरंगिनि पँग राइ ॥
चकी चक्क वियोगइन । अनँद कमोद कँदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन ।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं । दिठी जानि कालं चली जोध झोकं ॥
बँधे बैरषं रत्न³हल्लै प्रकारं । मनों ⁴नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उनभियं । (२) ए. कृ. को.-नंग । * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(३) मो.-सोभै । (४) ए. कृ.को.-निक्करी ।

बजे तब्बलं सद्द बंदी निनारे। मनों भृत्त वीरंद हथ्थं सँवारे॥
सिरी पष्षरं लोह गज्जं बनाई। नगं रत्त मझ्झै झमकंत झांई॥
छं०॥ १३८९॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों षेलही [1]पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं०॥ १३९०॥

तिनं की उपम्मा कवी का विचारं। मनों हेम कूटं वहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ठट्टं सु सीसं विराजं॥
छं०॥ १३९१॥

तहां चंद कव्वी उपम्मा विचारी। मनों राह कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं [2]लोह वीरं। तिनं मोकले गहन प्रथिराज मीरं॥
छं०॥ १३९२॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर वीर॥ छं०॥ १३९३॥

पद्धरी॥ धर पथ्थराइ बरनी सुवीर। विश्राम राइ मन मथ सरीर॥
रइबान सिंघ न्रप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं०॥ १३९४॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्रप सथ्थ जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुक्कार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं०॥ १३९५॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं०॥ १३९६॥

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय।

कवित्त ॥ मोहि मत पुछै नरिंद। तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दहि। ठट्ट ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ। राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन जग्गौत। उनै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर पठौ सु न्वप। इन समान छिचौ न छिति ॥
अड्डौ सु धरो विभ्भार घन। रावन रिन सिप ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जाव।

तब नरिंद रा पंग। सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग। हनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ। जग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन। दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरन्न सेन लष्या चढौ। कढौ तेग बंधे द्विन ॥
बहु लाभ होइ जो षेम विन। जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

बघेलो वर सिंघ। राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया। राय बंधिय बरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार। बग्घ कट्टी मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद। काम कारन हूं अप्पौ ॥
वर गहन चंपि चहुआन कौ। [3]सत्त घत्त सामंत सह ॥
सम समथ सथ्थ भारथ भिरहि। सहस दिये कामधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. हेत सुमत जग्गौज। (२) ए. कृ. को.-नर।
(३) मो.-मन्त।

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्रिपति इह मत्ति सु भुट्टौ ॥
दीन होइ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टौ ॥
इह जोगिनि पुर इंद। गंजि गोरी गज बंधन ॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन ॥
इह गहन दहन इच्छै न्रपति। भर समूह मोहन करै ॥
नव अप्रब वाज नव नव न्रपति। नव सु जोरि जग्गह धरै ॥
छं० ॥ १४०० ॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुकम देना।

दूहा ॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुद्ध स जुद्ध ॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु वद्ध ॥ छं० ॥ १४०१ ॥
मीर बंद बारून बलिय। सक्क सामंत नरिंद ॥
मंच घात सक सूरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद ॥ छं० ॥ १४०२ ॥
अप्प अप्प दूल विप्फुर्यौ। दिल्ली गहन नरिंद ॥
मीर जमाम हमाम कौं। दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १४०३ ॥
तुम विन जग्य न न्रिब्बहै। तुम विन राज न धाम ॥
सुक्क कट्ठ कट्ठन समुह। जरि जरि अंब बुझान ॥ छं० ॥ १४०४ ॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्रप सौं कह्यौ। तात पर्यौ तुहि काम ॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम ॥ छं० ॥१४०५॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने मैं क्यों जाऊं।

कवित्त ॥ तब भुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार हट्ट पर ॥
बाट घाट तस कारन। चास बसि करन प्रज्ज धर ॥
रस अदभुत संग्राम। मझि रष्षत धरि छंडी ॥

न कछु लज्ज अ मागनौ। वाद राजन सौं मंडी ॥
अति अब्ब अरब्ब वज्जै सिरह। नरनि नीर उत्तरि रह्यौ ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु वचन राजन कह्यौ ॥
छं० ॥ १४०६ ॥

दूहा ॥ अरे ढीठ रावन्न सुनि। जितहि न डट्टौ अप्प ॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प ॥
छं० ॥ १४०७ ॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपने हठ से सब काम किए।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चर्यौ। जग्य मंडि रुकुमत्ति किय ॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय ॥
बहुत मत्त चुक्कए। अवहि तुम मंत सुमंत्ते ॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होतै भंते ॥
बंधह बबंच मंचिय मरन। चाहुआनं गहियन गहिय ॥
संवरे जाय कन्या [1]रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय ॥ छं० ॥ १४०८

कुतवाल का वचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

स्लोक ॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि ॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्टं हुताशनं ॥ १४०९ ॥

दूहा ॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ ॥
जग्य विगारन जूह चढ़ि। लियें सु कन्या जाइ ॥ छं० ॥ १४१० ॥
मुष मजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार ॥
सु विधि मौर संग्राम भर। तुम रष्षहु हटवार ॥ छं० ॥ १४११ ॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग ॥
सवन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग ॥ छं० ॥ १४१२ ॥

(१) ए कृ को. वरन

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबै पट्ठियं पंग रायं सु हीसं। मषै दोइ द्रुम्मीन हीनेन दीसं॥
किय नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परैं फौज प्रथिराज ईसं॥ छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पल्लं लषी। मंस स्त्रवं भषी॥
रोम राहं नषी। वेयजे विड्डुषी॥ छं० ॥ १४१४ ॥
बीर बाह्न पषी। सुम्मरे नां लषी॥
विड्डि सा बहषी। टंक अड्डरषी॥ छं० ॥ १४१५ ॥
षंचि विब्भारषी। लोह नारंजषी॥
कोल चाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी॥ छं० ॥ १४१६ ॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी॥
पारसी पारषी। बान बाहं पषी॥ छं० ॥ १४१७ ॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारठ्ठषी॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाहंभषी॥ छं० ॥ १४१८ ॥
बीच रत्तं सुषी। सट्टि हज्जारषी॥
पवंगे पारषी। .... छं० ॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गै सुडारै।न्त्रिपत्ती नछ्रची न लभ्भै नपारै॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझे मुनारे॥ छं० ॥ १४२० ॥
तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं।बरं उट्ठियं रोस आयास लग्गं॥
मनों पथ्थ पारथ्थ हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं॥ छं० ॥ १४२१ ॥
बरं उट्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबैं षोलियं षग्ग साहथ्थ रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा वीर वज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै॥ छं० ॥ १४२२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-"कोल पल अभष्णी." (२) ए.-षषी।

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना ।

कवित्त ॥ बघ्घराव बघ्घेल । हेल मुग्गल निहल्ल किय ॥
मेघ सिघ विज्जुलिय । जांनि झंमूर झलक्किय ॥
वे गयंद वारुन वहंत । वारत्तन वारिय ॥
मीर पुट्ठि आलट्ठि । सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त वत्त सामंत रन । जमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्प इक्कह सु ग्रह । प्रथम रोस दुअ दल मिलिय॥छं०१४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना ।

दूहा ॥ जोध जोध आयत्त मिले । एक इक्क सौं लष्प ॥
नारद तुंबर सिव सकति । सौ सामंतां पष्प ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा ।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय । सुनौ कामधज्ज [1]इला वर ॥
अरि बंधन इंछियै । सु तन वंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै । व्याज आवै धुर जन्नी ॥
इन कज्जैं इल भार । देव[2]करयौ छिति लिन्नी ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह । वैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर । भर भंजै संभरि धनिय॥छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है ।

केहरि वर कंठेर । पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय । वीर रावन अधिकारिय ॥
जंच जोर जो वजै । सार तंची मिलि जंची ॥
जंचि जोर जो [4]चलै । सार वंधी अनु तंची ॥

---

(१) मो.-इलावर । (२) मो.-लरयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर । (४) मो.-वजै ।

भंजौ जु बीर चहुआन दल। दइ दुबाह सम्हौ भिरै॥
भारथ्थ बीर मंडन सद्दे। अरी जीत कायर मुरै॥ छं०॥ १४२६॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर बेंन। कोंन उच्चरै जुद्ध यथ॥
धर संग्रह गो ग्रहन। सामि संकट जु वीर तथ॥
साम दान अरु भेद। सोइ चुक्कै वर साई॥
नरक निवास प्रमान। सुथित कित्ती निधि पाई॥
जंकरै मंत्त उत्तरि परै। सामि अग्गि मंगै सुभर॥
यौं हँसन केलि घर घर करै। इकत पच्छ वड्ढै सुभर॥
छं०॥ १४२७॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा॥ केहरि कान्ह सु गत्तमी। करि जुहार न्रप भार॥
हस्ति काल जम जाल लै। चलि अग्गैं कुटवार॥ छं०॥ १४२८॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त॥ केहरि बर कंठीर। कान्ह कमधज्ज सु रावन॥
हस्ति काल जम जाल। [1]अग्गि नग चासति धावन॥
ता पच्छै कमधज्ज। सेन चतुरंगी चल्लिय॥
हसम हय गय सुभर। भूमि चावद्दिसि हल्लिय॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग। बजि निसान अप्पन चढ़िय॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन वर। पवन सेन टिड्डी वढ़िय॥
छं०॥ १४२९॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्ञान बाहं। बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं। मनों बंधियं काम बे बीर नेतं॥
छं०॥ १४३०॥

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग। (२) ए. कृ. को. बीर।

चढै प्रबलं वीर वीरं प्रमानं। कढ़ै पंग अप्पै वंधे चाहुआनं॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई। जिनैं पुत्र वैरं रनथंभ पाई॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कन्ह कन्नाट राजी। उठी बंक मुंछं ससी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं। चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यौ बग्गरी वीर तत्तौ [1]तुरीसं। लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र राजं असप्पति वीरं। महा तेज जाजुल्य वीरं सरीरं॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवी वीर वर सिंह तदं। भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [2]फुनिंदं॥
चढ्यो पंच पंचाइनं वीर मोरी। चढै बारु रंजैत पावंग जोरी॥
चढ्यौ दाहिमौ देव देवत्त गत्ती। चढ़े मीर वीरं षुरासान तत्ती॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्य सेना चिह्नं मग्ग धाई। मनौं भूमि बाराह कंधै उठाई॥
कमठं ति पिट्ठं ति ठौसौ समालं। कंपी सेन मुक्कै कुवे हथ्थ [3]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ [4]वजत धरद्धर सीस। धार धरनीय सेस कहि।
कुंडलेस कुंडलिय। कहय पन्न गति अरुल रहि॥
[5]अहि अहि कहि अहि नाम। संकभौ सीस सेस वर॥
गहिन परै तिहि नाग। चित्त विभ्रम चिचक पर॥
कंपेस नाम कंपत भयौ। वहुत नाम तहिन लहिय॥
जिन जिन उपाय रष्यिय इला। [6]पंग पयानह तिहि कहिय॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ फन फन पर मुक्कत जु इल। तत्त वसत दझि हथ्थ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तिरीसं। (२) ए. कृ. को.-दुनिंद्दं।
(३) ए. कृ. को.-जालं। (४) ए. कृ. को.-जव्रत।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि कहि नाम। (६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वहि।

अट्ठ कंपि दो अट्ठ डरि। रवि सुझ्झै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता।

कवित्त ॥ मिलि गरूर सामंत। विपथ अरु सुपथ उचारं ॥
विपथ जु बंध्यौ मोह। सुपथ पति रषि पति वारं ॥
रहै विपथ रजपूत। मझ्झि अनि रपि चित भारथ ॥
इह सु पथ्थ रजतीय। सामि प्रेमह होइ सारथ ॥
सह किति कलं कल कथ्ययौ। काल सु पंग कलंतरै ॥
कस घ्रम्म घ्रम्म छची तनौ। भवन मत्त [1]चुक्कहि नरै ॥छं०॥१४३८॥

दूहा ॥ निसि भै भै काइर भजिग। [1]तमस भज्ज गनि सूर ॥
भय भयान रन उदित वर। अद्ध निसा अध पूर ॥ छं० ॥ १४३९ ॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारबिंद की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ परी अद्ध निस्सा जमं छिद्र कारी। ठठुक्के सुरं देखि वरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं। महा तेज जाजुल्य दिट्ठी करूरं ॥
छं० ॥ १४४० ॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं। दिषे सूर प्रतिबिंब तो मुझ्झ नूरं ॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं। वड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

करे सिद्धि जेमन सकारंन नाई। थपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाई॥
[2]सतं पचयं मुद्दि फुल्लै कमोदं। मनो बालवै संधि दो संधि ऊदं॥
छं० ॥ १४४२ ॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं। वसे भौर झोरं सतं पच थानं ॥
[3]मिलं दंपती भौर जोगं सरंगी। ललं वेस सीसी जु मुकरंद पंगी ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

चले लोइ जानं मनं मध्य वीरं। सजै कुट्टि लै रथ्य भुअनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेंनं इकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुझ्झै अँभै आसमानं ॥
छं० ॥ १४४४ ॥

---

(५) ए. कृ. को.-चक्काहि। (१) ए. कृ. को—तम सभजग्गनि सूर।
(२) ए. कृ. को. सत पत्र जा (३) मो.-मिले दंपती भोर ज्यौं गंस रंत्ती।

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ पां मारुफ नव रत्ति पां । रुपमीं पां वहराम ॥
पान मंडि लीनौ सुकर । सामि सपत्ते काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
पंच लप्प तिन सथ्थ किय । ग्रनी वंधि न्टप राज ॥
गुन गोरी नन जानई । सामि भ्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे वर चंग निसानंनि नद्द । सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
बजंत निसान सुरंभ रिझंत । सुने सद ईस [1]पलक्क पुलंत ॥
छं० ॥ १४४७ ॥
बजै घट घुघर घोरनि भार । कै इंद्र अरंभ करै विविचार ॥
बजै रंग जोज जलज जल घंट । हरै ग्रव संभरि नारद कंठ ॥
छं० ॥ १४४८ ॥
बजै सद वंस मझिप्पत सिंघ । मनों कल नंकन आरँभ रंग ॥
तवल्ल टँकार निसानन छल्ल । किधों गज मेघ अपाढ़ सु काल्ल ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्टप बद्दत सुबर । पिजि बंधव बर वीर ॥
आदि वैर चहुआन सौं । चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
फटिय फौज पहुपंग वर । मत मंची न्रिप चिंति ॥
अप्प चढ़न बद्दन अरी । नीर फौज छवि किति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्टप अग्ग । पंग चढ्ढे वर नागर ॥
[2]धरनि धाय सननंति । रंग दुस्सह जुग सागर ॥

(१) मो.-सु पल्ल सजंत । (२) मो.-धरति ।

मुगति दान अप्पनह। जंम जीवन उथ्थप्पन॥
फल कित्ती भोगवन। क्रंम भंजन अघ कप्पन॥
जाजुल्य देव दैवान भर। दिपि नरिंद तोमर तरसि॥
डगमगे भग्गि द्रगपाल बर। वीर भुगति तुंमर परसि॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा॥ तरसि तुंग बद्दलति दल। षल भल विजय निसान॥
बाल हद्द इभ उच्चरै। गहै पंग चहुआन॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभूति।

बर सोहै बद्दलति दल। बर उतंग गज रत्त॥
काज न सज्जल रप्पई। कौन गंग उर गत्त॥ १४५४ ॥
हलि गज दंतिन सघन घन। गति को कहै गनित्त॥
मनों प्रब्बत विधि चरन कै। फौज अगैं मैंमत्त॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ो पकड़ो का शोर मचना।

पद्धरी॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ। हम्मीर राव पामार थंभ॥
गोयंद राव बघेल सूर। अंगमीं सेन घन ज्यों लँगूर॥
छं० ॥ १४५६ ॥
पहुपंग गोपि प्रविकास राज। दिष्षै कमंध दल करिय साज॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर। हय गय सु ताम सज्जेति वीर॥
छं० ॥ १४५७ ॥
न्त्रिप नाइ सीस मिलि राज सव्व। दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब॥
दल सजे साजि सब देषि पंग। उच्चर्‌यौ गरुअ चहुआन जंग॥
छं० ॥ १४५८ ॥
सिर धारि बोलि [1]जसराज सामि। बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति। निज स्वामि काम [2]गुझ्झ गुरत्ति॥
छं० ॥ १५५९ ॥

(१) मो.-सज। (२) मो. गुंजे।

आवंत सेन प्रथिराज जानि। उट्ठेव सूर सामंत तानि॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम। हय मंगि चढ़न चहुआन ताम॥
छं०॥ १४६०॥
संजोगि पुट्ठि [1]आरोहि वंधि। थट्टौ सु राज सन्नाह संधि॥
छं०॥ १४६१॥
दूहा॥ गहि गहि गहि मुष वेंन कहि। भग्गि न पावै जान॥
श्रवन सवद न संचरिय। मनों गुंग करि सान॥ छं०॥ १४६२॥

लोहाना आजान वाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त॥ दल समंद पहुपंग। गज्जि लग्गौ चावद्दिसि॥
लौहानौ वर वीर। पारि मंडी अज्जिय असि॥
लोह लहरि ढिल्लई। फिरिव वज्जे दल पग्गह॥
हं हं हं आरुहिय। गजति गज्जन नर लग्गह॥
पारथ्थ वीर वर वार हर। वहु क्रूर कट्ठी विहर॥
रघुवीर तरंग तुरंग जल। कमल जानि नंचैति सिर॥छं०॥१४६३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम। मद्धि अट्टई असुर गुर॥
रसह रौद्र विथ्थुन्यौ। षिति षिजि लग्गे अमर पुर॥
संकर भरि लगि लोह। धूरि धुंधरि तिनि सा छवि॥
हाजुर मीर हमाम। मीर गिरदान सामि नमि॥
चवदिट्ठ उट्ठि राजन सवद। पारसि गहन गहन्न किय॥
दै छंडि मंडि असिवर दुकर। जंपत आतुर जीह लिय॥
छं०॥ १४६४॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना।

भुजंगी॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं। हयं छंडि हरि जेम करि चक्र साजं॥

(१) ए. आरोधि।

लगे [1]सुद्ध धारं सु बाहं सु झारं। मनों झक्कसं तार तुट्टै करारं॥
छं० ॥ १४६५ ॥

वढै षग्ग झट्टं स झन्नति सट्टं। विसीसं विघट्टं मनों नच्चिनट्टं॥
तुटै पग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनों संझ संक्रंति हव्वाइ झारं॥
छं० ॥ १४६६ ॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। षवं राहि वीरं वजे जुद्ध धीरं॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनों राह ग्राहं कुटं वेस इंदे॥
छं० ॥ १४६७ ॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो नट्ट वेसं सु भूमं तरक्के॥
तबै चंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनी छुट्टि सीसं सु गाजं॥
छं० ॥ १४६८ ॥

फटे तोमरं पुट्ठि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
षवै दीन दीनं गिरंदीं गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं॥
छं० ॥ १४६९ ॥

चँपै चंप बर वेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज धपि पंषि बाजं॥
हए ताम नेजानि स्रूरंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं॥
छं० ॥ १४७० ॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनों कोपिनं षत्ति घेटंति ईभं॥
वियं लग्गि वथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दड्ड चंपे डरं मेछ गाहं॥
छं० ॥ १४७१ ॥

उठे हक्कि कारि झारि कोपेज डालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं॥
उरं लग्गि जंबूर घारास षानं। पर्‌यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं॥
छं० ॥ १४७२ ॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हथियार करना।

दूहा ॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठौ सार ॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार ॥ छं० १४७३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत । पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
वड़वा नल असि तेज । पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अबुभ्भ सिष्षवै । मस्त वज्जी तन झिल्लै ॥
धंकै मरन समूह । सत्र बर [1]सरचन छिल्लै ॥
आहत्त घाय तन भंझरिय । मन अच्छरि तिन तन बरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति । सुगति मग्ग षुल्लिय दरिय ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत । सेन नच्चिय असुरायन ॥
चितिय जांम अह सुक्र । रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद । मीर इति मित्ति सुपिल्लिय ॥
पिक्षे राज पज्जून । सुधर कम्मार सु ढिल्लिय ॥
हहकारि सीस साजे गयन । किद्दय कंध असि झारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत शत मित्त परि । उद्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥
छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना॥

इत मित्तह उपारह । [2]मीर सौ पंच छंडि हय ॥
है है है जंपै जुवान । उथ्थान थान भय ॥
तिन रोहिग पज्जून । राय केहरि करि जुथ्थह ॥
देषि सिंघ पामार । पीप परिहार सु पथ्थह ॥
चंदेल भूप भोंहा सुभर । दाहिम्मौ नरसिंघ बर ॥
कछरा राइ चालुक पहु । मिलिय पंच उप्पर समर ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना ।

मोतीदाम॥मिलिहक्किय हक्क सु भीर गंभीर। गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर सूरसामंत सु धीर । सु न्रिम्मल नेम रजे रज नीर ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सत्रुन । (२) ए. कृ. को. सीर ।

हबक्कि सु धक्कि अनो अनि अंग। लगे जम दड्ढ सु सेलह संग॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस। घिलंत कमंध उठै भर रीस॥
छं०॥ १४७८॥
चलै घर पूर रुहीर प्रवाह। सबै मिलि घूंटि सकंति सु राह॥
न्रिपति करूर [1]निझारत पन्न। मनों नटिनी मुष ऊक अगन्नि॥
छं० १४७९॥
मिले इत मित्त पजून सु थाइ। हयौ हिय नेज कुरंमह राइ॥
चले सम नेज हयौ असि झार। पर्‍यौ इत मित्त मनों तरतार॥
छं० १४८०॥
पर्‍यौ धर राइ पजून समुच्छि। हयौ असि सेर न सीसं उच्छि॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ। महातन मंडिग सेन कुलिंग॥
छं० १४८१॥
लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर। चंपे चव सिंघ सु भग्गिय मीर॥
पर्‍यौ नरसिंघ नरव्वर सूर। तुटे सिर आवध जाम करूर॥
छं० १४८२॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना।

कवित्त। दाहिम्मै नर सिंघ। रिंघ रष्षी रावत पन॥
सिर तुट्टै कर कढ्ढि। चढ्ढि धायौ धर हर घन॥
मार मार उचरंत। राव बज्जे धारा हर॥
देव स्तुति करि चार। रंभ झग्गरी कहिरु बर॥
संकरह सीस लीन्यो जु कर। दई दरिद्री ज्यौं गहिय॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह। जुगति उगति कवियन कहिय॥
छं०॥ १४८३॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्यंत लड़ना।

पंग हुकम परमान। अग्र चौकी षुरसानिय॥
प्रथम जुद्ध किय [2]मीर। हारि किनही नह मानिय॥

(१) ए. कृ. को.-झारत। । (२) ए. कृ. को.-मार।

चंद्र पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर। तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर। जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८ ॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघ राज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। गहिव क्रूरम षग धायौ ॥
बाघ राइ बघ्घेल। उहित [1]असिवर करि साह्यौ ॥
न्त्रिभै न्त्रिभ्भै न्त्रिम्भरिग। तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु वेद दुजहीन। पिट्टि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लग्गि गट्ठौ पिसुन। मीत भेट मह्हा विच्छुरिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर। मुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥छं०॥१४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना।

क्रूरंभह उप्परह। [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलकि। देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि। दठ्ठ जम दड्ढ विकस्से ॥
भाला षग्गन छुट्टि। पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुद्ध घन नर परिग। पहु कारन दिय प्रान जुअ ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करै। बलि बलि वीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना।

मध्य टरत विप्पहर। सार बज्यौ प्रहार भर ॥
भेघ पंग उन्नयौ। मार मंडीय अपार सर ॥
भय क्रूरंभ टट्टीव। छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज। वीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि वर कढ्यौ। असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अरु पुच वर। कारन जेम हथ्थह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को-असिमर। (२) मो.-पाल्हनराय।

पारहन और कूरंभ की उद्दंड वीरता और दोनों का मोक्ष पद पाना ।

परे नथ्य विप्पहर । पलह पज्जून बंध वर ॥
रज रज तन किय हटकि । कटक कमधज्ज कोटि भर ॥
ईन सीस संहन्यौ । हथ्थ सों हथ्थ न मुक्कयौ ॥
सूर मुझौ सुख हझौ । बीर बीरा रस तक्यौ ॥
मारत अरिन कूरंभ भुकि । ते रवि मंडल भेदियै ॥
डोल्यौ न रथ्थ संमुप चल्यौ । कित्ति कला नह देपियै ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

गंग डोलि ससि डोलि । डोलि ब्रह्मंड सक्क कुल ॥
अष्ट थान दिगपाल । चाल चंचाल विचल थल ॥
फिरि रूक्यौ प्रथिराज । सबर पारस पहु पंगिय ॥
च्यारि च्यारि तरवारि । वीर कूरंभति सज्जिय ॥
जंघिय पहुप्प इक पंदने । एक कित्ति जंपत वयन ॥
वे हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों । रहे सूर निरषत नयन ॥ छं० ॥ १४९३ ॥

पज्जूनराय का निपट निराश होकर युद्ध करना ।

दूहा ॥ भीर परी पहुपंग दल । भये चलिय पहुराम ॥
तब पजून संमुह कारन । मरन सत्थ किय काम ॥ छं० ॥ १४९४ ॥
भुजंगी ॥ भिरें वीर पज्जून यों पंग जानं । बहै षग्ग अग्घाइ अग्घाइ वानं ॥
करी छिन्न भिन्नं सनाहं तिजीनं । हयं अंस वंसं द्रुमं वीर कीनं ॥
छं० ॥ १४९५ ॥
महा सूर वीरं बुलै क्रूर वानी । चल्यौ धार पज्जून संसार जानी ॥
करी अग्ग पच्छं सु दूनं दिषंवे । भयौ स्वामि सन्नाह वैरी छुडंवे ॥
छं० ॥ १४९६ ॥
पहू पंग राहं लग्यौ भोन राजं । भुजा दान दीनौ षगं मग्ग साजं ॥
बुलै मुष्ष कूरंभ सो इन्न राई । मिले हथ्थ वथ्थं रुपे सेस पाई ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

कवी जीह जंपै सु पज्जून हथ्थं। इकं झारि उभ्भारि हथ्थं समथ्थं॥
छद्दे अष्ष्ष पज्जून ओपंम पाई। कु कुव्वी कला जे नहिं द्रू सभाई॥
छं० ॥ १४९८ ॥

गये तथ्थ नाही तुरी तत्त मत्ते। रह्यौ कुट्टरं मध्य ज्यों जुद्ध रत्ते॥
दिष्यौ सामलं सिंह पुत्तं चरित्तं। बढ़े वांन ज्यौं पथ्थदानं सु रथ्थं॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दिषै यों पजूनं मिल्यौ सिंह रुष्यं। भिरंतं वसंतं भयौ ज्यों विरष्यं॥
भई पंच आए प्रथीराज कामं। भए एक घट्टं भिरे तीन जामं॥
छं० ॥ १५०० ॥

पज्जूनराय के पुत्र मलैसी के वीरता और ज्ञान मय वचन।

दूहा॥ है हम मंगल अब जियौ। मरन सुमंगल काज॥
मरे पुत्र कों विप्र सुनि। भंजों तामस राज॥ छं० ॥ १५०१ ॥
हम रत्ते क्रूरंभ रन। मरन सुमंगल होइ॥
पंच पंचीस संवच्छरन। जाहु सु जीवन जोइ॥ छं० १५०२ ॥

कवित॥ आवरदा सत बरष। अद्ध तामें निसि छिन्निय॥
अद्ध तास वै वृद्ध। बाल मझ्झै होइ हन्निय॥
सुतह सोक संकट प्रताप। प्रिय त्रिय नित संग्रह॥
वट्टि छोह रस कोह। वृद्ध दारुन दुष दुग्रह॥
यौं सनों सकल हिंदू तुरक। कौंन पुत्र को तात बर॥
करतार हथ्थ तरवार दिय। इह सु [2]तत्त रजपूत कर॥छं०॥१५०३॥

मलैसिंह का वीरता और पराक्रम से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी॥ तबै देषियं तात पुत्तं चरित्तं। मनों पिष्षियं बाह आयास मित्तं॥
घल्यौ हथ्थ बथ्थं दुहथ्थंत नष्यौ। भिऱ्यौ हथ्थ बथ्थं रसं बीर धष्यौ॥
छं० ॥ १५०४ ॥

दिष्यौ एक एकं अनेकं प्रकारं। मनों ब्रह्म माया सु सोयं अपारं॥
कथ्यौ कंध हीनं कमद्धं कलापं। लगी जुग्गिनी जोग माया अलापं॥
छं० ॥ १५०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुमथ्थं। (२) मो.-तन

तुटै अंत पायं उरझ्झं सरीरं। मनों नाग कढ्ढै दिनाल गँभीरं।
तुट्यो बाज राजं बिराजै दुकूलं। मधू माध वै जानि केस्रू सु फूलं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

उरं बान सुष्षं अघानं प्रमानं। मनों पत पायै जु धावै किसानं॥
लग्यो सब्ब सामंत जै जै मलैसी। दुवं वंस तारै सुभ्रं माल तैसी॥
छं० ॥ १५०७ ॥

लगे घाव सट्ठिं परे धीर पेतं। उपाऱ्यौ सु विप्रं भयौ सो अचेतं॥
पऱ्यो यौं पजूनं सुपुत्तं उचाऱ्यो। भयो इत्तने भान अस्तमित चाऱ्यौ॥
छं० ॥ १५०८ ॥

उधर से रावण का कोप करके अटल रूप से युद्ध करते हुए आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ तब रावन नं टरै। सिर न चंपिय चतुरंगी ॥
हत्ति काल जमजाल। उठे गज झंपि मुषंगी ॥

पंग सेना की ओर से मतवारे हाथियों का झुकाया जाना।

पीलवान रायन्न। दई अंकुस गज मथ्थं ॥
सुभर सीस गज झरौ। करी आरूढ़ सु तथ्यं ॥
[२]उम्मड़े मीर आयो अगह। कूह कहर पच्छै फिरिग॥
मै मत्त कोइ अप्पै अघन। अप्प सेन उप्पर परिग॥छं०॥१५०९॥

सामंतों का हाथियों को विचला देना जिससे पंग सेना की ही हानि होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
सेन पंग विध्थुरी। मीर उच्छारि झारि धर॥
सर समूह परि पील। बान मिठ्ठी मंथानी॥
करी समूह कर वट्टि। मुष्प दीनें चहुआनी॥

(१) ए. कृ. को.-सरीरं। (२) ए. कृ. को.-उम्मडे पीर अग्गो अगह।

संमुह्यौ षग्ग सामंत सब। उररि सेन ओर परिय ॥
धनि धनि नरिंद सामंत सह। असी लष सम सों भरिय ॥
छं० ॥ १५१० ॥

सामंतों के कुपित हो कर युद्ध करने से शा सेना का छिन्न भिन्न होना इतने में सूर्यास्त भी हो जाना।

भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सुबथ्थं हँकारे। उड़ै गैंन लग्गैं सकं सार झारे ॥
कटै क्रंध कामंध संधं निनारे। परें जंग रंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १५११ ॥
झरं संभरी राव सो सारझारे। जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यौं अपारे ॥
जबै हार मन्ने नहीं को पचारे। तबें कौपियं कन्ह मैं मत्त वारे ॥
छं० ॥ १५१२ ॥
जबै अप्पियं मार हथ्थं दुधारे। फटै कुंभ झूमंत नीसान भारे ॥
गहे सुंड दंतीन दंती उभारे। मनों कंदला कंदु भीलं उधारे ॥
छं० ॥ १५१३ ॥
परे पंगुरें पंडुरे मीर सीसं। मनों जोगजोगीय लागंत रीसं ॥
बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै गिद्धनी गिद्ध पावै न जानं ॥
छं० ॥ १५१४ ॥
लगे रोह रत्ते अरत्ते करारं। मनों गज्जियं मेघ फट्टै पहारं ॥
दई कन्ह चहुआन अरि पील सीसं। करी चंद कब्बी उपम्मा जगीसं ॥
छं० ॥ १५१५ ॥
तितं संग संधी महा पील मत्तं। मनों षंचियं द्रोन बरबाय पुत्तं ॥
किधों षंचियं राम हथिना पुरेसं। किधों षंचियं मथन गिरिसुर सुरेसं ॥
छं० ॥ १५१६ ॥
किधों षंचियं कन्ह गिरि गोपि काजं। धरी सीस ऐसी सुभट्टं विराजं ॥
रूरै षेत रत्तं सुरत्तं करारं। सुरै कंठ कंठी न लागै उभारं ॥
छं० ॥ १५१७ ॥
सुरं स्रोन रंगं पलं पारि पंकं। बजे बंस नेसं सुवेसं करंकं ॥

(१) ए.-नीलं। (२) ए०, कृ. को.-रुरैं

द्रुमं ढाल ढालं सु लालं सुवेसं। गए हंस जंती मिले हंस वेसं॥
छं० १५१८॥

परे पानि जंघं धरंगं निनारे। मनों मच्छ कच्छा तिरंतं उभारे॥
सिरं ता सरोजं कचं सासि वाली। गहै अंत गिद्धी सु सोहै म्रनाली॥
छं० ॥ १५१९॥

तटं रंभ [1]थम्भं भरत्तंव चीरं। कितं स्याम सेतं कितं नील पीरं॥
वरै अंग अंगं सुरंगं सु भट्टं। जिते स्वामि काजै समप्पै जु घट्टं॥
छं० ॥ १५२०॥

तिते काल जम जाल हथ्थी समानं। हुअै इत्तनै जुद्ध अस्तमित भानं॥
छं० ॥ १५२१॥

कन्ह के अतुलित पराक्रम की प्रशंसा।

कवित्त॥ तब सु कन्ह चहुआन। गहिय करवान रोस भरि॥
असिय लष्य चिन गनिय। हनत हय गय पय निंदरि॥
करत कुंभस्थल घाव। चाव ववगुन धरि धीरह॥
तुक्क तीर तरवार। लगत संक्यौ न सरीरह॥
कहि चंद पराक्रम कन्ह कौ। दिय ढहाय गेंवर समर॥
उछरंत छिंछ श्रोनित सिरह। मनहु लाल फरहरि चमर॥
छं० ॥ १५२२॥

सारंगराय सोलंकी का रावण से मुकाबला करना और मारा जाना।

सोलंकी सारंग। वीर रावन आरुड्डिय॥
दुअ सु हथ्थ उत्तंग। तेग लंबी सा लुड्डिय॥
दो मरदह आरुद्ध। रुद्ध भानं झिल्लोरिय॥
टोप फुट्टि सिर फुट्टि। छिंछ फुट्टिय कविलोरिय॥
निल वट्टि फुट्टि पलवन्न वन। कै ज्वाल माल पावक पसरि॥
तन भंग घाय अरि संग करि। पत्ति पहुर चालुक्क परि॥
छं० ॥ १५२३॥

---

(१) ए. कृ. को.-रथ्थं।

सोलंकी सारंग की वीरता।

ब्रह्म चालुक ब्रह्म चार। ब्रह्म विद्या वर रष्षिय॥
केस डाभ अरि करिय। रुधिर पत्न पच विसष्षिय॥
षग्ग गहिग [1]अंजुलिय। नाग गहि नासिक तामं॥
धरनि अधर दुहुं श्रवन। जाप जापं मुष रामं॥
सिर फेरि षग्ग सम्हौ धऱ्यौ। दुअन तार मन उल्हसिय॥
अष्टमी जुद्ध सुक्कह अथमि। सुर पुर जा सारँग वसिय॥
छं०॥ १५२४॥

सायंकाल पर्यंत पृथ्वीराज के केवल सात सामंत और पंगदल के अगनित वीरों का काम आना।

भुजंगी॥ परे सत्त सामंत सा सत्त कोटं। षलं चंपियं बीर भै सोम ओटं॥
लगी अंग अंगं कहूं षंग [2]मथ्थं। किधों वज्र छुट्टै कि वज्जीय हथ्थं॥
छं०॥ १५२५॥

वहै गग्ग मग्गं प्रचारे सु बीरं। झलै षग्ग नीरंजिनें मुष्प नीरं॥
लरै सत्त बीरं दिष्षै सब्ब थट्टं। हरी एक माया करै घट्ट घट्टं॥
छं०॥ १५२६॥

षगं मग्ग सेना जुपंगं हलाई। मनों बोहथी मारुतं कै रुलाई॥
दुती देषतें ओपमा कव्वि पाई। मनों बीर चक्रं कुलालं चलाई॥
छं०॥ १५२७॥

भषै काइ पंषी किअग्गी कि दाही। तुटै धार मग्गं लियै अंग लाही॥
बरै काहि दूरं शिवं माल काकी। ढुढै ब्रह्म लोकं सलोकं सुताकी॥
छं०॥ १५२८॥

ननं देव ओपम्म सी धन्नि जाकी। लगी नाहि माया तजे तंत ताकी॥
वजे लैहि आनं फिरी ग्रेह मग्गी। तिनं तेज छुट्टं सुरं ग्रेह भग्गी॥
छं०॥ १५२९॥

---

(१) मो.-अंगुरिय। (२) मो.-सथ्थं।

दूहा ॥ भान दिशान सु दीपि कै । पिषि सामंत सु सूर ॥
पिनुकज थोरं तनु धरहि । तीरथ चक्क्यौ क्रूर ॥
छं० १५३० ॥

गाथा ॥ निनि गत संछिय भानं । चक्की चक्काइ सूर साचित्तं ॥
विधु संजोग वियोगी । कुमुद कलौ कातरां नांचं ॥
छं० १५३१ ॥

प्रथम दिन के युद्ध में पंगदल के मृत मुख्य सरदारों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम मार सामन्त । सहिय मीरन इत मित्तिय ॥
बाघ राव बघ्घेल । हेल्ल इन उप्पर वित्तिय ॥
उभय उसगि गजराज । काज किन्नौ प्रथिराजह ॥
इकति सुंड आपारि । एक [1]मिंडिग पग पाजह ॥
पुंतार डरह कट्टारि कर । परिग पित्त तेपिन न जिय ॥
इह जुद्ध सच्चि चहुआन सों । प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

मृत सात सामन्तों के नाम ।

दाहिम्मौ नरसिंघ । पऱ्यौ नागौर जास धर ॥
पऱ्यौ गंजि गहिलोत । नाम गोयंद राज वर ॥
पऱ्यौ चंद पुंडीर । चंद पिष्यौ मारंतौ ॥
सोलंकी सारंग । पऱ्यौ असिवर झारंतौ ॥
कूरंभ राव पाल्हन दे । बंधव तीन सु कट्टिया ॥
कनवज्ज रारि पहिलै दिवस । सौमेसत्त निघट्टिया॥छं०॥१५३३॥

पंगदल के मारे गए हाथी घोड़े और सैनिकों की संख्या ।

दूहा ॥ उभै सहस हय गय परिग । निसि निग्रह गत भान ॥
सत्त सहस अस मीर हनि । थल बिंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५३४ ॥

(१) ए.-कृ.-को.-टुटै । (२) मो-मंडिग ।

जैचन्द के चित्त की चिन्ता।

कवित्त ॥ चित्त [1]चिंता कमधज्ज। देषि लग्गी चहुआनं ॥
प्रथम जुद्ध दरबार। सूर सद्ध असमानं ॥
घटिय सत्त दिन उद्ध। जुद्ध लग्गे सु महाभर ॥
अस्त काल [2]सम मीर। परे धर सूर अप्प धर ॥
सामंत सत्त प्रथिराज परि। करे क्रम्म अतुलित्त सह ॥
प्रथिराज तरनि सामँत किरनि। थपी तेज आरेन थह ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

जैतराव का चामण्डराव के बन्दी होने पर पश्चात्ताप करना।

पज्जूनह उप्परह। राज प्रथिराज सँपतौ ॥
गरुअ राय गोयंद। घाव अघाइ सँसतौ ॥
चाइ चित्त चहुआन। कन्ह किन्नौ कर उभ्भौ ॥
रा रंडी ठिल्लरीय। आज लग्गौ मन दुभ्भौ ॥
धाराधि नाथ धारंग धर। जैत जीत कीनौ रुदन ॥
चामंड डंस मुक्यौ सुग्रह। रष्षन छिति छत्ती हदन ॥छं०॥१५३६॥

अष्टमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

दूहा ॥ जिहि ग्रह निग्रह प्रथ्थिवर। बँधि सनाह सयन्नि ॥
मन बँधिय अच्छरि बरन। बंधि अँग सँजोगिन्नि ॥
छं० ॥ १५३७ ॥

पद्धरी ॥ बंधे सनाह न्रप सेन कीन। सोगी उपम्म मनु रंभ दीन ॥
आवृत्त पंग बज्जे निसान। भै चितन लग्गि बर चाहुआन ॥
छं० ॥ १५३८ ॥

तिन सुनी जानि पंगुर नरेस। जनु सत्त जुद्ध जुग्गिनिपुरेस ॥
जनु पंग बिषम धुक्किय सयन्न। जुध सभें बीर बिष पियन अन्न ॥
छं० ॥ १५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-मेंस। (२) ए. कृ. को.-तथ्य।

आवृत्त धूलि रनढंकि वीर। कंपंत वप्प, कायर अधीर ॥
ढक्कंत [1]न्रप्प सो पंष वीर। सुनि श्रवन हास नारद गंभीर ॥
छं० ॥ १५४० ॥

उर ग्रहन बाल दंपति मनाह। दिषि उदित पत्ति रत्तीस दाह ॥
पहुपंग वीर संवर सु ताम। मनु बंधिय सेन रति पत्तिकाम ॥
छं० ॥ १५४१ ॥

सोभै सनाह उज्जल अवझ्झ। चमकंति भान द्रप्पनति मझ्झ ॥
निस गयति अद्ध ससि उदित वीर। बज्जे सु बज्जि मद्दत सुमीर ॥
छं० ॥ १५४२ ॥

पृथ्वीराज की वाराह और पंगराज की पारधी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि चंदनिय। अद्ध अग्गैं अंधियारिय ॥
भोग भरनि अष्टमिय। सुक्क वारह सुदि रारिय ॥
च्यारि जाम जंगलिय। राव निसि निंदन घुंट्यौ ॥
यल विंध्यौ कमधज्ज। रह्यौ कंदल आहुट्यौ ॥
दस कोस कोस कनवज्ज तैं। कोस कोस अंतर अनिय ॥
वाराह रोह जिम पारधी। इम रुक्यौ संभरि धनिय ॥ छं०॥१५४३॥

रोड़ राह वाराह। झार सामंत डढारे ॥
ढिल्लो ढार जुझ्झार। पंच सूरति रषवारे ॥
रन सिंघार झुझ्झार। उट्ठ वट्ठा उच्चारे ॥
पारथ [2]वर पथ्थियै। सत्त स्वामित्त सु धारे ॥
पारस विलास रा पंग दल। धन जिम घर बंबरि दवन ॥
संग्राम धाम धुंधरि परिय। निसि न्विघात तारह छवन ॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अंधेरी रात में मांसाहारी पशुओं का कोलाहल करना।

चंद्रायना ॥ तारक मंत प्रगट्टिय। यट्टिय पंषियन ॥
अंषिन अद्ध उरड्डन। अड्डन निंद मन ॥

(१) ए.-कृ-को. तथ्य। [२) ए. कृ. को.-वीर।

ढिल्लिय ढाल कुलाल। कुलाहल किन्नरन।
ढिल्लिय नाथ सु हाथ। समथ्थिन अथ्थियन ॥ छं० ॥ १५४५ ॥
दूहा ॥ अह्न अवन्निय चंद किय। तारस-मारू भिन्न ॥
पलचर रुधिचर अंस चर। करिय रवन्निय रिन्न ॥ छं० ॥ १५४६ ॥

सामंतों का कमल व्यूह रचकर पृथ्वीराज को बीच में करना।

कवित्त ॥ चावद्दिसि रषि सूर। मद्धि रष्यौ प्रथिराजं ॥
ज्यौं सरद काल रस सोच। मद्धि ससि [1]जुत्त विराजं ॥
ज्यौं जल मद्धित जोत। तपति वड़वानल सोहं ॥
ज्यौं [2]कल मद्धे जमन। रूप मधि रत्तौ मोहं ॥
इम मद्धि राज रष्यौ सुभर। नरन सकल निंदौ सु वर ॥
सब मुष्य पंग रुक्यौ सु वर। सो उप्पम जंप्यौ सु गिर॥छं०॥१५४७॥

पृथ्वीराज का प्रिया के साथ सुख से शेष रात्रि बिताना।

चंद्रायना ॥ मित्र महोदधि मझ्झ। दिसंत ग्रसंत तम।
पथिक वधू पथ द्रष्टि। अहुट्टिय चंग जिम ॥
जुवजन जुवतिन गंजि। सुमंति अनंग लिय ॥
जिम सारस रस लुद्ध। सुमुद्ध,ह मद्ध,तिय ॥ छं० १५४८ ॥
चांद्रायन ॥ षह[3] चारु रुचि इंद इंदीवर उद्दयौ।
नव [4]विहार नवनेह नवज्जल रुद्दयौ ॥
भूषन सुभ्भ समीपनि मंडित मंड तन।
मिलि म्रदु मंगल कौन मनोरथ सब्ब मन ॥ छं० ॥ १५४९ ॥
श्लोक ॥ जितं नलिनीं तितं नीरं। जितं नलिनी [5] जलं तितं ॥
जतो गृह ततो गृहिणी। जत्र गृहिणी ततो गृहं ॥ छं० ॥ १५५० ॥

सब सामन्तों का सलाह करना कि जिस तरह हो इस दंपति को सकुशल दिल्ली पहुंचाना चाहिए।

दूहा ॥ मिलि मिलि वर सामंत सह। न्नप रष्षन विच्चार ॥

(१) मो.-जुद्ध। (२) ए. ह. को.-कमल। (३) मो. यह।
(४) मो.-विरहा। (५) ए. कृ. को-नीरं।

चलै राज जिज तरुनि सम । इहै सुमत्तह सार ॥ छं० ॥ १५५१ ॥

जैतराय निढ्ढुर और भौंहा चंदेल का विचारना कि नाहक की मौत हुई ।

कवित्त ॥ रा निढ्ढुर राजैत । राव भौंहा भर चिंतिय ॥
सो अरिष्ट उप्पज्यौ । मरन अपकित्ति सुनंतिय ॥
छच्छंदरि ग्रहि अप्प । ग्रहन उग्रह को सुझ्झह ॥
मरि छुट्टौ कैमास । मंत जरिगय ता मझ्झह ॥
न्रिप कियौ सुभयौ इन भट्ट सथ । तट्ट भेष राजन कियौ ॥
परपंच पंच बंधहु सुपरि । जोगिनि पुर जाइ सुजियौ ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

आकाश में चाँदना होतेही सामंतों का जागृत होना और राजा को बचाने के लिये व्यूह वद्ध होने की तैयारी करना ।

राजनिद्धि कै काज । सूर जग्गे जस पहरैं ॥
पलह चोर लगि आय । अम्म लज्जा रवि गहिरै ॥
छुध पिपास निद्रान । जानि हवि दीन पछित्तिय ॥
पंच इंद्री मुष बंधि । भए जोगिंद सु गत्तिय ॥
जहं लगि निद्धि यष रचन रहै । तहं लग्गि सच, षर बीर उत ॥
सब मिलिरु सूर पुच्छहि सुमति । अप्प रहै कहूं न्रपति ॥
छं० ॥ १५५३ ॥

पति बर बर चहुआन । काम चढ्ढन पंगी [1] भय ॥
हेमादक उनमाद । मुक्कि मोहन सोषन लय ॥
हय गय नर सर नारि । गोर चिहुकोद चलाइय ॥
लाज कोट चहुआन । दुहुन दंती दुहुलाइय ॥
मन सक्कि मार दल सक्किदल । उग्गि चंद कविचंद कहि ॥
सामंत सूर उच्चारि तब । कही मंत फुनि प्रत्त लहि ॥ छं० ॥१५५४॥

(१) ए. कृ. को.-बस ।

मिले चंद सामंत। मंति सा धृम्म विचारिय ॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल्ल अधिकारिय ॥
भुगति भुगति अप्पियै। जुगति लब्भै न जुगंतह ॥
जस मंगल्ल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ्ढियै स्वामि तन वढ्ढियै। चढ्ढियै धार धारह धनी॥
मंगलन होय इह अन्न कौ। पति रष्षै पति अप्पनी॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज॥छं०॥१५५६॥
क्रन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]छत्त॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त॥ कहै कन्ह तम मुद्ध। मूढ़ राजन जिनि [2]संगह॥
उद्ध मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह॥
कहिय राव पज्जून। सोव विसक्क द्रह विक्तिय॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय क्रित्तिय॥
गारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्ष नस्स उत्तरै॥
[3]अवघट्ट घाट नंषै न्त्रपति। दैव घाट संमुह करै॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर॥
क्रित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन जुग्गह कर॥
सार पट्ट पट्टयौ। चित्त मंड्यौ सु उकति अप॥
धस्यौ पुहुप पहुपंग। करौ पूजा सु बीर जप॥
सा ध्रम्म बचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ॥
छं०॥१५५९॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।

राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना।

दूहा ॥ सुनौ सत्त काल्ह नृपति । जगौ संजोगि निवारि ॥
वीर रास ज्यों न्रपति । मनु रजि लड़े सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे ।

कवित्त ॥ मिलिग सब्ब सामंत । बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै । मग्ग रष्पै इक इक्क भर ॥
इक्क इक्क जूझंत । ढंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ । मारि सारिन मुष मोरहि ॥
हम बोल रहै काल अंतरै । देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि अती लष्प की अंग मैं । विना राइ सारथ्थियै ॥छं०॥१५६१॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं है ।

कहै सूर सामंत । सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जत छिज्जंत । नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै सुगति । सुगति छिज्जत क्रम वड्डै ॥
क्रम वड्डत वड्डै अकिति । अकिति वड्डहि नृक्क दिज्जै ॥
दिज्जियै नृक्क कड्डुन कुमति । करनी पति तै जान भर ॥
छिची निछिति सत गरुअ निधि । सत छंडै छची निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो ।

समद सेन पहुपंग । धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि वो हिथ्थत सामि । पैज लगि अंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष्प भुग्गियै । क्रित भुग्गै जु सुगति रस ॥
जगि जीरन प्रथिराज । गिल्यौ सष्पीज जंप जस ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन । चूक कह्यौ जू उप्पनौ ॥

चहुआन नाय जोगिनिपुरह। धर रष्षै बर अप्पनौ॥
छं० ॥ १५६३ ॥

राजा का कहना कि मरने का भय दिखाकर मुझे क्यों डराते हो और मुझ पर बोझ देते हो।

मति घट्टी सामंत। मरन भय मोहि दिषावहु, ॥
जम चिट्ठी बिन कहन। होइ सो मोहि बतावहु ॥
तुम गंज्यौ भर भीम। तास ग्रब्बह मैमंतौ ॥
मैं गोरी साहाब। साहि सरवर साहंतौ।
मैरैंज सुरन हिंदू तुरक। तिहि सरनागत तुम करहु ॥
बुझियै न सूर सामंत हौ। इतौ बोझ अप्पन धरहु ॥ छं०॥१५६४॥

पृथ्वीराज का स्वयं अपना बल प्रताप कहना।

राव सरन रावत्त। जदहि धर पायै आवै ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कछु पटौ लिषावै ॥
राव सरन रावत्त। काल दुक्काल उबारहि ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कोइ [1]अनिबर मारहि ॥
रावत्त सरन नित राव कै। कहा कथन काहावता ॥
संग्राम बेर जुझ्झै सुभर। राव सरन तदि रावता॥छं०॥१५६५॥
मैं जित्तौ गढ द्रुग्ग। मोहि सब भूपति कंपहि ॥
मोहि कित्ति नव षंड। पहुमि बंदी जन जंपहि ॥
मैं भंजै भिरि भूप। भिरवि भुजदंड उपारे ॥
हौंब कहा मुष कहौं। कौंन षग षत बिथारे ॥
मैं जित्ति साहि सुरतान दल। मुहि अमान जानै जगत ॥
चहुआन राव इम उच्चरै। इं देष्यौ कब कौ भगत ॥छं०। १५६६॥

सामंतों का कहना कि राजा और सेवक का परस्पर का व्यवहार है। वे सदा एक दूसरे की रक्षा करने को वाध्य हैं।

बन राषै ज्यौं सिंघ। बिंझ बन राषहि सिंघहि ॥

(१) मो.-आसिवर।

घर रष्षै यौं भुअंग । धरनि रष्षैति भुअंगह ॥
कुल रष्षै कुल बधू । बधू रष्षैति अप्प कुल ॥
जल रष्षै ज्यौं हेम । हेम रष्षैति सब जल ॥
अवतार जबहि लगि जीवनौ । जियन जन्म सब आवतह ॥
रावत्त तेहरा रष्षनौ । राजन रष्षहि रावतह ॥ छं० ॥ १५६७ ॥

सामंतों का कहना कि तुम्हीने अपने हाथों अपने बहुत से शत्रु बनाए हैं ।

तें रष्यौं रा भान । पान रष्यौ हूसेन ॥
तें रष्यौ पाहार . सुरन किन्नर सो मेन ॥
तें रष्यौ तिरहुंति । कढ़ि तोंअर तत्तारी ॥
तें रष्यौ पंडुयौ । डंडि नाहर परिहारी ॥
रष्यनह ढोल ढिल्ली सुरह । गौर भान भट्टी मरन ॥
चहुआन सुनौ सोमेस सुअ । अरिन अब्ब दिज्जे मरन ॥ छं० ॥ १५६८ ॥

सामंतों के स्वामिधर्म की प्रभुता ॥

अति अग्गें हठ परहि । चोट चिहु रत्तन घल्लहि ॥
परे लेहि परि गाहि । दाह दुअननि उर सल्लहि ॥
पहु डोलंत पछै परंत । पाय अचल्ल चलहि कर ॥
अंत असन सिर सहहि । भाव भल पनति लहहि भर ॥
वरदाय चंद चितलु करै । धनि छची जिन अंम मति ॥
मुक्कहि न स्वामि संकट परें । ते कहियै रावत्त पति ॥ छं० ॥ १५६९ ॥

पुनः सामंतों का कहना कि "पांच पंच मिल कीजे कांज हारे जीते नाहीं लाज" इस समय हमारी कीर्ति इसीमें है कि आप सकुशल दिल्ली पहुंच जावें ।

पंचति रष्षहि पास । पंच धरणी धन रष्षहि ॥
पंच पृच्छि अनुसरहि । पंच तत्तै जिय लष्षहि ॥

पंच भीत वंचियै। पंच आदर असनाइत॥
पंच पंच धर तोन। करनि मंडियै वासन जति॥
चहुआन राइ सोमस सुअ। इमग तेग बहु सुकिति॥
अनुसरिय लाज राजन रवन। सुनौ राज राजंन पति॥
छं० ॥ १५७०

दूहा॥ राज विमुष्यौ लोक सुनि। धुनि सामंत अनंत॥
बंक दीह बंछै न को। सुर नर नाग [1]गनंत॥ छं० ॥ १५७१ ॥

कवित्त॥ तें रष्यौ हिंदवान। गंजि गोरी गाहंतो॥
तें रष्यौ जालौर। चंपि चालुक्क चाहंतो॥
तें रष्यौ पंगुरौ। भीम भट्टी दै मथ्यै॥
तें रष्यौ रनथंभ। [2]राय जद्दों सै हथ्यौ॥
इहि मरन कित्ति रा पंग को। जियन कित्ति रा जंगली॥
पहु परनि जाई ढिल्ली लगै। तौ होइ घरघर मंगली॥छं०॥१५७२॥
सुनौ सूर सामंत। सूर मंगल सुपत्ति तन॥
लाज वधू सो पत्ति। राज सोपत्ति सूर घन॥
कबि बानी सोपत्ति। जोग सोपत्ति ध्यान तम॥
मिचापति सोपत्ति। पत्ति बंधै सो आतम॥
हम पत्ति पत्ति न्रप जो चलै। तो पति हम [3]पुज्जै रली॥
सा भ्रम जु पंज सामंत भर। रुक्के पंगह मंजाली॥छं०॥१५७३॥

पुनः सामंतों का कथन कि मर्दों का मंगल इसी में है कि पति रख कर मरें।

सूर मरन मंगली। स्याल मंगल घर आयैं।
वाय [4]मेघ मंगली। धरनि मंगल जल पायैं॥
क्रियन लोभ मंगली। दान मंगल कछु दिन्नै॥
सत मंगल साहसी। मंगन मंगल कछु लिन्नै।
मंगली बार है मरन को। जो पति सथंह तन षंडियै॥
चढि षेत राइ पहु पंग सों। मरन सनंमुष मंडियै॥छं०॥१५७४॥

(१) ए. कृ. को गावंत। (२) ए. कृ. को. सुई।
(३) ए. कृ. को.-पुरजै रली। (४) मो.-मंगल।

मरन दिष्षै प्रथिराज । हसैं छत्रिय नर [1]पट्टहि ॥
जीव लगी जिय पाइ । कहैं आयौ घर [2]बैठहि ॥
पंच पंच तौ कोस । कहै दिल्ली अस कथ्थैं ॥
एक एक छत्रिया । पिष्षि चाहंते वथ्थैं ॥
वर करनि [3]परनि रा पंग की । पहुंचै दूहै वड्डप्पनौ ॥
जब लग्गि गंगधर चंद रवि । तब लगि चलै कविप्पनौ ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

कहै राज प्रथिराज । मरन छिचिय सत लिन्नौ ॥
जस समूह गुर सह । मछिर करि मानन दिन्नौ ॥
काय समूह उच्चरै । चित्त कीजै कवि रूपं ॥
कलह मरन मन चढ़त । पार पल में सो जूपं ॥
छत्तीन मरन मागन सुरव । नथ्थि सु मिट्टन काल वर ॥
जीरन्न जम्म संदेस वल । ढिल्ली हंदे ढोल गिर ॥ छं० ॥ १५७६ ॥

राजा का कहना कि मैं तो यहां से न जाऊंगा रुक करके लडूंगा।

सुनौ सूर सामंत । जियन अहि डछु काज पुर ॥
अधम अकित्ती सुष्य । ता मधौ ग्रह दंड दुर ॥
मोह मंद वर जगत । भए विधि चित्त चिताही ॥
अचित होइ जिहि जीत । पुन्न जित देषि पियाही ॥
नन मोह छोह दुष सुष्य [4]तन । तौ जर जीवन हथ्थ भुत ॥
पहु पंग जंग मुक्कै नहीं । जौ जग जीवहि एक सत॥ छं०॥१५७७॥

सामंतों का उत्तर देना कि ऐसा हठ न कीजिए।

दूहा ॥ राजन मरन न इंछियै । ए भ्रम वंछै नित्त ॥
सिर सट्टै धन संग्रहै । सो रष्षै छत्र पत्ति ॥ छं० ॥ १५७८ ॥
कवित्त ॥ तन वंटन दुष अपन । कित्ति बिय भाग न होई ॥
पुत्त चिया सेवक सु । वंध कर भुग्गवै जोई ॥

(१) ए. कृ. को.- विट्टहि, पैंटाहि । (२) मो.-वट्टहि। (३) ए.-सरनि
(४) ए. कृ. को.-तत ।

सुबर सूर सामंत। जीति भंजौ दल पंगं ॥
तुम समान छत्री न। भिरौ भारथ्थ अभंगं ॥
इन सुभर सूर पच्छै मरन। कित्ती रस मुक्कै न न्रप ॥
रजपूत मरन संसार बर। अब्ब बात बोलै न अप ॥छं०॥१५७९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चाहे जो हो परंतु मैं यहां से भाग कर अपकीर्ति भाजन न बनूंगा।

बैर व्याह मँगलीय। वेह मंगल अधिकारिय ॥
मौ कित्ती गर भग्गि। पच्छ भग्गौ जम भारिय ॥
बीर मात गावही। अप्पि प्रिय अछित उछारिय ॥
मुत्ति जुथानक भग्गि। करौ कानिन उद्दारिय ॥
कुट्टी प्रजंक जस मुगति किथ। काम मुक्कि कित्ति सु मुकी ॥
जी भंग होइ निसि चीय करि। रष्षित मौंन वर भ्रंम की ॥
छं०॥ १५८० ॥

जा कित्ती कारनह। अन्न मंग्यौ भीषम नर ॥
जा कित्ती कारनह। अस्ति दद्वीच देव बर ॥
जा कित्ती कारनह। देव दुर्जोधन मानी ॥
जा कित्ती कारनह। राम बनबास प्रमानी ॥
कारन्न कित्ति [2]दीलीप न्रप। सिंघ मंग गोदान दिय ॥
मम मुक्कि कित्ति हथ्थह रतन। सत्त बरष जीवै न जिय॥छं०॥१५८१॥

सामंतों का कहना कि हठ छोड़ कर दिल्ली जाइए हम पंग सेना को रोकेंगे।

मरन दियै प्रथिराज। कित्ति भज्जै जु अप्प कर ॥
पंग कित्त सिंचवय। अषै बल्ली सु बट्ट बर ॥
जोगि नेस जच्चियै। छंडि मंगल करि मंगल ॥
एक एक सामंत। पंग रुद्धंत जाइ दल ॥
मानुच्छ देह [3]दुल्लह न्रपति। फुनि देह राजन्न मिलि ॥

(१)ऐ. कृ. को.-इछै। (२) मो.-दिल्लिय नपति। ३) मो.-दुल्लभ।

सोच किये वल्ल भग्ग। भग्गि वल्ल क्त्ति न पाइय॥
सुगति गये नर सब्ब। निद्धि ज्यौं रंक गमाइय॥
ज्यौं उतर स्रूर पहरैं अरुनि। न्निघति रंज नह द्रिग्ग हर॥
सामंत स्रूर बोलंत वर। सुबर बीर बित्ते पहर॥ छं०॥ १५८७॥

पृथ्वीराज का किसी का कहना न मान कर मरने पर उतारू होना।

गाथा॥ मिटयो न जाइ कहिनौ। कहनो कविचंद स्रूर सामंतं॥
प्राची क्रम्म विधानं। ना मानं भावई गत्तं[1]॥ छं०॥ १५८८॥
दूहा॥ चिंत्ति त्योंर सामंत सह। बहुरि सु रुक्के थान॥
इहै चित्त चहुआन की। कंचन नैन प्रमान॥ छं०॥ १५८९॥
मरन मंत प्रथिराज भौ। मरन सुमत सामंत॥
इंद्रासन मत्ती[1] लह्यि। डोलिय बोल कहंत॥ छं०॥ १५९०॥

सामंतों का पुनः कहना कि यदि दिल्ली चले जांय तो अच्छा है।

कवित्त॥सामि हथ्थ भर नथ्थ। नथ्थ भर साम हथ्थ वर॥
और मंच हिन मंच। [2]मंच उर अम पिव सर नर॥
प्रथम सनेह वियोग। बिछुरि तीय पीय बिच्छबर॥
जीव सधन पुच विपछ। इष्ट [3]संकट अबुद्धि गिर॥
सामंत स्रूर इम उच्चरै। बिरंग देष बंधेत नर॥
प्रथिराज ग्रेह जौ जाइ बर। जम्म सुष्य बंधीत धर॥
छं०॥ १५९१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मैं तो जैचन्द के साम्हने कभी भी न भागूंगा।

चलै नौमेर निधान। धूअ डुलै चल्लै अपु॥
सत्त समुद जल घुटै। सत्त मरि जाहि काल वपु॥

(१) मो-गर्त्ता (२) ए. कृ. को-मंत्र उर सम पाविस नर।
(३) ए. कृ. को.-संकष्ट।

चंद संदावन घटै । वढै सूर औगुन अग्ग ॥
पच्छा संग नरिंद । राज अग्गौ नन भग्गा ॥
जं कौ सूर उप्पाइ पर । राज रहे रज रष्पियै ॥
कहुँ न वैन प्रथिराज अग । वार वार नन अष्पियै ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

कविचन्द का भी राजा को समझाना पर राजा का न मानना ।

नह मन्निय मति राज । सत्र सामंत सहित्तं ॥
वरजि ताम कविचंद । मन्न मन राजन वत्तं ॥
वहुरि दिन्न सामंत । गिरद रष्यौ फिरि राजन ॥
फिरे भत्य अप यान । विंट [1]लिन्ने ते जाजन ॥
बुल्यौ ताम जादव जुरनि । अद्दो कन्ह सुनि नाह नर ॥
ज्जिय व्याह राह चिंतौ सुचित । घर सु तरुनि तरुनिय सु घर ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

जामराय जद्दव का कन्ह से कहना कि यह व्याह क्या ही अच्छा है ।

दूहा ॥ अवर व्याह अनि मंगली । एह व्याह [2]जुधराह ॥
तिन [3]रति व्याह हरष्षियै । रयन मयन प्रथमाह ॥ छं० ॥ १५९४॥

*भुजंगी ॥ परी पंग पारस्स घन घोर कोटं । भए सूर सामंत सो सामि ओटं ॥
दिसा अट्ठ वीरं सुषं पंग साहे । गहे सामि ध्रम्मं अध्रम्मं न गाहे ॥
छं० ॥ १५९५ ॥

व्यूह वद्ध सामंत मंडली और पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित ॥ दिसि वांई [4]उर भत्त । सूर हय अरुहि पंति फिरि ॥
सत्त पंच हय तेज । पच्छ उभ्भै पारस्स करि ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लिल्ले । (२) ए.-जुद्धरह । (३) ए. कृ. को.-रतिवाह ।

* इस छन्द को ए. कृ. को. तीनों प्रतियों में चौपाई और मो. प्रति में अरिल्ल करके लिखा है।

(४) ए. कृ. को.-सुर ।

बर उज्जल सन्नाह। तेज चिहुं पास विराजै॥
कै पसरी रवि किरनि। मेर विच लषि प्रथिराजै॥
नग मुष्य गढ़ी दुकूल विधी। वीर बीच दंपति सयन॥
सन्नाह सहित सुभ्भै सु न्रिप। रति तीरथ परसै मयन॥
छं०॥ १५९६॥

उक्त समय संयोगिता और पृथ्वीराज के दिलों में प्रेम की उत्कंठा बढ़नी।

गाथा॥ 'श्रम भौ बर संग्रामं। श्रभि लिष्षियं चिंतयो बालं॥
ग्रब्बं भौ चहुआनं। नंदरीयं सेन पंगायं॥ छं०॥ १५९७॥

मुरिल्ल॥ कुंचित न्रिप कल किंचित पायौ। नेह दिष्ट दंपति न सहायौ॥
छुटित लाज छिन छिन चढ़ि मारे। ज्यौं जोबन चढ़ि सैसव बारे॥
छं०॥ १५९८॥

कन्ह का कुपित होकर जामराय से कहना कि तुम समझाओ जरा मानें तो मानें।

कवित्त॥ तब कहै कन्ह नर नाह। सुनहि जामान जादवर॥
विरध राह वड्डाह। तुमहि बुझ्झौ सुभाव भर॥
तुम समान नहि वीर। नेह सम सगुन सुधा रस॥
तुमहि कहौ तिन राज। प्रेम कारन्न काम कस॥
हम काज आज सिर उप्परें। षग्ग धार 'टालों सु षल॥
पुज्जश्रों राज ढिल्ली सु धर। दुभर सु भर भंजों सु दल॥
छं०॥ १५९९॥

मे जान्यौ पहिलों न। एह राजन क्रत काजन॥
मरन पच्छ कैमास। मंत जानै नह ताजन॥
भट्टकज्ज न्रप करिय। 'सकल लोकह सो जानिय॥
एह कथा पहिलों न। संन सन भई सयानिय॥
'मत्यौ सु एह कारन प्रथम। पुर कमद्ध प्रथिराज किय॥

(१) ए. कृ. को.-राले। (२) ए. कृ. को.-सव्व।
(३) ए. कृ. को.-मंत्यो।

नंडौ सु अन्ध अरि हर उक्तसि । लोक नु गित्तौ काज जिय ॥
छं० ॥ १६०० ॥

ज्ञानराय जह्नव का राजा से कहना कि विवाह की यह प्रथम रात्रि है सो सुख सेज पर सोओ।

सुनिय वत्त राजंन । कान्ह मन रीस अप्प चित ॥
पय लग्यौ नर नाह । धन्नि जंपौ सु धन्नि हित ॥
चलिय वास न अन अन्य । फिरत रोपिय सब संगिय ॥
वंध वारि विथ्यारि । उड्ड चिंतान विलग्गिय ॥
जंपयौ राज जद्दौ नमिय । प्रथिम रज इह व्याह रह ॥
सुनिय सु ग्रेह प्रथमाह यह । करहु सयन न्रिप सुष्य सह ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

दरबार बरखास्त होकर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ शयन करना।

दूहा ॥ संजोगिय नयननि निरषि । सफल जनम न्रप मानि ॥
काम कसाये लोयननि । हन्यौ मदन सर तानि ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

सुधि भूली संग्राम की । भूलि अप्पनिय देह ॥
जोन भयो वसि पंग दल । सो भयो वाम सन्नेह ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

नयन चरन करमुष उरज । विकसत कमल अकार ॥
कनक वेलि जनु कामिनी । लचकनि बारन भार ॥ छं० ॥ १६०४ ॥
रवनि रवन मन राज भय । भयौ नैंन मन पंग ॥
सूरन सों संग्राम तजि । मँड्यो प्रथम रस जंग ॥ छं० ॥ १६०५ ॥
तब सु राज रवनिय निरषि । हसि आलिंगन दिठ्ठ ॥
रचिय काम सयनह सुबर । दिय अग्या भर उठ्ठ ॥ छं० ॥ १६०६ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का शयन से उठना सामंतों का उस

के स्नान के लिये गंगाजल लाना स्नान करके पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना।

पद्धरी॥ अग्गिय दीन जद्दवह जाम। रष्षहु जु सब्ब निष्ठाम ठाम॥
मंगयौ ताम प्रथिराज वारि। अंदोलि मुष्ष पय पान धारि॥
छं० ॥ १६०७

आवद्ध बद्ध सुष सयन कीन। सब दिसा अप्प बर बंटि लीन॥
सब फिरत याह सामंत दीन। पारस फिरंत सामंत कीन॥
छं० ॥ १६०८ ॥

दस हथ्थ मग्ग सीसह सु चंद। बैठो सुचिंत चिंता समंद॥
निहुरह राव जामान सथ्थ। बलिभद्र सिंघ पामार तथ्थ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

सामलौ सूर दिसि पुब्ब पंच। रष्पनह राइ राजेस संच॥
नर नाह कन्ह पामार जैत। उद्दिग्ग उद्दोत राष्पै सु भैत॥
छं०॥१६१०॥

हाहुलियराव हंमीर तथ्थ। जंघालराव भीमान पथ्थ॥
धन पत्ति दिसि राषै सु धीर। अपअप्प परिग्गह जुत्त वीर॥
छं० ॥१६११॥

बंधव बरन्न तोमर पधार। बद्घेल सु लष्पन लष्प सार॥
द्वै बंध हद्दु सम अप्प सूर। मह्नसी पीप परिहार पूर॥
छं० ॥ १६१२ ॥

पच्छिम दिसाह सजि धीर सार। भंजनह मंत गय जूहभार॥
पवार सलष आजानबाह। चहुआन अत्त ताई उधाह॥
छं० ॥ १६१३ ॥

चालुक्क बिंभ भोंहा अभंग। बग्गरी देव षीची प्रसंग॥
बारउह सिंह अनभंग भार। दच्छिन दिसाह सजि जूह सार॥
छं० ॥ १६१४ ॥

(१) मो.-पुज्ज।

¹साहस्स रचा सत एक तथ्य । सब मंत्र दंद नीचह उरथ्य ॥
छं० ॥ १६१५ ॥

अप अप्प भ्रत्य सामंत सथ्र । पट्टए काज जल पंग तथ्र ॥
कमधज्ज भ्रत्य मध्ये वराह । आनयौ अप्प भेदेव ताह॥छं०॥१६१६॥
जुर पाय पानि अंदोलि वारि । अचयौ अप्प आतम अधारि ॥
जगि सुतन संति सामंत राज । चिंते सु दुष्ट भर स्वामि काज ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

आवद्ध बंधि सजि वाजि सब्ब । आसन्न ताम अप्पह अथव्व ॥
उच्छंग भ्रत्य कौ दै असीस । अत्तंमि पेट के पिन परीस ॥
छं० ॥ १६१८ ॥

पारस्स बैठि पंगुरह सेन । गज्जें निसान हय गय गुरेन ॥
चिंता सु चुंभि अति पंग राज । पारस्स फिरै चहुआन काज ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

प्रातः काल होते ही पुनः पंग दल में खरभर होना ।

दूहा ॥ चित्त अत्ति चिंता तपित । सज्जि राज कमधज्ज ॥
जिके सुभट वर अप्पने । फिरै तब क्षित रज्ज ॥ छं० ॥ १६२० ॥
सेन संजोग प्रथिराज हुअ । बाजहि लाग निसान ॥
काइर विधु मन वंछही । सूरही वंछहि भान ॥ १६२१ ॥

प्रभात की शोभा वर्णन ।

रासा ॥ इसी राति प्रकासी । सर कुमुदिनी विकासी ॥
मंडली सामंत भासी । किवन कल्लोल लासी ॥ छं० ॥ १६२२ ॥
पारसं रज्जि चंदं । लारस्स तेज ²मंदं ॥
कातरा क्रति बंधे । सूर सूरत्तन संधे ॥ छं० ॥ १६२३ ॥
वियोगिनी रैंनि लुट्टी । संजोगिनी लाज छुट्टी ॥
*　*　*　।　*　*　छं०॥१६२४॥

(१) ए. कृ. को.-साहस ।　　(२) ए. कृ. को.-संदं ।

चोटक ॥ छुटि छंद गिसा सुरसा प्रगटी। मिलि ढालनि माल रही सु घटी॥
निससान निसान दिसान हुअं। धुअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

नव निभ्भरयं वनयं वनयं। गज वाजत साज तयं घनयं ॥
निज कच्छरि अच्छरियं सदयं। करि रंजन मंज नयं जनयं ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

करि सारद नारदयं नदयं। सिर सज्जन मज्जनयं सदयं ॥
निज निर्भय यं चहुआन मनं। किर निर्भर रज्जित सूर जनं ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

गाथा ॥ सितभ किरनि समूरौ। (१)पूरयं रेनं पंग आयेसं ॥
जुग्गनि पति भर सूरौ। पारस मिलि पंग राएसं ॥ छं० ॥ १६२८॥

मुरिल्ल ॥ पारसयं पसरी रस कुंडलि। जानकि देव कि सेव अषंडलि ॥
झाखि झलाल रही चव कोदिय। दीह भयौ निस की दिसि मुंदिय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

प्रातः काल से जैचन्द का सुसज्जित हो कर सेना में पुकारना कि चौहान जाने न पावे।

* कुंडलिया ॥ देषि चिरा उद्योत घन। चंद सु ओपम कथ्थ ॥
दीपक विद्या जनु रचिय। द्रोन कि पथ भारथ्थ ॥
द्रोन कि पथ भारथ्थ। काम आये जै जरथं ॥
उभय घरी दिच्छतें। रुधि हरि चक्र विरथं ॥
दो प्रदीप गज तुरँग रथ। एक धनुष पाइल करग ॥
पावै न जानि पप्पीलिका। निसा दीह सम करि भिरग ॥
छं० ॥ १६३० ॥

कवित्त ॥ सहस पंच सम सूर। पास वर तिय निरमल कुल ॥
निज सरीर हथ देह। सज्जि सिर अग्गि राज बल ॥
तिन समथ्थ रा पंग। फिरत सब सेन अप्प प्रति ॥

(१) मो.-चूरयं सेन पंग आएसं ।

* वास्तव में यह डोढ़ा छन्द है परंतु इसकी बीच की दो पंक्तियां खो गई हैं। यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।

गिके सेन प्रथिसेव । कढे प्रथिराज रोह ताते ॥
जिन जाय निकासि चहुआन ग्रह । ग्रह्यौ तास सब सेन हय ॥
[1]इन फेरत राज निज भत्त प्रति । प्रथु सनमानित सब्ब रय ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

जैचन्द का पूर्व दिशा से आक्रमण करना ॥

करति घरति पहु पंग । फिरे सब सेन श्रप्प प्रति ॥
अग्गि तेज हुल्लाल । काल दुति भई दीह भति ॥
प्रयन पुब्ब दिसि राज । जय हुं तह फिरि पारस ॥
तहं फिरि श्राइय राज । जाम जामनिय रहिय तस ॥
प्राचीय मुष्य सजि राज गज । दिष्षि सोय कमधज्ज नमि ॥
न्टप चढ्े तेव टामंक करि । ग्रहन राज चहुआन तमि ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

सुख नींद सोते हुए पृथ्वीराज को जगाने के लिये कविचन्द का विरदावली पढ़ना ।

पद्धरी ॥ सोवै निसंक संभरि नरिंद । पष्परत पंग संक्यौ सुरिंद ॥
प्रथिराज काम रत सम सँजोगि । अवतार लियौ धर करन भोग ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

जग्गवै कोन जालिम्म जोइ । प्रेमनिय प्रेम रस रह्यौ भोइ ॥
चव बाह मत्त [2]हीसेंकि कान । चंपि चुंग दिसनि रहि घुरि निसान ॥
छं० ॥ १६३४ ॥

सिंधूअ मारु मलक्यौ सु गान । सुनि सूर नह काइर कँपान ॥
पंचास कोस रुन्नी धरन्नि । मेलान मध्य चहुआन किन्न ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

कबि किय किवार बुल्ल्यौ बिरद । सिंघ जिंम जग्ग सुनि श्रवन सद ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हम फेर राजनित भूत पति ।		(२) ए. कृ. को.-हींसहिं ।

पृथ्वीराज का सुख से जागना।

दूहा ॥ विरदावलि बोलत जग्यौ। औय संजोइय कंत ॥
कंदल रस रत्ते नयन। क्रोध सहित विहसंत ॥ छं० ॥ १६३७ ॥

गाथा ॥ इम सज्जत सामंत। घटय रयनि तुच्छ संघरियं ॥
जग्गत न्टप चहुआनं। पयानं भान [1]प्रच्छानं ॥ छं० ॥ १६३८ ॥

दूहा ॥ सयन संधि मंडिय न्टपति। दुअ यट्टौ अरि षेति ॥
मानि घात सामंत मन। तब उभ्भै करि नेत ॥ छं० ॥ १६३९ ॥

पृथ्वीराज का सैन से उठ कर संयोगिता सहित घोड़े पर सवार होना और धनुष सम्हालना।

चोटक ॥ न्त्रिप मंगिय राज तुषार चढ़े। कविचंद जयज्जय राज पढ़े ॥
परिपंग कटक्कत घेर घनं। दस पंचति कोस निसान सुनं ॥
छं० ॥ १६४० ॥

गज राज विराजित मध्य घनं। जनु बद्दल अभ्भ सु रंग बनं ॥
[2]परि पष्षर सार तुरंग घनी। जनु इल्लत हेल समुद्द अनी ॥
छं० ॥ १६४१ ॥

बर बैरष बंबरि [3]छच तनी। बिच माहिय स्याहिय सिंघ रनी ॥
[4]हरि पष्ष इमा उभ्भ पीत बनी। जनु लज्जत रैंनि सरद्द तनी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

भन नंकहि भेरि अनेक सयं। सहनाइय सिंधुअ राग लयं ॥
निसि सब्ब न्त्रिपत्ति अनीन फिरै। जनु भांवरि भान सु भेर करै ॥
छं० ॥ १६४३ ॥

दल सब्ब सँभारि अरित्त करी। जिन जाइ निकस्सि नरिंद अरी ॥
गत जांम चिजाम सु पीत परी। जय सद्द अयासहं देव करी ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

कर चंपि नरिंद सँजोगि ग्रही। उपमा चर चारु सुभट्ट कही ॥
मनों भोर दुभ्भारसि अग्गि तपी। कलिका गजराज कमोद भपी ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

---

(१) ए. को.-प्रस्यानं। (२) मो.-परि पष्षर ताप सुरंग घनी।
(३) मो.-पचत्ती। (४) ए. कृ. को.-हरि पष्ष उमापति पीत पती।

मथ चंदि रके बनि वाल चढ़ी। रवि बेलि किधौं गवं काम वढ़ी ॥
तर तोन चनंकत पच्छ दिठी। जु मनों तन भांन [1]मयूष उठी ॥
छं०॥ १६४६ ॥

नृप दंपति चंद विराज बरं। उदै अस्त ससी रवि रथ्य परं ॥
नर न्रप्प सजे सु तरंग चढ़े। मनु भान पयानति लोह कढ़े ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

चतुरआन कमानति कोपिलियं। मिलि भोहनि पंचि कसी सदियं॥
तर छुट्टत पंपति सद्द [2]सयं। मद गंध गयंदन मुक्कि गयं ॥
छं० ॥ १६४८ ॥

तर एक सु विन्नत सत्त करी। दल दिष्पत नेंन ठठुक्क परी ॥
नरवारि हजारक च्यार परी। प्रथिराज लरंत न संक करी ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

पंग सेना का व्यूह वर्णन।

कवित्त ॥ उभै सहस गजराज। मद्द मुष्षह पंति फेरिय ॥
नारि गोर जंवूर। वान छुटि कहुंकि सु भेरिय ॥
पंग अग्ग कँद्रप कुआर। [3]मीर गंभीर अभंगम ॥
ता अग्गे वन सिंघ। टांक वलिभद्रति जंगम ॥
केहरि कंठेरि अग्गें न्रपति। सिंह विभग्गा सिंह रन ॥
उग्गयौ न भान पयान विन। [4]मथन मेर मच्च्यौ मह्न ॥
छं० ॥ १६५० ॥

वीर ओज वर्णन।

रसावला ॥ षग्ग वीरं षुलं, अंत दंतं रुलं। दंत दंती षुलं, लोहरतं मिलं ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

वीर वीरं ठिलं, सार सारं झिलं।चच्च [5]रंसी पिलं, वीर अंगं ढिलं॥
छं० ॥ १६५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-मझंप। (२) ए. कृ. को.-भयं। (३) ए. कृ. को.-मीर।
(४) मो.-सथन। (५) ए. कृ. को.-चच्चरं चीपिलं।

खाइरं जे पुलं, वैन बहु बुलं । सिद्ध [1]चित्त डुलं, क्रम्म बंध पुलं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

सुगति मग्ग चलं, ईस सीसं रलं । ढुंढि बंध गलं, षग्ग मग्गं दलं
छं० ॥ १६५४ ॥

ढाल गज्ज मलं, देवलं जं ढुलं । घाइ घुम्मै षलं, अंग सोभै ललं ॥
छं० ॥ १६५५ ॥

सीस हक्कै कलं, काइ रंजं ढलं । पिंड रत्तं पनं, षग्ग वित्तं तनं ॥
छं० ॥ १६५६ ॥

खूर उट्ठै पनं, द्रोन नच्ची धनं । आयुधं झंझनं, नारदं रिझझनं
छं० ॥ १६५७ ॥

सूर्य्योदय के पहिले से ही दोनों सेनाओं में मार मचना।

कवित्त ॥ बिनह भान पायान । इदं कमधज्ज जुद्ध दुअ ॥
सच्यौ न बोल संपुलै । बिरद पागार बज्ज भुअ ॥
सुकल [2]षोलि कल्हार । झंकित कव्यौ झाराहर ॥
बिनहि अरुन उद्योत । अरुन उग्यौ धाराहर ॥
पष्षु बिन पुकार पष्षु उप्परिग । सु प्रह पहक फट्टी फहन ॥
उहिग सुतन अरि बर किरन । मिलिव चक्क चक्की गहन ॥
छं० ॥ १६५८ ॥

असिवर झर उध्धरिय । चक्क चक्की अनंद मन ॥
कुमुद मुदिग कमधज्ज । सेन संपुटिग सघन रिन ॥
पंच जन्य संपन्न । सकल कुरु घरनि घरीयं ॥
पसु कि मझ्झ मुष पंच । तिमिर किरनिनि निवरीयं ॥
उडगन अचंभ कौतूहलह । अरु जु स्वामि किन्नौ गहरु ॥
उहिग पगार सुत पंचनन । समर सार बुल्यौ पहरु ॥
छं० ॥ १६५९ ॥

(१) मो.-वित्तं । (२) ए. कृ. को.-कोल ।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-17

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO
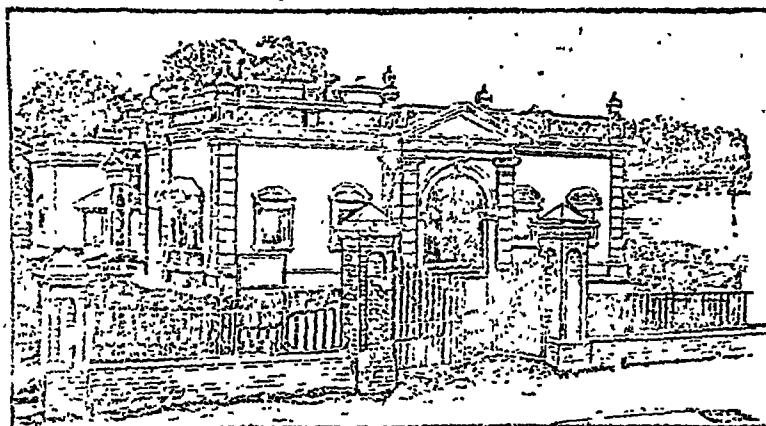
OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXI to LXIV.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६१ से ६४ तक.

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1910.

मूल्य १।)], Issued 25th April 1910. [Price R. 1/4/.

सूचीपत्र।

—:o:—

—:o:—

युद्ध वर्णन ।

नाराज ॥ हयग्गयं नरब्भरं [1]रथं रथंति जुट्टयौ ।
मनों नरिंद देव देव झल्लरी सु बट्टयौ ॥
किन काछी तुरंग तुंग जूह गज्ज चिक्करं ।
सु लोह छक्कि नष्षि भोमि षेत मुक्कि निक्करं ॥ छं० ॥ १६६० ॥

बजंत घाय सद्दकं ननद्द नद्द मुद्दरं ।
गरज्जि देषि अग्गि ज्यों त्रिदोष मन्न जो दुरं ॥
उठंत दिष्ट सूर की करूर अंषि राजई ।
मनों कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरीति साजई ॥ छं० ॥ १६६१ ॥

उभै सयन्न कम्म यंक को न भूमि छंडयं ।
सु मज्झि झ कंक भज्जि कोन सार अंग षंडयं ॥
बरंत रंभ रंभ भंति सार के दुझारयं ।
सुधं सुधं बजंत सूर धार धीर पारयं ॥ छं० ॥ १६६२ ॥

तुटंत श्रोन सीस द्रोन नंचि रीस हक्कयौ ।
[2]रचंत भोम छिद्र कार वीर वीर झक्कयौ ॥
परंत के उठंत फेरि मच्छ ज्यों तरप्फई ।
रनं विधान धीर वीर वीर वीर जंपई ॥ छं० ॥ १६६३ ॥

अरुणोदय होते होते भोनिग राय का काम आना ।

कवित्त ॥ पहर एक असि एक । एक एकह निब्बर धर ॥
धर धर धरनि निहारि । नाग धक्कयौ सु नाग सिर ॥
हल हलि मिलि रट्ठौर । रीठ बज्जी बज्जारह ॥
कर क्कस रस केलि । धार तुट्टिय लगि धारह ॥
दुहुं दल पगार पागार गिरि । [3]भिरि भुअंग भूनिग तनौ ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि समर । अमर मोह जग्यौ घनौ ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

---

(१) मो.-रथं रथं सु । (२) ए- कृ. को.-रंरत भोम छिद्रकार । (३) मो.-भर ।

अरुणोदय पर साषुला सूर का मोरचा रोकना।

अरुन वरुन उद्दयौ। अरग उद्दिग उद्दिग जुज॥
सद्द सुष्परि सा षुलौ। षोलि षंडौ उग्गिग दुज॥
हय गय नर आरुरि सु। राह वंवरि वर तोरयौ।
सार सार [1]संभार। बीर वंवरि भंभोरयौ॥
पहुपंग समुद जरद्द[2]अध। सूर सार सारह हनिय॥
दनु देव नाग जै जै करहिं। वरन रुद्र रुद्रह भनिय॥
छं०॥ १६६५॥

घरी एक दिन उद्दै। पंग आरुहिय सेन भिरि॥
हय गय नर भर भिरत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर॥
किन्नर वर [3]चैनेन। बीर पस पंष किलक्किय॥
पंचम सुर जुग्गिनिय। बंधि नारद सु वक्किय॥
एं हंत हंत सुर असुर कहि। जै जै जै प्रथिराज हुअ॥
असि लष्ष पंग साइर उलटि। धनि नरिंद मंडेति भुअ॥
छं०॥ १६६६

एक घड़ी दिन चढ़े पर्य्यंत सामंतों का अटल हो कर पंग सेना से लड़ना।

परिग बीर वन सिंघ। रंग कमधज्ज सुरष्षिय॥
वर सुरंभ घरि फेरि। तज्यौ वर प्रान सु लष्षिय॥
ज्यौं मझ्झ वर [4]अष्पि। जैन बंकुरि तिय लष्षिय॥
बीनि रंभ दुहु हथ्थ। मरन जीव ते लष्षिय॥
लष्षन प्रमान मझ्झहिति रुष। रंभ अरंभन फिरि बरी॥
तिहि परत सिंघ रषि रिंघ अप। पंग पंच हथ्थिय परी॥
छं०॥ १६६७॥

दूहा॥ घरिय उदय उभ्भय दिवस। हक्कि हलक गज पंग॥
सुभर सूर सामंत सुनि। टरिय न वीर अभंग॥ छं०॥ १६६८॥

(१) मो.-संसार (२) ए.-अस। (३) ए. कृ.को.-त्रैनेत्र। (४) कृ. को. अछिष।

पतू रत्त अस्स, जप कंक कस्स। मुष मोर जानं, उपम्मान आनं॥
छं० ॥ १६७६ ॥

इतने में पृथ्वीराज का दस कोस बढ़ जाना परंतु हाथियों के कोट में घिर जाना ॥

कवित्त ॥ चढ़ि पवंग प्रथिराज। कोस दस गयो ततच्छिन ॥
परत कोट चिहुकोद। घेरि करि लियौ गयंदनि ॥
इम जंपै जैचंद। भग्गि प्रथिराज जाइ जिन ॥
सोइ रावत रजपूत। सूर तिहि गनौं अयंगनि ॥
[1]कंमान कठिन कविचंद कहि। दुहु भुव बल कर तानियौ ॥
लग्गौ सु बान जयचंद हय। तब दल फिरि दुहुं मानयौ ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

पृथ्वीराज का कोप करके कमान चलाना।

इसौ देषि प्रथिराज। सहस ज्वाला जक जग्गिय ॥
मनों गिरवर गरजंत। फुट्टि दावानल अग्गिय ॥
अप्प अप्प विरफुर्यौ। करिय ज्वाला क्रम लग्गिय ॥
मनु पावक मम्भि वीज। आनि अंतर गन जग्गिय ॥
हिरनाल फाल कढ्ढिन सकै। दावा नल भट्टह तयौ ॥
कनवज्ज नाथ असिलष्ष दल। जन जन अग्गि झपट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

एक प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते सहस्त्रों योद्धाओं का मारा जाना।

सत विंध्यौ चहुआन। पंग लग्गौ अभंग रन ॥
सु बर सूर सामंत। जोति झलहलिय उंच घन ॥
जांम एक दिन चढ्यौ। रथ्थ पंच्यौ किरनालं ॥
ब्रह्म चौंति फुन्नि परिय। देषि भारथ्थ विसालं ॥
पूतंनि ताम देवन्न कर। धरे ग्रब्भ दस मास बर ॥
जोगवै जतन्न पन निस्सदय। तिन मरत न लग्गत पल सुभर ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. लेकर कमांन कविचंद कहि।

गाथा ॥ इट्टं नगाह सविसं । निमुप निमुप बंधनं तजहं ॥
तिहं जोग प्रमानं । तं भंजयौ सूर निमिषाई ॥ छं० ॥ १६८० ॥

दूहौ ॥ रन रुंध्यौ संभर धनौ । पंग प्रमानत घेरि ॥
निमुप सु रष्यौं वर न्रपति॥ ज्यौं पति भान सुमेर ॥ छं०॥१६८१ ॥

जैचन्द का कुपित होकर सेना को आदेश करना ।

कवित्त ॥ लल्लै नैन सु पंग । वान रत्ती रस वीरं ॥
इघ्य रोस विथ्थुरै । मोह मुक्कित्ति सरीरं ॥
गह गहगह उच्चार । भार भारथ सपंतं ॥
बंधन वर चहुआन । भीम दुस्सासन रतं ॥
सावंग अंग चित गंग कौ । ग्रत्त[१] सोज प्रथिराज रस ॥
सामंत होम भारथ्थ कस । बीर मंत्र जदि होइ बस ॥ छं० १६८२ ॥

घनघोर युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ परे पंच वीरं, मदेलष्य भीरं । परे बंद मन्नी, समंदं हरन्नी ॥
छं० ॥ १६८३ ॥

नये वीर भीरं, जुजंतं सरीरं । उड़ै छिंछ अग्गं, लगे अंग अग्गं ॥
छं० ॥ १६८४ ॥

नगं रत्त जैसं, जरे हेम तैसं । लगे लोह तत्ती, सहं वीर पत्ती ॥
छं० १६८५ ॥

सुन्यौ वीर नद्दं, बहै बग्ग हद्दं । बही अंष जारी, विजू यों संझारी॥
छं० ॥ १६८६ ॥

[२]धुसी लग्गि वीरं, वरं मंत पीरं । [३]गढ़ ढाहि नीरं, दँती कढ्ढि वीरं ॥
छं० ॥ १६८७ ॥

कन्हं कंस तीरं, कँधं नंषि भीरं । घयं वार पारं, रुधी धार धारं ॥
छं० ॥ १६८८ ॥

जयं कंन रायं, षलं छुट्टि वायं । सिरं तुट्टि पारं, रुधी छुट्टि धारं ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

---

(१) मो०-घृत्त । (२) ए. कृ. को.- घुछी (३) ए. कृ. को.- गजं ।

नभं होम लग्गी घृतं होम अग्गी। घटं घट्ट धारं, दिवी घट्ट भारं॥
छं०॥ १६६०॥

झले षग्ग जग्गी, तिने लोक लग्गी। जिवं मुक्ति भट्टं, चली बंधि थट्टं॥
छं०॥ १६६१॥

धरं धार चट्टं, पगं मग्ग बट्टं। सल्ल वीर झारं, जुधं लीन भारं॥
छं०॥ १६६२॥

मरं मार [1]मारं, पँगं वीर वारं। * * छं०॥ १६६३॥

पृथ्वीराज के सात सामंतों का मारा जाना और पंग सेना का मनहार होना परंतु जैचन्द के आज्ञा देने से पुनः सबका जी खोलकर लड़ना।

कवित्त॥ परिग पंग भर सुभर। राज रजपूत सत्त परि॥
लोथि लोथि पर चढ़ी। वीर बढ़ीति कोट करि॥
परिग सूर जै सिंह। गौर गुज्जर पहार परि॥
परिय नन्ह अरु कन्ह। अमर परि नाभ अमर करि॥
बग्गरी परिग रनधीर रन। रनहँ धिग रिन मल्ल परिग॥
इन परत सूर [2]सत्तौ तिरन। पंग सेन ढहु कि कारिग॥ छं०॥१६६४॥

भुजंगी॥ ठठुक्के सुसेनं मनं मीर मिल्लै। डरं [3]विद्दूरी सेन सब्बें निकल्लै॥
बरं बैर राठौर चहुआन [4]झल्लै। तवै लष्षियं पंगु रा नैन लल्लै॥
छं०॥ १६६५॥

तिंन उप्पजी रोस उर अभ्भ अग्गी। उतं निक्करे त्रिपनि कै नैन मग्गी॥
तिनं लुंविय नैंन दीसै दिसानं। तवं चंपियं राज नें चाहुआनं॥
छं०॥ १६६६॥

तिनं उप्पजी संष धुनि सिंगिधारं। तिनं वज्जियं नद्द नीसान भारं॥
लयं लग्गियं कन्न राजं सँजोई। तिनं अप्पियं कंत कोवंड जोई॥
छं०॥ १६६७॥

तिनें सुमरियं चित गंभ्रब्व सद्दं। उतं जोइयं मुष्ष सामंत हद्दं॥

(१) मो.-झारं, कृ.- कारं। (२) ए.- मत्तौ। (३) को.- विद्धरी। (४) ए. कृ. को.- हल्लै।

वचन्न सु सद्द कवी चंद वोल्यौ । तवै भंजिय कन्ह सों सौ अबोलौ ॥
छं० १६६८ ॥
तवें लग्गिय भान राय ति रायं । [1]उन देषिय आज कौतूह चायं ॥
तवै कोपिय बीर विजपाल पुत्तं । तिनं आवधां झारि जमजालि दुत्तं ॥
छं० ॥ १६६९ ॥
सवं संहरी सेन सोन्नह दीहं । इसौ नौमि तिथि थान प्रथिराज सीहं ॥
तिनं राजसं तामसं बे प्रगट्टं । भरं मुक्किय सब्ब सातुक बट्टं ॥
छं० ॥ १७०० ॥
सरं सार संपत्ति पं त्तलि रच्छं । मनो आवधं इंद्र रुद्रानि कच्छं ॥
वरं निट्ठरौ ढाल गय पत्ति मत्तं । तवै उट्ठिय सूर सामंत रत्तं ॥
छं० ॥ १७०१ ॥
उतं भूमि भर धरनि ढहि ढरि सुपथ्थं । तिनं अथ्थि विय हथ्थ प्रथिराज सथ्थं ॥
चढे वीर सामंत सा बीर रूपं । जिसै सैल सं दूर संदेस जूपं ॥
छं० ॥ १७०२ ॥
उडै विग्रवानै सुमानै उदंता । जिसें अरक फल फूटि होतें अनंता ।
तवें कंपिय काइरं लोह इत्तं । मनों अनिल आरंभ प्रारंभ पत्तं ॥
छं० ॥ १७०३ ॥
इसौ जुद्ध आवद्ध मध्यान सूभं । रहे हारि हथ्थं जु जूवारि जूभं ॥
छं० ॥ १७०४ ॥

दूसरे दिन नवमी के युद्ध के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन ।

कवित्त ॥ तिथि नौमी सनिवार । मेष संक्राति सिंघ ससि ॥
गंज नाम वर जोग । चित्र जोगिनी वाम बसि ॥
दिन नछित्र रोहिनी । जांम मंगल बुध तीजौ ॥
के इंद्री गुर देव । भान ससि राह सुभीजौ ॥
वर द्रष्टि येह ग्रह दान रन । नवमि जुद्ध [2]अवरुद्ध वजि ॥
पहुपंग बीय सुमुह ढरी । चावद्दिसि रष्षै सु सजि ॥ छं० ॥१७०५॥

(१) ए. कृ. को. तिनं । (२) ए. कृ. को.- अवरत्ति ।

जैचन्द की आज्ञा से पंग सेना का कोप करना और चौहान की तरफ से पांच सामंतों का मोरचा लेना। इन्हीं पांचों के मरते मरते तीसरा पहर हो जाना।

तद्दिन रोस रट्ठौर। चंपि चहुआन गहन कहि॥
सौ उप्पर सैं सहस। [1]बीह अगनित्त लष्ष दहि॥
छुटि डुंगर थल भरिग। फुट्टि जल थलति प्रवाहिग॥
सह अच्छरि अच्छहि। विमान सुर लोक बनाइग॥
कहि चंद दंद दुंहु, दल भयौ। घन जिम सिर सारह झरिग॥
हरि सैस ईस ब्रह्मानि तनि। तिहुं समाधि तद्दिन टरिग॥छं०१७०६॥

पंग वीर गंभीर। हुकम अप्पौ जु गहन वर॥
वर हैवर वर रम्य। द्रुग्ग देवत्त जुद्ध भर॥
चित चचु भुज भर दंद। गोर सूरंत नषत हर॥
चावद्दिसि चहुआन। रुक्कि कढ्ढी असिवर भर॥
दल झुररि झुररि मोहिल मथन। नयन रत्त बोलिग सुभर॥
जुग्गिनि पुरेस निंदरि चलिय। अवल होत उप्पर सुधर॥
छं०॥ १७०७॥

गाथा॥ विपहर [2]पहुरति परियं। हय गय भार सार [3]नथ्थेनं॥
रह रंग रोस भरियं। उठ्ठियं बीर विवेनं॥ छं०॥ १७०८॥

कवित्त॥ सुनिग माल चंदेल। भान भट्टी भुआल वर॥
धनू वीर धवलेस। उट्ठि त्रिब्बान हक्कि वर॥
तमकि हर सामलौ। सार झल्लिय पहार भर॥
पंच पंच तिय पंच। पंच पंचंत पंच वर॥
दैवान जुद्ध पंचै भिरिग। भिरि भारथ्थ अपुब्ब वर॥
वजि घरी पहर तीसर उठी। [4]ज्यौं अगनि धुंम संजुत्त धर॥
छं०॥ १७०९॥

(१) मो.-बीरह। (२) ए. कृ. को-महुरति।
(३) मो.-सध्थेनं। (४) मो.-ज्यौं अगनि धुंमर जुत्त धर।

वीर योद्धाओं का युद्ध के समय के पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन ।

बाघा ॥ परि पंच जुद्ध सु बीर । बजि सस्त्र बज्जि सरीर ॥
भर अग्गि खंजन भीर । झुझझही षग्गनि नीर ॥ छं० ॥१७१०॥
तुटि सस्त्र बस्त्र सरीर । मनु [1]तरनि सोभि करीर ॥
नरपत्ति चाहत वीर । तिन किलकि जोगिनि तीर ॥ छं० ॥ १७११॥
तजि सवन यों अन वीर । षग मिलिग झलिग सरीर ॥
दल मथत दलन अधीर । जनु समुद थाहत कीर ॥ छं०॥१७१२॥
बर वरै अच्छरि बीर । जिन मुष्ष झलकत नीर ॥
तुटि अंत दंतन तीर । म्रिनाल मन कढि नीर ॥ छं०॥१७१३ ॥
बजि षग्ग नद्द निनद्द । [2]गज गजत सोरस मद्द ॥
गज रत्त रत्त जु ढाल । षग लगत भज्जत हाल ॥ छं० ॥ १७१४ ॥
सद व्रत्त जनु गहि दीन । तिन ईस सीस जुलीन ॥
घट उट्ठि धरियत अद्ध । चंदेल माल विरुद्ध ॥ छं० ॥ १७१५ ॥
सिर हथ्थ साहि प्रमान । कर नंषि दिसि चहुआन ॥
वर [3]पंग है गै वीत । भारथ्थ दस गुन गीत ॥ छं० ॥ १७१६ ॥

उक्त पांचों वीरों की वीरता और उनके नाम ।

कवित्त ॥ परे पंच वर पंच । सुभर भारथ्थह धुत्ते ॥
उंच हथ्थ करतूति । उंच बड़पन बड़ जुत्ते ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । [4]पंग अगनित षल भंजिय ॥
पंच पंच मिलि पंच । रंभ साहस मन रंजिय ॥
दिन लोक देव आनंद कर । वर वर कहि कहि झग्गरैं ॥
इन मरत पंग जो गति बुझी । षिझत फिरी पारस परैं ॥
छं० ॥ १७१७ ॥
पऱ्यौ माल चंदेल । जेन धवली धर गुज्जर ॥
पस्यौ मान भट्टी । भुआल यट्टा धर अग्गर ॥

---

(१) ए. क. को.-सरनि । (२) ए. क. को.-गज गजत सोरह मद्ध ।
(३) ए. क. को.-पंच । (४) ए.-अंग ।

पर्यौ सूर सामलौ। जेन बानै मुष अच्छइ ॥
इँसै तेन पांवार। जेन विरदावल घच्छइ ॥
न्त्रिब्बान बीर धावर धनू। [1]हनुय नरिंद अनेक बल ॥
इल परल पंच भय विप्फुर। अगनित भंजि असंष दल ॥
छं० ॥ १७१८ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये जैचन्द की प्रतिज्ञा।

चल्यौ सूर मध्यान्ह। पंग परतंग गहन किय ॥
[2]सुरनि षेह षह मिलिय। अवन इह सुनिय सुलीय लिय ॥
तब नरिंद जंगलिय। कोह कड्ढौ सु वंकि असि ॥
धर धूमिलि धुम्मरिय। मनहु, दल मज्झि, झि दुतिय ससि ॥
अरि अरुन रत्त कौतिक कलस। भयौ न भय सुभिरंत भर ॥
सामंत निघट पंचह परिग। न्रपति सपिट्ठिय पंच सर ॥
छं० ॥ १७१९ ॥

साटक ॥ इक्कं तीन सकट्ठियं कर धरं, पंचास [3]वर्द्धासने।
उत्तारे सहसं सु बीय उडनं, लष्षं चलष्षं वियं ॥
सब्बं पारि इमंच क्षित्त जनकं, पत्तं च धारायनं ॥
एवं बाहु, सु बाह बान धरियं, द्रोनाहि पथ्थं जया॥ छं० ॥ १७२० ॥

जैचन्द का अपनी सेना की आठ अनी करके चौहान को घेरना और सेना के साथ राजकुमार का पसर करना। उक्त सेना का व्यूहबद्ध होना। मुख्य योद्धाओं के नाम और उनके स्थान।

कवित्त ॥ अष्ट फौज पहु, पंग। परिस चहु, आनहु फेरिय ॥
मीर धीर धरवान। षान असमानह केरिय ॥
क्रोध परिग गजराज। सत्त मुर मह मोष वर ॥
तिन मज्झै मल्हन महेस[4]। वंसीति सहस भर ॥
ता अग्ग केत कुंअर कंद्रप। दस सहस भर सु भर सजि ॥

(१) ए. कृ. को.-हनिय। (२) ए. कृ. को.-मुरनि।
(३) मो.-पंचास वर्द्धानने। (४) "सर" पाठ अधिक है।

ता अग्गै न्त्रपति [1]वज्जीत सवि। पंच सत्त गज जुथ्थ गजि॥
छं०॥ १७२१॥

ता अग्गै तिरहुति नरिंद। वीर केहरि कंठेरिय॥
विच जद्दों रा भान। देव दच्छिन न्त्रप भेरिय॥
ता अग्गैं जंगोल। देव दहिया तत्तारिय॥
मोरी रा मद्दनंग। वीर भीषम पंधारिय॥
ता अग्ग सीह वल अंग वल। सजि समूह ब्रह्मह सयन॥
प्रथिराज सेन दिप्पत गिल्लं। सुकविचंद वंटहि नयन॥ छं०॥१७२२॥

वीर रस माते योद्धाओं का ओज वर्णन।

रसावला॥ पंग रा सेनयौ। रत्त जानै नयौ॥
आइ संछुट्टियं। [2]दिट्टयं तुट्टियं॥ छं०॥ १७२३॥
वीर जं विप्फुरं। जोर जम्मं जुरं॥
सस्त्र वाहं वरं। वज्जतं सिप्परं॥ छं०॥ १७२४॥
सस्त्र छुट्टं नियं। वथ्थ जुथ्थं लियं॥
जुद्ध अद्धं मयं। वज्जि जुद्धं मयं॥ छं०॥ १७२५॥
रूर सूरं अरी। जानि मत्ते करी॥
पाइ वज्जे घटं। वीर वोले भटं॥ छं०॥ १७२६॥
कूक मच्ची परं। सार सारं भरं॥
अंत रथ्थं वरं। देव रथ्थं घरं॥ छं०॥ १७२७॥
वोल जे जं वरं। फूल नंषे सिरं॥
देव जुद्धं ननं। सूर वंटै धनं॥ छं०॥ १७२८॥
अंत गिद्धी कुड़ी। अंतरिछं उड़ी॥
मन्न मुष्पं षरं। रथ्थ हक्के डरं॥ छं०॥ १७२९॥
क्रंम सत्तं वरं। द्रोन नंचै धरं॥
थोर थोरं थनी। [3]अप्प ढुंढै धनी॥ छं०॥ १७३०॥
चंद जोहं करी। गो पथं उच्चरी॥
गज्ज ढालं ढरी। दंत दंती परी॥ छं०॥ १७३१॥

(१) मो.-वज्जनि। (२) ए. कृ. को.-धावतं दिठियं। (३) ए. कृ. को.-अथ्थ।

सोमि मुक्के करी। अस्स पंषी परी॥

* * * । * * छं० ॥ १७३२ ॥

लड़ते लड़ते दोपहर हो जाने पर संभरी नाथ का कुपित हो हाथ में कमान लेना।

कवित्त ॥ दिनयर सुअ दिन जुद्ध। जूह चंपिय सामंतन ॥
भर उप्पर भर भर । परिहि उप्पर धावंतन ॥
दल दंतिन बिच्छुरहि। हय जु हय हय किन नंकहि ॥
[1]अच्छरि बर हर हार। धार धारन झन नंकहि ॥
जयं जया सह जुग्गिनि करहि। कलि कलवज दिल्लिय वयर ॥
सामंत पंच षित्तह षपिग। भिरत पंच भये [2]षिप्पहर ॥
छं० ॥ १७३३ ॥

रन रत्तौ चित रत्त। [3]वस्त्र रत्तंत षग्ग रत ॥
हय गय रत्तै रत्त। मोह सों रत्त वीर रत ॥
धर रत्ते [4]पत रत्त। रुक रत्ते विरुझानं ॥
रत्त बीर पलचर सु रत। [5]पिंड रत्तौ हिय सानें ॥
विप्फुरे घाइ अघ्घाय फुट। पंग ठट्ट चंपे सु भर ॥
दैवत्त जुद्ध चहुआन वर। षिजि कमान लीनी सु कर॥ छं० १७३४॥

घनघोर युद्ध का वाकचित्र दर्शन।

मोतीदाम ॥ रजे रविरथ्थ रहस्सिय व्योम। धमक्किय बज्जिय गज्जिय गोम॥
जग्यौ रस तांम स पंगह पूर। गहग्गह राग [6]वज्यौ सम सूर ॥
छं० ॥ १७३५ ॥

नवम्मिय कत्यकसूर सु अन्न। घटी दह अट्ठ सु [7]गव्वह दिन्न ॥
नयौ सिर आनि सु डुंगह देव। गहौ पहु जंगल सूर समेव ॥
छं० ॥ १७३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कच्छर। (२) ए. कृ. को.-दुप्पहर।
(३) मो.-वस्त्र रत्ते सु। (४) ए. कृ.-पर।
(५) ए. कृ. को पिंड रत हिये न साने।
(६) ए. कृ. को.-मच्यौ। (७) ए. कृ. को.-गत्तह।

भुवन्नइ राज सु जंगइ अग्ग। कड्ढौ कारनट्टिय सिंघ सु वग्ग॥
तुरंगम पंति पयद्दल सक्क। जु सज्जिय अग्गइ तइ सरक्क॥
छं० ॥ १७३७ ॥

धमक्किय धोम निसानन नद्द। भनक्किय कातर सिंधु अमद्द॥
पइं मंडि सिंधुअ स्तूंपुर रेन। गहग्गह वज्ज कम्यौ सब सेन॥
छं० ॥ १७३८ ॥

उलट्टिग सिंधु सपंतिन अप्प। उरव्विय सा जनु अंत कलप्प॥
सुरक्किय वग्ग सु जंगल राज। प्रगट्टित कोप '[1]धुअं' वर गाज॥
छं० ॥ १७३९ ॥

चहं चह चंव तरं रन तूर। सु रब्बर संप सजे घन सूर॥
मिले पहु जंगल सेन सु पंग। मनों मिलि सागर संग सु गंग॥
छं० ॥ १७४० ॥

भगे रस तामस नग्गिय पग्ग। मनों रस हारि जु आरिय लग्ग॥
झरभ्भर वज्जिय धारनि धार। मनों ससि क्रकसि तुट्टिय तार॥
छं० ॥ १७४१ ॥

लगे मुष नाग सकत्ति न भोरि। मनों गजराज वजावत भेरि॥
हयद्दल पैद्दल दंतिय एक। लगे कर आवध सावध केक॥
छं० ॥ १७४२ ॥

झरभ्भर सेन झनक्किय झार। धरष्षर लुथ्यि '[2]ढरें धर भार॥
'[3]कढी चहुआन कमान सु वंक। मनों यह सेन सु बीय मयंक॥
छं० ॥ १७४३ ॥

पृथ्वीराज की कमान चलाने की हस्तलाघवता।

दूहा ॥ कढि कमान असमान घन। मझि चमंकिय बीज॥
मनों काल की जीभ ज्यौं। झुकि कढ्ढी करि षीजि॥
छं० ॥ १७४४ ॥

तमकि तेज कोवंड लिय। जंगल वै जुध वान॥
असी लष्प दल तुच्छ गनि। न्याइ बँध्यौ सुरतान॥ छं० ॥१७४५॥

(१) ए. कृ. को.-धुअंमर। (२) ए. कृ. को.-धरै। (३) ए. कृ. को.-चढी।

पृथ्वीराज का जैचन्द पर बाण चलाने की प्रतिज्ञा करना और संयोगिता का रोकना।

कवित्त ॥ कहैं राज प्रथिराज। सुनहि संयोगि सु [1]लष्षिन ॥
आज हनों जैचंद। दंद ज्यों मिटै ततष्षिन ॥
पिता मरन सुनि डरिय। करिय अरदास जोरि कर ॥
मोहि पंग बग सीस। कंत किज्जै सु प्रेम धर ॥
मन्नेव बचन संयोगि तव। चल्यौ राज अग्गे विमन ॥
कलहंत नारि जानिय सु चित। मिटै न गंध्रव कौ वचन ॥
छं० ॥ १७४६ ॥

पृथ्वीराज के घोड़े की तेजी।

दूहा ॥ असी लष्य दल उप्परै। नंषि वाजि प्रथिराज ॥
धरनि फट्टिकै गगन तुटि। भरकि सु कायर भाजि ॥ छं० ॥१७४७॥

चहुआन की तलवार चलाने की हस्तलाघवता।

चोटक ॥ [2]चहुआन कमानति कोपि करं। पघनं पघनं प्रिथिराज वरं ॥
जिहि लष्य असी दल तुच्छ करी। दल गाहि नरिंद जु मंझ फिरी॥
छं० ॥ १७४८ ॥

बहि बान कमान धुँकार वजी। कि मनों वर पुब्बय मेघ गजी ॥
सर फुट्टि सनाहन भेदि परी। नर हथ्थ तरंगनि जुद्ध [3]तरी॥
छं० ॥ १७४९ ॥

चहुआनति मुष्षहि बीर चढ़ी। सर नंषि तहां किरवान कढ़ी ॥
लगि राज उरं किरवान कटी। कि मनों हरि पै तड़िता वि छुटी॥
छं० ॥ १७५० ॥

चहुआन वही किरवान बरं। सु परे अरिषंड विषंड धरं ॥
अरि ढाहि परे गजराज मुषं। सु बहै [4]तिन बान कमान रुषं ॥
छं० ॥ १७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-लच्छिन। (२) यह पंक्ति मो.प्रति में नहीं है।
(३) मो.-करी। (४) मो.-नित।

कटि सुंडि सु नेत्तन दंत कटी। सु मनों तड़िता घन मद्धि छुटी ॥
सु परे धर वीरति पंग भरं। प्रथिराज जयज्जय चंपि वरं ॥
छं० ॥ १७५२ ॥

सुकरी अरि [2]अप्प विडारत गज्ज। मनों वन जारिन जानि धनज्ज॥
ढहै गज ढाल सु झंडहि झारु। मनों फल भारह तुट्टिय डारु ॥
छं० ॥ १७५३ ॥

ढह्यौ घन घाव सु डुंगह देव। भुवन्नह राव पऱ्यौ घह घेव ॥
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंति। परे दह तीन सहस्सह दंति ॥
छं० ॥ १७५४ ॥

परे धर वीर सु पंग भरं। प्रिथीराज जयज्जय चंपि वरं ॥
छं० ॥ १७५५ ॥

सात घड़ी दिन शेष रहने पर पंगदल का छिन्न भिन्न होना देख कर रयसलकुमार का धावा करना।

कवित्त ॥ घरिय रस्स रवि सेप। भयौ कलहंत तास भर ॥
वज्र घात सामंत। अग्गि लग्गी सु पग्ग झर ॥
हलहलंत दल पंग। दंग चहुआन जान [3]भय ॥
तत्र आयौ रयसल्ल। विरद भैरुं सु भूत रय ॥
हाकंत हक्क वर उच्चरिग। अतुल पान आजान हुअ ॥
कमधज्ज लग्गि कमधज्ज छल। वीर धीर विजपाल सुअ ॥
छं० ॥ १७५६ ॥

पृथ्वीराज के एक एक सामंत का पङ्ग सेना के एक एक सहस्त्र वीरों से मुकाबला करना।

दूहा ॥ सहस वीर भर अप्प वर इक इक रष्षै रिंघ ॥
संभरि जुध सामंत सम। मनों लग्गि सम सिंघ ॥ छं०॥१७५७॥

घमासान युद्ध वर्णन।

(२) ए. कृ.-को.-अप्प। (३) ए.-कृ.-को. भुव।

पद्धरी ॥ लग्गे सु सिंघ सम सिंघ घाइ। चहुआन सूर कमधज्ज राइ ॥
छाकंत मत्त आरंत तेक। छम संत रत्त इलि चलन एक ॥
छं० ॥ १७५८ ॥

गय नभ्भ सूर रुधि रत्त भौन। पसरै मरीच नह मभ्भि तौन ॥
संचार अन्न सही न व्योम। धुंधरिग धाम दह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ १७५९ ॥

पावै न मध्य गिद्धी पसार। भिद्दै न अन्य षह अद्ध चार ॥
[1]देषंत सूर[2]कौतिग्ग सोम। नारद आनि अध निरषि व्योम ॥
छं० ॥ १७६० ॥

षह चरह सुद्ध सुझ्झै न कंक। घन घुरह षेह पूरित पलंक ॥
अच्छरिय रथ्थ रुद्धंत सीस। पावै न परन इच्छंत ईस ॥
छं० ॥ १७६१ ॥

पत्तौ सु काल रयसल्ल रूप। गह गह चवंत चहुआन भूप ॥
भौ तिमिर धुंध सुझ्झै न भान। प्रगटै न अप्प द्रिग अप्प पान ॥
छं० ॥ १७६२ ॥

दिष्षहि न सूर सामंत राज। संग्रहौ सह दल सकल साज ॥
सह्यौ सु कन्ह सामंत हद्द। हो जैत राव जामानि जद्द ॥
छं० ॥ १७६३ ॥

निद्धुरह सिंघ सुनि अत्त ताइ। सुझ्झै न ईस सौधौ सु राइ ॥
वंच्यौ सु सूर चौरंगि नंद। लष्यौ सु राज अरि लष्य वृंद ॥
छं० ॥ १७६४ ॥

वंच्यौ सु कन्ह धुअ गेन धार। गय पंग ढारि बंधी सु पारि ॥
झम्यौ सु श्रवन सुनि अत्तताइ। भोंहा सु धीर धरि तोन धाइ ॥
छं० १७६५ ॥

हलकंत सथ्थ सामंत तार। मानहु झमंत हरि दंत भार ॥
विहथंत कोपि वाहंत कोन। भिद्दंत सिंधु उड्डंत श्रोन ॥
छं० ॥ १७६६ ॥

प्रगटंत झाक पावक [3]षोम। किलकंत घूंटि संठी सु व्योम ॥

(१) ए. कृ. को. देषन्न। (२) मो.-कौतिक्क। (३) ए. मो.-धोम।

धमकंत नाग धर असि उसंध । चइकंत कंध ज्ञरंम बंध ॥
छं० १७६७ ॥

घर तुट्टि धरनि पल पलनि पंक । तन खन अवन अइमान संक ॥
गय ढार सार सुषमत्त भार । प्रगटंत मद्धि दुअ दल पगार ॥
छं० ॥ १७६८ ॥

रुझंत पारि पंगुरह सेन । निरषंत स्वामि सामंत नेन ॥
*   *   *   *   *   *   छं० ॥ १७६९ ॥

नवमी के युद्ध का अंत होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय न्त्रप तिरन । बिय पारस पर कोट ॥
रहै सूर सामंत झकि । देषि न्त्रपति तन चोट ॥ छं० ॥ १७७० ॥
दोइ बर अश्वनि पष्षरह । दुअ न्त्रप इक संजोइ ॥
इह अवस्थ अंषन लषौ । हम जीवन न्त्रप तोइ ॥ छं० ॥ १७७१॥

सामंतों का कहना कि अब भी जो बचे हैं उन्हें लेकर दिल्ली चले जाओ ।

इह कहि न्त्रप लग्गे चरन । सांई दिष्षत अंषि ॥
[1]जाहु सुजीवत जानि घर । पंच सु बीसह नंषि ॥ १७७२ ॥
जीत हारि न्त्रप होत है । अरु हांसी दुज्जन लोग ॥
जुरि धर अद्ध निरद्ध किय । अब जंगल वै भोग ॥ छं० ॥ १७७३ ॥

नवमी के युद्ध में तेरह सामंतों का मारा जाना ।

सविता सुन दिन जुद्ध बर । भौ रस रुद्र [2]समंत ॥
होत संझ नवमिय दिवस । परे तेर सामंत ॥ छं० ॥ १७७४ ॥

मृत सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ परे रेन रावत्त । राम रिन जंग अंग रस ॥
उठत इक्क धावंत । पंच वाहंत बीर दस ॥
बलि बारड मोहिल । मयंद मारुअ मुष मध्ये ॥
आरेनो अरि लंघि । पंग पारस दल षद्धे ॥

(१) ए. कृ. को.-जाह सु जीवत । (२) ए.-समात ।

नारेन बीर बंधव बरन। दिव देवान [1]गौ देवरौ ॥
कलहंत बीज सामंत मुअ। रह्यौ स्वामि सिर सेहरौ ॥छं०१७७५॥

संध्या को युद्ध बंद होना।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय रत्ति भर। फुनि सज्जै दल पंग ॥
चलिग पंति [2]पहु पंग मिलि। जुद्ध भरनि किय जंग ॥
छं० ॥ १७७६ ॥

पंग सेना के मृत रावतों के नाम।

कवित्त ॥ कमधज्जह रयसल्ल। बिरद भेरू सु भूत गहि ॥
कर नाटिय किय सोर। राग सारंग थट्ट थहि ॥
सु पहु गुंड सु ग्रीव। राव बघ्घेल सिंघ वर ॥
मोरी [3]का सु मुकंद। पुट्ठि भौमेह पंति धर ॥
न्टप कन्ह राव मरहट्ठ वै। हरिय सिंघ [4]हयनेव पर ॥
नरपाल राव नेपाल पति। राइ सल्ल क्रमि लै सभर ॥
छं० ॥ १७७७ ॥

नवमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

विज्जुमाला ॥ नवमिय [5]सूरन सूर। वज्जिग विषम तूर ॥
गहन [6]गड्डन पंग। बच्चिग सच्चिग जंग ॥ छं० ॥ १७७८ ॥
तरनि सरनि सिंधु। धरनिति मिर धुंध ॥
संचार गौ मय वानि। झलकि सल्लित जानि ॥ छं० ॥ १७७९ ॥
सघन जुग्गन जूप। प्रगटित पहुमि रूप ॥
सज्जित सु चहुआन। करषि कर कम्मान ॥ छं० ॥ १७८० ॥
रजति रासठि संक। मनहु लेयन लंक ॥
घुट्टि छुग्गुन कंन। बहिया तुरंग [7]तंन ॥ छं० ॥ १७८१ ॥
पष्षर सब्बर सारं। प्रगटि उरनि पार ॥
सनमुष पंग सेल। सहित सूरन ठेल ॥ छं० ॥ १७८२ ॥

---

(१) ए. कृ. को. गयौ। (२) ए. कृ. को-पहुपंति।
(३) मो.-पास। (४) मो.-हथनेर। (५) मो.-सूअन।
(६) ए. कृ. को.-गन। (७) ए. कृ. को.-छंन।

वहिग विप्पम सार । प्रगटि उरन्नि पार ॥
धार धार लगि झार । धरनि धर सुद्दार ॥ छं० ॥ १७८३ ॥
रयसल्ल लष्यिय राज । क्रमि गहनं सु साज ॥
लषि सम रज धाय । आइ लगि अततोइ ॥ छं० ॥ १७८४ ॥
[1]हय हीय सिंगी झार । नष्यौ जु पूर पगार ॥
उद्दिग क्रमि सु सूत्र । मंडि गज सिंघ [2]रूअ ॥ छं० ॥ १७८५ ॥
रयसल्ल परे पिष्यि । क्रमे गह राज रिष्यि ॥
मिली कन्ह अत्ता ताइ । रिपि रन रुक्कि राय ॥ छं० ॥ १७८६ ॥
परे दह सत्त घाइ । सघन घइ अप्प आइ ॥
परे अन्न भूय पिपि । भोग सेन सव लषि ॥ छं० ॥ १७८७ ॥

पंग सेना का पराजित होकर भागना तब शंखधुनी योगियों का पसर करना ।

दूहा ॥ भगे सेन विजपाल न्टप । लषि भै तामस राइ ॥
सहस एक भर संव धर । कहि हय छंडि रिसाइ ॥ छं० ॥ १७८८॥
वाते संप विरद धर । वैरागी जुध धीर ॥
सूर संघ न्रिप नामि सिर । भर पहु मज्जन भीर ॥ छं०॥१७८९ ॥

शंखधुनी योद्धाओं का स्वरूप वर्णन ।

कवित्त ॥ पवंग मोर पष्षरह । मोर ग्रीवत गज गाह्यि ॥
मोर टोप टट्टरी । मोर मंडित संनाह्यि ॥
मोर माल उर संघ । संक छंडिय भय भग्गिय ॥
धार तिथ्थ आदरिय । पंग सेवहि वैरागिय ॥
तिहि डरनि डारि घल्लै । तिनहिं नित राज अग्गे रहै ॥
हल हलत सेन सामंत भय । मुक्ति मुक्ति अप्पन कहै ॥छं०॥१७९०

पृथ्वीराज का कवि से पूछना कि ये योगी लोग जैचन्द की सेवा क्यों करते हैं ।

दूहा ॥ रिषि सरूप संषह धुनिय । अति बल पिथ्थ कहंद ॥
बैरागी माया रहित । किमि सेवै जयचंद ॥ छं० ॥ १८९१ ॥

(१)-मो.-हय हाय संगे झार ।   (२) ए. कृ. को.-सूअ ।

कविचन्द का शंखधुनियों की पूर्व कथा कहना।

कहत चंद प्रथिराज। ए सब रिषि अवतार ॥
मुनि नारद [1]परबोध भौ। कथ्थ सुनहु विस्तार ॥ छं० ॥१७९२॥

तैलंग देश का प्रमार राजा था उसके रावत लोग उस से बड़ी प्रीति रखते थे।

कवित्त ॥ सहस एक सुधवंस। सहस एकह धर सोहै ॥
सेवा करत तिलंग। लष्य दस सस्त्र अरोहै ॥
एक सहस वांजिंत्र। समुद तट सेवा सज्जै ॥
वपु सु वज्र चित वज्र। एक निरलेप अरज्जै ॥
सब एक जीव तन भिंन भिन। वंस छत्तीस अषाढ़ सिध ॥
प्रामार तिलंग हरि सरन हुअ। कुल छतीस धर दान दिध ॥
छं० ॥१७९३॥

उक्त प्रमार राजा का छत्तीस कुली छत्रियों को भूमि भाग देकर बन में तपस्या करने चला जाना।

न्टप केहरि कंठेर। राइ सिंधुआ पाहारं ॥
रा पब्बार परताप। पत्त डंडीर सुधारं ॥
राम पमार तिलंग। जेन दिन्निय वसुधा दन ॥
उज्जैनिय चक्कवै। करै सेवा तिलंग जन ॥
सह सेक सुभट सब एक सम[2]। जब तिलंग परलोक गय ॥
छचीन दान दिन्नौ तबहि। सहस सुभट बनवास लय ॥
छं० ॥ १७९४ ॥

दिय दिल्ली तोंवरन। दई चावंड सु पट्टन ॥
दय संभरि चहुआन। दई कनवज कमधज्जन ॥
परिहारन मुर देस। सिंधु बारडा सु चालं ॥
दै सोरठ जदवन। दई दच्छिन जावालं ॥

---

(१) मो.-परमोद। (२) ए. कृ. को.-सन।

चरना कच्छ दीनी करग । भट्टां पूरब भावही ॥
वन गए न्रपति वंटै धरा । गिरिजापति माला गही ॥छं०॥१७९५ ॥

राजा के साथी रावतों का भी योग धारण कर लेना ।

दूहा ॥ एक सहस्त रिप रूप करि । अजपा जपै सु नाम ॥
वन पंडह विश्राम किय । तप तप्पत तिन ठाम ॥छं०॥१७९६॥

ऋषियों का होम जप करते हुए तपस्या करना ।

पद्धरी ॥ रिषि मंगि आइ सुर धेन ताम । दीनी सु इंद्र वर होम काम ॥
रिषि तास दूध [१] वर करै होम । संच पत होइ तिन सुरभ धोम॥
छं० ॥ १७९७ ॥
अध्याय अधिन जाजंन जप्प । रिषि करै सब्ब उन कष्ट तप्प ॥
तह करत दैत्य वहु विघन [२] नित्त । भप्पी सु गाव वच्छी सहित्त ॥
छं० ॥ १७९८ ॥

एक राक्षस का ऋषि की गाय भक्षण कर लेना और ऋषियों का संतापित होकर अग्नि में प्रवेश करने के लिये उद्यत होना ।

विअष्परी ॥ रिषि तहां बसै उभै सत वर्ष । राक्षस तहां धेन वच्छ भष्यं ॥
कोपवंत रिषि हुए सु भारी । सब मिलि अगनि प्रवेस विचारी ॥
छं० ॥ १७९९ ॥
इह उतपात चिंति नारद रिषि । आयौ तिन आश्रम्म समद्द सिषि॥
अरघ पाद सब्बह मिलि किन्नौ । मुनि सुष पाइहु औ आधिन्नौ ॥
छं० ॥ १८०० ॥

नारद मुनि का आना और सब योगियों का उनकी पूजा करना ।

दूहा ॥ रिषि आवत नारद्द मुनि । लग्गे सब्बह पाइ ॥
फनपत्ती से दिष्षि करि । चरन पषालै आइ ॥ छं० ॥ १८०१ ॥

(१) ए. दूस । (२) मो.-वित्त ।

नारद मुनि का योगियों को प्रबोध करना।

दूहा ॥ मुनि प्रबोध मुनिजन कियौ। प्रति राक्षस कृत साप ॥
सो तुमकों लग्यौ सबै। तब रिष लग्गे ताप ॥ छं० ॥ १८०२ ॥

नारद का कहना कि तुम जैचन्द की सेवा करो वहां तुम युद्ध में प्राण त्याग कर साक्षात मोक्ष पावोगे।

विअष्षरी ॥ नारद रिषि उच्चरै सु बत्तं। सुनौ सबै इह इक करि चित्तं[1] ॥
फिरि रिषि राज सु आयस दिद्धं। करौ तपस्या साधक सिद्धं ॥
छं० ॥ १८०३ ॥

वरष बीस तुम तप्प सु तप्पे। एक चित्त करि अजया जप्पे ॥
तुम हौ क्षत्री जाति सबै मुनि। तिहि आचरौ धार तीरथ फ,नि॥
छं० ॥ १८०४ ॥

और तप्प बहु काल अभ्यास। इंद्री डुलै सबै भ्रम नास ॥
धार तिथ्थ आदरै जु षत्री। सुष में पावै मुगति तुरत्ती ॥
छं० ॥ १८०५ ॥

धार तिथ्थ पहिलै छत्री ध्रम्म। भू पर सबै और जानौ श्रम ॥
कहौ कौन हम सों जुध आवै। देषत दूरिहु तें जरि जावै ॥
छं० ॥ १८०६ ॥

जग मध्ये जयचंद कमंद न्रप। अवनी उप्पर तास महा तप ॥
मानों इंद्र सरूप बिचारं। आयौ प्रथी उतारन भारं ॥छं०॥१८०७॥
ता रिपु एक रहै चहुआनं। अवर सबै न्रप सेवा मानं ॥
संभरि वै दिल्ली पति रज्जं। सौ सामंत सेव तिन सज्जं ॥
छं० ॥ १८०८ ॥

सो ढुंढा अवतारी भारी। ते तुम संमुह मंडै रारी ॥
जाउ तुम सेव जयचंद प्रति। एक लष्ष गढ़ तिन घर सोहति ॥
छं० ॥ १८०९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चित्तं।

जष्य असी तोयार पलानै। जग मध्ये तीनूं पुर जानै॥
रषि सुनि वेन सबैं सुष पायो। अच्छौ गुर उपदेस बतायौ॥
छं०॥ १८१०॥

कवि का कहना कि ये लोग उसी समय से जैचन्द की सेना में रहते हैं।

दूहा॥ रिषि आयस मंन्यौ सु रिष। संष चक्र धरि साज॥
दिन प्रति सेवै गंग तट। सुनि विजपाल सु राज॥ छं०॥ १८११॥
मोर चंद्र मथ्थै धरिय। जटा जूट जट बंधि॥
संष बजावत सब्ब भर। सेवैं जाइ कमंध॥ १८१२॥

नारद ऋषि का जैचन्द के पास आना और जैचन्द का पूछना कि आपका आना कैसे हुआ।

विअष्परी॥ धुज्जै भूमिरु अंबर गज्जै। तीन लष्य वाजित्र धुनिज्जै॥
तुट्टि अकास तीन पुर भग्गै। जोग मायथौ जोगिनि जग्गै॥
छं०॥ १८१३॥
है षुर रज ढंकियैं सु अंबर। चढ़ै कमंध करि मेघाडंबर॥
लष्य पचास पड़ै हय पष्पर। हुअ मैदान मेर से भष्पर॥
छं०॥ १८१४॥
अग्गै जल पच्छै मिलि पंकं। सर वर नदी लादि सों ठंकं॥
पानी थान षेह उड्डै बहु। अंत कलप्प दूसी सुनियै कहु॥
छं०॥ १८१५॥
दस दिगपाल परै भंगानं। मानव सेस देव संकानं॥
इन आडंबर चढ़ि कमधज्जं। आतपत्र ढंक्यौ उडि रज्जं॥
छं०॥ १८१६॥
यौं जयचंद तपै तट गंगा। नाम सुनंत छोड़ अरि पंगा॥
नारद मुनि आये तिन ठामं। पंग उट्ठि तब कीन प्रनामं॥
छं०॥ १८१७॥

कुसल पुच्छि बहु सुष रिष किन्न । चरन सु रज मस्तक न्रप दिन्न ॥
किन कारन आए पुच्छै न्रप । भाग अज्ज मो नगर आय अप ॥
छं० १८१८ ॥

रिष्य कहै संभलि न्रप राजं । सावधान मन करे समाजं ॥
* * * । * * * छं० ॥१८१९॥

नारद ऋषि का शंखधुनी योगियों की कथा कह कर राजा को समझाना कि आप उनको सादर स्थान दीजिए।

दूहा ॥ नाद सु नारद जंपि इह । सुनि जैचंद विचार ॥
सहस एक षिची सु तन । सेवक तिलंग पँवार ॥छं०॥१८२० ॥
जीव एक देही उभय । अवतारी रजपूत ॥
जब पवाँर परलोक गय । गह्यौ भेष अवधूत ॥ छं० ॥ १८२१ ॥
सागर तट तप सद्धयौ । बरष उभै सित एह ॥
होम धेन राक्षस हतो । तिन डर डरी सु देह ॥ छं०॥१८२२॥
सब मिलि मरन विचारयौ । अगनि प्रवेस कुमार ॥
उभय भाग रिषि राज सुनि । हूं आयौ तिन वार ॥ छं० ॥१८२३॥
दहन वरज्यौ बोध दै । धारा [1]तिथ्थ सु सत्ति ॥
वेद पुरान प्रमान जुग । दस अट्ठह [2]संम्रत्ति ॥ छं० ॥१८२४ ॥

स्लोक ॥ जीविते लभ्यते लक्ष्मी । म्रते चापि सुरांगणा ॥
क्षणं विध्वंसिनी काया । का चिंता मरणे रणे ॥ छं० ॥१८२५ ॥

कवित्त ॥ सुनि प्रबोध मन मानि । रिष्षि आये तुम पासं ॥
धारा तीरथ आदि । तहां साधन किय आसं ॥
मोर पंष जट मुगट । सिंगि संग्राम सु धारै ॥
मोह देह सब रहित । मरन दिन अंत विचारै ॥
कलहंत वार मिलकंत न्रप । संष नाद पूरंत सर ॥
जैचंद सेव आये सबै । [3]एक जीव उभया सु हर ॥छं०१८२६॥

(१) ए. कृ. को. तीरथ । (२) मो. सुमृंत्त ।
(३) मो.-" एक जीव उरभया सुहर" ।

नीसानी ॥ बषत वड़े कनवज्ज राय रिषि तेग गहाई।
संषधुनी सहसेक न्रप हुये जु सहाई ॥
जव चल्लै संष सद्द दै गिरि मेर ढहाई।
लष्य असी मधि देषियै नारद वरदाई ॥
ए अवतारी मुनी सवै पूरव पुनि पाई।
जव कोपे करि वार लै पुर तीन ढहाई ॥
ए पराक्रमी सूरिमा हर उमया जाई ॥ छं० ॥ १८२७ ॥

कवि का कहना कि तब से जैचन्द इन्हें अपने भाई के समान मान से रखता है।

दूहा ॥ राज पंग पय लग्गि करि। सब रष्ये निज पास ॥
लष्य एक देही लहै। पुज्जै द्वादस मास ॥ छं० ॥ १८२८ ॥
अति वर न्रप आदर करै। जेठा बंधव जोग ॥
तिनहि राज रष्यह रहै। ते छुटि अज जुध भोग[1] ॥
छं० ॥ १८२९ ॥

जैचन्द की आज्ञा पाकर शंखधुनियों का प्रसन्न होकर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ न्रिप केहरि कंठेर। राय परताप पट्ट चह ॥
सिंधुअ राय पहार। राम षम्मार थट्ट थह ॥
कठ्ठिय आस सुकाज। पत्त गुडीर नरत्ता ॥
पह परवत पाहार। रहै सांषुला सुमत्ता ॥
अनेक सेव पति संष धर। सहस एक बिन मोह मत ॥
अग्या सुपंग किल क्रांत क्रमि। अप्प अप्प मुष उप्परत ॥
छं० ॥ १८३० ॥

शंखधुनियों का पराक्रम।

हय हय हय आयास। केलि सज्जी सुव्योम सिर ॥
किल किलंत का मकि। डक बज्जी सुहंस हर ॥

(१) मो.-जोग।

ओर राह पत्ति संघ। हक्कि असि ताईय तत्ते।
मनहुं पात ल्निघघात। पत्ति सामंत सुसत्ते॥
हम संत सेन अम्भय उभय। चाहूआन कमधज्ज कस॥
उव्वरिग आन अप अप्प मुप। लक्कि धार रत्ते सुरस॥
॥ छं० ॥ १८३१ ॥

युद्ध की शोभा और वीरों की वीरता वर्णन।

विज्जुमाल॥ पैदलह मंत रत्त। जु गुर सुलह जुत्त॥
बंचित सुचंद छंद। विज्जूमालवि वंद॥ छं० ॥ १८३२ ॥
निमल सकल व्योम। रजति सिरनि सोंम॥
[1]प्रगटि ताम सपंग। हलि मिलि क्लिलि गंग॥ छं० १८३३ ॥
सुरत सेन सुलष्षि। निरषि परषि पिष्षि॥
विहसि द्रिग्ग करूर। बाजित विंव तूर॥ छं० ॥ १८३४ ॥
सुंछति निरति भोंह। भोंह दु कुंतल सोंह॥
दल सु समुद दूप। अचवन अगस्ति रूप॥ छं० ॥ १८३५ ॥
छाकंत संघ सुधार। वहत विषम सार॥
धार धार लगि धार। भररंत तुट्टौ भार॥ छं० ॥ १८३६ ॥
किननंत सिर निसार। अचल मनु आधार॥
हवकि हवकि संग। अनी अनी लगि अंग॥ छं० ॥ १८३७ ॥
बिहल कराल कूप। क्रिषित कोल सरूप॥
बानैत संघ समंत। अरिग सूकर अंत॥ छं० ॥ १८३८ ॥
सु वच्चि सामंत राज। अप अप इष्ट साज॥
सुमिरंत वीर मंत। आइग सब सुनंत॥ छं० ॥ १८३९ ॥
एकित सु तोन धारि। कड्डिग सिरनि सार॥
धरनि सु धर धोर। हक हाक बजि भार॥ छं० ॥ १८४० ॥
नंचित चीर षंग। थइ थेई थंग॥
घन नंक सघन घंट। किलकंत [2]गोम कंट॥ छं० ॥ १८४१ ॥
गिधिय अंत गहेस। अंत सु लगिय तेस॥

(१) ए कृ. को-प्रगटित ताम संग। (२) मो.-मोम।

मनों वल वाला रंग। उचरँत चारु चंग ॥ छं० ॥ १८४२ ॥
सु रचि जठ्ठर सार। अन्नध उघ्र विहार ॥
फार फार टरे फेफ। परति [1]पंषी रेफ ॥ छं० ॥ १८४३ ॥
हकित सिर विकंध। नचित धर कमंध ॥
नचित रुचि जटाल। संचि सिरनि माल ॥ छं० ॥ १८४४ ॥
सकति अघाइ घोर। वजि राग घंट गोर ॥
रमित रस सभंद। आनंद चिल्हय व्रंद ॥
चुंगल ग्रहंत पल। चुंच वल लै कमल ॥ छं० ॥ १८४५ ॥

शंखधुनी योगियों के साम्हने भौंहा का घोड़ा बढ़ाना।

दूहा ॥ वजत संष दह सत्त। सघन नीसान धुनक्किय ॥
पावस रिति आगमन। सिषर सिषि जानि निरत्तिय ॥
तिन अमित्त पौरष्य। सहस सामंत विअष्पिय ॥
निट्ठुर जैत नरिंद। स्वामि अग्गौ धपि दिष्पिय ॥
हहकारि सीस भौंहा सु भर। गहि अकास नंष्यौ स हय ॥
उड़ मंडल उत्त निरष्ययौ। मनो वाज पंषी सु भय ॥छं०१८४६॥

मांसभक्षी पाक्षियों का वीरों के सीस ले ले कर उड़ना।

दूहा ॥ रुंड मुंड पल पंड [2]भुअ। मचि योगिनि वेताल ॥
चिल्हनि भष जंवुक गहकि। हर गुंथी गल माल ॥ छं०१८४७ ॥
लै चिल्ही भ्रम्मिय सु भर। है हर मिद्धी रूप ॥
वीर सीस चुंगल चंपे। गय [3]ग्रधन्न अनूप ॥ छं० ॥ १८४८ ॥

एक चील्ह का बहुत सा मांस ले जाकर चील्हनी को देना।

कवित्त ॥ लै चिल्हन सिर वीर। वीर भारथ्थ देषि भर ॥
को तर पर तिह थान। विषम प्रव्वत सु रंग वर ॥
उंच रुच्छ वट अति सु रंग। पंष [4]घूंसल अध विच्चं ॥

(१) ए. कृ. को.-पंषां। (२) ए. कृ. को.-हुअ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रहधन्न। (४) ए. कृ. को.-घूंसन।

तिहिं सु तट्ट चौसट्ठि। देवि आरंभन रच्चं॥
जिम जिम सु सीस मष्षन कियौ। तिम तिम सुभक्ष तीन भुग्र॥
पल भष्षत छुद्ध भष्षित सकल। आनंदी पंषी सुनिय॥छं०॥१८४९॥

चीलहनी का पति से पूछना यह कहां से लाए।

दूहा॥ आनंदी पंषी सकल। चिल्हानी पुछि कंत॥
कहि कहि गल्ह सु रंग वर। सुष दुष जीवन जंत॥छं०॥१८५०॥
चिल्हानी वुलि पत्ति सों। [1]ऊमंती वरजंत॥
बड़ गुरजन वत्ती सुनी। सो दिट्ठी दिषि कंत॥ छं९॥ १८५१॥

चीलह का कहना कि जैसा अपने पुरुषों से प्राचीन कथा सुनता था सो आज आखों देखी।

कवित्त॥ पुब्ब सुन्यौ वर कंत। जुड्ड वंलि राइ इंद्र वर॥
तिपुर युद्ध संकारि विरुद्ध। भारथ्थ पंड भर॥
षंद जुद्ध तारक्क। कन्ह ससिपाल लंक रघु॥
जरासिंध ज़द्दवनि। दच्छ नंदी जु जगी अघु॥
हरि जुद्ध बीर [2]वीत्यौ असुर। पुब्ब सेन जंप्यौ सुनिय॥
दिट्ठौ सु कंत भारथ्थ मैं। पुब्ब पच्छ अब नह सुनिय॥१८५२॥

चीलहनी का पूछना किस किस में और किस कारणवश यह युद्ध हुआ।

श्लोक॥ कस्यार्थे कंत भावीति। वरणं कस्य सुंदरी॥
कस्य वैर विरुद्धं सौ। कस्य कस्य पराक्रमं॥ छं० १८५३॥

चीलह का सब हाल कहना।

जग्य वैर विरुध्वंसौ। वरनं क्रत्य रंभयौ॥
प्रथीभारो पंगराजो। जोधा जोधंत भूषनं॥ छं०॥ १८५४॥

चीलह का चीलहनी से युद्ध का वर्णन करना और उसे अपने साथ युद्ध स्थान पर चलने को कहना।

(१) ए. कृ. को-उग्गती। (२) मो.-चिंत्यौ।

चौपाई ॥ [1]लुथ्थी लुथ्थि पुलथ्थि प्रमानं । भर भजि गज्जि वीर लुटि थानं॥
हेरे संभर रंभ हकारी । कहो कंत मो पन उच्चारी ॥छं०१८५५॥

दूहा ॥ सुनि विवाद चिल्हौ सु वर । धुनि सुनि वर भारथ्थ ॥
उमा कंति चौसट्ठि दिय । रहि ससु पुच्छिय कथ्थ ॥छं०॥१८५६॥

पद्धरी ॥ [2]उच्चरी चिल्ह भारथ्थ कथ्थ । चौसट्ठि सुनौ सुनि कंत तथ्थ ॥
नर भिरै जुद्ध देवनि मसान । उत मंग गुरें हकि सीस पान ॥
छं० ॥ १८५७ ॥

सुनि दिव्व दिव्व जुद्धह सयंन । षग षगति जुद्ध बन नित्तवंन ॥
रथ रथनि रथ्थ गज गजन जुट्ट । वाजीन वाजि नर नर अहुट्टि॥
छं० ॥ १८५८ ॥

वर सुन्यौ देवि भारथ अपुव्व । उद्दित्त वीर देषंत सव्व ॥
इह रित्त सव्व वाजित्त सार । तन सिद्धि दिंत जोगिनि सु तार ॥
छं० ॥ १८५९ ॥

डमरु डक्क वज्जै [3]अजूप । तुंमर पिसाच पल चर अनूप ॥
गावंत गीत जुग्गिनिय [4]थान । आहत्त जुद्ध चल्लै न भान ॥
छं० ॥ १८६० ॥

नारद नद्द वैताल [5]डक्क । वर वैर रंभ फिरि वरै चुक्क ॥
नच्चै कमंध हक्कंत सीस । पीसंत दंत बंभनी रीस ॥ छं०॥१८६१॥
आचिज्ज जुद्ध जो दिषत तथ्थ । उड़ि चली कंत चौसट्ठि सथ्थ ॥
* * * * । * छं० ॥ १८६२ ॥

कवित्त ॥ सुनत कंत आनंद । बीर आनंद चवसठी ॥
लै चिल्हनि चलि सथ्थ । जुद्ध पिष्षन दिवि उठी ॥
उठे सूर बल ग्रेह । वान अरजुन जिम विद्धत ॥
एक भार उभभार । एक संमुष [6]षग संधत ॥
तेगां अचंभ सुभभै [7]सपत । आरुध्यौ प्रथिराज दिषि ॥

(१) मो. लोथी लोथि । (२) को. उत्तरी ।
(३) मे.-अनूप । (४) ए. कृ. को.-गान ।
(५) ए.कृ.को रुक्क । (६) मो.-मुष । (७) ए. कृ. को सपनु ।

मोहिनि सँजोग पहुपंग सुर। भेंन रन्न चहुआन लिषि॥
छं० ॥ १८६३॥

शंखधुनी योगियों के आक्रमण करने पर महा कुहराम मचना।

दस हजार बर मीर। पंग आयस फिरि अप्पिय॥
छुटिय बान कम्मान। मेछ चावद्दिसि धप्पिय॥
सबर सूर सामंत। वीर वीरं विरुझानं॥
गज्ज जिमी बर पत्त। पत्त झंकुरिआ घानं॥
आवद्ध वीर प्रथिराज बर। असम सिंह आवत्त बल॥
लगि पंच बान उप्पर सु धपि। अगनित दल भंजै सु पल॥
छं० ॥ १८६४॥

बड़ी बुरी तरह से घिर जाने पर सामंतों का चिंता करना और पृथ्वीराज का सामंतों की तरफ देखना।

दूहा॥ दुतिय बेर सामंत फिरि। देषि श्रोन धर धार॥
मन चिंता अति चिंतवन। ढिल्ली ढिल्ली पार॥ छं०॥१८६५॥

कवित्त॥ बान श्रोन प्रथु वीर। बाल देषौ अग्गी हुअ॥
असन बीर बिच राज। बान उड़गन जु मद्धि धुअ॥
इसी लोह विप्फुरै। जानि लग्गै बिय अग्गा॥
फिरि नंष्यै है राज। सूर साही न्टप बग्गा॥
मोरे सु मीर मोहिल परिग। षग्ग मग्ग वोहिथ्थ रिन॥
बर कन्ह सलष ओंदा न्टपति। फेरि न्रिपति दिष्यौ सु तन॥
छं० ॥ १८६६॥

पृथ्वीराज के सामंतों का भी जी खोल कर हथियार चलाना।

सूर पत्त दित संझ। सूर चिंती रस मग्गा॥
बन काठी जल जलनि। राज अग्गा नन अग्गा॥
अल्हन कुंअर नरिंद। कनक बड़ गुज्जर वीरं॥
न्टप अश्वंबन चली। राज अप्पौ लिय तीरं॥

संजोगि पीय दंपति दृहनि । भुप थ्यानन आजत भिरिगि ॥
रवि मुदित चंद उग्गनि परह । फेरि पंग पारस फिरिग ॥
छं० ॥ १८६७ ॥

पृथ्वीराज का कुपित हो कर तलवार चलाना और वान बर्साना ।

झ,कित पंग प्रथिराज । गहिय कर वार चंपि कर ॥
रोस मुट्ठि नित्तरिय । दंत वाही सु कंभ पर ॥
धार मुत्ति आदरिय । पंति लग्गिय सुभ चीरहि ॥
मनहु रोस गहि पग्ग । ढाहि धारा धर नीरहि ॥
मनु दुतिय चंद वद्दल विचै । पंति लग्गि उड़गन रहिय ॥
धर धुकत मंत द्रुम दिग्णियैं । मनहु इंद्र वज्जह वहियि॥छं०॥१८६८॥

दूहा ॥ पंग डंस चहुआन वर । मंच संजोगि सु भार ॥
संझ पार सम्हौ अरैं । अरि पंचन रिपुचार ॥ छं० ॥ १८६९ ॥

कवित्त ॥ परी निसि ससि उदित । सूर सामंत पंति फिरि ॥
उतरि न्नपति प्रथिराज । लघु अनिसंक अभंग करि ॥
उभै तुपार [1]तुपार । वान छुट्टै कमड वर ॥
उभै वीर सम्हौ नरिंद । सोभै सु रंग भर ॥
लग्गौ सु नेंन त्रिकुटी विविच । टोप फट्टि कंठं[2] सु भगि ॥
प्रथिराज सु वल संभरि धनी । जै जै जैं आये सु लगि ॥
छं० ॥ १८७० ॥

दूहा ॥उभै दिवस वित्ते सकल । गत घाटिका निसि अग्ग॥
जो पुच्छै दिवि सकल तू । पुनि भारथ्थ [3]समग्ग ॥ छं० ॥ १८७१ ॥

इसी समय कविचन्द का लड़ने के लिये पृथ्वीराज से आज्ञा मांगना ।

तीर तुवक सिर पर वहत । गहत नरिंद गुमान ॥
वरदाई तहां लरन कों । हुकम मांगि चहुआन ॥

(१) ए. कृ. को. निहार ।　(२) मो.-सुमग्ग ।　(३) ए. कृ. को.-लगि ।

पृथ्वीराज का कवि को लड़ाई करने से रोकना।

हम झूझत रजपूत रिन। जंपत संभरि राव॥
अमर कित्ति सामंत करन। वरदाई घर जाव॥ छं०॥ १८७२॥

कविचन्द का राजा की बात न मान कर घोड़ा बढ़ाना।

कित्ति करन गुन उद्धरन। जल्हन पच्छ सु लज्ज॥
मोहि न्रिपति आयस करौ। ईस सीस द्यौ अज्ज॥ छं०॥ १८७३॥
बिन आयस प्रथिराज कै। धाय नंचयौ वाज॥
कौ रष्षै सुत मल्ह कौ। नूर नूर मुष लाज॥ छं०॥ १८७४॥

कविचन्द के घोड़े की फुर्ती और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज॥ कविंद वाज नष्षयं। नरिंद चष्ष दिष्षयं॥
मनों जछिच पातयं। हू अंकि मद्धि राजयं॥ छं०॥ १८७५॥
पवंन वेग पाइसं। तुरंग कब्बि रायसं॥
न्रपत्ति अष्प पारषं। बियौ न कोइ आरिषं॥ छं०॥ १८७६॥
नचंत वै किसोरयं। हरै गुमान मोरयं॥
धरा येराक ठौरयं। लियौ सु वप्प तोरयं॥ छं०॥ १८७७॥
दियौ चुहान मौर को। समुद्द की हिलोर को॥
जरावयं पलानयं। अमोल पिठ्ठ ठानयं॥ छं०॥ १८७८॥
मनो कि रष्य भानयं। कविंद जाचि आनयं॥
सु भंत अग्रकान के। मनों भलक्क बान के॥ छं०॥ १८७९॥
हरन्न सच, प्रान के। करे विरंच पानि के॥
हुती उपंम जोरयं। चिया सुनेन कोरयं॥ छं०॥ १८८०॥
कि भोर चित्त हेत की। गरब्भ फाफ केतकी॥
प्रफुल्ल चंद मौजयं। कि पंषुरी सरोजयं॥ छं०॥ १८८१॥
पवन्न हीन पिष्षयं। कि दीप जोति सिष्षयं॥
तमं दरिद्र भंजनं। पतंग झूम दझ्झनं॥ छं०॥ १८८२॥

सुभंत केस वालयं। सरित्त ज्यों सेवालयं ॥
सवद्ध कंध वक्र कौ। सगोल पुट्ठि चक्र कौ ॥ छं० ॥ १८८३ ॥
गिरद्द देत घुम्मरं। पलं हलंत झुम्मरं ॥
षुरं चमक्क उज्जलं। मनों घनंम विज्जुलं ॥ छं० ॥ १८८४ ॥
वरन्न गात भौंर सौ। हलंत पुंछ चौंर सौ ॥
करतं फौज हौसयं। दिप्यौ कनौज ईसयं ॥ छं० ॥ १८८५ ॥
षुरं रजं तुरंगयं। उड़ंत जोर जंगयं ॥
किरन्न सूर मुंदयं। छुट्टंत तीर द्दद्दयं ॥ छं० ॥ १८८६ ॥
वजै निसान नद्दयं। गरज्ज ज्यों सुमुद्दयं ॥
वहंत गज्ज मद्दयं। करंत सद्द रद्दयं ॥ छं० ॥ १८८७ ॥

कविचंद का युद्ध करके मुसल्मानी आनो को विदार देना और सकुशल लौट कर राजा के पास आजाना।

उठै रनं रवद्दयं। सुनंत भट्ट सद्दयं ॥
कमद्द पंग उट्ठयं। सुमेर जेम दिट्ठयं ॥ छं० ॥ १८८८ ॥
करै हुकम्म पट्ठयं। गँभीर भीर अट्ठयं ॥
हुसेन षां कमालयं। षलील षां जलालयं ॥ छं० ॥ १८८९ ॥
पिरोज षां हुजावयं। फरीद षां निवाजयं ॥
अजव्व साज वाजयं। धरंत जुद्ध लाजयं ॥ छं० ॥ १८९० ॥
कुलं जरं गरिट्ठयं। भुजा तिनं वलिट्ठयं ॥
द्रिगं सु [१]घात रत्तयं। मनो गयंद मत्तयं ॥ छं० ॥ १८९१ ॥
लरंत मोर भट्टयं। छुटै हथ्यार थट्टयं ॥
करंत घाव घट्टयं। नचंत जेम नट्टयं ॥ छं० ॥ १८९२ ॥
अरी घटा दवट्टयं। कि विज्जुलं लपट्टयं ॥
परंत चट्ट पट्टयं। पिशाच श्रोन चट्टयं ॥ छं० । १८९३ ॥
सनट्ट हथ्थ भट्टयं। उभै सु मीर कट्टयं ॥
हयगयं सु अंगयं। कलंत श्रोन पंकयं ॥ छं० ॥ १८९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-गात रत्तयं।

क्रपान हथ्थ चंदयं । सु रग्गदेव बंदयं ॥
झरंत मीर अंगयं । निकट्ट तट्ट गंगयं ॥ छं० ॥ १८९५ ॥

घटं सु धाव घुम्मयं । परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं । सँपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९६ ॥

घटं सु घाव घुम्मयं । परे सु मीर झ,म्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं । सँपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९७ ॥

फिर्यौ सु चंद तम्मयं । करन्न राज कम्मयं ॥
लगे न घाव गातयं । सहाय द्रुग्ग मातयं ॥ छं० ॥ १८९८ ॥

कबि का पराक्रम और राजा का उसकी प्रसंशा करना ।

दूहा ॥ कुंजर पंजर छिद्र करि । फिरि बरदाई चंद ॥
तिन अंदर जिह्वनि भ्रमत । ज्यौं कंदरा मुनिंद ॥ छं० ॥ १८९९ ॥

कवित्त ॥ लरत चंद बरदाइ । करत अच्छरि बिरदावलि ॥
झरत कुसम गयनंग । धरत गर ईस मुंडावलि ॥
करत घाव[1]कबि राव । पिसुन परि बथ्थ पछारत ॥
भरत पत्र कालिका । भूत बेताल उकारत ॥
जहं तहं ढरंत गज बाज नर । लोह लपटि पावक लहर ॥
मुष वाह वाह प्रथिराज कहि । कटक भट्ट किन्नौ कहर ॥
छं० ॥ १९००

कबि का पैदल हो जाना और अपना घोड़ा कन्ह को देना ।

भयौ पाज कविराज । तंग रुक्यौ दल सायर ॥
कर कुपान चमकंत । कंपि थर हर कर काइर ॥
साज बाज रुधि भीज । किर्यौ छर हर गति नाहर ॥
भूमि तुरंग परंत । सुष्ष जंपिय गिरिजा हर ॥
कविचंद पयादौ होइ करि । न्रप बिरदावलि आपु पढ़ि ॥

(१) मो.-कविराज ।

विलहान कन्ह चहुआन कौ। वगलि भट्ट सिर नाइ चढ्ढि॥छं०॥१९०१॥

नवमी को एक घड़ी रात्रि गए जैचन्द के भाई का मारा जाना।

दूहा ॥ नौमी निसि इक घटि चढ़ी। बंधि परत पिक्खि पंग ॥
धाइ परे चहुआन पर। ज्यों अगि अज्जर दंग ॥ छं०॥१९०२ ॥

जैचन्द का अत्यन्त कुपित होकर सेना को ललकारना। पंग सेना के योद्धाओं का धावा करना। उनकी वीर शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ धाए पंग राजं महा रोस गत्तं। सुनी सावधानं रसं वीर वत्तं ॥
चले तीर तत्ते कहें मेघ वुट्टे। जले पंप पंषी तिते भज्जि छुट्टे ॥
छं० ॥ १९०३ ॥

कछू [1]पंप हीनं [2]तनं जान पायं। जिते वान मानं सरीरं बँधायं॥
महा तेज सूरं वरच्छी भ्रमायं। तहां वड्ड कब्बी उपम्माति पायं ॥
छं० ॥ १९०४ ॥

फलं उज्जलं सोभिते स्याह डंडं। मनों राह चंदं हडूडंत मंडं॥
वजे लोह लोहं वरं सूर रुट्टै। मनों इंद्र के हथ्थ तें वज्ज छुट्टै ॥
छं० ॥ १९०५ ॥

गदा लग्गि सीसं फुटे टूक टोपं। फुटी जानि भानं मयूषं अनोपं॥
[3]भिरं तंनु दीसै न दीसै गुरंतं। तुटी सीस दीसं वलं जा अनंतं॥
छं० ॥ १९०६ ॥

पियं राग [4]सिंधू श्रवन्नं न [5]वट्टं। द्रवै सूर वीरज्ज अंपं उलट्टं ॥
तिनं कन्ह सूरं वलं जा [6]अमन्नं। तनं कि क्रमं रूप धावै दिवन्नं॥
छं० ॥ १९०७ ॥

वहै तेग वेगं गजं सीस धारं। दुहं अंग छंछं रुधी धार पारं ॥
कवीचंद मत्ती उपम्मा जु पट्टी। उपै वद्दलं जानि भारथ्थ कट्टी ॥
छं० ॥ १९०८ ॥

---

(१) मो.-पंग। (२) को.-तिनं, मो.-ननं (३) ए. कृ. को.-भिरंजानि।
(४) मो.-सोधें। (५) ए. कृ. को.-वढूढं। (६) मो.-अनन्तं।

सुभै स्याम [1]फुंदा तनाइंजि जक्की। चलै रत्त धारं दुहुं अंग वक्की॥
उभै पंति वंधू ससी ओर बीचं। उरं चंद मानो चलै चंद सीचं॥
छं० ॥ १९०९ ॥

करी वज्र बीरं न हत्तै हलाई। बधू बाल जैसें बधू ज्यों चलाई॥
हसं हंस हंसं हसं पंच पंचे। उड़े पंच पंचे भगी देह संचे॥
छं० ॥ १९१० ॥

सुनै सूर दिव्वी सु सोभै सु देहं। फले जानि सोभै मधू माधुकेहं॥
भये छिन्न छिन्नं सनाहं निनारी। मनों ग्रेह रज्जं मँडी जानि जारी॥
छं० ॥ १९११ ॥

दिषै देवि आई सुषं एक मोरं। कहै कौन तो [2]सौ ज भारथ्थ जोरं॥
परे सीस न्यारे विरुझझाइ उट्ठे। विना सीस दीसै जमं तेज छुट्टै॥
छं० ॥ १९१२ ॥

करै सीस हक्कै धपै दो निनारे। मनों केत ते राह दूनों हकारे॥
कही बत्त चिल्ही कहं ए सु जीयं। बनी जाहि जीहं सुकै कोटि कीयं॥
छं० ॥ १९१३ ॥

सामंतों का बल और पराक्रम वर्णन।

साटक ॥ छत्री जे पहपंग जुग्गिनि पुरं लीयंत धारा धरं॥
दुत्ती बज्जन बीर धीर सुभटं आलुथ्थि अलुथ्थनं॥
अंती अंत हरंति भंजति धरं धारं रुधिं षारयौ॥
चिल्ही जंभर बीर भारथ बरं जो गीव जत्ती गतं॥ छं० ॥१९१४॥

चिल्हनी का युद्ध देख कर प्रसन्न होना।

दूहा ॥ इह सुनि कर भारथ्थ गति। उड्डि चिल्ही चवसद्दि॥
सो भारथ्थ न दिट्ठयौ। पंषिन अंषिन दिट्ठ॥ छं० ॥ १९१५॥

कवित्त ॥ उठे एक धावंत। सहस रुद्दा अगिनित बल॥
क्रोध किये दस होइ। सहस दसमध्य जूह षल॥
वाहंतै मुरपंच। लष्ष सम्हौ उच्चारं॥
रुधिर पारसह होंसु। षलह अगनित उभ्भारं॥

(१) ए.-फंदा। (२) ए. कृ. को.-तो सूंज।

उच्चरै चिल्ह अस्तुति करी । साथि भरै सामंत दल ॥
भारथ्थ देवि मन उल्हसी । चिल्ह पंषि दिष्षौ सकल॥छं०॥१९१६॥

केहरि कंठीर का पृथ्वीराज के गले में कमान डाल देना ।

केहरि रा कंठेरि । स्वामि सिगिनि गर घत्तिय ॥
वरुन पास निय नंद । लोक पालह पति पत्तिय ॥
हसि हलक्कि हक्कारि । पंग पुत्तिय जानन पन ॥
तात अग्ग संवरिय । राज राजन आनी धन ॥
चहुआन रथ्थ सथ्थह चढ़िय । नंषि बथ्थ कामधज्ज वर ॥
अव देषि बाल लालत्त सु पर । सुतन छाल विच्चै सु वर ॥
छं० ॥ १९१७ ॥

संयोगिता का प्रत्यंचा काट देना और पृथ्वीराज का केहरि कंठीर पर तलवार चलाना।

दूहा ॥ गुन कट्टिय रमनिय सु वर । डसनह पंग कुंआरि ॥
असि वर भार प्रथिराज हनि । सूर हथ्थ नर वारि ॥छं०॥१९१८॥

तलवार के युद्ध का वांकू दृश्य वर्णन ।

त्रोटक ॥ निर वारि सु कड्डिय कंठ तनं । धर ढारि धरद्धर भार घनं ॥
भार लग्गिय भार उभार भरं । कटि मंडल षंड विहंड धरं ॥
छं० ॥ १९१९ ॥
लगि हक्कि सु धार सु बीर सुअं । कठिया किकरिस्सर धार धुअं ॥
असि रुंड सु मुंडन झुंझ पयट्ठ । मनों सुक कूटि कबारिय कट्ठ ॥
छं० ॥ १९२० ॥
जु क्रमे वर केहरि चंगल चंपि । ग्रहे कर पाव उडंत उझंपि ॥
धरे सम जंगल पुच्छ सरोह । सन षत मंडल उंडल सोह ॥
छं० ॥ १९२१ ॥
फिरक्कन आय धरप्पर धुक्क । किलक्कति चष्ष विलग्गिय कुक्क ॥
विभच्छह रस्स सु रच्चिय मेन । हयग्गय लुथ्थि तही पर अेन ॥
छं० १९२२ ॥

(१०) ए-उडंपि ।

धर प्परि संष धर सय मत्त। मुरक्किय सेन सु पंगु रपत्त ॥
मनो भगि धूर अधूर नरिंद। सुदंत मरीच अथंगय चंद ॥
छं० ॥ १९२३ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध का अवसान। सात सौ शंखधुनियों का मारा जाना।

दूहा। तिथ नौमी सिर चंद निसि। बारह सुत्त रविंद ॥
सुत चौरंगी संष धर। कहर कालह कविचंद ॥ छं० ॥ १९२४ ॥
संष धुनिय परि सत्त सय। मुर रानौ कमधज्ज ॥
अति सु अरिष्ट विचारयौ। जाय कि संभर रज्ज ॥ छं० ॥ १९२५ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध की उपसंहार कथा और मृत योद्धाओं के नाम।

कवित्त ॥ निसि नौमी सिर चंद। हक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
भिरि अभंग सामंत। वारि वरषंत मंच असि ॥
अयुत जुद्ध आवद्ध। इष्ट आरंभ सत्ति वर ॥
एक जीव दस घटित। दसति ठेलै सु सहस भर ॥
दिठै न देव दानव भिरत। जूह रत्त रत्तिय सु षल्ल ॥
सामंत सूर सोरह परिग। मोरे पंग अभंग दल ॥ छं० ॥ १९२६ ॥

भुजंगी ॥ भए राय दुअ कंक इक्कै समानं। परे सूर सोलह तिनं नाम आनं ॥
पस्यौ मंडली राव माल्हं नहंसौ। जिनै पारिया पंग रा सेन गंसौ ॥
छं० ॥ १९२७ ॥

पस्यौ जावलौ जाल्ह सामंत भारे। जिनै पारिया पंग षंधार सारे ॥
पऱ्यौ बग्गरी बाघ वाहे दुहथ्थै। भिरै षग्ग भग्गौ मिल्यौ हथ्थ .थ्थै ॥
छं० ॥ १९२८ ॥

पस्यौ बीर जादौं बली राव बानं। जिने नंषिया गेंन गय दंत पानं ॥
पऱ्यौ साह तौ सर सारंग गाजी। दुहुं सथ्थ भष्षो भलौ हथ्थ माजी ॥
छं० ॥१९२९॥

पन्यौ पज्जरी राव परिहार राना। पुले सेन नागै पुलै पंग वाना॥
[1]जवै उप्पटौ पंग आवद्ध नीरं। तवै सांपुला सिंह भुज[2]भानि भीरं॥
छं० ॥ १९३० ॥

पन्यौ सिंधुआ सिंधु सादल्ल मोरी। लगे लोह अंगं लगी जानि होरी॥
भिरैं भोज भग्गं नहीं सार भग्गै। पन्यौ मत्त मानों नहीं जूह लग्गै॥
छं० ॥ १९३१ ॥

पन्यौ राव भोंहा उभै चंद सापी। दुकै कुसुम नंपै दुकै कित्ति भापी॥
जिसी भारथं पोडनी अट्ठ होमी। तिसी चैत सुदि रारि निसी एक नोमी॥
छं० ॥ १९३२ ॥

कवित्त ॥ तव नायौ [3]रयपाल। जहां ढिल्ली संभरि वै॥
मुहि सांई लगि मरन। चंद रु सूर सापि दुऐ॥
सार सिंगि सिर परत। फुट्टि सिर चिहुं दिसि तुट्टी॥
धर धायो असमान। अंत पय [4]पय भर पुट्टौ॥
छटक्यौ सु काटक किन्नौ चटक। सव दल भयौ भयावनौ॥
जग जेठ क्रुक्रिक्र धरनी पन्यौ। अच्छरि [5]करिहि वधावनौ॥
छं० ॥ १९३३ ॥

दूहा ॥ पहु पचार रट्ठौर रिन। जिहि [6]सिंगिनि गुर कोन॥
भुज[7]भुअंग सामंत कय। गही संप धर लीन॥ छं० ॥ १९३४ ॥
तुरंग विछिं डिग पंडि तसु। करिग सु सस्त्र विसस्त्र॥
रुधिर धार धर उद्धरिय। भरिग उमा पति पत्र॥ छं० ॥ १९३५ ॥
राज पयंप्यौ भिरन भर। आज कहौं हिय छोह॥
भोंहा भोंह पराक्रमह। कुल चंदेल न होहि॥ छं० ॥ १९३६ ॥

कवित्त ॥ जिने सेप धर संघ। पूर पूरत भुअ कंपिय॥
जिनै संप धर संघ। भूमि डारत भर चंपिय॥
जिनै संप धर संप। राज गर सिंगिनि घत्तिय॥
सो संपहर असि समेत। आयास मपत्तिय॥

(१) ए. कृ. को.-वजे। (२) मो. जानि। (३) ए. कृ. को.-रजपाल।
(४) ए. कृ. को.-पथ, पथ्थ। (५) ए. कृ. को.-करिरहि।
(६) मो.-सिंगिन गर। (७) ए. कृ. को.-भुनंग।

धनि बीर वीर बीरम्म सुभ्र। सु कज्ज वारि अवधारितें॥
सामंत सूर सूरन हनहि। सुकल कित्ति बिसतार तें॥ छं०॥ १९३७॥
दिट्ठी द्रुग्ग नरिंद। कासि राजा जुर जग्गिय॥
राय हनों लंगूर। गोठि करनं कर भग्गिय॥
पंग राय परतष्षि। जंग रष्षन रज साईं॥
निसि नवमी ससि अस्त। गस्त [1]गौअर गहि पाईं॥
हक्कंत दंत चंप्यौ न्रपति। सामंतन असि वर वहिय॥
खग पर्यौ सत्त आथंत कौ। कहिग सब्ब गहियन गहिय॥
छं० ॥ १९३८॥

दूहा॥ सिंधु जस्ति कमधज्ज दल। [2]विवरि अनी अन लष्ष॥
दिय आयस कर उंच करि। [3]कनक राइ परतष्ष॥ छं०॥ १९३९॥
एक लष्ष सेना सुभर। वाजि वज्र रसबीर॥
अनिय बंधि आषाढ़ नभ। बरषि बूंद घन तीर॥ छं० १९४०॥

युद्ध वर्णन।

चोटक॥ सजि सेन मनों मिलि मत्त जलं। मिलि उप्पर पुट्ठि कमद्ध दलं॥
घन नंकिय घंट सु वीर घुरं। भर निर्मल स्वामि सु नेह धुरं॥
छं०॥ १९४१॥
मिलि सेन उभै भर आतुरयं। हुअ नारि सु कातर कातरयं॥
लगि लोह उभै भर संकरयं। असि पावक झाक वढी झरयं॥
छं०॥ १९४२॥
हय भार ढरै धर धार मुषं। किननं कहि धुक्कहि दुट्ट दुषं॥
करि तुट्टहि सुंड सु सीस ढुरै। पय तुट्ट पुलै चक चीह करै॥
छं०॥ १९४३॥
भर सामँत जुद्ध अयास लगै। जय स्वामि सु अप्पह अप्प मगै॥
निज इष्ट सु सूरनि संभरियं। सुनि आइ सबै सोइ संधरियं॥
छं०॥ १९४४॥

(१) मो.-गौवर। (२) ए. कृ. को.-विचार। (३) ए. कृ. को.-कँचन राउ।

भय वीर भयानक रुद्र रसं। धर नच्चि धरघ्घर सीस दसं ॥
जु किय कार अस्सि जुधं अधयं। दिठि दिट्ठि सुजीन सु सा जुधयं॥
छं० ॥ १९४५ ॥

[1]भय धुंधर हक्क किलक्क वजं। गज तुट्टिय ढाल सु नेज धजं ॥
भय सामंत जुद्दइ सद्दरयं। जुरि जुद्दहि रुद्दमि सुद्दरयं ॥
छं० ॥ १९४६ ॥

भम छत्त [2]अछत्त सु राज भयं। जय आस उभै भर वीर गयं ॥
छं० ॥ १९४७ ॥

सामंतों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत। जीव लगि जतन न कीनौ ॥
धनिव सूर सामंत। सबद जंपत पुर तीनौ ॥
धनिव सूर सामंत। घाय दुज्जन संघारे॥
धनिव सूर सामंत। द्वैप पिष्षी रिन पारे ॥
इतनौ सु कियौ प्रथिराज छल। कहत चंद उत्तिम हियौ ॥
संदेह देवि पय लग्गि करि। तबहि गंग मज्जन कियौ॥छं०॥१९४८॥

अत्ताताई का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ *चौरंगी नन्दन सुभर। अत्ताताइ उतंग ॥
समरि ईस आनंद न्रप। धरि त्रिसूल जुरि जंग ॥ छं०॥१९४९॥

अत्ताताई की सजावट और युद्ध के लिये उसका ओज एवं उत्साह वर्णन।

पद्धरी ॥ जुरि जंग सूर चौरंगि नंद। धकि दंत मंत उप्पर मयंद ॥
जो गिनिय पच लै [3]सजिय संग। उल्हास ईस आनंद अंग ॥
छं० ॥ १९५० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-भर। (२) ए. कृ. को.-असत्त।

*दिल्ली के राजा अनंगपाल तूंअर के प्रधान चौरंगी चहुआन जिनका बेटा अताताई था।

(३) ए. कृ. को.-चलिय।

उतंग लोखि त्रिसूल वीर। गज्यौ गगन गल कल कंठीर॥
धर सर पयद्द मधि मत्त दंति। उछ्छारि कमल पग ढिग सु पंति॥
छं० ॥ १९५१ ॥

जलडोहि सु जल वीरत्त रत्त। भंजी सु पारि अरि अनिय मत्त॥
जय जय सु कित्ति जंपै अघाइ। नच्चै सु ईस भर रुंड पाइ॥
छं० ॥ १९५२ ॥

प्राहार लत्त औरत्त एक। है गै तुटंत नर ताम तेक॥
घन रुहिर झाक रंगिय सकत्ति। तन रत्त रुद्र रल ज्यौं अरत्ति॥
छं० ॥ १९५३ ॥

उठ्ठी दुरंग मुषि लग्यौ धाहि। त्रिसूल झारि धर धरनि ढाहि॥
जसवंत कमध कोपै करार। आयौ सु साज सह यट्ट सार॥
छं० ॥ १९५४ ॥

प्राहार कियौ चहुआन जाम। [1]संग्रह्यौ हक्क कंठह सु ताम॥
घसि घाइ सीस उप्पर उझार। प्राहार अवरि अवनी सु ढारि॥
छं० ॥ १९५५ ॥

रुहिरै सु पूर पावस प्रवाह। जल रत्त गंग भिलि भयौ [2]नाह॥
भग्गे सु सेन न्त्रिप पंग जाम। आइयौ हनू लंगूर ताम॥
छं० ॥ १९५६ ॥

अत्ताताई पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना।

दूहा ॥ तत्तारिय तमि पंग भर। करि उप्पर द्रिग वीर॥
अत्तताई उप्परै। आइ षरक्कै मीर॥ छं० ॥ १९५७ ॥

अत्ताताई का यवन सेना को विदार देना।

कवित्त ॥ अततार्इ बर वीर। सेन रुंध्यौ तत्तारी॥
छोह सामि तजि मोह। कोह कढ्ढी कट्टारी॥
गलह अष्षि आभंग। वज्जि नंष्यौ बर बाही॥
जाम समंत विप्फरे। पंग सेना सब गाही॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रह्यौ कंठ हासिहक्क ताम। (२) ए. कृ. को.-ताह।

तोषार [1]तुंग पष्पर सहित। परिग भीर गंभीर भर॥
पहु पंग फेरि पारस परिय। घटिय तीय घट्टी पहर॥
छं०॥ १९५८॥

अत्ताताई का अतुलित पराक्रम वर्णन।

अतताई बर वीर। स्वामि लद्धौ न पार बल॥
तीय पहर बाजिग्ग। बज्र बिच परे जूह घल॥
धर समुंद परमान। बद्द मेलौ देषी जुअ॥
धुअ प्रमान पै मंडि। धूअ की नौत अप्प भुअ॥
धर परत धरनि उट्ठे भिरन। हक्कि सीस तिहि ईस बर॥
जंपरे वीर धरनी सु बर। बरन रंभ बंटेति भर॥ छं०॥ १९५९॥

बरन रंभ बंटयौ। भरन पिष्षै पौरिष बर॥
बरन सु नर किय चित्त। सूर रंछिय रन चित्त भर॥
रंभ कहत्तिय आदि। हूर उर वसि उर मंडं॥
जमगत्तौ जिन अंनि। वंद छंडे जिन छंडं॥
संभरी बोल तम बर बरी। भित्त छंछ इच्छी सु बर॥
नन बरे बरहि रहि सु बर। बर्यौ न को रवि चक्रतर॥
छं०॥ १९६०॥

कोपि चाइ चहुआन। तठ्ठि तर सूर उपारिय॥
सिंगी नाद अनंद। इष्ट करि इष्ट संभारिय॥
सुधिर सत्त सामंत। रुधिर पष्पर लष संगह॥
रहसि राइ लंगूर। ग्रीव चंप्यौ आभंगह॥
जै सद्द बद्द जोगिनि करिय। अत्ताताइ उतंग सिर॥
भरि हरिय पंग पंगुर सयन। गंग सु रंगिय रंग ढरि॥ छं०॥ १९६१॥

अत्ताताई के युद्ध करते करते चहुआन का गंगा पार करना।

दूहा॥ ढरत सु धर चहुआन कौ। मद्धि गंग वै माहि॥
जय जय सुर जंपिय सु भर। धनि धनि अत्ताताइ॥ छं०॥ १९६२॥

---

(१) मो.-तुरंग।

गंधर्वों का इन्द्र से कहना कि कन्नौज का युद्ध देखने चलिए और इन्द्र का ऐरावत पर सवार होकर युद्ध देखने आना।

पद्धरी ॥ गंध्रब्व सुग्ग पत्ते सु जाम। आनंद उअर उप्पनौ ताम ॥
आदर सु इंद्र दीनौ विश्राम। मेलयौ जुद्ध भल कीन काम ॥
छं ॥ १९६३ ॥

गंध्रब्ब कहै सुनि सुग्ग देव। सामंत जुद्ध पिघ्घन स टेव ॥
जस करौ रथ्थ ऐराय इंद्र। देषनह जुद्ध कमधज्ज दंद ॥
छं० ॥ १९६४ ॥

सजि चले देव अन्नेक सथ्थ। सोभंत रंग अन्नेक रथ्थ ॥
अपछर अनेक चालंत सुग्ग। अन्नेक सुभट लेपंत मग्ग ॥
छं० ॥ १९६५ ॥

गंगह दुकूल ढाहंत सेन। रेलयौ कटक सरिता प्रवेन ॥
अन्नेक करी वहता सु दीस। वेहाल मुष्य पारंत चीस ॥
छं० ॥ १९६६ ॥

चंपे लँगूर अतताइ जब्ब। बंधेव तोन संकर गुरब्ब ॥
सा बद्ध वेध लाघव्व सार। मारंत सेन संगह प्रहार ॥ छं० ॥ १९६७ ॥
सामंत सज्जि चव ओर जोर। अन्नेक सेन चिच करत सोर ॥
रोप्पयौ बीच सित सहस षंभ। गज गाह रंधि देषत अचंभ ॥
छं० ॥ १९६८ ॥

पच्चास कोस रिन षेत ह्रूअ। कीनौ सु जुद्ध सामंत धूअ ॥
* * * * ॥ * * छं० ॥ १९६९ ॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से अत्तात्ताई की कथा पूछना।

दूहा ॥ अत्तातोइ अभंग भर। सब पहु प्राक्रम पेषि ॥
लग्गी टगटगी दुअ दलनि। न्त्रिप कवि पुच्छि विसेष ॥ छं० ॥ १९७० ॥
अतुलित बल अतुलित तनह। अतुलित जुद्ध सु विंद ॥
अतुलित रन संग्राम किय। कहि उतपति कविचंद ॥ छं० ॥ १९७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सर्ग। (२) ए. कृ. को.-तव्व।

कविचन्द का अत्ताताई की उत्पत्ति कहना कि तुअरों के मंत्री चौरंगी चहुआन को पुत्री जन्मी और प्रसिद्ध हुआ कि पुत्र जन्मा है।

कवित्त ॥ चौरंगी चहुआन । राज मंडल आसापुर ॥
तूंअर धर परधान । सु बर जानै वृत्तासुर ॥
[1]धर असंघ धन धरिय । एक नारिय सुचि धाइय ॥
तिहिं उर पुत्री जाइ । पुत्र करि कही बधाइय ॥
करि संसकार दुज दान दिय । अत्ताताइय कुल कुंअर ॥
न्रिप अनँगपाल दीवान महि । पुत्र नाम अनुसरइ सर ॥
छं० ॥ १९७२ ॥

पुत्री का यौवन काल आने पर माता का उसे हरिद्वार में शिवजी के स्थान पर लेजाकर शिवार्चन करना।

अति तन रूप सरूप । भूप आदर कर उट्ठहि ॥
चौरंगी चहुआन । नाम कीरति कर पट्ठहि ॥
द्वादस बरष सु पुज्ज । मात गोचर करि रष्यौ ॥
राज काज चहुआन । पुत्र कहि कहि करि भष्यौ ॥
हरद्वार जाइ बुल्ल्यौ सु हर । सेव जननि संहर करिय ॥
नर कहै रवन [2]रवनिय पुरुष । रूप देषि सुर उद्धरिय ॥
छं० ॥ १९७३ ॥

दूहा ॥ जब त्रिय अंग प्रगट्ट हुअ । तब किय अंग दुराइ ॥
अद्ध रयन लै अनुसरिय । सिव सेवन सत भाइ ॥ छं० ॥ १९७४ ॥

शिवस्तुति।

विराज ॥ स्वयं संभु सारी । समं जे सुरारी ॥
उरं विष्य धारी । गरल्लं विचारी ॥ छं० ॥ १९७५ ॥
ससी सीस सारी । जटा जूट धारी ॥
सिरं गंग भारी । कटिं ब्रह्मचारी ॥ छं० ॥ १९७६ ॥

(१) ए. कृ. को.-धन ।　　(२) ए. कृ. को.-नवनिय ।

मया मोह कारी। अपंजा विडारी ॥
गिरिज्जास पारी। उछंगं सु नारी ॥ छं० ॥ १९७७ ॥
धरी वज्र तारी। चयं नाउंकारी ॥
प्रलै जद्दि झारी। करे नेन कारी ॥ छं० ॥ १९७८ ॥
अनंगं प्रहारी। मतं ब्रह्मचारी ॥
धरै सिंग सारी। विभूतं अधारी ॥ छं० ॥ १९७९ ॥
जुगं तत्त जारी। छिनं जे निवारी ॥
सुअं सार धारी। [1]भुगत्तं उधारी ॥ छं० ॥ १९८० ॥
इसौ सिंभु राया। न दिष्यौ न माया ॥
तिनं कित्ति पाया। जगत्तं न चाया ॥ छं० ॥ १९८१ ॥
चढ़े वृष्य सीसं। विभूती वरीसं ॥
मनों कन्न रव्वी। अपं जोध सव्वी ॥ छं० ॥ १९८२ ॥
दूहा ॥ मात पिता बंधव सकल। तजि तजि मोह प्रमान ॥
दस कन्या वर संग लै। गायन गौ सुरयान ॥ छं० ॥ १९८३ ॥

कन्या का निराहार वृत कर के शिवजी का पूजन करना।

ईस जप्प दिन उर धरति। तजि संका सुर [2]वार ॥
सो बाली लंघन किये। पानी पन्न अधार ॥ छं० ॥ १९८४॥
पंच धने पुज्जंत सिव। गहि गिरिजा तस पानि ॥
चिय कि पुरुष हवि संचु कहि। विधि कलि बंध प्रमान ॥
छं० ॥ १९८५ ॥

शिवजी का प्रसन्न होना।

एक दिवस सिव रीझ कै। पूछन छंहन लीन ॥
सुनि सुनि बाल विसाल तौ। जो मंगै सोइ दीन ॥ छं० ॥ १९८६॥

कन्या का बरदान मांगना।

सुझ पित जुग्गिनिपुर धनिय। अनँगपाल परधान ॥
पुत्र पुत्र [3]कहि अनुसरिय। जानि वितड्डर मानि ॥ छं० ॥ १९८७॥

(१) ए. कृ. को.-भुगत्तं। (२) ए. कृ. को.-बाल। (३) ए. कृ. को.-कर।

कवित्त ॥ [1]विदित सकल सुनि चपल। सतीअ लंपट विन कपटे ॥
भगत उधव अरविंद। सीस चंदह दिषि झपटे ॥
गीत राग रस सार। सुभर भासत तन सोभित ॥
काम दहन जम दहन। तीन लोकह सोय लोकित ॥
सुर अनँग निद्वि सामँत गवन। अरि भंजन मज्जन रवन ॥
मो तात दोष वर भंजनह। तुअ विन नह भंजै कवन ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

शिवजी का बरदान देना।

दूहा ॥ जयति जुवति संतोष घन। संचहि यामी आव ॥
सुवर बाल नन आइयै। सो विह लघ्यौ सु पाव ॥ छं० ॥ १९८९ ॥
पुच लिपिनि पुञ्चैं कहौं। देउ सु ताहि प्रमान ॥
जु कछु इंछ वंछै मनह। सो अप्पौ तुहि ध्यान ॥ छं० ॥ १९९० ॥

शिवजी का बरदान कि आज से तेरा नाम अत्ताताई होगा और तू ऐसा वीर और पराक्रमी होगा कि कोई भी तुझ से समर में न जीत सकेगा।

पद्धरी ॥ बोलेति सिंभ बालह प्रमान। आघात कियौ देवलनि आनि ॥
आना नरिंद वेताल हक्कि। डर करै नाथ बाला प मुक्कि ॥
छं० ॥ १९९१ ॥
षट मास गये विन अन्न पान। दिष्यौ सु चिंत निह कपट मान ॥
चल चलइ चित्त तिन लोइ होइ। पावै न देव तप झूठ कोइ।
छं० ॥ १९९२ ॥
निश्चलह चित्त जिन होइ बीर। पावै जु सुर्ग सुष मद्धि कीर ॥
जगि जग्गि निसा तज्जिय चिजाम। सपनंत ईस दिष्यौ [2]प्रमान ॥
छं० ॥ १९९३ ॥
अतताइ नाम तो धरौं बीर। पावैव राज राजन सरीर ॥
ना लषै पुत्त तुअ तात येह। तजि नारि रूप धरि अम्म देह ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिवस तरल। (२) ए. कृ. को.-पनाम।

जं होई सब्ब भारथ्थ काल। भंजै न तूअ तिन अंग साल ॥
किरनेव किरन फुट्टत प्रकाल। भंजै सु वलह लुकि अग्ग धार ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

भारथ्थ रमन जब होइ काल। मरअंत काल वाल हति वाल ॥
तुअ अंग जंग 'पुज्जै न जुद्ध। मानुच्छ कोन करिहै विरुद्ध ॥
छं० ॥ १९९६

जिन मध्य होइ अतताइ भान। कट्टिहैं तिमिर दुज्जन निधान ॥
झलकंत कनक दिष्यौत वाल। जग्गयौ वीर तिन मध्य काल ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

लच्छि कच्छि वंधी सु थाल। पावहि सु वीर वीरह विसाल ॥
इह कहिरु वीर गय अप्प थान। विभ्भूत चक्र डोंरु प्रमान ॥
छं० ॥ १९९८ ॥

मालाति अरत्त दीसै उतंग। सिव रूप धरिग मन दुति अनंग ॥
सिर नेत दीन सुष्पम थान। इह काल करिग आयौ सु पान ॥
छं० ॥ १९९९ ॥

साटक ॥ जुत्तं जो सिव थान अनगति वरं, कायाल भूतं वरं ॥
डोंरु डक्कय नद्द नारद वलं, वेताल वेतालयं ॥
तूं जीता रन वारुनैव कमलं, जै जै अताताइयं ॥
क्षातं मंचय छित्ति तारन तूही, पुज्जै न कोई वलं ॥ २००० ॥

कवि का कहना कि अत्ताताई अजेय योद्धा है।

दूहा ॥ नागति नर सुर असुर मय। असुर चित्त परमान ॥
तो जित्तै अतताइ जुध। सो नह दिष्षिय आन ॥ छं० ॥२००१ ॥

अत्ताताई के वीरत्व का आतंक।

कवित्त ॥ अत्ताताइ उतंग। जुद्ध पुज्जै न भीम वल ॥
थुति धावत करै देव। चक्र वक्रैत काल कल ॥
गह गह गह उच्चार। मध्य कंपै मघवा भर ॥

(१) ए. कृ. को.-पुच्छै।

अरु कंपै हगपाल। काल कंपै सु नाग नर॥
उच्छाह तात संमुह करिय। जाय सपत्तह पुत्त पह॥
लभ्भै सु कोटि कोटिह सु नन। सो लभ्यौ [1]सत्ती सु दहि॥
छं० ॥ २००२ ॥

दूहा ॥ तूं तारन कल उपज्यौ। अत्ताताइ उतंग॥
जिन हुकंम कल कल करिय। करै सु रनह अभंग॥
छं० ॥ २००३ ॥

रन अभंग को करै तुहि। तूं वढ़ देवह थान॥
चाव द्दिसि सो भिंटई। हरत पान गुन मान॥ छं० ॥ २००४ ॥

उस कन्या के दिल्ली लौट आने पर एक महीने में उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

इक मास षट दिवस वर। रहि न्टप दिल्ली थान॥
सु वर वीर गुन उप्पजिय। सुनि संभरि चहुआन॥ छं० ॥ २००५ ॥
भाई सोई पय सु लहि। वंछि जनम सँघ नाव॥
दुसतर जुग ने तीर ज्यौं। छुटै न वंधव पाव॥ छं० ॥ २००६ ॥
नर चिंता पाच तलभै। जौ परुपन सुष्याइ॥
तौं वंधन छुट्टै परी। जौ सुद्धौ जग्गाइ॥ छं० ॥ २००७

इस प्रकार से कवि का अत्ताताई के नाम का अर्थ और उसके स्वरूप का वर्णन बतलाना।

कवित्त ॥ सिव सिवाह सिर हथ्थ। भयौ कर पर समथ्थ दै॥
सु विधि राज आदरिय। सत्ति स्वामित्त अथ्थलै॥
वपु विभूति आसरै। सिंगि संग्राह धरै उर॥
त्रिजट कथं कंठरिय। तिष्यि तिरसूल धरै कर॥
कलकंत वार किलकंत क्रमि। जुग्गिनि सह सथ्थै फिरै॥
चौरंगि नंद चहुआन चित। अत्तताइ नामह सरै॥ छं० ॥ २००८॥

(१) ए. कृ. को.-छत्ती।

आयौ तब ढिल्ली पुरह। लै चहुआन सु भार॥
कोट सबैं सामंत भय। अत्तताइ [1]हम नार॥ छं०॥ २००९॥

नमसकार सामंत करि। जब जब दिष्पहि ताहि॥
तब तब राज बिराज में। रहें भूप मुय चाहि॥ छं०॥ २०१०॥

ढिल्ली सह सामंत सह। अमर सु क्रत ढिग थान॥
[2]समर सिंघ रावल सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं०॥२०११॥

इह बत्ती कविचंद कहि। सुनिय राज प्रथिराज॥
जुद्ध पराक्रम पेषि कैं। मंन्यौ सब क्रत काज॥ छं०॥ २०१२॥

अत्ताताई के मरने पर कमधुज्ज सेना का जोर पकड़ना और केहरि मल्ल कमधुज्ज का धावा करना।

कवित्त॥ अतताइय धर पन्यौ। वाग उप्परी पंग भर॥
गहन हुकम किय राज। वीर पंगुरा सुभर भर॥
सस्त्र वीर प्रथिराज। दिसा केहरि करि जिल्लं॥
हुकम वीर कमधज्ज। सस्त्र [3]ओडन सब झिल्लं॥
कम्मान सीस धनि न्त्रपति गुन। कढ़ी रेष नरपत्ति वर॥
सामंत सूर तीरह निकसि। करिग राज उप्पर सु भर॥
छं०॥ २०१३॥

पंग की कुपित सेना का अनेक वर्णन।

भुजंगी॥ कहै चंद कव्वी कह्यौ ज्यों फुनिंदं। वरं चार चारं भुजंगी सुछंदं॥
ससी सोम सूरं करूरं जु धायं। गिरि पंग सेनं छिनं भेह लायं॥
छं०॥ २०१४॥

करी बीर दून दुहन्नं दुहाइ। दुहुं अग्गि सिंगी दुहुं नैन नाई॥
दोऊ बीर रूपं बिरूझ्झाय धाई। मनों घोटरं टक्करं एक छाई॥
छं०॥ २०१५॥

अनी सों अनी अंग अंगी षरक्की। मनों भोंन भानं दुहुं बीच बक्की॥
मिली मंडली फौज पहूपंग घेरी। किय क्रोध दिट्ठी चहूआन हेरी॥
छं०॥ २०१६॥

(१) ए. इम। (२) मो. अमर सिंह। (३) मो. ओड़त।

सनै सल्ल मंतं अवतं ज सूरं । भारै दिष्ट वैरी लगै जे करूरं ॥
दिसा धुंधरी पंच विम्भान छायौ। किधौं फेरि वरिषा जु आषाढ़ आयौ॥
छं० ॥ २०१७ ॥

गजै सार धारं निसानं प्रमानं। फिरै पंति दंती घनं सेस मानं ॥
वजै सद्द झिंगूर [1]उदंद क्रूरं। पढै भट्ट वीरं सम जानि [2]सूरं ॥
छं० ॥ २०१८ ॥

धजा सेत नीलं सु मतं फिरंती। मनों सुक्क मालं वगं पच्छ जंती॥
उडै सार धारं [3]किरचान तथ्थं।उड़ै भिंगनं जानियै विज्ज सथ्थं ॥
छं० ॥ २०१९ ॥

उडै सार सारं असी वंक भारं।मनों अभ्भि सरन वाल वज्यौ सवारं॥
भयं अंग रत्तं ढुरै रुद्धि इल्ली। मनों दृष्य पायं नदी जानि चल्ली॥
छं० ॥ २०२० ॥

कहै रंभ लेयं नहीं हथ्थ आवै ।तिनं सार धारं सु मंगल्ल गावै॥
रही अच्छरी हारि मनोरथ्थ पुट्टै।मनो विरहिनी हथ्थ तें पीउ छुट्टै॥
छं०॥ २०२१ ॥

ढलं ढाल ढालं सु रत्ती फिरंती । गुरं गज्ज छंडै चढ़ै पंष पंती॥
परे पंच सूरं जु भारथ्थ भारै । जिनं पंग सेनं सवं पग्ग झारै॥
छं० ॥ २०२२ ॥

दूहा ॥ पंग राव चहुआन वर । सब वित्ते कविचंद ॥
देवासुर भारथ्थ [4]नन । नन व्रित्ते सुर इंद्र ॥ छं० ॥ २०२३ ॥

कवित्त ॥ परत पंच भारथ्थ । चंपि चहुआन अरुझि झय ॥
डररि सब्ब सामंत । मुत्ति लब्बन मन सुभिझय ॥
धर धारव चंपिय सु । पंग पारस गहि नंषिय ॥
जियन जुद्ध तुछ कीय । कित्ति कीनी जुग सष्यिय ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम । [5]तन सुरत्त वर उम्भरिय ॥
मनों पुहप हथ्थ बंधन वलह । अमर अम्भ पूजा करिय ॥
छं० ॥ २०२४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उज्झंत ।　　(२) मो. सूरं ।　　(३) मो. किरवान ।
(४) ए. कृ. को.-सन ।　　(५) मो.-नन ।

युद्ध स्थल की पावस से उपमा वर्णन।

बर माधव पहुपंग। सार उन्नयौ सरुष झर॥
बज्जी बर प्रथिराज। सोर मंडै अद्भुै गिरि॥
सस्त्र तेज उद्धाय। [1]सांम खगियन सु बुंद असि॥
घरी एक धर धरे। सार बुट्टंन स्रूर धसि॥
अवरत्त बीय बज्जे विषम। भगि अप्पी नर स्रूर विव॥
प्रथिराज दान घन दीय सस्त्र। ग्रहन राह अरि भजन रवि॥
छं०॥ २०२५॥

दूहा॥ छिंनक उसरि बद्दलति दल। छत्र पंग सिर भास॥
हेम दंड चलि उदै सय। ग्रह चंपे रवि रास॥ छं०॥ २०२६॥

पंगराज के हाथी की सजावट और शोभा।

कवित्त॥ रत्ति ढाल ढलंकति। रत्त अम्मरिय पीत धज्ज॥
सेत मंत गज झंप। रत्त मंडत्त सहस गज्ज॥
मनों राइ रवि व्योम। भोम चढ़ि षिष्षि दल बयवं॥
सज्जि सेन कमधज्ज। अग्ग दीनी अरि हिंबं॥
तिम चढ्ढत घटत किरनाल कर। भै भ्रभंत चतुरंगिनिय॥
तन कढ्ढि करषि कायर धरषि। सुमरि सोम वासर गनिय॥
छं०॥ २०२७॥

पंगराज की आज्ञा पाकर सैनिकों का उत्साह से बढ़ना। उनकी शोभा वर्णन।

दूहा॥ इन भज्जै संजोगि ग्रह। जीय संपतौ राज॥
अजुत जुद्ध रिन जित्तही। पंग सु भर [2]किहि काज॥छं०॥२०२८॥

रसावला॥ पंग कोपे घनं। लोह बज्जे भनं॥
ओड मंडे [3]ननं। बीर बज्जै रनं॥ छं०॥ २०२९॥
चचरं चंमनं। चंपि पुत्ते मनं॥
वान रोसं भनं। अंत [4]तुट्टै घनं॥ छं०॥ २०३०॥

---

(१) ए. कृ. का.-स्याम। (२) ए. कृ. को.-कहि।
(३) ए. कृ. को.-ननं। (४) ए. कृ. को.-छट्टे

सज्ज वीरं धनं। वीर नंचै छिनं॥
दंत दंती तनं। सीस चट्ठी फनं॥ छं०॥ २०३१॥
माहि सेलं ननं। जोत रिप्पे कनं॥
सोर लग्गो तिनं। जक्क जे संमनं॥ छं०॥ २०३२॥
सिंघ देषे तिनं। ग्रब्ब मेरं मनं॥
कोटि तप्पं तनं। पग्ग पावं छिनं॥ छं०॥ २०३३॥
सीस घक्के फनं। द्रोम नंचे घनं॥
सूर दिप्पे छिनं। जानि कीयं ननं॥ छं०॥ २०३४॥
सज्ज पंकं [1]पुतं। ढोरि पन्नं जुतं॥
लोटि घंनं मनं। कित्ति वंधं तनं॥ छं०॥ २०३५॥

पृथ्वीराज की तरफ से हाड़ा हम्मीर का अग्रसर होना।

कवित्त॥ हाड़ा राव हमीर। राय गंभीर विवंधौ॥
लष्यौ ना तोषार। लष्य जर जीन सहंदौ॥
राज अग्ग फेरि यंहि। जाहि जंगल पति जानहि॥
चहुआन चामर नरिंद। जोगिनि पुर थानहि॥
असि द्रुग्ग द्रुग्ग दल सों जुरिग। सामंतति सत्तह चढ़िग॥
आलोह सेन लागन विषम। [2]वलीदानं वामन वढिग॥
छं०॥ २०३६॥

पंग सेना में से काशिराज का मोरचे पर आना।

दूहा॥ कासिराज सज्ज्यौ सु दल। फुनि आया दिय पंग॥
गाजे भीर अभीर रनि। बाजे बिषम सु जंग॥ छं०॥ २०३७॥

काशिराज के दल का बल।

कवित्त॥ कासिराज दल विषम। मद्धि जानु तार विछुट्टिय॥
मिरिनि हार जुध धार। अद्ध अद्धह लिय वंटिय॥
निघनि घात तन वात। घात हय घात अघानिय॥
जनों जिहाज सायरिय। तिरन तुंगत तिहि बानिय॥

(१) ए. कृ. को.-सुतं। (२) "मनों" पाठ अधिक है।

बल्ल बंधि वलपति बत्त तिन। छिन छिलदा कमधज्ज दल॥
भूचाल भूमि ऊथल पथल। इम सु छचि पहुपंग दल॥
छं० ॥ २०३८॥

काशिराज और हाड़ा हम्मीर का परस्पर युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ हले पंग छचं, न छिचं निधानं। उवं हड्डु हम्मीर गंभीर वानं॥
[1]हलं हाल भग्गी सु जग्गी जुआनं। रधी धार उद्धार भूमी भयानं॥
छं० ॥ २०३९॥

समं सेल संदेह अंदेह गानं। हयं तानि छंडै न छंडे परानं॥
बकै राइ पंगे बदै पीलवानं। नभं गोम गज्जे व जंजीर थानं॥
छं० ॥ २०४०॥

निसा एक मेकं समेकं ह्रियानं। दिसा धूरि धुंधी उड़ीगै गिधानं॥
भिरै बीर सामंत तत्ते उतानं। मह्रा भार भुत्ते सु सांई सु तानं॥
छं० ॥ २०४१॥

दोनों का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ हाड़ाराय हलकि उत। कासिराजह कर वर कसि॥
जोगिनि पुर सामंत। वहत कनवज्ज बीर रस॥
बियौ बीर आहुरिय। धरिय दंतह्लर आवध॥
नामि बीर निज्जुरिय। करिय केहरि कुस रावध॥
उड़ि हंस मंस नंसह मुहर। कुहरति सा बाज्जिय सुहर॥
जग्गयौ नाग तब नाग पुर। होम दुरग धामंक धर॥ छं०॥२०४२॥

दूहा॥ हाड़ा राय सु हथ्थ धरि। गंभीरा रस बीर॥
कासिराज दल सम जुरिग। कुल उच्चारिय नीर॥ छं० ॥ २०४३॥
न्टप अलसिग अलसिग सुभर अलसिय पंग नरिंद॥
विलसित काल करंक किय। सह सति तीस गनिदं॥ छं० ॥२०४४॥

नवमी का चन्द्र अस्त होने पर आधी रात को दोनों सेनाओं का थक जाना।

कवित्त॥ निसि नवमी ससि अस्त। घटिय मुर बीय स उप्परि॥

(१) ए. कृ. को.-हथं थाल। (२) मो.-निधानं।

थकिय हथ्थ सामंत। थकिय पंगुर दल उप्परि ॥
रुधिर सरित परहरिय। गिड्ड [1]गोमाय अघाइय ॥
ईस सीस गत दरिद्द। बीर बेताल नचाइय ॥
आसुर सु उहटि थट भट रहिग। पंग फेरि सज्जिय सुभर ॥
करि सीस रीस पुच्छिय सुबर। कहिय गहन आयास चर ॥
छं० ॥ २०४५ ॥

पृथ्वीराज का पंग सेना के बीच में घिर जाना।

वर विपहर निसि पंग। क्रोध विष बीर साम सब ॥
जीभ लोह दिढ साव। जरिय साहस्स तत्त तब ॥
चित बामंग गारुरी। अमी अंचल चित मंतं ॥
दिष्ट अछित उच्छारि। हंकि कढ्ढिग विष [2]गत्तं ॥
[3]अप्पइ जु षल सार सु गरुर। [4]रुद्रसि बेंन सज्जै मिसह ॥
जे चित्त रेप चिंती सु वर। सिष संजोग आसा सिगह॥छं०॥२०४६॥

आर्या ॥ पन्नगो ग्रसित सामुद्रं। त्यों पंग सेन ग्रिसती [5]रायं।
श्रित सुश्रित आहद्दं। नवमी निसी अद्ध उपायं ॥ छं० ॥ २०४७ ॥

मुरिल्ल ॥ पिष्पि जुद्द [6]कंदल दिव धाया। लग्गे सद्द दसों दिसि आया ॥
तक्किग रहि गनि साजत बीरं। भग्गिय जुद्ध ग्रह पति धीरं ॥
छं० ॥ २०४८ ॥

रात्रि को सामंतों का सलाह करना कि प्रातः काल राजा को किसी तरह निकाल ले चलना चाहिए।

कवित्त ॥ रैनि मत्त चिंतयौ। प्रात कढ्ढौं प्रथिराजं ॥
प्रा रष्यौ चहुआन। जाय जुग्गिनिपुर साजं ॥
जब लगि अरि तन वढै। कढै न्रप कूह प्रमानं ॥
च्यार बीस षग षुट्टि। अज्यौं सामंत [7]जघोनं ॥

(१) ए. कृ. को.-गोमय। (२) ए. कृ. को.-गत्रं।
(३) को.-अप्प षलगु सार सु गरुर। ए.-अप्पह जु षज्जु लज्ज सार सु गरुर
(४) ए. कृ. को.-रुद्रासि। (५) मो.-रयं। (६) ए.-कंद्दल। (७) मो.-सघानं।

जो चढ़ै सामि पहु,पंग कर। तौ सब किति समथ्थनौ॥
जब लगि न्रपति हम हथ्थ है। तब लगि बल सामंत नौ॥
छं० ॥ २०४९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तुम लोग अपने बल का गर्व करते हो। मैं मानूंगा नहीं चाहे जो हो।

सुनिय बयन प्रथिराज। रोस बचननि उच्चारिय॥
ततो होइ तिन बेर। मंत बहु बहु बक्कारिय॥
तुमं सु ग्रब्ब सामंत। मंत जानौ न अमंतं॥
में भग्गा ग्रिह पंग। लियं ढिल्ली धर जंतं॥
सै सामि होइ सिरदार भल। तौ काइर बल राह जित॥
जौ हथ्थ जीय होइ अप्पनौ। सुरव सेन अरियन कित॥ छं०॥ २०५०॥

सामंतों का कहना कि अब भी न मानोगे तो अवश्य हारोगे।

दूहा॥ सुनि सामंत उचारि न्रिप। बिय दिन जुद्ध उमाह॥
अब जीतै प्रभु हारिहै। जौ नहि चल्लै राह॥ छं०॥ २०५१॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा।

तब जंगलवै 'बोल्लि इह। रे भावी समरथ्थ॥
जौ पैसै लष पंजरै। अंत चढ़ै जम हथ्थ॥ छं०॥ २०५२॥

दिशाओं में उजेला होना और पंग सेना का पुनः आक्रमण करना।

चौपाई॥ सामंत सूर उच्चरि चहुआनं। अचल चित्त अति धीर सु ध्यानं॥
धनि नरिंद सोमेसुर जायौ। मंडी अंमर पंग बर धायौ॥
छं०॥ २०५३॥
रहि घटि सर निसि बढि तत मानं। षिनदा चरम रही घन पानं॥

(१) ए. कृ. को.-बोल्लि।

बजि दल दुंदुभि पंग निसानं । रत चित सूर देस रति मानं ॥
छं० ॥ २०५४ ॥

जैचन्द के हाथी की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पुब्बह पहुपंग । वीर ठट्टौ रचि सेनं ॥
सेत केत गज झंप । सेत दुरि चौर समेनं ॥
सेत धजा आसड्डी । सेत सिंदूक सु छल्ली ॥
सेत अस्व पष्षर प्रमान । नाग मुषी रहि पुल्ली ॥
उज्जल सन्नाह जस वरन वर । सेत धजा कमधज्ज सब ॥
ओपमा चंद सस्तन किरन । कौं विगसी सु कलेसु रवि ॥
छं० ॥ २०५५ ॥

सामंतों का घोड़ों पर सवार हो कर हथियार पकड़ना ।

चौपाई ॥ मतौ मंडि सामंत सूर भर । जिह्नि उपाय संकत्त जतन नर ॥
न्रिप अन जग्गत सबै तुरंग चढ़ि। भान पयान न होत लोह कढ़ि॥
छं० ॥ २०५६ ॥

चहुआन के सरदारों के नाम और उनकी सज धज का वर्णन

कवित्त ॥ चावद्दिसि पहुपंग । वंधि वन वीर सु ठट्टै ॥
रत्त धजा मारूफ । वंधि वामं दिसि गट्टै ॥
पीत धजा दल स्याम । सोह रट्टौ वर कन्हं ॥
सेत धजा पहुवंध । वीर उम्भौ पहु नन्हं ॥
चौविह्नि फौज चावद्दिसा । वीर वीर वर विट्टरै ॥
चिंतयौ भान पयान वर । लोह पयानत विस्तरै ॥ छं० ॥२०५७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का जागना ।

दूहा ॥ सुष्य सयन प्रथिराज भौ । तम घटि तम चर बार ॥
घरी एक निसि मुदित हुअ । बजत घरी घरियार ॥ छं०॥२०५८॥

पंगराज का प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ घरिन बजत घरियार । पंग परतंग सु बाहिय ॥

कै तन छंडि तर धरौं। जीति दुरजन दल साहिय॥
उभै उभै दिसि फौज। साजि चतुरंग चलाइय॥
चावद्दिसि चहुआन। चाव चतुरंग हलाइय॥
पायान भान बरज्जित अरि। लोह पयानन मोह भखि॥
दिसि रत्त उत्त धररत्त ह्वै। सिध समाधि जरह्व पुखि॥छं०॥२०५९॥

प्रातः काल की चढ़ाई के समय पंग सेना की शोभा।

भुजंगी॥ लगी बज्ज ताली बजे लोह पुल्ली। घरी एक सिद्धिं समाधिं स भुल्ली॥
किधौं इन्द्र वेता सुरं जुद्ध वीयं। किधौं तारका जुद्ध सुर सत्ति कीयं॥
छं० ॥ २०६०॥

कहै देव देवाइयं जुद्ध देषी। इसौ वीर अत्तीत भारथ्थ पेषी॥
भयं कव्वि चंदं सबैं वीर सथ्थी। नचै रंग भैरूं ततथ्थे ततथ्थी॥
छं० ॥ २०६१ ॥

किलं कार कारं रुधं पत्त धारं। पियै जोगिनी जोग माया डकारं॥
झरै लोह लोहं सबै दिस्सि झारी। नचै सट्ठि चव जोगिनी देत तारी॥
छं० ॥ २०६२ ॥

घटं घंट घट्टं सु पिंडं विचारी। फिरै आदि माया सु आदं कुमारी॥
बहै बान षग्गं छुपिक्का विरंध्रं। परे बार पारं दुह्नं अंग छिद्रं॥
छं० ॥ २०६३॥

भये छिन्न छिन्नं सनाहंति छिन्नं। रुधी जट्ठ रंकै तिनं माहि भिन्नं॥
कहै चंद कव्वी 'उपस्माति रुष्यं। मनो उग्गतं भान जाली मउष्यं॥
छं० ॥ २०६४ ॥

भये अंग अंगं सु रंगे निनारं। भरं उत्तरे मुगति संसार पारं॥
भयौ जुद्ध कवरुद्ध कथ्थे कथायं। लहौ सूर सूरं सबं मुगति पायं॥
छं० ॥ २०६५ ॥

परे पंग लष्षं उलष्षं सु सथ्थं। तुटै सस्त्र सूरं जुटै हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ २०६६॥

---

(१) मो. उपंमास।

पृथ्वीराज का व्यूहवद्ध होना और गौरंग देव अजमेरपति का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ उग्गि भान पायान। देव दरवार संप वजि ॥
सु वर सूर सामंत। [1]गज्जि निकरे सेन सजि ॥
[2]धर हरि वलि पांवार। अग्ग कीनं प्रथिराजं ॥
ता पच्छै न्रिप कन्ह। सीस मुक्की वढ़ि लाजं ॥
ता पच्छ वीर निड्डर निडर। ता पच्छै दंपति अयन ॥
गौरंग गरुअ अजमेरपति। रष्पि न्रपति पछैं सयन ॥छं०॥२०६७॥

पृथ्वीराज की ओर से जैतराव का वाग सम्हालना।

पच्छ भान पायान। लोह पायान अग्गि कढ़ि ॥
धर हरि धर पांवार। कोट धारह सलष्य चढ़ि ॥
वज्जि घाइ आहत्त। सार झरि सारह झड्डौ ॥
नभ सु साम सामंत। जानि वीरं जगि अड्डौ॥
घन देत घत्त अवरत्त असि। उभै सेन वर वर जुटी ॥
घरी अद्ध अंध [3]वजि विषम। भारथ्थह पारथ घटी ॥ छं०॥२०६८॥

पृथ्वीराज का घिर जाना और वीर पुरुषों का पराक्रम।

फिरि रुक्यौ प्रथिराज। परी पारस कमधज्जिय ॥
मुरि सु पंच पल भान। चढ़ी आयस सुर रज्जिय ॥
ठठुकि सेन पहु पंग। चंपि चहुआनन संकै ॥
वर विरंग विड्डार। लखी वंभन झुकि झुक्कै ॥
का कुटिल दिष्ट कनवज्ज पति। सस्त्र मंच करि झारयौ ॥
जगि पवित्र जोग मंडन्न वर। धार तिथ्थ [4]तन पारयौ ॥
छं० ॥ २०६९ ॥

युद्ध के समय श्रोणित प्रवाह की शोभा।

भुजंगी ॥ चढ्यौ भान घट्टी उभैता प्रमानं। कढै लोह राठौर अरु चाहुआनं॥

(१) ए. कृ. को.गज्जि। (२) मो.-धर हरिचल।
(३) मो.वरती। (४) मो.-नभ, ए. कृ.-नन।

सुच्चौ दीन एकं बिबे पंति बीयें। करे एक मेकं तिनं लोह लीयें॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्धि छिंछं झरै सार सारं। किधौं मेघ वुट्ठं प्रवालीन धारं॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं। गहै ग्रंत गिद्धी उडंती प्रकारं॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी। * * * छं० ॥ २०७१ ॥

छटक्की बरच्छी ठनंकंत घट्टं। पिजे गज्ज षेंचे चल्यौ साथ तट्टं॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपम्मातिं कल्लं। पचै इंद्र वद्धू कपी काम फल्लं॥
निकस्सौ सनेनं झरै रुद्धि धारं। ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस हक्के धरं कंठ रज्जी। मना नट्ट काया पलट्टीति बज्जी॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं। मनो रत्त डोरी चढ्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्य दुष्यं न माया न काया। तहां सेवक्कं सामि रंकं न राया॥
घटक्की षटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन। छच धारइ जु छच तजि॥
तत्तो छोइ तिहि वेर। तत्त माया सु मुदित तजि॥
तत्त गत्त सो हथ्थ। तेग तत्ती उभ्भारी॥
धात षंभ न्रिघात। जानि झल्लरि झलारी॥
असवार सनाहत पष्परे। कटि पट्टन तुट्टै निबर॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह। बिहर बार करवत्त भर॥
छं० ॥ २०७६ ॥

आझी बर मरदान। मान मरदा मिलि तोरन॥
चाहुआन कमधज्ज। दिट्टि अरुहि रन जोरन॥
दुनै बीर रस धीर। धाइ लग्गे आभुष्षं॥
लोह वज्जि अवरत्त। जानि छुट्टै मद मुष्षं॥

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं । घन निसान सद्द दुरिय ॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि । घटि विवंग जोगा जुरिय

छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत । बज्जि धुरतार भार परि ॥
सेस सीस दल धसी । फेरि मुक्की कुंडलि करि ॥
करि कुंडलि अध सत्त । परे पिट्टं परिवारं ॥
[1]गौ भगि फुनि फुनि फुनि । फुन्नि किय चंद निनारं ॥
अहि सीस [2]वीस सत कलमले । रास रत्त भेदन दलं ॥
चिचकन चित्त विभ्रम्म भुग्र । तिहित वेर अहि कलकलं ॥

छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन ।

बंधौ रा जैचंद । रा विजपाल सपुत्तह ॥
से रंभ्री उर जनम । नाम वीरम रावतह ॥
सहस तीस सिंधूत । ढाल नेजा सिंदूरिय ॥
सिंदुरीव सन्नाह । सेव वाहन संपूरिय ॥
दिन मह्यिप एक भुंजै भषनि । विजय द्रग्ग अग्गैं न्रपह ॥
जीते जुवान हिंदू तुरक । वाम अंग टोडर पगह ॥ छं०॥२०७९ ॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना ।

सुक्रवार अष्टमिय । निंद जाने न जुग्ग परि ॥
नौमि सनी टरि गइय । सामि संग्राम इंद्र जुरि ॥
हय दिष्षत घावास । पाइ गहि सत्त पछारिय ॥
रे समग्र मृढंग । जंग जुरि हौन अगारिय ॥
आयौ निसंक सामंत जहँ । कर कसंत आलस असन ॥
तित्तने हूर साहि सु समर । जनु अगस्ति दरिया ग्रसन ॥

छं० ॥ २०८० ॥

---

(१) मो.-गौभग्ग फनं फन फुन्न ।　　(२) मो.-चीस ।

दूहा ॥ बसु कढ्ढिय कंघह्न धरिग। जब वसीठ परिहार ॥
उभय पान साहिग सनर। गय न्रप पंग सु सार ॥छं०॥२०८१ ॥
रा जैचंद नरिंद दल। दरसि अत्त बल काज ॥
में भुज पंजर भिरि गहिग। इन में को प्रथिराज ॥ छं०॥२०८२॥
माया मागति देव जगि। छवि जिम छठिय प्रगट्टि ॥
तिन कट्टारिय कर धरिग। तिन घन सेन निघट्टि ॥ छं०॥२०८३ ॥
भ्रमरावली ॥ घन सैन निघट्टिय पंग दलं। रावत्त बंध्यौ तिहि बीर बलं॥
रुधि पान स वित्त कियौ समरं। घन देषि विमान फिरें अमरं ॥
छं० ॥ २०८४ ॥
तिन पौरिस राज भये सबरं। दिसि च्यारि फवज्जति पंग करं ॥
दसमी पह्न फट्टति रह जुरं। इन जुद्ध समावर जोग (१)हरं ॥
कविचंद अनुक्रम बात धरं। छं० ॥ २०८५॥
* * * * । * छं०॥ २०८६ ॥

दसमी रविवार के प्रभात समय की सविस्तार कथा का आरंभ।

कवित्त ॥ कढ्ढिय बर विस्तस्यौ। धाइ लग्गौ धर राजन ॥
जहों भीम जुवान। तीर तुंगह भे भाजन ॥
रा रन बीर पवित्र। सु पति रष्यिय परिहारह ॥
राज काज चहुआन। स्वामि संकेत अहारह ॥
जुध भिरत तिनहि हय गय विहत। गह गह कहैति संभरिय ॥
निसि गइय एक सामंत परि। भयत पीत निस अंमरिय ॥
छं० ॥ २०८७ ॥

नवमी के रात्रि के युद्ध में दोनों दलों का थक जाना।

दूहा ॥ निसि नौमिय वित्तिय विषम। उदित दिवस आदीत ॥
उठहि न कर पल्लव नयन। अस बड़ बित्त कवित्त ॥छं०॥२०८८॥
गहन आस गई पंग न्रप। जियन आस चहुआन ॥
सूर षंड मंडन (२)रवन। उयौ सु रत्तौ भान ॥ छं० ॥ २०८९ ॥

(१) ए. कृ. कों.-जुरं। (२) ए. कृ. को.-बरन।

कनवज्जै भज्जै सयन । जे भर ढिल्लिय सार ॥
जे घर अंजुलि झलरित । उद्दित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९० ॥

कनवज्जह झलकिय किरन । वर तजि न्रपति उरन्न ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरिग सुरन्न ॥छं०॥२०९१॥

राजत स्रित धर केलि सह । लाभ सु कित्तिय पूर ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि [1]उत्तरि सुर मूर ॥छं॥२०९२॥

संयोगिता का पृथ्वीराज की ओर और पृथ्वीराज का संयोगिता की ओर देख कर सकुचित चित्त होना ।

देषि संजोगिय पिय सु बल । श्रम जल बूंद वदन्न ॥
रति पति अहित पवित्र मुष । जालि प्रजालि मरन्न ॥छं०॥२०९३॥

चंद्रायन ॥ घुरि निसान उगि भान कला कर मुद्दयौ ।
श्रम सामंत नरिंद छिनक धर धुक्कयौ ॥
सविष पंग दल दिष्ट सरोस निहारयौ ।
अंचल अँमृत सँयोगि रैन मिस भारयौ ॥ छं०॥२०९४ ॥

भ्रमरावली ॥ फिरि देषिय राज रवन्न सुषं । अतिवंत दुषी दुष मानि सुषं ।
भुव बंकम रंकम राज मनं । द्रुष तंनि निहंति समोह घनं ॥
छं० ॥ २०९५ ॥

गुन कट्टनि कट्टति तात कुलं । किय म्रत्य महाव्वर वीर वरं ॥
अभिराम विराम निमष्य करं । उलरंपि न पिट्ठन दिट्ठ हरं ॥
छं० ॥ २०९६ ॥

इहि औय सु पीय सु कीय कुलं । मुष जंपिन कंपिन काम कुलं ॥
* * * * । * छं० ॥ २०९७ ॥

चारों ओर घोर शोर होने पर भी पृथ्वीराज का आलस त्याग कर न उठना ।

दूहा ॥ सुधर विलंबन घरिय [1]पर । रहि टड्डिय घटि तीन ॥

(१) ए. कृ. को.-उतरिग ।　　(१) ए. कृ. को.-घर ।

उठहि न अलसित कर सु वर। कछु मन मोह प्रवीन ॥
छं० ॥ २०९८ ॥

उत रुष चंपिय रठ्ठ वर। इत मुष संभरि वार ॥
चलत राइ फिरि फिरि परिय। उदित आदित वार ॥छं०॥२०९९॥

सब सामंतों का राजा की रक्षा के लिये सलाह करके कन्ह से कहना।

करि विचार सामंत सह। न्रिप तिहि रष्षत काज ॥
कहै अचल सुन ह्व रहौ। करहु चलन कौ साज ॥छं० ॥२१००॥
तब सामँत अचलेस सौ। वार बीय हम कथ्थ ॥
अब तुम कन्ह कविंद मिलि। कहौ चलै न्रप सथ्थ ॥छं०॥२१०१ ॥
कहै अचल उरगंत रवि। बीच सुभर अप्पान ॥
चलै राज जीवंत ग्रिह। कहिय अचल सम कान्ह ॥ छं ॥ २१०२॥

कन्ह का कवि को समझाना कि अब भी दिल्ली चलने में कुशल है।

कवित्त ॥ कहै कन्ह चहुआन। अहो बरदाइ चंद वर ॥
जुरत जुद्ध दिन बीय। भये अनभुत्त उभै भर ॥
एक जन पंचास। परे सामंत सूर धर ॥
पंग राव घन सेन। तुट्टि सक मीर धीर थर ॥
थक्के सु हाथ सुभ्भर नयन। उठ्ठे न करह विस्रम बिरम ॥
पहु चलिग मग्ग रष्षै सुभर। कियौ राज अदभुत्त क्रम ॥
छं० ॥ २१०३ ॥

समौ जानि कविचंद। कहै प्रथिराज राज मुनि ॥
आदि क्रम्म तें करें। तास को सकै गुनिक गुनि ॥
सेस जीह संग्रहै। पार गुन तोहि न पावै ॥
तें जु करिय पहुपंग। मिलिय आरनि थर सावै ॥
नन कियौ न को करिहै न को। जै जै जै लछी तरुनि ॥
ग्रिह जाइ अप्प आनंद करि। बढ़ै कित्ति सब लोग पुनि ॥
छं० ॥ २१०४ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के घोड़े की बाग पकड़ कर दिल्ली की राह लेना।

दूहा ॥ इह कहि सु कवि समीप गय। गहिय वग्ग हैराज ॥
चल्यौ पंचि ढिल्ली सु रह। सुभर सु मन्यौ काज ॥छं०॥२१०५ ॥
प्रलय जलह जल हर चलिय। वलि वंधन वलि बार ॥
रथ चक्कां हरि करि करिय। परि प्रब्बत पथ्थार ॥ छं० ॥२१०६ ॥
उदय तरुनि नट्ठिग तिमिर। सजि सामंत समूह ॥
न्त्रिप अग्गै वहै सु इम। चलहु स्वामि करि कूह ॥ छं०॥२१०७॥

पृथ्वीराज प्रति कविचन्द का वचन।

कवित्त *॥ वंस प्रलंव अरोपि। हंन घन अंदर कट्टिय ॥
वरत पुरातन वंधि। धरनि द्रिढ लग्गि न घुंटिय ॥
करि साहस चढि नट्ट। द्रुनी देषत कोतूहल ॥
घंटा रव गल करत। महिष उभौ जम संतल ॥
उत्तरन कुसल करतार कर। श्रिया लाभ त्तौ अलग रहि ॥
ढिल्लीव नाथ ढीलन करौ। लगौ मग्ग कविचंद कहि ॥
छं० ॥ २१०८ ॥

राजा पृथ्वीराज का चलने पर सम्मत होना।

दूहा ॥ चलन मानि चहुआन न्त्रप। वज्जे पंग निसान ॥
निसि जु इंद दुहु दल भयौ। विद्ध सहित विन भान ॥छं०२१०९॥
हय गय करि अग्गों न्त्रपति। षिंचि चंपे प्रथिराज ॥
मो अग्गैं आजुहि रहैं। टरिग दीह विय साज ॥छं०॥२११० ॥

सामंतों का व्यूह बांधना धाराधिपति का रास्ता करना और तिरछे रूख पर चौहान का आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ बर द्वादस भारथ्थ। राज परि भीर वाम दिसि ॥
सह दच्छिन न्त्रप सथ्थ। बीर बर बही बीर असि ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है।

बर जोगिनि पुर उद्दै। सीस धर हर बर [1]जुट्टे॥
मनों जैत षँभ तत्त। मेघ धारा जल बुट्टे॥
तिरछौ तरि उप्परि न्रपति। दइ दुबाह धारह धनी॥
जाने कि अग्गि जज्जुर बनह। बंस जाल फट्टै घनी॥छं०॥२१११॥

शौचादि से निश्चित हो कर दो घड़ी दिन चढ़े जैचन्द का पसर करना।

दूहा॥ [2]घटी उभै रबि चढ़िय बर। स्नान दान गुर चार॥
पंग फेरि घेरिय सु घन। भर बिंटे सिर भार॥ छं०॥२११२॥

वीर योद्धाओं का उत्साह।

रसावला॥ सांमि बिंटे रनं, सूर छोहं घनं। बथ्थ मल्लं जनं, धार कुट्टे मनं॥ छं०॥२११३॥
सूर चट्टे मनं, लोह तत्ती तनं। सीत बित्तं जनं, बिड्डु रेनं मनं॥ छं०॥२११४॥
चित्त जोतिप्पनं, सो मनं जित्तनं। तेग बंकी भनं, बज्जि अस्सी तनं॥ छं०॥२११५॥
सूर कीनी रनं, भारथं नंसनं। अंम सासिप्पनं, जीव तुच्छे गिनं॥ छं०॥२११६॥
काल भूअं ननं, जम्म छुट्टे मनं। रज्ज कोटं भटं, रुद्धि घुम्मै धटं॥ छं०॥२११७॥
सूरं चित्तं करं, दिष्षियं तुंमरं। स्वामि चल्लै घरं, जुद्ध [3]झल्लं भरं॥ छं०॥२११८॥

सामंतों की स्वामि भक्तिमय विषम बीरता।

दूहा॥ परिग पंच पंचे सु भर। भ्रितनि परिग भ्रत पंच॥
कूह जूह लै लै करिय। न्रपति न लग्गी अंच॥ छं०॥२११९॥
समर स पुट्ठी समर परि। सामि सुमति चल तेन॥
सामंतन रुक्यौ सु दल। लीज [4]मुष्ष मुह जेन॥ छं०॥२१२०॥

---

(१) मो.-झुडे। (२) मो.-घरी। (३) मो.-मल्लै। (४) ए. कृ. को.-मुछ।

दबिग नृप नोरह सु भर। आदित जुद्ध [1]सरीस॥
वीर पंग फेरिय गहन। करि प्रतंग द्विव ईस॥ छं०॥ २१२१॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना।

कहै पंगुरौ सु भर भर। आज सु दिन तुम काम॥
गहौ चंपि चहुआन कौं। ज्यों जग रप्पै नाम॥ छं०॥ २१२२॥
दूहा गाहा सरसतिय। न्रप प्रसाद धन सथ्थ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत। ग्रहै न पच्छै हथ्थ॥ छं०॥ २१२३॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि। भ्रित कोपिय भ्रम काज॥
परे चंपि चहुआन पर। जानि कुलिग्गन बाज॥ छं०॥ २१२४॥
जब देषे सामंत हय। तब लग्यौ घन ताप॥
जानै त्रिप ज्वाला तपति। कै प्रलै काल मनि आप॥छं०॥२१२५॥
जितैं भ्रंम लच्छी लहै। मरन लहै सुर लोक॥
दोऊ सु परि भ्रत सुझरै। [2]परे धाइ धर तोक॥ छं०॥ २१२६॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना।

भुजंगी॥ पुरे धाय वीरं रसं पुच्च दभ्भै। क्रमं पंच धक्के चहुव्वान भज्जे॥
पऱ्यौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढी। दिसं पुब्ब मारुफ बर बंक काढ़ी॥
छं०॥ २१२७॥
चहूआन सूरं असी बंक भारी। मनों पारधी विंट बाराह पारी॥
महं माह सूरं प्रचारे सबाहं। [3]तबै वीर वीरं उपम्माति चाहं॥
छं०॥ २१२८॥
पिलै लाज मुक्कै चियं पीय छोरी। मुरे लज्ज बंधं दोऊ सेन जोरी॥
बहै षग्ग मग्गं सु बग्गं निनारे। तिरै जोध माया सरे सार पारे॥
छं०॥ २१२९॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरीर। (२) मो.-परत। (३) ए. कृ. को.-तकै।

बढे षग्ग तुट्टै उड़ै टूक नारे। मनो टुट्टही राति आकास तारे ॥
सढै हथ्य जवानं फुरी टोप सथ्यं। कि जुगों हरिजं भूलियं राह हथ्यं॥
छं० ॥ २१३० ॥

डरै काइरं चिंति मुष्षं दुरायं। मनो प्रात दीपं विधं कान्नि गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न क्रूरं। मनों जार्रादि कट्टै सुषं मीनं रूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

मचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनों टीस ज्यों डंभरू पंति लाई॥
घरी अद्ध आहत्त बज्जे विषम्मं। पन्यौ राव वरसिंघ किन्नीव जम्मं॥
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वीराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू वज्जाइय ॥
सार ग्रंच संधयौ। वीर आलाप चिघाइय ॥
सेस सुनिव सामंत। कंब मंडत तिहि रग्गा ॥
फन मिसि असिवर धुनिय। जीह कट्ठी षग लग्गा ॥
गारुरी बीर कमधज्जक सर। जंच मंच हीनं गनिय ॥
मनि सध्य सेर डस्यो बिषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि ध्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध बिष झाल ॥
दक्खै कायर दूर टरि। मिले गरूर मुंछाल॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा॥

कुंडलिया * ॥ वार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन ॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान ॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह ॥
उदधि मद्धि बिस्तारि। गिलन अंतरिष वहं तह ॥
ररंकार सबद उच्चार करि। ब्रहमंड कि भिदि मुनि गयौ ॥
कहि चंद ध्यान भारत उअर। सागर पारंगत भयौ॥छं०॥२१३५॥

(१) मो.-मैन। (२) ए. कृ. को.-ईस। (३) ए. कृ. को.-ज्वाल।
(४) ए.-सिलत। * यह कुंडलिया मो. प्रति में नहीं है।

पुट्ठि वुट्ठि झाला हलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट[1] अउ । यों निकसे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥

दूहा ॥ जे छुची अड्डे अरे । ते झुझझै असियान ॥
जानों बुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

सुभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उद्दित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं० ॥ २१३८ ॥

त्रिभंगी ॥ हग रत्ते सूरं, पंग करूरं, वजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुप्पे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप बज्जिय कंती, धर रंगं रत्ती, वीर समत्ती, अलि वीरं ॥
बर वेन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं ॥ छं० ॥ २१३९ ॥

असि कड्ढी नीवं, ज्यों ससि बीबं, भै [2]अति भीवं, अनसंकं ।
सब ओडन नष्षे, रज रन रष्षे, अरि घर भष्षे, भरि अंकं ॥
वर वर धर मीनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
हुलरो है हल्लैं, करि किन डुल्लैं, वीर सलल्लैं, तन छीनं ॥ छं० ॥ २१४० ॥

अंती वर कंती, पें उर झंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, जलंगं भूरं, [3]गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, षग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, पह भग झारं, हूत[4] सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥

भै वीर विरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
[5]लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, कित्ति स लुट्टिय, कबि तेनं ॥
छं० ॥ २१४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर । (२) ए. भित्त, को. कृ.-भांति ।
(३) ए. कृ. को.-गज्जहि तूरं । (४) ए. कृ. को.-हू तसबीरं ।
(५) मो.-लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक्क कमान वहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए षग्ग सह ॥
बीय अरी चित लरत। कोउ मानै नल थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। कूह चतुरंग जटक्कै ॥
है नंषि बंध बलिभद्र कों। पज्जूनी अग्गै सयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ वयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कथ्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस विहु बीच। विंब केसर बर बक्कै ॥
कट्टारी बर कढ्ढि। मेछ वाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकारी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुच्छि घाइ कच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कबंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्पर बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल दल मुष मुष पंग। भई द्रष्पन मुष झाइय ॥
है [1]अंठुन दल पंग। वीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कोतिग्ग। ईस नारद रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्टाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना ।

भुजंगी॥ चँपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ। जिसे सेंन में सिंघ गज जूथ पायौ॥
करै कूह गज जूह सनमुष्य धायौ। तबै पंग दल समटि चिहुं कोद छायौ॥
छं० ॥ २१४६ ॥

पंगराज का दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ वली अली द्वै मीर। उभै बंधव वर वीरह ॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल। मल्लविद्या साधक सह ॥
षग्ग मग्ग बिन रेह। जुद्ध जानें निरगम गम ॥
डंडा युद्ध छत्तीस। वट्ट पाइक पाइक सम ॥
भुज लहै कोरि उभ्भै अभय। स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह ॥
अनहित्त पंग लज्जी अदब। दल पगार त्रिर दैत गह ॥
छं० ॥ २१४७ ॥

करिय कृपा पहुपंग। सहस पंचह दिय मीरह ॥
कुल विषत्त जुध जुत्त। लहै वर लाज अभीरह ॥
स्याम चमर पष्षर सु। स्याम गज गाह सुनित्तह ॥
झंडे स्याम सु माम। पछय पय पुलै न षित्तह ॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि। आए मीर पठान पुर ॥
आदित्त जुद्ध हरि उग्ग मनि। आए आतुर सज्जि अरि ॥
छं० ॥ २१४८ ॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना ।

दूहा ॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर। कहै पंग करि पान ॥
जीय सु षंडो षत्त पहु। गहो बहो चहुआन ॥ छं० ॥ २१४९ ॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तबै उप्परी फौज सा राज मीरं। सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं॥

किलक्के किलक्की हक्के आसुरानं । चवै दीन महमूंद महमूंद मानं ॥
छं० ॥ २१५० ॥

[1]बली मीर अली दिसा अप्प भष्षै । तनं[2] अज्ज सांई निजं कज्ज रष्षै ॥
करौं पिंड षंडं निजं स्वामि काजै । गहै चाहुआनं भरं झूझ भाजै ॥
छं० ॥ २१५१ ॥

हक्के मीर अप्पान लै अप्प नामं । तिनं साथ भष्षै [3]कही कंक कामं ॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं । हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं ॥
छं० ॥ २१५२ ॥

नयौ सीस प्रथिराज रजि वीर रस्सं । फिर्‍यौ संमरे इष्ट अप्पं उकस्सं ।
चले बीर किलकार साथे सु गाजै । करं अप्प आवद्ध सावद्ध साजै ॥
छं० ॥ २१५३ ॥

मिल्यौ जुद्ध मंझी समं आइ मीरं । झरं आवधं वज्जियं धार धीरं ॥
मिले मुष्प एकं अनेकं सु धायं । करक्कै सु सीसं परै पूर घायं ॥
छं० ॥ २१५४ ॥

परैं मीर एकं अनेकं सु षंडं । कलं कूह वज्जी रुरं मुंड रुंडं ॥
कलं भूचरं षेचरं सा करूरं । नचै जंध हीनं कमद्धं टु स्लूरं ॥
छं० ॥ २१५५ ॥

रमे तेक चहुआन रस रास तारं । फिरै मंडली जेम षल न्रत्य कारं ॥
उभै मीर बल्ली अली संघ लष्षै । क्रमे आतपं तप्पि जल जाम[4]झष्षे ॥
छं० ॥ २१५५६ ॥

बली आय ग्राहार कीनौ जु जामं । उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं ॥
चलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे । हयौ रोह मां तूं मिरें मच्छ कारे ॥
छं० ॥ २१५७ ॥

बली सीस तुट्यौ षगं षंभ थारं । मनौं देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं ॥
अली आय [5]वामं हयौ षग्ग धारं । तुट्यौ सीस उट्ठौ षगं भूमि पारं ॥
छं० ॥ २१५८ ॥

---

(१) मो.-चली । (२) ए. कृ. को.-तनं (३) ए. कृ. को.-कहा ।
(४) ए. कृ. को.-घष्षे । (५) ए. कृ. को.-बाहे ।

गह्यौ तांम[1]अली उर अप्प चंप्यौ। गयौ अंस उल्ली तिनं तांम[2]लिप्यौ॥
भग्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं। सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥
घनं घाइ अघ्घाय पृ-यौ सु पानं।प-यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति थानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वीराज का चार कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ करि जुहार[3]नरसिंघ। नयौ चहुआन पहिल्लौ॥
वरी अनी सावरी। लष्य सों भिल्यौ इकल्लौ॥
आगम काय हुअ फिरै। धरनि षुर सों षुर षुंदहि॥
एक लष्य सों भिरै। एक लष्यह रन रुंधहि॥
असि घाइ झाइ वज्जै[4]विषम। जै जै जै आयास भौ॥
इम जंपै चंद वरदिया। च्यारि कोस चहुआन गौ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनःचौहान को आघेरना।

दूहा ॥ परत धरनि नरसिंघ कहुं। रुकि गयंद दल अब्ब॥
मनहु जुद्ध जोगिन पुरह। तिन मुक्कयौ सब[5]अब्ब॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल। वर रट्ठौर नरेस॥
[6]सिर सरोज चहुआन कौ। भवर सत्थ सम भेष॥ छं० ॥२१६३॥

इस तरफ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज। कनक नायौ बड़ गुज्जर॥
हम तुम दुसह मिलन। स्वामि दुज्जै सु अप्प घर॥
हों रवि मंडल भेदि। जीव लगि सत्त न[7]षंडो॥
षंड षंड करि रुंड। मुंड हर हार सु मंडो॥

(१) ए. कृ. को.-अली।　　　　(२) ए. कृ. को.-लेयौ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है।
(४) ए, कृ को.-सकल। (५) ए. कृ. को.-अब्ब। (६) मो.-सिर सराज।
(७) ए. कृ. को.-छंडों।

इन बंस भग्गि जानै न को। हों पति [1]कंप अलुझझायो ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। कोस षट्ट चहुआन गौ ॥ छं० ॥ २१६४॥

वीरमराय का बल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम वीरम बीरम वर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति जान ग्यान गुर ॥
बंधव सम जै चंद। प्रीति लिष्यवै प्रेम गुन ॥
अगि आदर न्रप करै। गान उत्तंग अंग सन ॥
सह सत्त सत्त सेना सु तस। वरन रत्त बाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समथ। तहं तहं परि अग्गें लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत बीरम पऱ्यौ। औ बीरम सुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परषि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर बंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७ ॥

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं ॥
छं० ॥ २१६८ ॥
बजी भेरि झुंकार धुंके निसानं। धरा बीम गज्जे सजे देव दानं॥
बड़ं गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्ष झम्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥
जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंचं। गरै बंधियं लून सम्मीर जंचं॥
किलक्के सु बीरं गहक्के सु धीरं। कलं कंपियं कातरं भीत भीरं॥
छं०॥२१७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंक।

मिली जोगिनी जोग नंचै चिघाई। फिकारंत फेकी पखं पूरि भाई॥
मिल्यौ गुज्जरं मद्धि फौजं सु धायौ। हमै षग्ग पत्तं षलं [1]एक घायौ॥
छं० ॥ २१७१ ॥

परे विंब षंडं धरं तुंड तुंडं। इकै गिद्धि जाचं परे षोनि मुंडं॥
सिरं वीर आवद्ध नंषै अपारं। नचै नारदं देषि कौतिग्ग भारं॥
छं० ॥ २१७२ ॥

तनं गुज्जरं एक देषै अनेकं। मुषें मुष्प लग्यौ प्रती एक एकं॥
अरी भूतयं वीर नच्चै अपारं। महावीर लग्गे बरं जुद्ध भारं॥
छं० ॥ २१७३ ॥

धनं धारि उभझारि धायौ समुष्पं। मदं मत्त इभ्भं परे इस्स रुष्पं॥
हयौ आइ बड़ गुज्जरं षग्ग धारं। कटे टट्टरं सीस फट्यौ कुठारं॥
छं० ॥ २१७४ ॥

हयौ अस्सि झारं सु वीरम्म तामं। कटे बाहु दूनौ धरं तुट्टि ठामं॥
परे षंड वीरम्म तुट्टे विभग्गं। धनं धन्न जंप्यौ कनक्कूति सग्गं॥
छं० ॥ २१७५ ॥

करं वाम चंप्यौ निजं सीस अप्पं। करे षग्ग धायौ समं रिम्म धप्पं॥
अरी ढाहि ढंढोरि माझी कनक्के। [2]ढुरे कोइ ढारं षलक्के सष्पक्के॥
छं० ॥ २१७६ ॥

बरी अच्छरा बिंद साचीनि मन्ने। ढुन्यौ कन्नक्कू धार सों घाइ घन्ने॥
सयं पंच सारद्ध बीरम्म सथ्थें। परे षेत पंदे कनक्क सु हथ्थें॥
छं० ॥ २१७७ ॥

बड़ गुज्जर के मारे जाने पर पृथ्वीराज का निठ्ठुर राय की तरफ देखना।

दूहा॥ बड़ हथ्थह बड़ गुज्जरह। झुझ्झि झ गयौ बैकुंठ॥
भीर [3]सघन सामित परत। चष निढ्ढुर अरि दिट्ठ ॥छं०॥२१७८॥
पर्‍यौ षेत बड़ गुज्जरह। अप्प पंग दल हक्कि॥
तम्मि सनंमुष नेन करि। दिय आग्या मन तक्कि॥ छं० ॥ २१७९॥

(१) मो.-लवं। (२) ए. कृ. को.-ढरे कोइ ढारं षऊ कंइ सक्के। (३) मो.-सषन।

जैचन्द की तरफ से निठ्ठुर राय के छोटे भाई का धावा करना। निठ्ठुर राय का सम्मुख डटना।

कवित्त॥ बीजापुर दिग विजय। करत विजपाल नरिंदं॥
सिंधुर लिय पेसंक। च्यारि जनु रूप करिंदं।
बार सहस को पटो। एक एकह प्रति थप्पिय॥
पष्षर पूरब नाय। राव बलिभद्र सु अप्पिय॥
घन सयन अवर पच्छें करैं। क्रमिय पंग आदेस लहि॥
आवंत देषि बंधव अनुज। राव निडर पग मंडि रहि॥
छं०॥ २१८०॥

युद्ध वर्णन।

रसावला॥ कमद्धंति धप्पं, दिषे चष्य रूप्पं। भग्यौ निठ्ठुरेयं, करी पंग जेयं॥
छं०॥ २१८१॥

मुषं नैन रत्तं, मनौं झाल तत्तं। पुली बंबरेनं, लग्यौ सीस गेनं॥
छं०॥ २१८२॥

सुभे टोप सीसं, घनं अर्क दीसं। सनाहं सु देही, तिनं मत्ति वेही॥
छं०॥ २१८३॥

मनो नीर मद्धं, सुभै लाज सुद्धं। कसे सस्त्र तोनं, गुरं जानि द्रोनं॥
छं०॥ २१८४॥

छुटे बान हथ्थं, मनौं इंद्र पथ्थं। लगे ईष गज्जं, बजै जानि बज्रं॥
छं०॥ २१८५॥

मुठी दिट्ठ मंडे, लियै जीव छंडे। हने छत्रधारी, लुटै भूमि भारी॥
छं०॥ २१८६॥

छुटै अग्गि हथ्थं, जरै सस्त्र सथ्थं। रुके सेन पंगं, मनो ईस गंगं॥
छं०॥ २१८७॥

दिषे पंग नेनं, मनौं काल सेनं। अनी मुष्ष राजं, गजं जुथ्थ साजं॥
छं०॥ २१८८॥

(१) मो.-कमी। (२) ए. क को.-ज्वाल। (३) मो.-सासि।

अवै मद्द धारं, न नैनं उघारं। छुटै वाय वेयं, मनों वद्दलेयं ॥
छं० ॥ २१८६ ॥

मुषं चारि धाये, मनों आल आये। हने पीलवानं, उड़ै घास जानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

षवै चारि ढक्कै, पछै और रुक्कै। करैं तीर मारं, वहै लोह धारं॥
छं० ॥ २१६१ ॥

नदी श्रोन पूरं, फिरै गेन हूरं। गजै गैन काली, नचै पप्पराली॥
छं० ॥ २१६२ ॥

रुचै ईस जंगं, रसै रोस रंगं। उभै पिचिपालं, वकै विकरालं ॥
छं० ॥ २१६३ ॥

दुअं तोन पुट्टै, पछै पग्ग जुट्टै। घमै तक्कि मद्दं, परे अद्ध अद्धं॥
छं० ॥ २१६४ ॥

झरै अंग अंगं, द्रवं जानि दंगं। गजंसीस पानं, परै वीज जानं॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ कमध धपत अरि पंग लिषि। तमकि तमकि वर तेज ॥
जानिक अगि वन घन [1]चरन। उमड़ि वाय घन सेज॥छं०॥२१६६॥

भाई बलभद्र और निड्डुर राय का परस्पर द्वंद युद्ध होना और दोनों का एक साथ खेत रहना।

भुजंगी ॥ नरे निड्डुरं निंद नामंत रायं। वलीभद्र लष्यौ सितं गज्ज गायं॥
सद्दं नाम बच्यो विधानी करन्नी। छितं छत्र व्रत्ती सु सामी सरन्नी॥
छं० ॥ २१६७ ॥

उभै दिट्ठ दिट्ठी मिले वाहु वाहं। नियं उत्ति नाही अरी राह राहं॥
प्रियं पीत रतं गैत पंगं नरिंदं। मिल्यौ पग्ग हंसंक याहं वनिंदं॥
छं० ॥ २१६८ ॥

[2] उठी झार सस्त्रं विसस्त्रंति सीसं। रुधी धार धारंति मानं तिदीसं॥
कवीचंद केली [2]कनवज्ज रायं। सयं तात मातं वरं सिंघ जायं॥
छं० ॥ २१६९ ॥

---

(१) मो.-जरन। (२) ए. कृ. को.- दुराजे सुरायं।

बियं गब्भ थानं सु ग्यानं गुरज्जे। न छुट्टै न षुट्टै न तुट्टै उरझ्झै॥
घरी ईक दीहं तिहं हंति कालं। मनों रत्त आरत्त मै मत्त मालं॥
छं० ॥ २२०० ॥

परै अस्व अस्वंग ऊखंग बीयं। विर भ्भ्स धारी सु धारी सु नीयं॥
मनों विंद बिंदान दुरजोध बंधं। कटे गंध वाहं जु वग्गो सु गंधं॥
छं० ॥ २२०१ ॥

भभक्कंत सोंधा तिनं अंग तासं। दुअं घट्टि पंचास कोसं प्रकासं॥
गयंनं गुंजारं करें भोंरभीरं। धस्यौ आतपं जानि रबि छांह गीरं॥
छं० ॥ २२०२ ॥

भयौ जंग में जंग आवै न बंटै। उभै सीस ईसं दृग्यारै उझ्झं॥
रवी चंद नारद्द वेताल रंभा। चवट्ठी जमातं निरष्यो अचंभा॥
छं० ॥ २२०३ ॥

कवित्त। तिमिर बद्ध रट्ठौर। आय जब पुट्ठ बिलग्गौ॥
गहु गहु गहु चहुआन। हद्द हिंदवान सु भग्गौ॥
कर क्कस हर सिंघ। सिंघ सम सिंघ न छुव्यौ॥
जनु कि जंत वै सुषद्द। सुभष लद्धौ मुष बव्यौ॥
घन घाय चाय [1]विन्तिय घरिय। करिग आन सामंत सद्द॥
बैकुंठ बट्ट लद्धौ बिहुन। लरन अप्प अप्पह सु रद्द ॥छं०॥ २२०४ ॥

जैचन्द का निठुर राय की लाश पर कमर का पिछौरा खोल कर डालना।

दूहा॥ झुझ्झि षेत निठुर पर्यौ। दिष्षि दुहुं दल सथ्थ॥
कटिपट छोरि जैचंद पहुं। ढंकिय अप्पन हथ्थ॥ २२०५॥

निठुरराय की मृत्यु पर पंग का पश्चात्ताप करना।

कवित्त॥ तुं कुल रष्षन केलि। बंध बारुन बल बोहिथ॥
तें रष्यौ चहुआन। सामि संकट सुभ सोहिथ॥
तें आरस अलि अल। उतंग बारधि बल बंध्यौ॥
जहं जहं हय भर भरंत। तहां फर्यौ सिर संध्यौ॥

(१) मो.-चिंतिय।

मंडयौ हाल ढिल्लिय नयर। मरद मयन झुझ्झयौ पुरिस॥
निठ्ठुर निसंक उप्पर पहुर। बहुरि पंग बोल्यौ सरिस॥छं०॥२२०६॥

दूहा॥ नम्न रठ्ठौर रठ्ठवर। निठ्ठुर झुझ्झिग जाम॥
दिनयर दल प्रथिराज कौं। राह पंग भय ताम॥ छं० ॥२२०७॥

निठ्ठुरराय के मोरचा रोकने पर पृथ्वीराज का आठ कोस पर्य्यन्त निकल जाना।

कवित्त धर फुट्टै पुरतार। तार तुट्टै सिर उप्पर॥
तहां नायो रठ्ठि वर। न्रिपति प्रथिराज स्वामि छर॥
पञ्चह सौस हनंत। पञ्च पुप्परिय पनं पन॥
श्रोनित वुंद परंत। पंग किन्नीय घरघन॥
विरचयौ लोह वर सिंघसुत्र। पंड पंड तन पंडयौ॥
निठ्ठुर निसंक झुझ्झंत रन। अठ्ठ कोस न्टप हिंडयौ॥
छं० ॥ २२०८॥

निठ्ठुर राय की प्रशंसा और मोक्ष।

अठ्ठ कोस अंतरिय। पंग सथ्थरिय परिय भर॥
परि निठ्ठुर पथ्थरिय। कंस गजराज दंत धर॥
हय हय है भारथ्थ। धवल वंवरह भिरत हुअ॥
ब्रह्म लोक सिव लोक। लोक ससि छंडि लोक धुअ॥
रन घरिय राव आरति अलन। तलन अरुन मंडल पिलिय॥
अट्ठाह कोस चहुआन पर। बहुरि पंग पारस झिलिय॥
छं० ॥ २२०९॥

पंग सेना का पुनः पृथ्वीराज को आघेरना और कन्ह राय का अग्रसर होना।

झिलि पारस पहुपंग। रंग रंगह घन घेरिय॥
घन निसान गय घंट। ठनकि ठंठनि बजि भेरिय॥

(१) ए. कृ. को.-सम रट्ठौर नरिंद वर।

तल विताल धर धरनि। नट्टन गहनह उच्चरयौ ॥
तब कन्हा चहुआन। सघन छंछट संभरयौ ॥
पट्टन पवंग ओड़ौ उगहि। सु गुर सार भेरिय भरन ॥
छुट्टति स्वामि हंसारि हंसि। तजि धमारि वंछिय मरन ॥
छं० ॥ २२१० ॥

वीर बखरेत का पंग सेना को रोकना और उसका माराजाना।

छंछट छल रष्पनह। [1]पवँग पट्टन प्रवेस किय ॥
तब लगि हय गय भर। भरंति चहुआन चंपि लिय ॥
बलिय बीर [2]बष रेत। षग्ग षोहनि दल [3]रुक्यौ ॥
तब लगि काँह पटनेस। झारि झंझारि झर झुक्यौ ॥
उचित सीस तस अंमरह। समर देषि संपष्यऱ्यौ ॥
निट्ठुर निसंक उप्पर पहर। बहुरि पंग पहु उंतऱ्यौ॥छं० ॥ २२११ ॥

छग्गन राय का पंग सेना को रोकना।

दूहा ॥ चंपत अच्छरि रिंढ लगि। चषि अप्पन तन देषि ॥
तन तुरंग तिल तिल करन। भयौ कन्ह मन भेष ॥छं०॥२२१२ ॥

कवित्त ॥ सुनहु बत्त पषरैत। लेहु ओढ़ौ दल रक्कौ ॥
चहूँ ओर चंपंत। अंत ओटह किम चुक्कौ ॥
पहु पट्टन पल्लानि। हटकि करि हनौ गयंदह ॥
सबर बीर संग्रहौं। भीर नह परैं नरिंदह ॥
रुक्यौ [4]छगन जैचंद दल। सिर तुट्टै असिवर कढ्यौ ॥
तब लगि सु तास दल रुक्यौं। जब लग्गि कन्ह हंवर चढ़्यौ ॥
छं० ॥ २२१३

छग्गन का पराक्रम और बड़ी बीरता से माराजाना।

हय कट्टत भू भयौं। भये भूपयन पलथ्यौ ॥
पय कट्टत कर चल्यौ। करहि सब सेन समथ्यौ ॥
कर कट्टत सिर भिथ्यौ। सिरह सनमुष होय फुथ्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-पवन। (२) ए.-वसरेत (३) मो.-लुक्यौं।
(४) ए. कृ. को.-सिंघ।

सिर फुट्टत धर धन्यौ । धरह तिल तिल होय तुट्यौ ॥
धर तुट्टि फुट्टि कविचंद कहि । रोम रोम विंध्यौ सरन ॥
सुर नरह नाग अस्तुति करहि । बलि बलि बलि छग्गन मरन ॥
छं० ॥ २२१४ ॥

छग्गन की पार्थ से उपमा वर्णन ।

गाथा * ॥ पंडव छग्गन यग्गं । सहस गुनं पुज्जियं समरं ॥
कौरव दल कमधज्जं । रुक्कै चहुआन कन्ह मुप अग्गं ॥
छं० ॥ २२१५ ॥

छग्गन का मोक्ष। पृथ्वीराज का ढाई कोस निकलजाना ।

दूहा ॥ लरि छग्गन छत्री सुनहु । लियौ सु हूर विमान ॥
तिन भूझत निरमै गयौ । अढी कोस चहुआन ॥ छं० ॥ २२१६ ॥

कन्ह का रणोद्यत होना, कन्ह के सिर की कमल से और पंग दल की भ्रमर से उपमा वर्णन ।

चढत कन्ह सामंत हय । जय जय करहि सु देव ॥
मनहु कमल कलिमल भ्रमर । कुहर पंग दल सेव ॥ छं० ॥२२१७॥

कन्ह के तलवार की प्रशंसा कन्ह की हस्तलाघवता और उसके तलवार के युद्ध का वाक दृश्य वर्णन ।

भुजंगी ॥ भये आमुहे सामुहे सेन यट्टं । कसे सीस टोपं समाहे सु भट्टं ॥
जबै व्रंद सा व्रंद को कोप जान्यौ । तबै जंगली राव हैवर पलान्यौ ॥
छं० ॥ २२१८ ॥

पयानो कियो दिग्गपालं सु कित्ती । सुअं वीर नर सिंह सा सूर पत्ती ॥
नराची कढी कन्ह कै हथ्थ सूरी । महा लोह लंबी लसै लोह पूरी ॥
छं० ॥ २२१९ ॥

किधों काल कन्या किधों काल नग्गी । किधों धूम केतं किधो ज्वाल (१)जग्गी ॥
लषे सत्रु सेना सुअं भंग सोचै । मनो लोह संघार की मींच लोचै ॥
छं० ॥ २२२० ॥

---

* यह गाथा मो. प्रति में नहीं है ।   (१) मो.-लग्गी ।

गिराये गुरं षेत घन घाय घोरैं। महा बाहु मैं मत्त मैं मत्त मोरैं ॥
अच्यौ मार मारं विजै सार बज्जै। कपै कायरं नारि सा सूर गज्जै ॥
छं० ॥ २२२१ ॥

परी जिरह सन्नाह तें बाहु षंडी। मनों टूक करि कंचुकी नाग छंडी॥
परे अंग अंगं धरं सीस न्यारे। मनों गरूर ने षंडि कै व्याल डारै॥
छं० ॥ २२२२॥

घनं घाय लग्गे धुकै धींग धाये। मनों नालि तें कंज नीचें नवाये॥
लगे सेल सामंत घूमंत ठड्ढै। मनों रंग मज्जीठ में बोरि कड्ढे ॥
छं० ॥ २२२३ ॥

उड़ै अग्गि यों दंत दंती सनेनं। गुढ़ी पुच्छ उड्डैं मनों झाल रेनं॥
कहूं दौरि कै अग्गि बाहं उषारें। कहूं लाष मायंक के बाक फारें॥
छं० ॥ २२२४ ॥

कहूं वा पचारे कहूं चोट चंडी। कहूं वीर वीराधि ज्यों मोद मंडी॥
कहूं नागिनी सी नवावै न राजी। मनों पिंड कारंड मैं पट्ठि पाजी ॥
छं० ॥ २२२५ ॥

कहूं मुंड रुंडं अरुंडं सुपेली। कहूं श्रोन के कुंड में सुंड मेली॥
कहुं श्रोन के सार में कंठ भेलै। मनों सिंध की धार सिंदूर ढोलै॥
छं० ॥ २२२६ ॥

झरी तेग तब बीर जमदड्ढ कड्ढी। गढी गाढ मारी किधों मुट्ठि गड्ढी ।
किधों सत्रु के प्रान की गैल नामी। किधों पानि मैं लोह की जेव जामी॥
छं० ॥ २२२७॥

जवै सत्रु के लोल कों घाव घालै। मनो काल की जीभ जाहाल हालै ॥
किधों छंद छत्ती निरत्ति निकस्सै। किधों भेदि देही दुआरं दरस्सै ॥
छं० ॥ २२२८ ॥

कहूं ऐंचि तारीन सों अंत ल्यावै। कहु सत्रु के प्रान को ताकि आवै॥
कहूं चंपि दूसासनं भीम मारे। कहु मुष्टिकं चंपि कीचक प्रहारै ॥
छं० ॥ २२२९ ॥

लगे सेल सामंत लग्गे न जानैं। परै श्रोन कै पंक में सीस सानै ॥
* * * * * * छं० ॥ २२३० ॥

दूहा ॥ ऐ ऐ कन्ह निव्रत्त कर । धर धर तुट्टिय धार ॥
पखर एक पर छय्यरे । सिर सिर त्रुट्टिय सार ॥ छं० ॥ २२३१ ॥

पट्टी छूटते ही कन्ह का अद्वितीय पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ पट्ट पल्ल छुट्टंत । कन्ह धाराहर वज्जौ ॥
झनुक्कि मेघ मंडलिय । वीर विज्जुलि गहि गज्यौ ॥
हय गय नर तुट्टंत । विरह तुट्टिय तारायन ॥
तुट्टिय योहनि पंग । राय स्रोनिय भारायन ॥
छल छलिय नाग नागिनि पुरत । नागिन सिर वुक्यौ रुहिर ॥
आवहि न संग सिंगार मन । मननि सीस मुक्यौ सु धर ॥
छं० ॥ २२३२ ॥

कन्ह का युद्ध करना । राजा का दस कोस निकल जाना ।

भुजंगो ॥ जितं सार धारं जु सारंग तुट्टौ । मनों आवनं मेछ्छसं सीस उट्ठौ॥
फटी फौज आवाज सा पंग राई । ऋगीजानि म्रद्दै धरै वघ धाई॥
छं० ॥ २२३३ ॥
यजी हक्क हंकार भंकार भेरी । भगी रोससेना फिरी लज्ज घेरी॥
धजा वीर वैरष्य सात्र वरैसा । लगै सीस सामंत सा अंमरेसा ॥
छं० ॥ २२३४ ॥
उड़ै गिद्ध आवद्ध तुट्टै उतंगा । किनक्कै सु ताजी चिकै हस्ति चंगा॥
भभक्कै सु धायं सु रायं हवाई । मनो मारुतं मत्त सामंत थाई॥
छं० ॥ २२३५ ॥
फिरी चक्क चहुआन की हक्क वज्जी । मनों प्रौढ भर्ता न जढ़ा सु लज्जी॥
इसी कन्ह चहुआन करि[1] केलि रत्ती। फिरै जोगिनी जोग उच्चार[2] मत्ती॥
छं० ॥ २२३६ ॥
दह कोदसा स्वामि आराम छुट्टौ। पछै पंग रा सेन आव्रन उट्ठौ ॥
* * * । * * छं०॥ २२३७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि सेन पहुपंग । आस ढिल्ली ढिल्ली तन ॥
चिंति कन्ह चहुआन । पट्ट छुट्यौ सुभयौ वन ॥

(१) ए. कृ. को.-गंत्तकैली । (२) ए. कृ. को.-उच्चार भेली ।

निपथ अप्प है जनिय। पंग जंपै जीवन गहु ॥
सु पृथ सूर सामंत। जीह जीयत सु बैन लहु ॥
आवृत्त जात धंधो तिनं। सो धंधो जुरि भंजयौ ॥
बज्जियन जीव रुंध्यौ न्त्रिपति। मुकति सथ्य हैं बज्जयौ ॥
छं० ॥ २२३८ ॥

कन्ह का कोप ।

पद्धरी ॥ कलहंत कन्ह कुप्पौ कराल। फरकंत मुंछ चष चढ़ि कपाल॥
चिंती सु चिंत देवी प्रचंड। कह कहति कंक कर सूल मंड ॥
छं० ॥ २२३९ ॥

गुररंत सिंघ आसन अरोह। वामंग बाह पप्पर सु सोह ॥
इहि भंति प्रसन सजि देवि दंद। तहं पढ़त छंद अनेक चंद॥
छं० ॥ २२४० ॥

रन रंग रहसि ठठ्ठो षयंत। बरदाइ बदत विरदन अनंत ॥
पहु प्रगट भिरद जिन नरनि नाह। हंतन हनंत आजानबाह ॥
छं० ॥ २२४१ ॥

षोलंत नयन जिहि समर रंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग ॥
अज्जनह राय संकर पयान। षूनी न षग्ग षडल षयान ॥
छं० ॥ २२४२ ॥

देषंत सेन न्त्रप पंग रुक्कि। उद्यान ऊग्ग जनु सिंघ हुक्कि ॥
गहि संग नंग न्त्रिम्मलिय हथ्थ। सोहंत बज्र जनु तात पथ्थ ॥
छं० ॥ २२४३ ॥

षलभलिय सेन न्त्रप पंग राइ। उद्यान तपत जनु लग्गि लाइ ॥
धर परत धरनि है हिनत सून। बाहंत गुरज सिर करत चून ॥
छं० ॥ २२४४ ॥

तरफरत तड़ित सम तेज तेग। सम सिलह सहित तुट्टत अछेग ॥
बरि अंग अंग तुटि तुच्छ तुच्छ। जन सुकत नीर सर तरफि मच्छ॥
छं० ॥ २२४५ ॥

घन घाय घुम्मि इक रहत थक्कि। बासंत षेलि मतवार जक्कि ॥

है कटे च्यारि चहुआन जंग। पंचमह साजि है समर रंग॥
छं० ॥ २२४६ ॥

चार घोड़े मारे जाने पर कन्ह का पांचवे पट्टन नामक घोड़े पर सवार होना। पट्टन की वीरता। कन्ह का पंचत्व को प्राप्त होना।

कवित्त ॥ तव सु कन्ह चहुआन। तुरिय पट्टन पल्लान्यौ॥
हिंसि किनकि वर उठ्यौ। मरन अप्पन पहिचान्यौ॥
उहि कर असिवर लह्यौ। गहिव गज कुंभ उपट्टै॥
मारै लतानि वह घाव। षुंदि अरि दंतन कट्टै॥
वह नर निसंक है वर सु धर। पिष्पहु वित्त कवित्तयौ॥
वर मुंड माल हर संठयो। वह रवि [1]स्थलै जुत्तयो॥छं०॥२२४७॥

दूहा ॥ पट्टन पवंग पालानि पति। चव्यो कन्ह चहुआन॥
कहर क्रूह कोप्यो रनह। रह्यौ पंचि रथ भान॥ छं०॥२२४८॥

मोतीदाम ॥ कुप्पो कर कन्ह सु कंक कराल। वजै पग हथ्थ दुअं असराल॥
मनों रस वीर वलो विकराल। कुटै असि गड्डरि क्रूटत पाल॥
छं० ॥ २२४९ ॥
फटै सिर सारनि मार विषंड। मनो जगनाथ सु वंटिय हंड॥
तुटै सिर जाय रहै उत सैन। अजा सुत हंति सिवा वल दैन॥
छं० ॥ २२५० ॥
परें सत्र सूर धरप्पर सिंभ। मनों कटि रिम्म महा गुर गिंभ॥
*　*　*　*　।　*　छं० ॥ २२५१ ॥

कन्ह के रुंड का तीस हजार सैनिकों को संहारना।

दूहा ॥ निकस्यो न्रप प्रथिराज पहु। रह्यौ कन्ह दल रोकि॥
हय हय हय म्रतलोक महि। जय जय चवि सुरलोक॥छं०॥२२५२॥
लरत सीस तुट्यो सु हर। धर उठ्यौ करि मार॥
घरी तीन लों सीस विन। कट्टे तीस हजार॥ छं० ॥ २२५३ ॥

---

(१) मो.-वह रवि रथ छै जुत्तयौ।

कन्ह का तलवार से युद्ध करना ।

त्रोटक ॥ बिन सीस इसी तरवारि बहै। निघटै जन सावन घास महै ॥
धर सीस निरास हुअंत इसे। सुभ राजनु राह रुकंत जिसे॥
छं० ॥ २२५४ ॥

धर नाचत उठ्ठि कमंध धरैं। भगलं जनुं आपस ष्याल करैं॥
बिव षंड बिहंड सु तुंड तुटै। दुअ फार करारनि सीस फटै॥
छं० ॥ २२५५ ॥

हरदास कमद्धज आय अर्यौ। तिन को तन घावन सों जकर्यौ ॥
बल वाम इसो न रहैं एकर्यौ। मनों नाहर षेटक में निकर्यौ ॥
छं० ॥ २२५६ ॥

कि मनो गजराज छुर्यौ जकर्यौ। कविचंद कहै परलो जु कर्यौ॥
असि दोरि दई सु जनेउ उतारि। परयौ हरदास प्रिथी पुर पारि॥
छं० ॥ २२५७ ॥

बिफुर्यौ रन में कर कान्ह सजें। बिन मावत छुट्टि कि मत्त गजें॥
छहरें हलकै किलकै किलकी। भहरें भरि पत्र उमा भिलकी ॥
छं० ॥ २२५८ ॥

तिन मैं रुधि धारि चलैं झिलकी। तिन उप्परि पंति फिरै अलिकी॥
सु उझावत हथ्थ चुरी षलकी। सु पियें रुधि धार चलै ललकी॥
छं० ॥ २२५९ ॥

गहरें गवरीपति माल गठैं। बहरें वर बावन बीर बढैं ॥
षहरें धर घायल घुम्मि इसे। जहरें जनु षाइ ढरंत जिसे ॥
छं० ॥ २२६० ॥

कहरें नर कन्ह सु केलि करी। पहरें तरवार सु तुट्टि परी ॥
वह नागिनि सो सुध व्है निबरी। दल पंग भयान लगी अकरी॥
छं० ॥ २२६१ ॥

तलवार टूटने पर कटार से युद्ध करना ।

दूहा ॥ जब तुट्टी तरवार कर। तब कड्ढी जम दड्ढ ॥
इक कटारी दुहुन उर। पंच सहस भर बड्ढ ॥ छं० ॥ २२६२ ॥

कटार के विषम युद्ध का वर्णन जिससे पंग सेना के पांच सहस्त्र सिपाही मारे गए।

त्रिभंगी ॥ कर कढ्ढि कटारी जम दढ्ढारी काल करारी जिय भारी ॥
चंपै चर नारी वारों पारी निकसि निनारी उर भारी ॥
रस सोभत सारी डेढ करारी लंब लंवारी लंवारी ॥
उपजै सुर श्रारी वजि घरियारी श्रति श्रमियारी श्राहारी ॥
छं० ॥ २२६३ ॥

लग्गे इक श्वारी होइ 'दुश्रारी जानि जियारी जिम्भारी ॥
लपकै हियलारी वारह वारी भूपो भारी भाहारी ॥
जनु नागिनि कारी कोप करारी श्रति श्राकारी सा कारी ॥
भभकै रुधि भारी भभक भरारी भर भर वारी तन ढारी ॥
छं० ॥ २२६४ ॥

गिरि तें झरकारी झिरना झारी झिरै झरारी झर कारी ॥
ववकै ववकारी वीर वरारी नारद तारी दै चारी ॥
मचि कूह करारी श्रति उम्भारी श्रगिनित पारी धर 'ढारी ॥
*　　*　　*　　*　　॥　　छं० ॥ २२६५ ॥

दूहा ॥ काल कूट कीनो विषम। पंच सहस भर वट्ठ ॥
कहर कन्ह किन्नो सु कर। तब तुट्टिय जमदट्ठ ॥ छं० ॥ २२६६ ॥

कटार के टूट जाने पर मल्ल युद्ध करना।

पद्धरी ॥ तुट्टी सु हथ्थ जमदठ्ठ जोर। वढ्यौ जु श्रप्प वल श्रंग श्रौर ॥
गहि पाइ भुम्मि पटकै जु फेरि। धोवी कि वस्त्र सिल पिट्ट सेर॥
छं० ॥ २२६७ ॥

दुश्र हथ्थ दोन नर ग्रहै मुंड। होइ मध्य चूर जनु तुंब कुंड ॥
गहि हथ्थ हथ्थ मुर रे सु तोरि। गज सुंड साष तोरे मरोरि ॥
छं० ॥ २२६८ ॥

भरि रोस हथ्थ पटकंत मुंड। भिरडंत जानि श्रौफल सु षंड ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दुवारी, दुपारी।　　　　(२) ए. कृ. को.-भारी।

गहि पाइ दोइ डारंत चीर। कड्डी सु जानि फारंत भीर ॥
छं० ॥ २२६९ ॥

गहि सीस मौर भंजै सु ग्रीव। फल मोरि मालि तोरै सु तीव ॥
छाकंत मत्त दैलत्त घाइ। डारंत तेव करि हाइ हाइ॥छं०॥२२७०॥
इहि विधि सु कन्ह रिनकेलि किन्न। परि अंग अंग होइ छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ २२७१ ॥

चाहुआन का दस कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ चाहुआन सुज्जानं। भूमि सर सेज्या सूतौ ॥
देषि बिअच्छरि बर। समूह बरनह सानूतो ॥
जनु परि त्रिय परहंस। हंस आलिंगन मुकयौ ॥
भर भारी कन्हह। हनंत अवसान न चुक्कयौ ॥
धर गिरत धरनि फुनि फुनि उठत। भारथ सम [1]जिन बर कियौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कोस दसह भूपति गयौ ॥ छं० ॥२२७२॥

कन्ह राय की वीरता का प्रभुत्व।कन्ह का अक्षय मोक्ष पाना।

जिम जिम तन जरजर्‍यौ। विहसि वर धायौ तिम तिम ॥
जिम जिम अंत रुलंत। लष्य दल तिन गनि तिम तिम ॥
जिम जिम करिवर परत। उठत जिम सीस सहित बर ॥
जिम जिम रुधिर झरंत। सघन घन बरषत सद्दर ॥
जिम जिम सु षग्ग बजज्यौ उरह। तिम तिम सुर नर मुनि [2]मन्यौ॥
जिम जिम सु चाव धरनी पर्‍यौ। तिम तिम संकर सिर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२७३ ॥

गह गह गह उच्चार। देव देवासुर भज्जिय ॥
रह रह रह उच्चार। नाग नागिनि मन लज्जिय ॥
बह बह बह उच्चार। सु रह असुरन धुनि सज्जिय ॥
चह चह चहतासंत। तुट्टि पायन पर तज्जिय ॥
मुह मुहह मुच्छ कर कन्ह तुअ। चमर छत्र पह, पंग खिय॥

---

(१) ए. कृ. को.-जिहि। (२) ए. कृ. को.-गन्यौ।

लिर बंध कांध असिवर ढरिग । पहर एक पट्ट न दिय ॥
छं० ॥ २२७४ ॥

पहर एक पर प्रहर । टोप असि वर वर वज्जिय ॥
बपर पषर जिन सार । पार बट्टन तुटि तज्जिय ॥
रोम रोम बर बिद्ध । सिद्ध किन्नर लिन्निय वर ॥
अस्त्त वस्त्त बज्जी । कपाट दद्धीच हीर हर ॥
रुधि मंस हंस हरिवंस नर । दिव दिवंग मिटि अम्मिलित ॥
किन्नर कबंध घटि तंति तिन । सुबर पंग दिप्पिय [1]पिलत ॥
छं० ॥ २२७५ ॥

कन्ह के अतुल पराक्रम की सुकीर्ति ।

भुजंगी ॥ परे धाय चहुआन कन्हा करूरं । भयं पारथं वीर भारथ्थ भूरं ॥
बढे सार बज्जे न भज्जे न बग्गं । नहीं नीर तीरं हरं भार लग्गं ॥
छं० ॥ २२७६ ॥

हुते लज्ज भारे सु भारथ्थ नीरं । बड़े सूर अन्नं न दीसै सरीरं ॥
तिनं स्रमं भारं स्रमै नाहि हथ्थं । झरै सब्ब सस्त्रं परं वीर बथ्थं ॥
छं० ॥ २२७७ ॥

झमक्कंत झारे प्रहारंत सारं । मनों कोपियं इंद्र वुट्ठे अंगारं ॥
जिती भोमि [2]चष्षे पिजै पंग इंदं । लरे लोह दीनं सरेहं गुविंदं ॥
छं० ॥ २२७८ ॥

लगै लोह लोहं पलट्टै ति तत्ती । रमं सामि अप्पेन भौ सार छत्ती ॥
तुटे अस्त्त वस्त्तं भयं छीन भंती । असव्वार अस्वं न ढुंढै निरत्ती ॥
छं० ॥ २२७९ ॥

परे संघरे सूर सारंग पाजं । नरी रंग बज्जै कलं प्रान बाजं ॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्ती । फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
छं० ॥ २२८० ॥

टरै विप्प ह्रूरं दसें दीन बारं । भयं अश्वमेधं सहं ध्रम्मसारं ॥
छं० ॥ २२८१ ॥

---

(१) ए. छ. को.-लिपत । (२) मो. बषे ।

कन्ह द्वारा नष्ट पंग सेना के सिपाहियों की संख्या।

दूहा ॥ * एक लष्य सित्तर सहस । कट्टि किये अरि नन्ह ॥
दोय दीन भष्ष्यै सु इम । धनि धनि न्रप्प सु कन्ह ॥
छं० ॥२२८२॥

धरनि कन्ह परतह प्रगट । उठ्यौ पंग न्रप हक्कि ॥
मनों अकाल संकरह हँसि । गहिय तुट्टि निधि रंक ॥छं०॥२२८३॥

अल्हन कुमार का पंग सेना के साम्हने होना ।

तन्न झुकि अल्हन षग्ग गहि । भयौ अप्प बल कोट ॥
सिर अप्यौ कर स्वामि कों । हनो गयंदन जोट ॥ छं० ॥ २२८४ ॥

अल्हन कुमार का अपना सिर को काट कर पृथ्वीराज के हाथ पर रख कर धड़ का युद्ध करना ।

कवित्त ॥ करिय पैज अल्हन । कुमार रुद्धौ पग पुल्लै ॥
झरतु धार तन चार । भार असिवर नन डुल्लै ॥
रोहन रन मुंडयौ । बीर बर कारन उट्ठौ ॥
ज्यों अषाढ घन घोर । सार धारह निर वुट्ठौ ॥
पंगुरा सेन उप्पर उभरि । उभै भयन गज मुष्ष दिय ॥
उच्चरे देवि सिव जोगिनिय। इह अचिज्ज सें राज किय॥छं०॥२२८५॥

अल्हन कुमार का अतुल पराक्रममय युद्ध वर्णन । वीरया राय का मारा जाना उसके भाई का अल्हन के धड़ को शान्त करना ।

पद्धरी ॥ मह माइ चित चिंतीस आल । जंप्यौ सु मंच देवी कराल ॥
आश्रम्म देवि किय निज्ज धाम । कट्टयो सीस निज हथ्थ ताम ॥
छं० ॥ २२८६ ॥

मुकयो सीस निज अग्ग राज । हुंकार देवि किय निज्ज गाज ॥
धायो सु धरह बिन सीस धार । संग्रह्यौ बांह बामै कटार ॥
छं० ॥ २२८७ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

उच्छयौ षग्ग वर दच्छ पानि । संमुहौ धीर धायौ परानि ॥
कौतिग्ग सब्ब देषंत सूर । दिष्यौ न दिट्ठ कारन करूर ॥
छं० ॥ २२८८॥

मार्यौ पयट्ठ सा सेन पंग । वज्जे करूर वज्जंत जंग ॥
कौतिग्ग सूर देषंत देव । नारद्द रुद्र रस हंस एव ॥छं०॥२२८९॥

षेचर रुहंस चर भूत्र चार । थक्के सु देषि प्राक्रम करार ॥
महमाइ सुधर उप्पर वयट्ठ । अरि भार सार मंडिय पयट्ठ ॥
छं० ॥ २२९० ॥

धर परै धार तुट्टै सु यार । हल्लहले पंग सेना सु भार॥
दष्षिनिय राय वीरया नाथ । गज रुल्यौ जुद्ध सब्बह समाथ ॥
छं० ॥ २२९१ ॥

सूरमा धारह ढहन्न वीर । चंपयौ गज्ज सम्हौ सुधीर ॥
मुष लग्गि आय सम अल्ह जाम । असि झाक हयौ मुष इब्भ ताम॥
छं० ॥२२९२ ॥

सम अंषि जार तुट्टौ सुदंत । कटि मूल पऱ्यौ पादप सुमंत ॥
उठ्ठयौ हक्कि वीरया नाथ । आयेव अल्ह सम लग्गि बाथ ॥
छं० ॥ २२९३ ॥

चंपयौ उअर अल्हन तास । नष्षयौ धरनि गय छड़ि उसास ॥
वीरया नाथ लघु बंध धाइ । गज रुल्यौ पंग लग्गौ सु दाय ॥
छं० ॥ २२९४ ॥

विंटयौ अब्ब सेना सु धीर । आवद्ध सुक्कि सब सेन वीर ॥
चंपयौ आय गुरु गज्ज जाम । संग्रह्यौ दंत दंती सु ताम ॥
छं० ॥ २२९५ ॥

गय हयौ सीस कट्टार सार । महमाइ हँसिय दीनौ हुंकार॥
भग्गौ सु गज्ज कीनौ चिकार । ढाहयो सबै मिलि सूर सार ॥
छं० ॥ २२९६ ॥

अल्हन कुमार के रुंड का शान्त होना और उसका मोक्ष पाना ।

कवित्त ॥ सिर तुट्टै रुंध्यौ गयंद । कढ्यौ कट्टारौ ॥
तहां सुमरिय महमाइ । देवि दीनौ हुंकारौ ॥

अमिय सद्द आयास। लयौ अच्छरिय उछंगह॥
तहां सु भइ परतष्यि। अरित अरि कहत कहंगह॥
अल्हन कुमार विश्रम सुध्यौ। रन कि विमानह मनु मन्यौ॥
तिहि दरसि तिलोचन गंग धर। तिम संकर सिर धर धुन्यौ॥
छं०॥ २२९७॥

दूहा॥ सघन घाय विद्धयौ सु तन। धरनि ढस्यौ परिहार॥
परे बहुत्तरि सुभर रन। सद्दे अल्हन सार॥ छं०॥ २२९८॥

अल्हन कुमार के मारे जाने पर अचलेस चौहान का हथियार धरना।

धुनित ईस सिर अल्हनह। धनि धनि कहि प्रथिराज॥
सुनि कुप्यौ अचलेस भर। मुहि बल देषिव राज॥ छं०॥ २२९९॥
इह चरित्त नद्दिय सु चिर। करिय राज परिहार॥
अद्भुत क्रम देषहु न्रपति। करों षेत सर सार॥ छं०॥२३००॥
पऱ्यौ अल्ह सामंत धर। गही पंग दल अब्ब॥
सुभर रज्जि कमधज्ज दल। सुमन राज गुर ग्रब्ब॥ छं०॥२३०१॥

पृथ्वीराज का अचलेस को आज्ञा देना।

कवित्त॥ तब जंपै प्रथिराज। सुनौ अचलेस संभरिय॥
इह सु सूर आचरन। नही सामंत संभरिय॥
मेंन सूर धरि कंध। राह रुंधेत गयौ धन॥
इह अचंभ आचरन। देव दानव दैतानन॥
सुनि दानव परहरि पर। अपर जुद्ध संधि पंगुर दलह॥
संकही सामि संकट परै। सकल कित्ति कित्ती चलह॥ २३०२॥

अचलेस का अग्रसर होना।

सुनत बेंन प्रथिराज। अचल नायौ मरंन सिर॥
है नच्यौ सु तुरंग। बीर कंपे तुरंगधर॥
जुद्ध सलित्तह परै। लोह लहरी धर तुट्टै॥
जल विथ्थरि कमधज्ज। घाय लग्गे आहुट्टै॥

अचलेस अग्गि जग्गंत भर। प्रलै अग्नि चैनैन जिम ॥
चहुआन अग्ग उभ्भौ भयौ। राम अग्ग हनमंत जिम॥छं॥२३०३॥

अचलेस का बड़ी वीरता से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै हक्कियं सेन पंगं नरिंदं। दियौ आयसं जानि कल गज्जि इंदं॥
उठी फौज पंगं करै कूह सब्बं। बगे बग्ग कढ्ढी गजे बीर गब्बं ॥
छं० ॥ २३०४ ॥

करी अच्चलेसं जु स्वामित्त पज्जं। करौं पंड षंडं पलं तुभ्झ कज्जं॥
नयौ सीस चहुआन अचलेस तामं। मिल्यौ आय सैना रती कंक कामं॥
छं० ॥ २३०५ ॥

जपे मंच द्रुग्गा करे ध्यान अंबी। सुने आय आसीस सा देवि लुंबी॥
वलं अच्चलं रूप अदभुत्त पिष्यो। भयौ मोह सब्बै घटी रुद्र दिष्यौ॥
छं० ॥ २३०६ ॥

विरम्भे षुरम्भे षु वज्जे निसानं। मिले रीठि मत्ती सिरं चाहुआनं॥
दिसं भेष लग्गी रयं रत्त भुम्मी। पयं पात जानं सयं गत्त उम्मी॥
छं० ॥ २३०७ ॥

उछंगं उछारंत अच्छी निरष्पै। दलं दंग पंगं कुरंगं परष्पै ॥
कुला केलि सामंत तत्तं पतंगं। परे जुद्ध मत्ते सरित्ता सु गंगं ॥
छं० ॥ २३०८ ॥

रहं भान थानं रह्यौ थक्कि रथ्थं। टगं लग्गियं भूच षेचं सु रथ्थं॥
गही पंग सेना भरं षग्ग पानं। मनो हक्कि गोपाल गोधन्न थानं॥
छं० ॥ २३०९ ॥

भरक्के धरक्के भरक्के ढरक्के। परे गज्ज बाजं सु कंधं करक्के ॥
करे नाम सब्बं परे षग्ग धीरं। करी जूह मभ्झे गजैकं कठीरं॥
छं० ॥ २३१० ॥

पयंसं सरक्कै धरक्कै धरन्नी। परे बिब्बि षंडं सबं मुष्ष रन्नी ॥
किलक्कारियं देवि सथ्थें सु नंचै। परै षग्ग पानं करै पैज संचै॥
छं० ॥ २३११ ॥

कवित्त ॥ करि विपैज अचलेस । सु छल चहुआन षग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहस्यौ । पूरि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति छैवर तिरहि । कच्छ गज कुंभ विराजहि ॥
उअर हंस उड़ि चलहि । हंस मुष कमलति राजहि ॥
चवसट्ठि सद्द जै जै करहि । छत्रपत्ति परि संचरिय ॥
बोहित्थ वीर बाहर तनै । दिल्लीपति चढ़ि उत्तरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव बिद्धयौ सघन । ढ़यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल । परें पंच सें थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना ।

अचल अचेत सु चेत हुअ । परिग पंग वहुराय ॥
पट्टन छूर अरु पट्ट छुर । उठे बिंझ विरुझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पऱ्यौ अचल पिष्यौ अरिय । करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प वग्ग कढ्ढिय विरचि । [3]हनू हनौ चवि जंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन ।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु वग्ग पंगयं । तमक्कि तोन संगयं ॥
वजे निसान नद्दरं । ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं । नदे भरन्न फेरियं ॥
षरक्कि तोन [4]पष्षरं । गहक्कि भार सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुद्धरं । किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं । लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
कुलं अरेह सब्बसं । अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग बट्ट भंगयं । जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु अंस सामयं । करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्निम्मलं । चले सु स्वामि अच्चलं ॥ छं०॥२३२०॥
मरन्न तिन्न मातयं । गरुअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं । नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

(१) मो. कहे । (२) ए.-राहे
(३) ए. कृ. को. हनो । (४) मो.-षप्परं ।

दियौ सु पंग आयसं। गहन्न सब्ब रायसं॥
गहौ वहौ सबैं मिली। सकै न जाइ ज्यौं दिली॥ छं० ॥ २३२२॥
सुने सु वच्च पंगयं। कढे सु पग्ग गज्जयं॥
* * * * * * छं०॥२३२३॥

पृथ्वीराज का विझराज सौलंकी को आज्ञा देना।

कवित्त॥ दल आवत पहु पंग। दिष्षि चहुआन सब्ब सजि॥
वींझराज चालुक्क। दियौ आयेस अप्प गजि॥
अहो धीर चालुक्क। सहि अनभंग षग्ग धरि॥
सनमुष सजि षल जूह। तास भर सु भर अंत करि॥
उच्चर्‌यौ ब्रह्म चालुक्क तहं। अहो राज प्रथिराज सुनि॥
पथ्थ धरंनि घन ब्रूर भर। करों पंग दल (१)दंति रिन॥
छं० ॥ २३२४॥

विझराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना। विझराज का सब को मार कर मारा जाना।

भुजंगी॥ तब नम्मि सीसं न्रपं विंझ राजं। चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंच अंबीय सा इष्ट सारं। मनं वच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं॥
छं० ॥ २३२५॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी। चढी जानि सिंघं सु आवद्ध लुंबी॥
सथै सब्ब देवी षगं षप्प रत्ती। मतं झूझ मत्ती झलक्कंत कत्ती॥
छं० ॥ २३२६॥
सबै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कै। नचै काल ईसं सु डक्कं तु हक्कै॥
अगें भूत प्रेतं फिरै भूह कारं। करं जोगिनी पच जंपै जै कारं॥
छं० ॥ २३२७॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धिसाजं। सिरं सूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्यै। नचै बीर कौतिग्ग नारद दिष्यै॥
छं० ॥ २३२८॥

(१) ए. कृ. को.-पंति।

लष्यौ पंग सेना सु बिंझं करारं । भयं भीत भीरं सजे सूर सारं॥
मिल्यौ घाव चालुक्क सा सेन मझ्झं।बनं अंबुजं इभ्भ ज्यौं जानि लुझ्झं
छं० ॥ २३२९ ॥

परे पुंडीरकं घनं सेन सारं । किनक्कै सुता जीभ जै दंत भारं ॥
धरं मुंड पूरं चलै श्रोन पूरं । पलं कीच मच्चौ सवं कूक रूरं॥
छं० ॥ २३३० ॥

समं सीस कट्टै तिनं सीस तुट्टै । मिलै रिन्न वट्ट तिनं आव घट्टै॥
तवै थप्परी पीठ अप्पै अंबाई। अरी हंकि ढाहै धरं घाइ घाई॥
छं० ॥ २३३१ ॥

सिरं इष्ट आवद्ध नष्षै अपारं । भरक्कंत सेना भगी पंग भारं ॥
दिष्यौ पंग दिष्टी मधी सेना पंती। क्रम्यौ सिंघ जेमं मदं देषि दींत॥
छं० ॥ २३३२ ॥

दिष्यौ सेन दिष्टी करी हंतिकारं । क्रमे पट्ट राजा करे षग्ग धारं॥
क्रम्यौ तोमरं देषि सो क्रिस्नरायं। क्रम्यौ रुद्रसिंघं सु कंठेरि तायं॥
छं० ॥ २३३३ ॥

जयंसिंघ देवं सु जादव्व बंसी। न्रिपं भीम देवं अयौ बंभ अंसी॥
क्रम्यौ सांघुलाराय सो देविदासं । न्रिपं वीरभद्रं सु वग्घेल तासं॥
छं० ॥ २३३४ ॥

बजे आय अड्डे रसं राज बीरं । मिल्यौ पंग सम्मीप सो बिंझ धीरं॥
हयौ झाक सिंगीक बाह्ह कमंधं । पर्‍यौ अश्व फुट्टी परे सिंगि उद्धं॥
छं० ॥ २३३५ ॥

न्रिपं चंद्रसेनं स मूरिज्ज बंसी। नरंसिंघ रायं सुनै षद्ध अंसी॥
दुश्रौ आय पंच्यौ भरं पंगतामं।मिले आय अड्डौ घटं न्रिप्प ठामं॥
छं० ॥ २३३६ ॥

हयौ किसन राजं हय बिंझ राजं। पस्सयौ भोमि उच्च्यौ सु चालुक्क गाजं॥
तिनें जुद्धमंतौ महंतं करारं । महा झाक बज्जी समं सार सारं॥
छं० ॥ २३३७ ॥

तिनं तार आवद्ध बज्जै चिघाई । हयौ किस्नराजं जिनै अश्व ढाई॥

असौ रुद्रसिंघं हयौ विंझ रायं। सिरं तास तुट्यो पर्यौ भूमि भायं॥
छं० ॥ २३३८ ॥

विना सीस सों संग्रह्यौ रुद्रसिंघं। फिरक्यौ सु फेर्‍यौ पछार्‍यौ परिंघं॥
गयो आसु उड्डी तनं तम्मि नंष्यौ। विना सीस धार्यो चिया जुद्ध भुष्यौ॥
छं० ॥ २३३९ ॥

जयं जंपियं देवि सो पुहप नष्यै। टगं टग्ग लग्गी सवं सेन अष्यै॥
घटी दून सारद्ध विन सीस झुझ्यौ। घनं घाय अघ्घाय अंतं अलुझ्यौ॥
छं० ॥ २३४० ॥

पर्‍यौ विंझराजं रच्यौ रूप जानं। वर्‍यौ सांइ चालुक्क सो वंभ थानं॥
इनं देषि पंगं दलं हाय मानी। अहो वीर चालुक्क कित्ती वषानी॥
छं० ॥ २३४१ ॥

सवै छच छची न को इद्द रष्यो। भयो चंद कित्ती तहां सूर सष्यौ॥
*　*　*　*　॥　*　छं० ॥ २३४२ ॥

विंझराज द्वारा पंग सेना के सहस्र सिपाहियों का मारा जाना।

दूहा ॥ सहस एक परि पंग दल। धन धन जंपै धीर ॥
जै जै सुर वद्दै सयन। धनि धनि विंझा वीर ॥ छं०॥२३४३ ॥

विंझराज की वीरता और सुकीर्ति।

कवित्त ॥ परत अचल चहुआन। पच्छ गुज्जर रषि लाजं ॥
भित्त भाग सामंत। सार न्रप जल तन भाजं ॥
रूप रूप रष्यनह। दैन टट्टी वच्छारं ॥
अरि रुक्की वसि सार। कीव तन भंग प्रहारं ॥
तन तुट्टि सिरह पलचर ग्रस्यो। वलि विंटीह विराधि जिम ॥
इम विटि पंति अच्छरि परी। ससि पारस रति सरद जिम ॥
छं० ॥ २३४४ ॥

कलिन कल्यौ असियन मिल्यौ। भरहरि नह्हि भग्गौ ॥
अजसुन लयौ जस वनि भयौ। अमग्ग न लग्गौ ॥
पहुन लयौ [1]जियन गयौ। अपजस नह सुनयौ ॥

(१) को. कृ.-जियतन।

और न ज्यौंदवरि न गयो । गाहंत न गहयौ ॥
गयौ न चलि मंदिर दिसह । मरन जानि झ,झयौ अनिय ॥
बिंझ दिय दाग तिलकह मिसह । वह वह वह भग्गल धनिय ॥
छं० ॥ २३४५ ॥

दूहा ॥ परत देषि चालुक्क धर । करिग पंग दल कूह ॥
जिम सु देव इंद्रह परसि । रहे बीटि अनजूह ॥छं०॥२३४६ ॥

विंझराज के मरने पर पंग सेना में से सारंगदेव जाट का अग्रसर होना ।

कवित्त ॥ परत वींझ चालुक्क । गहकि रा पंग सेन दल ॥
जट्टराव सारंगदेव । आयौ तपित बल ॥
सहस तीन असवार । धार धारा रस मथ्थं ॥
न्निमल नेह स्वामित्त । सिंघ रन बद्दे सु हथ्थं ॥
नाइयौ सीस नंमि पंग कह । दईय सीष पहुउंच कर ॥
उप्पारि वग्ग निज सेन सम । भला प्रसंसिय अप्प भर ॥
छं० ॥ २३४७ ॥

फिरिय चंपि चहुआन । पंग आयस धाय सु गसि ॥
गहौ गहौ उच्चारि । पंग संकर संकर रस ॥
देव सोन पद्धरी । लुथ्यि लुथ्यिय आहुट्टिय ॥
मरन जानि पावार । सलष संकर रस जुट्टिय ॥
बाला सु वृद्ध जोवन पनह । देवल पन जिहि न्निम्रयौ ॥
भयौ ओट मंडि ढिल्लिय न्निपति । सुबर बीर अड्डौ भयौ ॥
छं० २३४८ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से सलष प्रमार का शास्त्र उठाना ।

दूहा ॥ भयौ सलष पंम्मार जब । वज्जि दुहूं दल लाग ॥
हसहि सूर सामंत मुष । मुरि कायर अभ्भाग ॥ छं०॥२३४९ ॥

पंग सेना में से जैसिंह का सलख से भिड़ना और मारा जाना ।

चोटक ॥ गहि बग्ग फिर्‍यौ पति धार भरं । हय राज धरक्कत पाय धरं ॥

समरे निज इष्ट सु वीर बलं । धरि संगि उरंगिनि काल पलं ॥
छं० ॥ २३५० ॥

हहकारिय सीस असीस सजं । रस आवरि अप्प सु वीर गजं ॥
जपि मंत्रह मंझि पलझ्झलियं । मिलि देव अयास किलक्कि लियं ॥
छं० ॥ २३५१ ॥

दिषि रूप सलष्य सुपंच सयं । हहकारि सुराग्गिय जट्ट रयं ॥
बजि आवध झाक सु हाक सुरं । कटि सीस धरद्धर ढारि धरं ॥
छं० ॥ २३५२ ॥

नचि वीर सुदेवि किलक्क लियं । हकि सेनह जट्ट हला वलियं ॥
जयसिंघ सु आय सनंमुषयं । सम आय सलष्य मिल्यौ रुषयं ॥
छं० ॥ २३५३ ॥

बजि आवध झाक करूर सुरं । हय तुट्टि उभै भर छोनि ढरं ॥
दुअ हक्कि उठे भर वीर वरं । मिलि आवध सावध बंछि भरं ॥
छं० ॥ २३५४ ॥

असि झारि सलष्य सु षग्ग झरं । जयसिंघ विषंडस हूअ परं ॥
जय सिंघ परयौ सब सेन लषं । गहि आवध ताहि सलष्य धषं ॥
छं० ॥ २३५५ ॥

मिलि रीठ करार सुधार घरं । सुष लग्गिय भग्गिय भीर भरं ॥
हहकारिय धीर दुहथ्थ कियं । पति धार धस्यौ लपि जंपिलियं ॥
छं० ॥ २३५६ ॥

हल हल्लिय सेन जटं भजियं । सय तीन परे विन हंस लियं ॥
भर भग्गिय देषि सु पंग न्त्रपं । हहकारिय हक्किय सेन अपं ॥
छं० ॥ २३५७ ॥

सब सेन हलक्किय पंग भरं । ग्रह कोपिय जांनि करूर नरं ॥
*　*　*　।　*　*　छं० ॥ २३५८ ॥

सारंगराय जाट और सलख का युद्ध और सारंगराय का मारा जाना ।

कवित्त ॥ तब सु जट्ट सारंग । सुमन समसेर समाहिय ॥
बिरचि पांन करि रीस । सीस सथ्थां पर बाहिय ॥

टोप कट्टि बिय टूक । फुट्टि तिम बिचि सिर फट्‌यो ॥
सुमन षांन कम्मांन । बांन लग्गत सिर थट्‌यो ॥
रिंझयौ सूर सुर असुर द्वै । बर बर कहि करिवर धस्यो ॥
दुअ हथ्थ मथ्थ दई जद्दवै । धर बिन सिर धरनी ढस्यो ॥
छं० ॥ २३५९ ॥

सलख का सिर कटना ।

गाथा ॥ असि बर सिर बिरहीयं । बांनं संधांन सट्टीयं तीरं ॥
प्राहार मल्लि ढरीयं । सूरा सलहंत वाह वाह धानुष्यं ॥
छं० ॥ २३६० ॥

कवित्त ॥ सिर ढरंत धर धुक्कि । झुक्कि कड्डी कट्टारिय ॥
बिना कंध आकंध । सुद्ध होइ किद्ध प्रहारिय ।
लग्गि सु धर फुटि पार । सुरिम सलंष करि बाह्यौ ॥
षग्ग ग्राह्यौ षिझि षेत । घाव अद्धें अध बाह्यौ ॥
वाहंत घाव धर धर मिल्यौ । पराक्रम्म पम्मार किय ॥
धनि उभय सेन अस्तुति करय । प्रथीराज सों[1] जाबु दिय ॥
छं० ॥ २३६१ ॥

राह रूप कमधज्ज । गज्जि लग्गयौ आकासह ॥
धार तिथ्थ उर जांनि । न्हान पम्मार फिऱ्यौ तह ॥
रुधिर मद्ध जब करिय । जीव तनु तिलनि षंड अस ॥
जुरित सीस असि गहिय । पांनि सोभियहि केस कुम ॥
करि न्त्रपति सार न्त्रप पंग दल । अब्ब,अ पति जप सब्ब किय ॥
उग्रह्यौ ग्रहनु प्रथिराज रवि । सलष अलष भुज दांन दिय ॥
छं० ॥ २३६२ ॥

दूहा ॥ दियौ दान पम्मार बलि । अरि सारंग [2]समषेल ॥
मरन जानि मन मझ्झ रत । लरि लष्यन बघ्घेल ॥छं०॥२३६३ ॥

पंग सेना में से प्रतापसिंह का पसर करना ।

कवित्त ॥ बंधव पति कनवज्ज । सिंघ परताप समथ्थह ॥
सुत मातुल जैचंद । ब्रह्म चालुक्क सु दत्तह ॥

(१) ए.-सों जावादिय ।　　(२) ए.-सन ।

तन उतंग गरु अत्त। गात दीरग्घ हथ्थ भर ॥
सहस घट्ट सेना सुभट्ट। कुल वट्ट जुद्ध जुर ॥
कट्टिय सु वग्ग न्रिप नाइ सिर। जनु बद्दल बद्दी अनिय ॥
जंप्यौ सु अप्प सेना सरस। गहौ राज सुम्भर हनिय॥छं०॥२३६४ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से लष्षन बघेल का लोहा लेना। प्रतापसिंह का मारा जाना ।

छन्द नाराच ॥ दिषेव सांमि रिम्म सों बघेल सीस नम्मयं ।
करे सु वाज सुद्ध आज नम्म पाय सम्मयं ॥
वचे सु लोल फुल्लि अंग अप्प ईस गज्जियं ।
करों सु षंड अप्प रिम्म सांइ षेत रज्जियं ॥ छं० ॥ २३६५ ॥
करे क्रपांन अस्समांन धाय संप रद्दलं ।
चिते सु कांम स्वांमि तांम गज्ज औ करुंकलं ॥
हनूअ संच जंपि जंच धारि धीर षग्गयं ।
सुचिंति इष्ट आइ तिष्ट हक्क हक्क जग्गयं ॥छं० ॥ २३६६ ॥
मिल्यौ सु धाइ षेत ताइ धारयं करारयं ।
करंत हक्क धक्क डक्क झार धार धारयं ॥
परंत षंड सुंड तुंड वाजि दंत बिज्जलं ।
उड़ंत सीस षग्ग दीस दिष्पि राज दुद्दलं ॥ छं० ॥ २३६७ ॥
नचै कमंध वीर बंध देवियं किलक्किलं ।
करंत घाय एक तेक बिल्लि षंड विट्ठलं ॥
रुलंत गिद्ध नच्चि सिद्ध पंषि संप हक्कियं ॥
षेलंति षेच भूचरौर गोमयं गहक्कियं ॥ छं० ॥ २३६८॥
वरंति बिंद अच्छरी भरं सुचित्त चिंतयं ।
करै अचिज्ज कौतिगं सुरं सु जुद्ध मंतियं ॥
धरंत षग्ग धाप यों प्रतष्प लष्षि लष्षनं ।
हयौ बघेल षग्गधार तुट्टि षग्ग तष्षनं ॥ छं०॥ २३६९ ॥
ग्रहौ सु हक्किसं बघेलतं हन्यौ कटारियं ॥
करे सु छिन्न भिन्नयं प्रताप भूमि पारियं ॥

कांत हक्क धार षग्ग षग्ग धारि नहुरे ॥
हने सु राय पंग सेन छोनियं परं परे ॥ छं० ॥ २३७० ॥
करी अरूह मज्ज सिंघ लष्षनं गहक्कियं।
ढरंत धार पंग भार भज्जि हक्क हक्कियं ॥
मघन्न घाय बिद्धि ताय मुच्छि लष्षनं ढरं।
पन्यौ प्रताप पंग भाय पंच सौ परप्परं॥ छं० ॥ २३७१ ॥

लष्षन बघेल का वीरता के साथ खेत रहना।

कबित्त ॥ जीति समर लष्षन बघेल। अरि हनिग षग्ग झर ॥
[1]तिधर तुट्टि धरनहि धुकंत। निवरंत अब्ब धर ॥
तहँ गिद्धारव हरिग। अंत गहि अंतह लग्गिग ॥
तरनि तेज रस वसह। पवन पवनां घन बज्जिग ॥
तिहि नाद ईस मथ्थौ धुन्यौ। अमिय बुंद ससि उल्लस्यौ ॥
बिडस्यौ धवल संकिय गवरि। टरिय गंग संकर हस्यो ॥
छं० ॥ २३७२ ॥

दूहा ॥ सात कमल ससि उप्परह। कन्ह चंद गोयंद ॥
निडुर सलष बरसिंह नर। साष भरै सुर इंद ॥ छं० ॥२३७३ ॥
चौपाई ॥ [1]पारस फिरि सेनं प्रथिराजं। है गै दल चतुरंगी साजं ॥
सो ओपम कविराजह ओपी। ज्यों इंद्र पुरी बलि धूरत कोपी ॥
छं० ॥ २३७४ ॥

लष्षन बघेल की वीरता।

कबित्त ॥ दल सु पंग न्रप चंपि। राज बिंध्यौ चतुरंगी ॥
तह लष्षन बघ्घेल। षेत संभरि अनभंगी ॥
राज कमाननि षंचि। षग्ग षोलिय षिजि जुट्टिय ॥
कै बड़वानल लपट। बीच सप्पर तें छुट्टिय ॥
करि भंग अग्गि अरि जुग्गि जुरि। मोरि मुहम मूरत्त मन ॥
हय सत्त अंत तिन एक किय। परिन समझि ढूढंत घन ॥
छं० ॥ २३७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि पांरस सेनं प्रथिराजं।

पहार राय तोमर का अग्रसर होना ।

दूहा परत वघेल्ल सु मेल किय । रन रट्टौर सु भार ॥
कनवज ढिल्लिय कंकरह । तोंवर तिष्ट पहार ॥ छं० ॥ २३७६ ॥

कवित्त ॥ द्वादस दिन पच्छलौ । घटी पल बीह समग्गल ॥
सविता वासर संत । दसमि दह पंच विजय पल ॥
मिलिय चंद निज नारि । रारि सज्ज्यौ सु रुद्र रस ॥
रा असोक साहनी । सहस सेना सु अट्ठ तस ॥
स्वामित्त धम्म रत्तौ सु रह । करै प्रीति रा पंग तस ॥
लष्ष्यौ सु जाइ चहुआन दिग । क्रम्यौ फौज बंधिय उक्कसि ॥
छं० ॥ २३७७ ॥

जैचन्द का असोक राय को सहायक देकर सहदेव को धावा करने की आज्ञा देना ।

पंग देषि साहनी । जात जंगल पहु उप्पर ॥
मनहु सिंघ पर सिंघ । वीर आवरिय स्वामि छर ॥
तत्र राधा सहदेव । देषि दिसि वाम समग्गल ॥
चपरत्ता हवि जान । अप्प उद्धर जादव कुल ॥
सिर नाइ आइ अघघा सरकि । दिय अग्याँ पहु पंग तमि ॥
संग्रहौ जाइ चहुआन कौं । रा असोक साहाय क्रमि॥छं०॥२३७८॥

दूहा ॥ नाइ सीस मिलि निज सयन । दिय अग्याँ वर पंग ॥
बंधि अनिय द्वादस सहस । बाजे बज्जे जंग ॥ छं० ॥ २३७९ ॥

सहदेव और असोक राय का पसर करना ।

सजिय अप्प सहदेव दल । अनिय सु राय असोक ॥
मिल्यौ जाइ मध्ये सु भर । अप्प चिंति उधलोक ॥ छं०॥२३८०॥
रा असोक सहदेव रा । मिलि उभ्भय दल येक ॥
सहस बीस दल भर जुरिग । चलें सु तत्ते तेक ॥ छं०॥२३८१॥
प्रथीराज बांई दिसा । [1]आवत षल दल देषि ॥
गहिय वग्ग पाहार सम । तपि दिय आयस तेष ॥छं०॥२३८२ ॥

---

(१) मो.-आवत देख दिलेस ।

पृथ्वीराज को तोमर प्रहार को आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दल सु पंग रठ्ठिवर। जाम चंपिय दिल्लिय भर ॥
तब जंपिय प्रथिराज। पंड वंसह पाहर नर ॥
हरि हथ्थां हरि गहिहि। बांम रष्षै इहि बीरह ॥
सेस सीस कंपियै। डठ्ठ डुल्लिय भुवि मीरह ॥
कविचंद एह आंपुब्ब सुनु। बीर मंच उब्बर भन्यौ ॥
ठठुक्यौ सेन जयचंद दल। जए तोंअर टट्टर धन्यौ॥छं०॥२३८३॥

नाइ सीस प्रथिराज। अप्प कस्यौ हय हंसह ॥
तारापति सम तेज। षिचि वाहन हरि वंसह ॥
[1]हंस हंस आपेष। इष्ट मंचं उच्चारिय ॥
चल्यौ जंपि मुष राम। स्वामि ध्रम्मह संभारिय ॥
[2]जोगनी जूह दुअ हुअ। बीर जूह अग्गै सु नच्चि ॥
निरषंत अमर नारद निगह। अच्छरि रथ सीसह सु रचि ॥
छं० ॥ २३८४ ॥

पहाररा़य तोमर का युद्ध करना। असोक राय का मारा जाना।

पद्धरी ॥ उप्पारि षग्ग तोमर पहार। गज्जयौ सूर सज्जे सु सार ॥
उड्डंत रूप अरि बीस दिठ्ठ। सौ एक रूप अभिलयंत जिठ्ठ ॥
छं० ॥ २३८५ ॥

साहस्र तेग बाहंत ताम। दिष्षे सु षेत षल स्वामि काम ॥
धारा सुधार बाहंत बीर। गज्जयौ मझ्झ मनु करि कंठीर ॥
॥ छं० २३८६ ॥

तुट्टंत सीस उड्डंत रिष्ट। अब संक बुद्धि मनु उपल वृष्टि ॥
तुट्टंति बाह [2]उडि सघन घाय। उड्डंत चिल्ह मनु पंष पाइ ॥
छं० ॥२३८७॥

धर धर धरद्धर परै भार। कट कट्ट षग्ग बज्जै करार ॥

---

(१) ए.-हंस हेस आयप्प हुअ। (२) मो. मनुं।

तुट्टै विपग्ग उड़ै अकास। चमकंत तड़ित मनु मेघभास॥
छं० ॥ २३८८ ॥

परसंत पूर श्रोनं प्रवाह। गहरंत कंठ सट्ठी सुवाह॥
आइयौ राय अस्सोक गज्जि। दो हथ्थ करारी संग सज्जि॥
छं० ॥ २३८९ ॥

वेहथ्थ हयौ तोमर पहार। भिट्टयौ न अंग तुट्टौ सु सार॥
संग्रह्यौ कंठ तोमर पहार। पचारि सीस उप्पर उभारि॥
छं० ॥ २३९० ॥

करि षंड षंड नंष्यौ धराउ। विन अंस उड़यो [1]जरनी निहाउ॥
रिन मझ्झ पऱ्यौ अस्सोक जानि। ओहढ्यौ पंड पंचह परांनि॥
छं० ॥ २३९१ ॥

कवित्त॥ धरिय भार पाहार। पग दल वल ढंढोल्यौ॥
[2]हय गय नर नर पतिय ताम। वंवर झंझोल्यौ॥
छच पच मारुत महंत। अरि वांन उड़ाइय॥
सार सार संभार चंद। जिम[3]मुष मुष सांइय॥
आनंद केलि कलहंत किय। इय हिलोल दल दुम्भरिय॥
तों अर चिवालमारह सुभर। सिरसुवर अझ्झर झरिय॥
छं० ॥ २३९२॥

पहार राय तोमर और सहदेव का युद्ध। दोनों का मारा जाना।

भुजंगी। तवै राइ सहदेव देवंग वीरं। धरे धाइयौ संग से हथ्थ धीरं॥
हयौ राइ पहार सों कंठ मन्नी। परे फुट्टि उड्डी उकस्सी सु अन्नी॥
छं० ॥ २३९३ ॥

ग्रह्यौ सेल संगै सहदेवि तामं। [4]चल्यौ बथ्थ हथ्थे उड्यौ हंस धामं॥
ढरे दून कल्ले वरकूं अचेतं। दुनै सूर जुझ्झै उभै स्वामि हेतं॥
छं० ॥ २३९४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-धरनी। (२) ए. कृ. को.-हय गय नर पंतिय पताष।
(३) ए. कृ. को.-सुष। (४) ए. कृ. को.-चप्यौ।

परंतं पहारं उठी श्रोन धारं। उठे बीर मत्ते सु रत्ते करारं ॥
सहस्सं सु एकं सयं दून बीरं। करै असि उतंग सा गात धीरं ॥
छं० ॥ २३९५ ॥

पंग नेत बंधे किलक्कार उट्ठे। नचै जाम बीरंत रत्ते सु रूट्ठे ॥
धरक्के सु गोमं धरक्के धरन्नी। भरक्कंत सेना सु भग्गौ परन्नी ॥
छं० ॥ २३९६ ॥

ग्रहै गज्ज दंतं फिरक्कंत उड्डै। पियै श्रोन धारं गजं पात गुड्डैं ॥
भयो पंग सेनं सनेहंति कारं। फिरै जोगिनी सद्द महो फिकारं॥
छं० ॥ २३९७ ॥

भगौ सेन रायं भरक्कै सु पंग। धरी एक विक्ती भरं विक्ति जंगं ॥
उड़ै बीर अस्सं सु आकास मंगै। पहुं राउ पाहार गौ मुक्ति संगै॥
छं० ॥ २३९८ ॥

दूहा ॥ गरजै दल जैचंद गुर। धुर भग्गौढिल्लीस ॥
वासर जीजै वेढि थिय। चंद चंद रवि रीस ॥ छं० ॥ २३९९ ॥

जंघार भीम का आड़े आना।

तब जंघारो भीम भर। स्वामि सु अग्गे आइ ॥
गहि असिवर उम्भम्भन उससि। कमध कमद्दा धाइ ॥ छं० ॥२४००॥

कवित्त ॥ रा कमधज्ज नरिंद। अद्द षोडनिय तुरंगयि ॥
तिन महि अद्वमि जक्क। जीन नग मुक्ति सुरंगिय ॥
तिन छुट्टत हल बलत। साहि सामंत राज चढ़ि ॥
ते थल थक्कवि रहित। चहुआन सु राजन रढ़ि ॥
सिथि सिथिल गंग थल बल अबल। परसि प्रांन[1]मुक्किन रहिय ॥
जुरि जोग मग्ग सोरों समर। चवत जुद्ध चंदह कहिय ॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पंग सेना में से पंचाइन का अग्रसर होना।

कुंडलिया ॥ सिलहदार पंचाइनो। करि जुहार षग धार ॥
पंग ससुद मभ्भझहि परिय। वजि धुंम्मरि ग्रह पार ॥

(१) ए.कृ. को.-मुक्किय।

वजि धुम्मिरि गह पार । सार भुव परिय उदक्क मधि ॥
ज्यों वड़वानल [1]लपट । मध्यि उट्टंत नरं नधि ॥
सार भार तन भरिग । सीस तुय्यौ धरनी लहि ॥
जोगिनि पुर आवास । मिलन [2]हंहं हय सीलहि ॥ छं० ॥ २४०० ॥

जंधार भीम और पंचाइन का युद्ध ।

कवित्त ॥ दहन पंथ सो इष्ट । द्वेव दाहिन द्वेवं फिरि ॥
घात वज्र निग्घत्ति । हक्कि चहुआन मझ्झि परि ॥
सुवर त्रंध कमधज्ज । धाक बज्जे इक्केरव ॥
ह्रप जुट्टें हर हरी । जुद्ध वज्जी जुझ्झ भस रव ॥
मिलि सार धार विपमह विमल । कमल सीस नच्चै कि जल ॥
सिव लोक सेत नन मीन धन । सुर सुर कंदल वत्त फल ॥
चं० ॥ २४०१ ॥

पृथ्वीराज का सोरों तक पहुंचना ।

दूहा ॥ पुर सोरों गंगह उदक । जोग मग्ग तिथ वित्त ॥
अद्भुत रस असिवर भयौ । वंजन वरन कवित्त ॥
छं० ॥२४०२ ॥

किस सामंत के युद्ध में पृथ्वीराज कितने कोस गए ।

कवित्त ॥ वेद कोस हरसिंघ । उभै चियत्त वड. गुज्जर ॥
काम वान हर नयन । निडर निड्डुर भुमि [3]सुभ्भर ॥
छग्गन पट्ट पलानि । कन्ह पंचिय द्रग पालह ॥
अलह वाल द्वादसह । अचल विग्घा गनि कालह ॥
शृंगार विंझ सलषह सुकथ । लषम पहारति पंचचय[4] ॥
इत्तने सूर सथ झुझ्झ तह । सोरों पुर प्रथिराज अय ॥
छं० ॥ २४०३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पलट । (२)ए. कृ. को.-हंतं ।
(३) ए. कृ. को.-सुद्धर । (४) मो.-सय ।

अपनी सीमा निकल जाने पर पंग का आगे न बढ़ना और महादेव का दस हजार सेना लेकर आक्रमण करना।

पत्थौ पेषि पाहार। राज कमधज्ज कोप किय॥
पहु सोरों प्रथिराज। निकट दिष्यो सुचिंति हिय॥
गयौ राज जंगलिय। नाथ कनवज्ज मन्नि मन॥
जग्य जोंग बिग्गार। लहिय जै पुनि हरिय तिनु॥
आइयौ राइ महदेव तव। नाय सीस बोल्यौ बयन॥
संग्रहौं राज प्रथिराज को। सहौं पहु जंगल सयन॥
छं० ॥ २४०४ ॥

इम कसि सुत सामंत। देव सजि चल्यौ सेन बर॥
लील नाम पम्मार। प्रिथक परसंसि अप्प भर॥
जपि वाया जगनाथ। थान उच्चारिय धीरह॥
अनी बंधि दस सहस। अप्प सलै पर पीरह॥
ठननंकि घंट भेरिय सबद। पूरि निसान दिसांन सुर॥
महदेव चल्यौ प्रथिराज पर। मिलिय जुद्ध मनु देव दुर॥
छं० ॥ २४०५ ॥

महादेवराव और कचराराय का द्वंद युद्ध। दोनों का मारा जाना।

पद्धरी ॥ आवंत देषि महदेव सैन। उप्पारि सीस भर सज्जि गैन॥
मातुलह सयन संयोगि बंध। बर लहन धीर भर जुद्ध नंध॥
छं० ॥ २४०६ ॥

कच्चराराय चालुक्क धीर। आवंत देषि दल गज्जि बीर॥
सिरनाइ राज प्रथिराल ताम। बल कलिय बदन उरकंक काम॥
छं० ॥ २४०७ ॥

इक वार पहिल लग्गे सु घाय। जित्तए सुभर तिन पंग राइ॥
संजोगि नैंग दिय कंठ माल। पहिराइ कंठ बज्जी भुआल॥
छं० ॥ २४०८ ॥

गज्जियो भीम जिम सुअन भीम। पेपेव जूह मनुहरि करीम ॥
कस्सियो तंग बज्जी सु नेत। संकलपि सीस प्रथिराज हेत ॥
छं० ॥ २४०९ ॥

आयौ समुष्ष रिम्मह समथ्थ। त्रिभाग संग किय सीस हथ्थ ॥
उच्चरिय मंच भैरव कराल। उद्धरिय ध्यान त्रिपुराइ बाल ॥
छं० ॥ २४१० ॥

किल किलिय किद्ध भैरवह जाम। हुंकार देवि दीनो सु ताम ॥
परदल पयठ्ठ उप्पारि बग्ग। षुल्लिय कपाट भर स्वर्ग मग्ग ॥
छं० ॥ २४११ ॥

बाहंत षग्ग भर सीस हथ्थ। कुर सेन मद्धि मनु मिलिय पथ्थ ॥
बाहंत षग्ग आयुध अपार। धर धार धरनि मधि भरनि भार ॥
छं० ॥ २४१२ ॥

किलकार बीर चालुक्क सथ्थ। नाचंत भूत भैरव सु तथ्थ ॥
सुष मुष्ष लग्गि चालुक्क [1]घाय। विवि षंड धरै धर तुट्टि धाय ॥
छं० ॥ २४१३ ॥

कोतिग्ग रास देषंत देव। नारद विनोद नंचीय एव ॥
वर वरै इच्छ अच्छरिय ताम। पलचर पल पूरै रुहिर काम ॥
छं० ॥ २४१४ ॥

रस रुद्र भयौ भर जुद्ध बीर। पूजंत सब्ब चालुक्क धीर ॥
चालुक्क तेक रस रमै[2] रास। चमकंत षग्ग कर त्रिज्जु भास ॥
छं० ॥ २४१५ ॥

महदेव सेन हल हलत देषि। ग्रह राह जेम दल ग्रसत [3]पेषि ॥
घन पूरि घाव चालुक्क अंग। बर तत्त सुमत्तन वधिय रंग ॥
छं० ॥ २४१६ ॥

धाइयौ ताम महदेव तस्स। चालुक्क हयौ संगौ उरस्स ॥
दुअ लग्गि बीर मिलि विषम घाव। आवद्ध तुट्टि दुअ बीर ताव॥
छं० ॥ २४१७ ॥

(१) मो.-थाइ। (२) मो.-राहु। (३) मो.- देषि।

लग्गे सु बथ्थ समवय सरूप। दुअ अट्ठ बरष दुअ अम्म भूप॥
लग्गे सु कंठ असि उट्ठि ताम। दुअ झुज्झि भूप दुअ सामि काम॥
छं०॥२४१८॥

दुअ चले मुत्ति मारग्ग सग्ग। बिम्मान जानि बिचि बिचिच लग्ग॥
अच्छरिय उंच रंधें सु नेव। जय जय चवंत नंषि कुसुम देव॥
छं०॥२४१९॥

भेदे सु उरध मंडलह दून। बर मुत्ति गत्ति प्रम्मे सु ऊन॥
[1]दुअ ढरे गंग मह जल प्रवाह। उप्रमे ताम गुन वंध थाह॥
छं०॥२४२०॥

लीलराय प्रमार और उदय सिंह का परस्पर घोर युद्ध करना और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ लीलराइ पम्मार। राइ महदेव सु सेवं॥
सहस तीन थट सुभट। आय उप्पर बर केवं॥
मार मार उच्चार। सार गज्जे मुष सारह॥
तेन मुष्ष जगदेव। धार बज्जिय पति धारह॥
धरि ओम सीस सजि सामि भ्रम। झर उझ्झार दुझ्झरति झर॥
मानौं कि बघघ गड्डुर बिचह। झपट लपट खेयंत झर॥
छं०॥२४२१॥

बेली भुजंग॥ भुरं भार भट्टं बजे घट्ट घट्टं। लगे पंग भट्टं अगी झल्ल पट्टं॥
भगे थट्ट जानं दहं बट्ट मानं। परे गज्ज बानं भरं थान थानं॥
छं०॥२४२२॥

तबै नील देवं अयौ देव मुष्षं। दुअै बीर बाहं दुअै सामि रुष्षं॥
उदै दीन पुत्तं उदैसिंघ देवं। इतै राव बंभं उतं देव सेवं॥
छं०॥२४२३॥

दुअं गात उच्चं सिरं उंच धारे। मनो सेन कोटं मझारं सुनारे॥
करं नंषि[2]भ्रंमं षगं दोय हथ्थं। उझारै सु मथ्थं दुअं टोप[3]कथ्थं॥
छं०॥२४२४॥

(१) ए. कृ. को.-दुअठेरे गंमा मझी। (२) मो.-व्रमं, को.-चर्म। (३) मो.-कट्टं।

फटे उत्तमंगं टहनं सुरंगं । गिरं जानि चल्लं ज्तं धार गंग॥
घरी एक धारं अपारंति वग्गं । पगं सार तुट्टे जमंदड्ढ लग्गे ॥
छं० ॥ २४२५ ॥

हये जर जरं उनके उनाही । ढरे दोइ कल्लेवरं गंग माहीं ॥
सिरं सुम्मनं देव व्रप्पा विराजै । पछै सूर धारं वरं रंभ [1]छाजै ॥
छं० ॥ २४२६ ॥

तिनं सीस देवी दियौ सामि काजै । वरं तास कित्ती जगम्मै विराजै॥
जमं ठौर ठेलै गयौ ब्रह्म थानं । जिनै जित्तयौ लोक परलोक मानं॥
छं० ॥ २४२७ ॥

कचराराय के मारे जाने पर पंग दल का कोप करके धावा करना ।

कवित्त ॥ गरजे दल जै चंद । सीस पहु देन नरेसर ॥
समर सूर सामंत । सु पुनि झुज्झे नर सुद्धर ॥
पर्यौ भार पम्मार । अंग एकै आचग्गर ॥
वासुर तीजै वेढि । कलह वेथक्कि वाहि करि ॥
जगि देवन दानव देव जगि । पार सार उरवार पनि ॥
थंभयौ कटक पोहनि विकट । [2]देव सु एवं वद्दियनि ॥छं०॥२४२८॥

दूहा ॥ तीन सहस मे तीन सय । सूर धीर संग्राम ॥
वधि पम्मारह बीर वर । दस गै अस्सव ताम ॥ छं० ॥ २४२९ ॥

कवित्त ॥ दुहु पष्पां गंभीर । दुहुं पष्पां छच पत्ते ॥
दुहु पष्षै राजान । दुहुं पष्षै रावत्ते ॥
दुहु वाहां दुज्जरह । मात मातुल सुष लष्षै ॥
कंठमाल सुभ कंठ । नाग [3]साजों गह रष्षै ॥
संकटह स्वामि वंकट विकट । चिघट रुक्कि कमधज्ज दल ॥
अदित वार दसमिय दिवस । गरुअ गंग ध्रंमुंग जल ॥
छं० ॥ २४३० ॥

(१) मो.-साजै । (२) ए. कृ. को.- देव सुए पग वद्दिय ।
(३) ए. कृ. को. नाग सौ जोग सुरष्षै

कचराराय का स्वर्गवास ।

संगराय भानेंज । राय कचरा अरि कच्चर ॥
गरुअ ध्रंम स्वामित्त । सार संमुह रंन अच्चर ॥
पट्टन सिर अरु पट्ट । गंग घट्टह [1]घन नष्ष्यौ ॥
जै जै जै जपि सद्द । नद्द त्रिभुअनपति भष्ष्यौ ॥
पष्षरत पखिय बज्जिय बिहर । उग्रराय रट्ठौर धर ॥
चालुक चलंत सुभ स्वरगमन । ब्रह्म अरघ दीनौ सु धर ॥
छं० ॥ २४३१ ॥

कचराराय का पराक्रम ।

दूहा ॥ परें पंच सें पंग भर । परि चालुक्क सु तथ्य ॥
बिलष वदन प्रथिराज भय । बंछिय मरन सु अप्प ॥छं०॥२४३२॥
निसि नौमिय वित्तिय लरत । दसमिय पहु रिति च्यार ॥
पंगपहुमि प्रथिराज भिरि । अथ्थिग आदित वार ॥ छं०॥२४३३॥

सब सामंतों के मरने पर पृथ्वीराज का स्वयं कमान खींचना ।

कवित्त ॥ घरिय सत्त आदित्त । देव दसमिय दिन रोहिनि ॥
रुक्यौ तथ्थ प्रथिराज । पंग सथ्थह अध षोहनि ॥
पंच अग्ग च्यालीस । सत्त सामंत सु रत्तिय ॥
पंच अग्ग पंचास । मद्धि सथ्थह सेवक तिय ॥
वामंग तुरंगम राज तजि । तोन सज्जि सिंगिनि सु कर ॥
बंदेव चंद संदेह नह । जीवराज अचरिज्ज नर ॥छं०॥२४३४ ॥

जैचंद का बराबर बढ़ते आना और जंघारे भीम का मोरचा रोकना ।

दूहा ॥ [2]गंग पुट्ठि अग्गै विहर । ब्रत बंकौ जल किंदु ॥
उठौ छत्र न्रप पंग पर । मनु हेमं दंड पर इंदु ॥छं०॥२४३५ ॥
गरजे दल जैचंद गुर । धुर भग्गे दिल्लेस ॥

(१) ए. कृ. को.-घट । (२) मो.-मंग ।

वासुर तीजै वैठितं । चंद चंद रवि रेस ॥ छं० ॥ २४३६ ॥
तब जंघारो भीम भर । स्वामि सु अग्गै आय ॥
गहि असिवर ओड़न उकसि । [1]कमध कमद्धा धाय॥छं०॥२४३७॥
कवित्त ॥ जंघारौ रा भीम । स्वामि अग्गै भयौ ओड़न ॥
दुहुं वाहां सामंत । दुहूं द्वादस दस को दन ॥
पच्छ सथ्थ संजोगि । कलह कंतिय कोतूहल ॥
मद्दन रंभ मोहनिय । सुरां अमृत तद्दूलह ॥
दुहुं राय जुद्ध दुंदज भयौ । चाह,आन रट्ठौर भर ॥
घरि च्यारि ओन असिवर झर्यौ । मनहु धुम्म अग्गा सु झर ॥
छं० ॥ २४३८ ॥

जंघारे भीम का तलवार और कटार लेकर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ झरं झार झारंति झारंति झारं। ढरं ढार ढारंति ढारंति ढारं॥
तुटै कंध कामंध संधं उसंधं। वहै संगि षग्गं रतं रंध्र रंध्रं ॥
छं० ॥ २४३९ ॥
चवं सूर सेलं सरं सार सारं । लगै कोन अंगं विभंगं विहारं॥
चलै ओन सारं [2]विरंतं सुधारं । मनों वारि रुद्दं अनंतं प्रनारं॥
छं० ॥ २४४० ॥
वजै घट्ट घट्टं सवद्दं सवद्दं । नको हारि मन्नै नको भेटि हद्दं ॥
तुटै षग्ग लग्गै गहै हथ्थ वथ्थं । मनों मल्ल जूझंत वेजानि वथ्थं॥
छं० ॥ २४४१ ॥
वढी ओन धारा रनं पूर पूरं । चढ़ी सत्ति जभी कमद्धंति सूरं ॥
जयंतं जयंतं चवंसट्ठि सद्दं । असी तार झारं नचे नेम नद्दं ॥
छं०॥ २४४२ ॥
वजै जंगलीसं विडारं विडारं । करं धारि झारं सकत्ती करारं ॥
करी फुट्टि सन्नाह प्रगटंत अच्छी । मुषं झीमरा कंध काढंत मच्छी ॥
छं० ॥ २४४३ ॥

(१) मो.-कमधज कमधां धाय ।　　(२) ए. कृ. को.-चिरतं ।

धरे बारड सिंह आघाय घायं। [1]बरं बार सुष्षं अगंमन्न धायं ॥
जिते सेन बिग्घा कटे षग्ग हक्कं। परे कातरं सं भयानंक टक्कं ॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लषं चंपियं सीस चहुआन धायं। गनो सिंघ झम्यौ मदं दंति पायं॥
लघं लाघ वंकौ न वाहंत बंकं। मनों चक्र भेटंत सीसं निसंकं॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह वट्टं। बहै षग्ग झट्टं मनो बीज छट्टं ॥
मधे श्रोन फेफं सु डिंभं फरक्कं। मनो मझ्झ नाराज छुट्टंत झक्कं॥
छं० ॥ २४४६ ॥

न्रिपं पोषि धारा धरै धाय धायं। उठै दंग बग्गं मनों लष्षरायं॥
चवै पंग आनं गहन्नं गहन्नं। जगन्माल झम्यौ सुन्यौ सीस धुन्नं॥
छं० ॥ २४४७॥

[2]करन्नाटिया राय हंइंतिरायं। रवै वाम दच्छिन्न राजंग सायं ॥
बहै बिंझ मालं करीवार सथ्थं। दुअं लग्गि झाकं मनो कोपि मथ्थं॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गट्टं परे छेदि बंभं। मनों अंग पंछी सु उड्डंत संभं ॥
[3]नरं हक्क बज्जी सु रज्जी सकत्ती। रची पुष्प विष्टं घहं देवि पत्ती॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी झाक बज्जंत रज्जंत सूरं। भयं चक्क जुड्डं भयं देव दूरं ॥
दलं दून धारों ढरै षंड षंडं। बरं संग्रहै ईस सीसंति रुंडं ॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर रुद्र राग सूरं बरंती। रचे माल कंठं कुसम्मं हरंती ॥
सजै सेंन [4]आवन्न वन्नं विमानं। वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पयानं॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द बद्दं पलं श्रोन चारं। थक्यौ सूर नारद नच्यौ विहारं॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत सूरं। धरे मंडलं सब्ब सामुच्छि जूरं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

(२) ए. कृ. को.-मार। (१) मो.-करैं लाटिया (२) ए. कृ. को. भरं, झरं।
(४) ए. कृ. को.-कावन्न।

दह पंच पंग परे सूर मारं । अरं राज सामंत मथ्थें हजारं॥
भयं अद्भूतं रसं वीर वीरं । घटी दून जुद्धं निहानं निहारं ॥
छं० ॥ २४५२ ॥

तव जंघारौ जोगी जुगिंद । कत्ती कट्टारौ ॥
असि विभूति घसि अंग । पवन अरि भूपन हारौ ॥
सेन पंग मन मथन । [1]ब्रम्म पग गयंद प्रहानं ॥
[2]पलति मुंड उरहार । सिंगि सद वदन त्रिपानं ॥
आसन सु दिठ्ठ पग दिठ्ठ वर । सिरह चंद अंमृत अमर ॥
मंडली राम रावन भिरत । नभौ वीर इत्तौ समर ॥छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना।

घरिय च्यार रवि रत्त । पंग दल वल आहृयौ ॥
तव जंघारौ भीम । ध्रंम स्वामित तन तुथ्यौ ॥
सगर गौर सिर मौर । रेह रष्पिय अजमेरिय ॥
उड़त हंस आकास । दिठ्ठ घन अच्छरि घेरिय ॥
जंघार सूर अवधूत मन । असि विभूति अंगह घसिय ॥
पुच्छयौ सु जान त्रिभुवन सकल । को सु लोक लोकैं वसिय ॥
छं० ॥ २४५४ ॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन ।

भय समुंद जैचंद । उतरि जै जै क्यौं पारह ॥
अद्भुत दल असमान । अब्ब वुड्डहि करिवारह ॥
तहां वोहिथ हर ब्रह्म । भार सव सिर पर पधर्यौ ॥
उद्धरि उद्ध कुमार । धनि जु जननी जिहि जनयौ ॥
नंन करहि अवर करिहै नको । गौर वंस अस वुझ्झयौ ॥
सो साहिव सेन निवाहि करि । तव अप्पन फिरि झुझ्झयौ ॥
छं० ॥ २४५५ ॥

वर छंड्यौ दुहु राय । वरुन छंड्यौ वर वारर ॥
सिर थक्यौ [3]सहि सार । वरुन थक्यौ गहि सारर ॥

(१) मो.-व्रह्म । (२) ए. कृ. को. लपत । (३) ए.-सिरमार ।

रव थक्यौ रव रवन । रवन थक्यौ मुष मारह ॥
धर थक्यौ धर परत । मनुन थक्यौ उच्चारह ॥
पायौ न पार पौरुष पिसुन । स्वामिनि सह अच्छरि जप्यो ॥
जिम जिम सु सिंह सम्मीर सिव । तिम तिम सिव सिव सिव तप्यो॥
छं० ॥ २४५६ ॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक अंग तिय सकल । [1]विकल उच्चरिय राज मुष ॥
भ्रकुटि अंक बंकुरिय । अंसु तिहि लिषिय मड्डि रुष ॥
व्रिय विमान उप्पारि । देव डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
भ्रम भ्रमंकि आयास । पत्ति अच्छरि [2]अलि मिल्लिय ॥
एक चवै कवि कमल असि । मुकति धंक करि करिय न्रप ॥
तन राज काज जाजह भिरिग । सु मति सोह भइ देव वपि ॥
छं० ॥ २४५७ ॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ । घरिय दुअ वित्तक वित्तौ ॥
नको जीय भय मुत्यौ । नको हार्यौ न को जित्तौ ॥
पंच सहस सें पंच । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
[3]लिषे अंक विन कंक । न को भुज्झयो विन [4]षुट्टिय ॥
दो घरिय मोह मारुत बज्यौ । करन अंभ बरष्यो निमिष ॥
[5]तिरिगत्त राज तामस बुझ्यौ । दिषिय पंग संजोगि मुष ॥
छं० ॥ २४५८ ॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद घरन । चंप्यो हम बर तर ।
उतरि सेन सब पर्यौ । राव कह्यौ हरवै कर ॥
लेहु लेहु न्रप करय । चवन चहुआन बुलायौ ॥

(१) ए.-चिकल। (२) मो.-अरि मोलेय।
(३) ए. कृ. को.-षिले। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जित्यौ न विषुट्टिय।
(५) ए. कृ. को.-तिहि लगता। (६) ए. कृ. को.-मुरपनों।

सूर वीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सथ्य दूत को गनै। असुगुन भय राजन गिर्यौ ॥
घर हुंत पलान्यो अमत करि। सीस धुनत नर वै फिर्यौ ॥
छं० ॥ २४५९ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नद। प्रेम समुद्द्द वाल ॥
प्रथम सु पिय ओड़न उरह। मनु झुलवति मुद्ध मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि मुष। दुष किन्नौ दल सोग ॥
जग्य जर्यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। कित्ति अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यों पल पट आदर्यौ। लीय पुत्रिय छल मग्गी ॥
मुष जीवन अरु लाज। मनहि संकलपि सिलष्षी ॥
[2]निवल एम संकलै। आस लग्गी मय दिष्षी ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदच्छिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्ठा तू अवर। मै दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली रुषह। उड़ी दुहुं दल षेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी सट्ठि। रुकि प्रापीय मुगति रस ॥
छिति छची पिति छित्ति। व्रत्त आवर्ति सूर वस ॥
चौ अग्गानी पंच। रांज षावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि वीर। पंग जंपियत गहग्गह ॥

(१) मो.-कनवज्ज रह। (२) ए. कृ. को.-विन्नल।

संमूह जुद्ध भारथ्थ मिलि। पंचतत्त मंचह [1]सरिस ॥
तन छोह छेह एकादसी। चंद वत्त वर [2]तच्चरिसु ॥
छं० ॥ २४६४ ॥

फिस्यौ राज कमधज्ज। मुक्कि जीवत चहुआनह ॥
जानि सँजोगि समंध। मग्ग कनवज्ज सु प्रानह ॥
फिरे संग राजान। मानि मत्तौ वर वीरह ॥
मनों पल छंडे सिंह। कोप उर केर सु धीरह ॥
निज चलत मग्ग जैचंद पहु। परे सुभर रिन अप्प पर ॥
किय प्रथुक बन्ह कारन न्रिपति। दीय दाघ जल गंग थर ॥
छं० ॥ २४६५ ॥

समझायौ तिन राइ। पाय लगि वात कहिय जब ॥
जिके सूर सामंत। करौ गोनह न कोइ अब ॥
फिऱ्यौ न्रपति पहुपंग। सयन हुअ तह घर आयौ ॥
रय ढिल्ली सुरतान। जान आवतह न पायौ ॥
आयौ सु सयन चहुआन कौ। ग्राम ग्राम मंडप छयौ ॥
आयौ नरिंद प्रथिराज जिति। भुअन तीन आनंद भयौ ॥
छं० ॥ २४६६ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली में आना और प्रजा वर्ग का बधाई देना।

दूहा ॥ चली षबर दिल्ली नयर। एकादसि दिन छेह ॥
के रवि मंडल संचरिग। के मिलि मंगल ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६७ ॥

कुंडलिया ॥ बद्धाइय दिल्लिय नयर। अवर सेन जुध मग्ग ॥
घाय घुमत झोरिन घले। श्रवन सुनंतह अग्गि ॥
श्रवन सुनंतह अग्गि। उठी कंचन गिरि अच्छी ॥
कै बड़वानल लपट। निकरि लालन धत गच्छी ॥
कै नाग लोक सुंदरी। सुनि न भारथ कथ्थाई ॥
कै मिलन पीय अंतरह। मिलन आवंग बधाई ॥ छं० ॥ २४६८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरिग। (२) ए. कृ. को.-उच्चरिय।

जैचन्द का पृथ्वीराज के घायलों को उठवा कर तैंतीस डोलियों में दिल्ली पहुँचाना ।

पद्धरी ॥ परि सकल सूर अघघाइ घाइ । उच्चाइ चंद न्नपराइ थाइ ॥
धरि लियौ वीर चालुक्क भीम । बग्गरी देव अरि चंपि सीम ॥
छं० ॥ २४६९ ॥

पम्मार जैत षीची प्रसंग । भारथ्थ राव भारा अभंग ॥
जामानि राव पाहार पुंज । लोहान पान आजान हुंज ॥
छं० ॥ २४७० ॥

गुज्जरह राव रंघरिय राव । परिहार महन नाहर सु जाव ॥
जंगलह राव दहिया दुबाह । वंकटह सु पह वधनौर याह ॥
छं० ॥ २४७१ ॥

जद्दवह जाज रावत्त राज ।वर वलिय भद्र भर स्वामि काज ॥
देवरह देव कन्हरहराव । ढंढरिय टाक चाटा दुभाव ॥
छं० ॥ २४७२ ॥

औहठी स पहुपह कर प्रहास । कमधज्ज राज आरज्ज तास ॥
देवतिय हरिय वलिदेव सथ्थ । परिहार पीय संग्राम पथ्थ ॥
छं० ॥ २४७३ ॥

अघघाय घाय वर सिंह वीर । हाहुलिय राव हंसह हमीर ॥
चहुआंन जाम पंचान मार । लष्पन उचाय पहु पत्ति धार ॥
छं० ॥ २४७४ ॥

भट्टी चलेस गोहिल्ल चाच । सम विजय राज वघेल साच ॥
गुज्जरह चंद्र सेनह सु वीर । ते जल्ल डोड पामार धीर ॥
छं० ॥ २४७५ ॥

सोढह सलष्य उच सच साल । संग्राम सिंह कड्डिय दुजार ॥
परिहार दत्त तारन तरन्न । कमधज्ज कोल रय सिंघ कन्न ॥
छं० २४७६ ॥

सेंगरह साइ भोलन्न तास । साइरहदेव मुष मल्ह नास ॥

अरुघाय घाय धर धरह ढाइ। लष्षीन मीच जिय कंक साइ॥
छं०॥ २४७७॥

डोलिय सु मद्धि संजोग सार। पट कुटिय मद्धि मनु बसिय मार॥
उप्पारि सेव वरदाइ ईस। डोलिय सु सज्जि बर तेर तीस॥
छं०॥ २४७८॥

संक्रम्यौ सेन दिल्ली सु मग्ग। बंधाय धाय चिय पुरनि अग्ग॥
छं०॥ २४७९॥

दूहा॥ सघन घाय सामंत रिन। उप्पारिग कवि ईस॥
मध्य अमोलिक सुंदरिय। डोला तेरह तीस॥ छं०॥२४८०॥
[1]हमकि हसम हय गय परिग। बाहिर जुग्गिनि नैर॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। बाल वृद्ध जु अवेर॥ छं०॥२४८१॥
इक घर सिंधु असंचरिग। इक घर [2]पन्नर मार॥
तेरसि अंबक बज्जि बहु। राज घरह गुर वार॥छं०॥२४८२॥

जैचन्द का बहुत सा दहेज देकर अपने पुरोहित को दिल्ली भेजना।

पुर कनवज्ज कमंध गय। अरि उर गंट्रिय अथ्थ॥
कहै चंद प्रोहित्त प्रति। तुम दिल्लिय पुर जथ्थ॥२४८३॥
विधि विचिच संजोगि कौ। करहु देव विधि व्याह॥
हसम हयग्गय सब्ब विधि। जाय समप्पौ ताह॥२४८४॥
नग अनेक विधि बिधि विचिच। और गनै कोइ गेउ॥
विजै करत विजपाल [3]निज। लिय सु वस्तु दिव देउ॥
छं०॥ २४८५॥

पंगराज के पुरोहित का दिल्ली आना और पृथ्वीराज की ओर से उसे सादर डेरा दिया जाना।

मुरिल्ल॥ पुर ढिल्ली आयौ प्रोहित्तह। मंन्यौ मन चह आन सुहित्तह॥
दिय थानक आसन उत्तिम ग्रह। बर प्रजंक भोजन भल भष्षह॥
छं० २४८६॥

(१) मो.-हलकि। (२) ए. कृ. को.-बंदन। (३) ए. कृ. को.-नृप।

दिल्लिय पति दिल्लिय संपत्तौ । फिरि पहु पंग राइ ग्रह जत्तौ ॥
जिम राजन संजोगि सु रत्तौ । सुह दुह कारन चंद महि मत्तौ॥
छं० ॥ २४८७ ॥

दिल्ली में संयोगिता के व्याह की तैयारियां।

॥ कनक कलस सिर धरहि । चवहिं मंगल अनेक त्रिय ॥
पांटवर वहु द्रव्य । सज्जि सब सगुन राज लिय ॥
ढरहि चौर गज गाह । इक्क आरती उतारहि ॥
इक्क छोरि करि केस । रेन चरनन की झारहि ॥
इम जंपहि चंद वरद्दिया । मुकताहल पुज्जंत भुअ ॥
घर आइ जित्ति दिल्लिय न्रपति । सकल लोक आनंद हुअ ॥
छं० ॥ २४८८ ॥

दोनों ओर के प्रोहितों का शाकोच्चार करना ।

एक अग्ग तिय सकल । विकल उच्चरिन राजमुष ॥
त्रिगुटि अग्र वंकुरि प्रमान । तहां लषित मझ्झ रुप ॥
वीय विवान उच्चरिय । देवि डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
अभ्रम भ्रम किय आइ । सपत अच्छरी सु मिल्लिय ॥
संजोग जोग रचि व्याह मन । गुरु जन सुत अरु निगम घन ॥
प्रोहित्त पंग अरु ब्रह्म रिषि । ग्रसत सुष्य वर दुष्य सन ॥
छं ॥ २४८९ ॥

विवाह समय के तिथि नक्षत्रादि का वर्णन ।

महा नछिच रोहिनी । मेष भुग्गवै अरक वर ॥
भद्र यद्द परवासु । तिथ्य तेरसि सु दीह गुर ॥
इंद्र नाम वर जोग । राज अष्टमि रवि सिज्जौ ॥
चंद चंद सातमो । बुद्ध सत्तम गुर तिज्जौ ॥
गुर राहु सनि मुरकेत नव । न्रप वर वर मंगल जनम ॥
तहिंनह मुक्कि चहुआन कों । [1]छुट्टि पंग पारस घनम॥छं० ॥२४९०॥

(१) ए. कृ. को. घट्टि ।

पंग और पृथ्वीराज दोनों की सुकीर्ति ।

पंग राह उग्रह्यौ । दान है गै भर नर लिय ॥
धाराहर वर तिथ्थ । जपह चहुआन बीर किय ॥
एक गुनै तिहि बेर । दिये पाइल लष गुन्निय ॥
चौसट्टां कै सट्ट । लच्छि संजोगि सु दिन्निय ॥
ज्यौं भयौ जोइ भारथ्थ गति । सोइ बित्यौ बित्तक्क जुरि ॥
द्वादसवि पंच सूरहति मुक्कि । आरन्निय पहु पंग फिरि ॥
छं० ॥ २४९१ ॥

दूहा ॥ दिव मंडन तारक सकल । सर मंडन कमलान ॥
रन मंडन नर भर सु भर । महि मंडन महिलान ॥ छं०॥२४
महिलन मंडन न्रिपति ग्रह । कनक कंति ललनानि ॥
ता उप्पर संजोगि नग । धरि राजन बलवान ॥ छं० ॥ २४९३॥
राजन तन सइ प्रिय बदन । काम गनंतिन भोग
सरै न पल लेतें पलनि । न्रपति नयन संजोग ॥ छं० ॥ २४९॥

पृथ्वीराज का मृत सामंत पुत्रों को अभिषेक करना और जागीरें देना ।

पद्धरी ॥ वैसाष मास पंचमिय सूर । उपरात पष्य पुष्यह समूर ॥
संतिय सु छित्ति प्रथिराज राज । किन्नौ सनान महुरत्त आज ॥
छं० ॥ २४९५ ॥
मंगल अनेक किन्नौ अचार । बाजे बिचित्र बज्जत अपार ॥
विधि सु विप्र पुज्जे सु मंत । दिय दान भूरि अनेक जंत ॥
छं० ॥ २४९६ ॥
गुन गंठि कब्बि आये सु चंड । दिय अनंत द्रव्य बीजीउ थंड ॥
बद्धाय कीय सब नयर मंत । शृंगारि सहर वाने अनंत ॥
छं० ॥ २४९७ ॥
बद्धाम आय सब देस थान । सनमान सीम पति आय जान ॥
बर महल ताम प्रथिराज दीन । सामंत सब्ब तं न्हान कीन ॥
छं० ॥ २४९८ ॥

सामंत सब्ब बोले सु आय। आदरह सब्ब दीनौ सु राय ॥
कमधज्ज वीर चंद्रह सुबोलि। निड्डुरह सुतन सुभ तेज तोलि॥
छं० ॥ २४६६ ॥

दीनो सु तिलक प्रथिराज हथ्थ। वड्डारि ग्राम दिय बीस तथ्थ ॥
हय पांच गज्ज दीनौ सु एक। थप्पौ सु ठाम समपित्त तेक॥
छं० ॥ २५०० ॥

ईसरह दास कन्हह स पुत्त। चहुआन क्रम्म बड़ कारन जुत्त ॥
दह पंच ग्राम दीने बधाय। हय अठ्ठ गज्ज इक दीन ताय ॥
छं० ॥ २५०१ ॥

बोलाय धीर पुंडीर ताम। सनमानि पित्त दीने सु ग्राम ॥
जिन जिन सु पित्त रिन परे षेत। तेय तेय थप्पि सामंत हेत ॥
छं० ॥ २५०२ ॥

सामंत सिंह गहिलौत बोलि। गोयंद राज सुअ गरुअ तोलि ॥
द्वादस्स ग्राम दीने बधाय। हय पंच दीन पितु ठाम ठाय ॥
छं० ॥ २५०३ ॥

सामंत अवर उच्चरे जेह। दिय दून दून ग्रामह सु तेह ॥
सनमानि सब्ब सामंत सूर। दिय अनत दान द्रव्यान पूर ॥
छं० ॥ २५०४ ॥

आदरह राज गौ उठ्ठि ताम। संजोगि प्रीति कारन्न काम ॥
*   *   *   *   *   ॥   * छं०॥२५०५॥

व्याह होकर दंपति का अंदर महल में जाना और पृथाकुमारी का अपने नेग करना ॥

ा अंदर प्रथिराज जब। भंडि महूरत ब्याह ॥
आय प्रिया कहि बंध सम। करहु सु मंगल राह ॥ छं०॥२५०६॥

गौ ॥ रच्यौ मंगलं मास वैसाष राजं। तिथी पंचमी सूर सा पुष्प साजं॥
असित्तं सपुष्पं सुभ्भ्यौ जोग इंदं। कला पूरनं जोग सा छच बिंदं॥
छं० ॥ २५०७ ॥

लगन्नं सु गोधल्ल सा ब्रष्य केयं। पन्यौ सत्त मै पंच थानं रवेयं।
पस्यौ लग्ग थानं कला धिष्ट चंदं। तनं ताम सज्यौ निजं उच्च गंद

छं० ॥ २५०८ ॥

तबै आय प्रोहित्त श्रीकंठ तामं। दई आन सो वस्तु अन्नेक नाम
रच्यो तोरनं रंन मै उच्च थानं। लहैं मोल अन्नेक नालभ्यमा

छं० ॥ २५०९ ॥

गजं गंज्ज अट्ठोतरं सौ सिँगारे। तिनं गात उत्तंग ऐराव तारे।
सहस्सं स पंच हयं तुंगगातं। तिनं नग्ग सा कत्ति साहेम ज

छं० ॥ २५१० ॥

घटं जात रूपं जरे नग्ग उच्चे। गनै कौन मानं तिनं जानि स
जरे जंबु नद्दं वरं भाज नेयं। गनै कौन प्रामन्न सा संष तेयं ॥

छं० ॥ २५११ ॥

जरे पट्ट पट्टं अनेकं प्रकारं। अम्भूत अन्नेक सा वस्तु भारं ॥
ग्रिहं तिथ्थ अन्नेक जे पंग राजं। सबै पट्ठई सोइ संजोग साजं॥

छं० ॥ २५१२ ॥

करे साजि संजोगि निठ्ठुरं सु ग्रेहं। मुषं जोति इंदं कला पूरि
* * * ॥ * छं० ॥ २५१३ ॥

विवाह के समय संयोगिता का शृंगार और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ प्रथम्म केलि मज्जनं। बने निरत्त रंजनं ॥
सु स्निग्ध केस पायसं। सु बंधि बेन बासयं ॥ छं० ॥ २५१४ ॥
कुसम्म गुंथि आदियं। सु सीस फूल सादियं ॥
तिलक्क द्रप्पनं करी। श्रवन्न मंडनं धरी ॥ छं० ॥ २५१५ ॥
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुष्य सा गुनं मनं ॥
सु नासिका न मुत्तियं। तमोर मुष्य दुत्तियं ॥ छं० ॥ २५१६॥
सुढार कंठ मालयं। नगोदरं विसालयं ॥
अनग्घ हेम पासयं। सु पानि मध्य भासयं ॥ छं० ॥ २५१७॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो कि काम अंकनं ॥

वलै सु गाढ़ मुद्रिका । कटीव छुद्र घंटिका ॥ छं० ॥ २५१८ ॥
सु कट्टि मेषला भरं । सरीर नूपुरं जुरं ॥
तले न रत्त जावकं । सतत्त हंस सावकं ॥ छं० ॥ २५१६ ॥
सु वीर चारु सो रसं । सिँगार मंडि षोड़सं ॥
सुगंध व्रन्न वन्नयौ । अभूषनंति भिन्नयौ ॥ छं० ॥ २५२० ॥
सु चारु कन्नि भुल्लयौ । नषं सिषंत डुल्लयौ ॥ छं० ॥ २५२१ ॥
का ॥ लज्जमान कटाच्छ लोकन कला, अलपस्तनो जल्पनं ॥
रत्ती रित्त, भया सु प्रेम सरसा, गै हंस वुभत्ताइनं ॥
धीरज्जं च छिमाय चित्त हरनं, गुह्य स्थलं सोभनं ।
सीलं नील सनात नीत तनया, षट दून आभूषनं ॥ छं० ॥२५२२॥

पृथ्वीराज का शृंगार होना ।

॥ करि सिंगार प्रथिराज पहु । बंधि मुकट सुभ सीस ॥
मनों रतन वार उप्परै । उयौ वाल हरि दीस ॥ छं० ॥ २५२३ ॥

विवाह समय के सुख सारे ।

॥ सिंगार सकल किय राज जाम । उच्चार वेद किय विप्र ताम ॥
बाजिचं वज्जि मंगल अनेव । माननि उचारि सागुन्न गेव ॥
छं० ॥ २५२४ ॥

जय जया सद्द सद्दै समूह । सामंत सूर सव मिलिय जूह ॥
वद्धाय आव चवरुअ सुहाग । आनंत स्वजन गति उन्न भ[illegible]
छं० ॥

गुरु राम वेद मंचह उचार । अन्नेक वि[illegible]
हय रोहि हंस जंगल नरेस । [illegible]

उच्छरंत [illegible]

प्रोहित्त पंग रषि ब्रह्म रूप। बङ्काय आय नग मुत्ति भूप ॥
सिर फिरै विवह पट कूल राज। दिन्ने सु दत्त वाजिच वाजि ॥
छं० ॥ २५२८ ॥

रोकियौ राज वर नेक काम। मत्तौ सु हास रस रास ताम ॥
सुन षानि क्रूर लीला सरूप। प्रोषनह काज किय ताम भूप ॥
छं० ॥ २५२९ ॥

नग जटित हेम मंडह अनूप। चौरीस ताम सज्जी सजूप ॥
हिम षचित पट्ट मानिक्क रोह। वासनह छादि सम विषम सोह ॥
छं० ॥ २५३० ॥

दंपत्ति रोहि आसनह ताम। किय विप्र सब्ब सुर मुष्ष काम ॥
गावंत चक्क माननि सुभेव। आवरिय भोम आमरिय तेव ॥
छं० ॥ २५३१ ॥

कमधज्ज वीर चंद्रह सु आय। तिहि तव्यौ विवह प्रथिराज राय ॥
नैवेद[1] ताम धन गय तुषार। सम प्रान मुत्ति माला दुसार ॥
छं० ॥ २५३२ ॥

कंसार जाम आहरै राज। वानी [2]अयास सुरताम साज ॥
ष्वव वरस ष्ववर मुर मास जोग। सम सचहु साज्व संजोग भं
छं० २५३३ ॥

संभरिय वानि आयास भूप। मन्यौ सु काल वल मनिय कूप ॥
बीवाह सेष सब करिय काज। निसि बास धाम पत्तौ सु राज ॥
छं० ॥ २५३४ ॥

लघुनराज ॥ ...

सुहाग रात्रि वर्णन।

सु स्निग्ध ...
कुसम्म गुंथि आदियं ... सु पत्तौ ॥
तिलक्क द्रप्पनं करी। श्रवन्न मंडन ...
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुष्ष सा गुनं मनं ॥
सु नासिका न मुत्तियं। तमोर मुष्ष दुत्तियं ॥ छं० ॥ २...
सुढार कंठ मालयं। नगोदरं विसालयं ॥
अनग्घ हेम पासयं। सु पानि मध्य भासयं ॥ छं० ॥ २५१७ ॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो कि काम अंकनं ॥